CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala-Varanasi Collection. Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

3.2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी के प्रथम कहानी लेखक:
श्री विमलानन्द सरस्वती
के कर-कमलों में सादर भेंट

कृष्णदेव उपाध्याय

वाराणसी 23/3/62

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी साहित्य का इतिहास

लेखक
डा० कृष्णदेव उपाध्याय
—एम० ए०, पी० एच० डी०
संस्थापक-संचालक,
भारतीय लोक संस्कृति शोध संस्थान; वाराणसी

१९७२ ई०

प्रकाशक
भारतीय लोक संस्कृति शोध संस्थान
दुर्गाकुण्ड, वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

प्रकाशक:
भारतीय लोक संस्कृति शोध संस्थान;
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी।

प्रथम संस्करण
मूल्य १०=०० (दस रूपया)
सर्वाधिकार लेखक के अधीन

मुद्रक:
लोक संस्कृति प्रेस,
दुर्गाकुण्ड रोड,
वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समर्पण–पत्र

जिनके प्रेम-पूर्ण आग्रह तथा आदेश से ही मैं लोक-गीतों के

संग्रह में प्रवृत्त हुआ उन्हीं

ममतामयी माँ

श्रीमती मूर्ति देवी जी

के

चरण–कमलों में

यह तुच्छ कृति

सादर, सप्रेम, समर्पित ।

कृष्णदेव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी (भाषा-भाषी) प्रदेश का मानचित्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिका

(१) भोजपुरी साहित्य की विपुलता—भोजपुरी भाषा में सन्त साहित्य तथा लोक साहित्य की विपुल सामग्री भरी पड़ी है। स्वयं महात्मा कबीर-दास ने तथा उनके अनुयायी निर्गुण सम्प्रदाय के कवियों ने इस भाषा को अपने हृदय के उद्‌गारों को व्यक्त करने का माध्यम बनाया है। इतना ही नहीं, बल्कि राम-भक्ति शाखा के मधुरोपासक अनेक कवियों ने भी अपनी रचनाओं से इस भाषा को गौरवान्वित किया है। कुछ ऐसे भी कवियों ने भोजपुरी में काव्यरचना की है जो भोजपुरी-प्रदेश के बाहर निवास करते थे। ऐसे कवियों में पलटू साहब मुख्य हैं जो अपनी महत्ता के कारण दूसरे कबीर तक माने जाते हैं। इनका मूल निवास फैजाबाद जिले में था जो अवधी क्षेत्र में स्थित है, परन्तु इन्होंने भी भोजपुरी को ही अपनाया है। इसी प्रकार से कबीर के पट्ट शिष्य धर्मदास जी भी विन्ध्य प्रदेश के निवासी थे। इस संबंध में आचार्य परशुराम चतुर्वेदी लिखते हैं कि "संत कबीर द्वारा अपनाये जाने के कारण भोजपुरी का महत्त्व उनके पीछे और भी बढ़ गया। उनके नाम पर चलाये गये कबीरपंथ का अनुसरण करने वाले लोगों ने उनकी वाणी को आदर की दृष्टि से देखा और उसका अनुसरण किया॥"१ इस प्रकार निर्गुण तथा सगुण दोनों सम्प्रदाय के सन्तों तथा भक्तों ने अपनी रचनाओं द्वारा भोजपुरी साहित्य के भाण्डार को भरा है।

भोजपुरी प्रदेश को अनेक धार्मिक सम्प्रदायों को जन्म देने का गौरव प्राप्त है। इस दिशा में दरियादासी सम्प्रदाय, शिवनारायणी सम्प्रदाय तथा गाजीपुर जिले के भरकुड़ा गाँव में स्थापित बावरी सम्प्रदाय का नाम लिया

१. परशुराम चतुर्वेदी--भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखायें पृ० ८६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जा सकता है। इन सम्प्रदायों के सन्तों की वाणियाँ अधिकांश रूप में अभी भी अप्रकाशित पड़ी है और प्रकाश में आने की प्रतीक्षा कर रही हैं। इस प्रकार भोजपुरी का सन्त साहित्य अत्यन्त विपुल है जिसका संक्षिप्त उल्लेख आचार्य चतुर्वेदी जी ने अपने ग्रन्थ में किया है।१

अब आवश्यकता इस बात की है कि कोई शोधी विद्वान् भोजपुरी प्रदेश में घूम-घूम कर इन सन्तों का पता लगावे और उनकी अप्रकाशित कृतियों का उद्धार करें। यह एक रिसर्च की दिशा है जिसकी ओर किसी भी शोधी विद्वान् का ध्यान अभी तक आकृष्ट नहीं हुआ है। यदि विश्वविद्यालयों के शोधी छात्र इस क्षेत्र में अनुसन्धान करें, तब एक ही नहीं अनेक पी-एच-डी के लिए शोध प्रबन्ध सरलता से तैयार हो सकते हैं।

अभी तक कोई ऐसी पुस्तक नहीं लिखी गई थी जिसमें इन सन्तों का विवरण एकत्र प्राप्त हो सकें। अतः इस पुस्तक में इन सन्तों तथा भक्त कवियों का वर्णन संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

इधर गत वर्ष डा० लल्लन प्रसाद सिंह, प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, राजनीति-विभाग के उद्योग से विहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर ने अपनी इण्टर तथा बी. ए. की परीक्षाओं के लिए, भोजपुरी को एक स्वतन्त्र विषय के रूप में स्वीकार कर लिया। छात्रों की पढ़ाई तो प्रारम्भ हो गई परन्तु उनके लिए भोजपुरी साहित्य के किसी इतिहास का नितान्त अभाव था। कोई भी ऐसी पुस्तक उपलब्ध नहीं थी जिसमें उन्हें भोजपुरी साहित्य के इतिहास की सामग्री अध्ययन के लिए उपलब्ध हो सके। अतः इन छात्रों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक का निर्माण किया गया है। आशा है इससे विश्वविद्यालय के छात्रों को भोजपुरी साहित्य के अध्ययन में सहायता प्राप्त होगी।

जहाँ तक इन पंक्तियों के लेखक को ज्ञात है, मैथिली और राजस्थानी को छोड़कर हिन्दी की बोलियों में किसी भी जनपदीय भाषा के साहित्य का इतिहास

१. भा० सा० सा० रे० पृ० ७४-९५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभी तक नहीं लिखा गया है। अतः इस दृष्टि से इस ग्रन्थ की विशेषताओं का मूल्यांकन किया जा सकता है। यह कहने में वर्तमान लेखक को तनिक भी संकोच नही होता कि यह ग्रन्थ भोजपुरी का सर्व प्रथम इतिहास है। आज तक किसी भी विद्वान् ने इसके इतिहास को प्रस्तुत करने का प्रयास नहीं किया था। अतः इस प्रकार प्रस्तुत पुस्तक एक मौलिक कृति है।

(२) प्रस्तुत इतिहास लेखन में कठिनाइयाँ—भोजपुरी साहित्य के इतिहास को प्रस्तुत करने में लेखक को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है जिनका कुछ उल्लेख इस ग्रन्थ में अन्यत्र (पृ० ३५-३८) किया गया है। भोजपुरी साहित्य के इतिहास को प्रस्तुत करने में सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि इसका जितना साहित्य लिखित रूप में अबतक उपलब्ध है उससे कई गुना अधिक लोक-साहित्य अलिखित अवस्था में विद्यमान है। अतः जब तक इनका संकलन न कर लिया जाय तब तक कोई सर्वाङ्गीण इतिहास प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। भोजपुरी में जिन सन्त कवियों ने अपने काव्य की रचना की है उनमें से अधिकांश का न तो जीवन-वृत्त ही उपलब्ध होता है और न उनका काल-निर्णय ही निश्चित रूप से किया जा सकता है। यही दशा बहुत से आधुनिक कवियों के संबंध में भी समझनी चाहिए। बहुत से आधुनिक कवि-गण ऐसे भी हैं जिनकी कविता केवल कवि-सम्मेलनों तक ही सीमित है। उनके ग्रन्थ अभी तक प्रकाश में नहीं आये हैं। इन्हीं सब कठिनाइयों के कारण भोजपुरी साहित्य के इतिहास लेखक का कार्य बड़ा जटिल हो जाता है।

अनेक सन्त तथा भक्त कवियों का निश्चित रूप से काल-निर्णय न होने के कारण उनके पौर्वापर्य के संबंध में विचार करना भी कठिन है। अतः भोजपुरी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन करना एक कठिन पहेली है। यह वह दुष्कर कार्य है, जिसे सरलता से नहीं किया जा सकता। अतः काल-विभाजन के चक्कर में न पड़ कर भोजपुरी में इस समय जो साहित्य उपलब्ध होता है उसी का संक्षिप्त रूप में यहाँ वर्णन प्रस्तुत किया गया है। अतः जो विद्वान्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इतिहास में एक निश्चित काल-विभाजन की अपेक्षा रखते हैं उन्हें संभवतः यहाँ निराश ही होना पड़ेगा।

भोजपुरी के आधुनिक कवियों में उन्हीं कवियों तथा लेखकों को इस इतिहास में स्थान दिया गया है जिनकी कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी है। फिर भी जिन कवियों की कवितायें प्रकाश में आ चुकी है उन सभी कवियों का इसमें वर्णन है यह भी दावा नहीं किया जा सकता। हाँ, इतना अवश्य कहा जा सकता है कि कोई भी प्रसिद्ध कवि अथवा लेखक इस माला की मनिका बनने से छूटने नहीं पाया है। परन्तु यदि कोई व्यक्ति (साहित्यिक) सूचना के अभाव के कारण छूट गया हो तो उससे क्षमा की याचना की जाती है।

(३) अज्ञात कवि----भोजपुरी के कुछ ऐसे भी कवि हैं जो अज्ञातनामा है। जिन्होंने भोजपुरी की सेवा केवल सेवा की भावना से की है, अर्थ लाभ की दृष्टि से नहीं। इन कवियों ने अपनी रचनाओं को गाँवों में घूम-घूम कर तथा गा गाकर भोजपुरी का प्रचार किया है। इन कवियों के काव्य-संग्रह अधिकांश में प्रकाश में नहीं आये हैं और जो प्रकाशित हो भी चुके हैं वे आज उपलब्ध नहीं है। इन तपस्वियों ने भोजपुरी का अलख जगा कर इस साहित्य की जो सेवा की है उसकी अपेक्षा कदापि नहीं की जा सकती। इनकी सेवा स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य हैं।

ऐसे तपस्वी तथा साधक कवियों में पं० छाँगुर त्रिपाठी, 'श्याम' जी, धरीक्षण मिश्र, और 'अनुरागी' जी का नाम अग्रगण्य है। इस मण्डली में त्रिपाठी जी शीर्ष स्थान के अधिकारी हैं। पं० छाँगुर त्रिपाठी आज़ादी के उन दीवानों में से हैं जिन्होंने अपना तन, मन, धन सब कुछ निछावर कर भारत-माता की पराधीनता की बेड़ियों को काट कर उसे स्वतन्त्र करने में अलौकिक योग दान दिया है। पं० छाँगुर त्रिपाठी देवरिया जिले के निवासी हैं और आज उनकी आयु ८०–८२ वर्ष की है। फिर भी उनके दिल में जवानों का सा जोश पाया जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महात्मा गाँधी के द्वारा प्रवर्तित असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा तथा सत्याग्रह आन्दोलन—स्वाधीनता के इन सभी संग्रामों—में त्रिपाठी जी ने भाग लिया था और इस कारण इन्हें अनेक बार जेल की यातना भी सहनी पड़ी थी। इन्हीं दिनों में आपने 'स्वराज्य का आल्हा' नामक कविता लिखी थी जो उन दिनों बहुत ही प्रसिद्ध हुई थी। आल्हा छन्द में लिखी गई इस कविता को स्वाधीनता का महाकाव्य ही समझना चाहिए। दुःख है कि बहुत प्रयास करने पर भी इस आल्हा की प्राप्ति नहीं हो सकी। अतएव इस वीर काव्य की बानगी को यहाँ प्रस्तुत करना संभव नहीं हो सका। त्रिपाठी जी देवरिया जनपद में अपनी राष्ट्रीय कविताओं के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय हैं। देवरिया जिले के दूसरे कवि पं० दूधनाथ शर्मा 'श्याम' जी के उपनाम से प्रसिद्ध हैं। ये बड़े ही मस्त जीव हैं। अपनी स्वरचित कविताओं को गा गाकर लोगों को सुनना और इस प्रकार से भोजपुरी का प्रचार करना 'श्याम' जी के जीवन का एक मात्र लक्ष है। निर्भीक, निडर और स्पष्ट वक्ता श्याम जी किसी की पर्वाह नहीं करते। बड़े से बड़े मन्त्रियों के पास पहुँच जाना और अपनी कविता को सुना कर उन्हें प्रभावित करना इनकी अपनी विशेषता है। 'श्याम' जी सच्चे अर्थों में यायावर हैं। गले में झोला लटका कर अपने मिशन पर निकल पड़ना और कवि-सम्मेलनों में जाकर अपनी कविता सुनाकर श्रोताओं को मुग्ध लेना इनकी विशिष्ट कला है। इनकी कविताओं का कोई संग्रह संभवतः अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है।

श्री जनार्दन पाण्डेय 'अनुरागी'—जो अपने इसी उपनाम से ही अधिक लोकप्रिय तथा प्रसिद्ध हैं—भोजपुरी के लोक गायक तथा कवि हैं। कवि-सम्मेलनों में जब ये अपना कविता-पाठ करने लगते हैं तब एक समाँ बंध जाता है और श्रोतागण मंत्र मुग्ध होकर इनके काव्य का पान करने लगते हैं। 'अनुरागी' जी को भोजपुरी के काव्य क्षेत्र में ले आने का समस्त श्रेय श्री मोती बी. ए. को प्राप्त है। अनुरागी जी की सबसे अधिक लोकप्रिय कविता "रामराजी फुआ" है जिसमें किसी विधवा की करुण कहानी को बड़ी ही कारुणिक भाषा में गाया गया है। यह गीत क्या है करुणरस का महाकाव्य है जिसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि ने अपने जीवन की अनुभूति से लिखा है। यह करुण-रस प्रधान कविता भी उपलब्ध नहीं हो सकी।

पं० धरीछण मिश्र जी भोजपुरी के उन ठोस साहित्य सेवियों में हैं जिसने देवरिया जिले के गाँवों में भोजपुरी का अलख जगाया है। आज कल ये अपना घर बार छोड़ कर; गाँव से दूर एक बगीचे में रहते हैं, मचान पर सोते हैं और आकाश-वृत्ति से अपनी जीविकोपार्जन करते हैं। उस उद्यान में बैठ कर ये भोजपुरी में काव्य-रचना करते और गाते रहते हैं। गाँव के लोग इनकी कविता को सुनते और आनन्द लेते हैं। पं० धरीछण मिश्र का जीवन सादा, और व्यक्तित्व सरल है। अज्ञात रूप में भोजपुरी की सेवा करने वाला मिश्र जी के समान शायद ही कोई तपस्वी साधक मिल सकें।

इधर भोजपुरी की कविताओं का एक बहुत सुन्दर संग्रह "हीरा-मोती" के नाम से प्रकाशित हुआ है जिसमें भोजपुरी के पाँच उदीयमान कवियों की कृतियों का संकलन पाया जाता है। इन कवियों में डा० रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव; प्रवक्ता, दर्शन विभाग तथा श्री प्रभुनाथ सिंह, प्रवक्ता अर्थशास्त्र विभाग, विहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, प्रधान है। इन तरुण कवियों की रचनाओं में बड़ी सरलता तथा मधुरता पायी जाती है। उपर्युक्त पुस्तक की प्रति उपलब्ध न होने के कारण इनकी कविताओं का उदाहरण देना संभव नहीं हो सका। विहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के 'भोजपुरी साहित्य-परिषद' की स्थापना में इन कवियों का प्रधान हाथ है।

(४) <u>विषय निरूपण की पद्धति</u>—इस इतिहास में सर्व प्रथम कवि या लेखक का इतिवृत्त प्रस्तुत किया गया है। इसके पश्चात् उसके ग्रन्थों का विवरण है। बाद में कवि के काव्य की आलोचना संक्षिप्त रूप में दी गई है और अन्त में उसकी कविता के उदाहरण हैं। जो कविता दृष्टान्त में दी गई है वह उस कवि की अत्यन्त प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय रचना समझनी चाहिए। इस ग्रन्थ में इसी पद्धति का सर्वत्र पालन किया गया है। गद्य लेखकों की शैली की बानगी पाठकों के सन्मुख प्रस्तुत करने के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनकी कृतियों—नाटक, एकाङ्की, यात्रा, रिपोर्ताज़ से भी संक्षिप्त उद्धरण दिये गये हैं। काव्य से संबंधित अध्यायों में भोजपुरी का सन्त साहित्य, लोक साहित्य तथा आधुनिक काव्य-साहित्य का वर्णन किया गया है। इसी प्रकार से भोजपुरी गद्य-प्रवाह वाले अध्याय में गद्य की जितनी भी विधायें उपलब्ध हैं उन सभी का विवरण प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास उपलब्ध होता है। इस कार्य में वर्तमान लेखक को कितनी सफलता प्राप्त हुई है यह कार्य दोषज्ञ विद्वानों का है जिनके सन्मुख यह ग्रन्थ आज विद्यमान है। लेखक ने वर्तमान इतिहास में मल्लिनाथ की इस प्रतिज्ञा को सर्वत्र निभाने का प्रयास किया है कि :—

"नाऽमूलं लिख्यते किञ्चित्, नाऽनपेक्षितमुच्यते ॥"

अर्थात् इस ग्रन्थ में न तो कोई वस्तु अमूल, बिना स्रोत या मूल के, निराधार अथवा अप्रामाणिक—लिखी गई है और न कोई वस्तु ऐसी कहीं गई है जो व्यर्थ तथा अनपेक्षित हो। सभी जगह अपने कथन के प्रमाण में पाद टिप्पणी में सन्दर्भ ग्रन्थों का उल्लेख कर दिया गया है। इस प्रकार इस ग्रन्थ को जहाँ तक प्रामाणिक हो सकता है उतना प्रामाणिक बनाने की चेष्टा की गई है।

(५) धन्यवाद प्रकाशन—ग्रन्त में मैं उन सभी कवियों, लेखको, मित्रों तथा शुभचिन्तकों के प्रति आभार प्रकट करना अपना कर्तव्य समझता हूँ जिनकी सहायता और शुभ कामना से ही यह कार्य सम्पन्न हो सका है। सन्त कवियों तथा अनेक आधुनिक कवियों के भी इतिवृत्त को लिखने में श्री दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह लिखित "भोजपुरी कवि और काव्य" नामक प्रकाण्ड पोथा से बड़ी सहायता ली गई है। भोजपुरी में जिन-जिन सन्त कवियों ने रचना की है उनकी जानकारी के लिए आचार्य परशुराम चतुर्वेदी की "उत्तरी भारत की सन्त परम्परा" अमूल्य ग्रन्थ सिद्ध हुआ है। सरभंग सम्प्रदाय के कवियों के लिए पं० गणेश चौबे से अत्यधिक सहायता प्राप्त हुई है। डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी का ग्रन्थ भी इसमें सहायक हुआ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी के अनन्य गीतकार डा० रामनाथ पाठक 'प्रणयी', श्री मोती बी. ए., श्री रसिक विहारी ओझा 'निर्भीक' तथा डा० राम विचार पाण्डेय ने अपने समस्त ग्रन्थों की प्रतियाँ मुझे निःशुल्क प्रदान करके मेरी जो सहायता की है इसके लिए मैं इन कवियों का हृदय से आभारी हूँ। श्री मोती बी. ए. ने देवरिया जिले के कुछ अज्ञात लोक कवियों की भी सूचना मुझे प्रदान की है। डा० स्वामीनाथ सिंह, अध्यक्ष, भोजपुरी संसद, वाराणसी ने अपनी संस्था से प्रकाशित अमूल्य ग्रन्थों को मुझे विना मूल्य ही देकर जो कृपा की है इसके लिए उन्हें अनेक धन्यवाद देता हूँ। श्री राधा मोहन राधेश, अध्यक्ष तथा संचालक, भोजपुरी साहित्य-मंदिर, जगतगंज, वाराणसी ने आधुनिक नाटककारों तथा उपन्यासकारों के संवंध में केवल सूचना ही नहीं प्रदान की वल्कि अपनी संस्था से प्रकाशित अनेक भोजपुरी पुस्तकों को भी मेरे लिए सुलभ कर दिया। इसके लिए मैं उनका हृदय से कृतज्ञ हूँ तथा हार्दिक साधुवाद प्रदान करता हूँ। पाण्डेय श्री नर्मदेश्वर सहाय जी, प्रधान सम्पादक, अँजोर, पटना ने भी मेरी अनमोल सहायता की है। भला, मै अपने मित्र तथा भोजपुरी के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० गणेश चौवे को कैसे भूल सकता हूँ जिनकी लिखी हुई—"भोजपुरी-साहित्य-ग्रन्थ-सूची" से मुझे अमूल्य सहागता प्राप्त हुई है। आधुनिक कवियों की कृतियों की जानकारी के संवंध में चौवे जी का यह ग्रन्थ वड़ा ही उपयोगी सिद्ध हुआ है। सुधीर वुक डिपो, जगतगंज, वाराणसी के अध्यक्ष तथा संचालक वावू सुधीर कुमार को मैं अनेक धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के लिए भोजपुरी भाषा क्षेत्र का सुन्दर व्लाक वनवाने में अथक उद्योग तथा परिश्रम किया है। इसके अतिरिक्त अनेक प्रकार की अन्य सहायता के लिए भी मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ।

मेरे कनिष्ठ पुत्र श्री रविशंकर उपाध्याय "रवीश" तथा कनिष्ठा पुत्री कुमारी वीना कुमारी उपाध्याय एम. ए. ने इस पुस्तक के निर्माण तथा प्रूफ-संशोधन में मुझे अत्यधिक सहायता प्रदान की है। अतः मैं इन्हें प्रभूत आशीर्वाद प्रदान करता हूँ। ये अपने जीवन में सुख, वैभव, वैदुषी और ख्याति को प्राप्त करें यही मेरी कामना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्त में भूत-भावन भगवान् विश्वनाथ, माता अन्नपूर्णा, मेरे इष्ट देव संकट-हरण भगवान् 'संकट मोचन' तथा भगवती दुर्गा से मेरी यही हार्दिक प्रार्थना है कि वे मुझे सुन्दर स्वास्थ्य, दीर्घ आयुष्य तथा ग्रन्थ-प्रणयन के प्रति अटूट अनुराग प्रदान करने की कृपा करें जिससे मैं भारतीय लोक साहित्य तथा लोक संस्कृति की सेवा-करने में आजीवन समर्थ हो सकूँ। भगवती दुर्गा के श्री चरणों में यही मेरा सविनय निवेदन है कि :—

"देहि सौभाग्यमारोग्यं, देहि मे परमं सुखम् ।
वयं देहि, बलं देहि, यशो देहि, मदं जहि ॥"

एवमस्तु

—:०:—

भारतीय लोक-संस्कृति शोध-संस्थान
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी
आषाढ़ी पूर्णिमा (गुरुपूर्णिमा)
संवत् २०२९ वि० ॥ २६-७-७२ ई०

विनीत—
कृष्णदेव उपाध्याय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय-सूची

समर्पण-पत्र, भूमिका

प्रथम खण्ड १-३२

अध्याय १—भोजपुरी भाषा १-३२

भोजपुरी या भोजपुरिया पृ० १, भारतीय भाषाओं में भोजपुरी का स्थान २, भोजपुरी नामकरण का कारण-४, भोजपुर नगर का संक्षिप्त इतिहास ५, भोजपुरी या भोजपुरिया का लिखित प्रयोग ८, भोजपुरी शब्दों के लिए अन्य शब्दों का प्रयोग ६, भोजपुरी भाषा का व्यावहारिक तथा व्यापक प्रयोग १०, भोजपुरी में साहित्य सृजन के अभाव का कारण ११, भोजपुरी भाषा के अध्ययन का आरम्भ १२, भोजपुरी भाषा का क्षेत्र—विस्तार १५, भोजपुरी भाषा भाषियों की संख्या १६, भोजपुरी का अन्य बिहारी भाषाओं से पार्थक्य १६, भोजपुरी का अन्य भाषाओं (व्रज) से पार्थक्य २०, भोजपुरी की विभिन्न बोलियाँ २२, (१) आदर्श भोजपुरी २३, (२) पश्चिमी भोजपुरी २५, आदर्श भोजपुरी और पश्चिमी भोजपुरी में अन्तर २६, (३) नगपुरिया २६, (४) मधेसी ३० (५) थारू ३०, भोजपुरी भाषा का स्थूल व्याकरण ३१, संज्ञा ३२।

द्वितीय खण्ड—भोजपुरी—साहित्य ३३-३८५

अध्याय २—भोजपुरी का काल विभाजन ३३-३९

(१) सिद्ध साहित्य ३९-४० (१) सरहपा ३६ (२) शबरपा ३६ (३) भुसुक ४० (४) कण्हपा ४० (५) कुक्कुरिपा ४० (२) नाथ साहित्य ४१-४२ (१) गोरखनाथ-४१ (२) भर्तृहरि ४१, हिन्दी कवि ४२-४६ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय ३—सन्त साहित्य ४६-११२

(१) निर्गुण सम्प्रदाय ४७-६५ कबीरदास ४७, धरमदास ५४, धरनीदास ५७, पलटूदास ६४ (२) सरभंग सम्प्रदाय ६६-८० (१) बाबा किनाराम ६७, (२) भिनकराम ७१ (३) भीखमराम ७४, (४) टेकमनराम ७६ (५) योगेश्वराचार्य ७९ (३) सगुण सम्प्रदाय रामशरण-८५, रूपकला जी ८७, लक्ष्मी नारायणदास 'पवहारी' ९०, रामा जी ९३, (४) सखी सम्प्रदाय (१) लक्ष्मी सखी ९६, ग्रन्थ, ९८ (२) कामता सखी १०१ (५) शिव नारायणी सम्प्रदाय १०१-१०४ (६) बावरी सम्प्रदाय १०४-११२ (१) बावरी साहिबा १०५ (२) बीरू साहब १०६ (३) बूला साहब १०७ (४) गुलाल साहब १०९ (५) भीखा साहब १११

अध्याय ४—भोजपुरी लोक-साहित्य ११३-१९९

(अ) यूरीपीय विद्वानों द्वारा लोक गीतों का संग्रह ११४-१२० (१) डाक्टर सर जार्ज ग्रियर्सन ११४-११८ (२) विलियम क्रुक ११९ (३) ह्यूज फ्रेजर ११९ (४) जे० बीम्स १२० (५) ए० जी० शिरेफ १२० (आ) भारतीय विद्वानों द्वारा लोक गीतों का संग्रह १२१-(क) पं० रामनरेश त्रिपाठी १२१-(ख) डा० कृष्णदेव उपाध्याय १२४-(ग) श्री दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' १३१-(घ) पं० गणेश चौबे १३२-(ङ) श्री आर्चर १३३-(च) देवेन्द्र सत्यार्थी १३४-(छ) डा० श्रीधर मिश्र १३५-(ज) डा० उदय नारायण तिवारी १३६-(झ) डा० मुक्तेश्वर तिवारी १३६-(इ) भोजपुरी में शोध संबंधी कार्य १३७-४३ (क) भोजपुरी भाषा १३८-३९ (१) डा० उदय नारायण तिवारी १३८ (२) डा० विश्वनाथ प्रसाद १३९, (३) डा० शुकदेव सिंह १३९ (ख) भोजपुरी साहित्य १३९-१४३ (१) डा० कृष्णदेव उपाध्याय १३९, (२) डा० सत्यव्रत सिनहा १४०, (३) डा० सत्यदेव ओझा १४० (४) डा० श्रीधर मिश्र १४१ (५) डा० हरिशंकर उपाध्याय १४१ (६) डा० भरत सिंह १४२ (७) डा० नवल (नन्द) किशोर राय १४२ (८) श्री सत्यदेव तिवारी १४३ (९) श्री रमाशंकर राय १४३ (१०) पं० हरगोविन्द तिवारी १४३ (उ) भोजपुरी लोक-गीतों का रचनाकाल १४४-४६। भोजपुरी लोक-गीत १४७-९९ (क) संस्कार संबंधी गीत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१४८-६४ (१) सोहर १४८ (२) खेलवना १५३ (३) मुंडन के गीत १५४ (५) जनेऊ के गीत १५६, (६) विवाह १५६ (७) गवना १६२ (ख) ऋतु-सम्बन्धी गीत १६५-१७४ (१) कजली १६५ (२) फगुआ १६८ (३) चैता १७० (४) बारहमासा १७३ (ग) व्रत-संबंधी गीत १७५-(१) शीतला माता के गीत १७५, (२) नाग पंचमी के गीत १७८ (३) बहुरा १७६ (४) गोधन १८० (५) पिंडिया १८० (६) छठी माता के गीत १८१ (घ) श्रम गीत १८३-१८६ (१) जँतसार १८३ (२) रोपनी के गीत १८५ (३) सोहनी के गीत १८७ (च) विविध गीत १८६-६६ (१) झूमर १६० (२) अलचारी १६२ (३) पूरबी १६२ (४) निर्गुन १६५ (५) पाराती और भजन १६७, (६) पालने के गीत १६६ ।

अध्याय ५–आधुनिक साहित्य २००-३७६

(क) भोजपुरी–काव्य–धारा २०४-(१) बाबा बुलाकीदास २०५, (२) बाबू रामकृष्ण वर्मा २०६ (३) श्री तेग अली 'तेग' २१३ (४) बाबू अम्बिका प्रसाद २१४ (५) बिसराम २१७ (६) पं० दूधनाथ उपाध्याय २२० (७) बाबू रघुवीर नारायण २२५ (८) पं० महेन्द्र मिश्र २३० (६) भिखारी ठाकुर २३१ [१०] मनोरंजन प्रसाद सिनहा २३७ [११] महाराज खड्ग बहादुर मल्ल २४६ [१२] बाबू दुर्गाप्रसाद सिंह २४७, उत्कर्षकाल २५१ [१३] बाबू प्रसिद्ध नारायण सिंह २५२, [१४] डा० राम विचार पाण्डेय २५६, [१५] आचार्य महेन्द्र शास्त्री २६०, [१६] श्याम बिहारी तिवारी 'देहाती' २६२ [१७] कविवर 'चंचरीक' २६५ [१८] अर्जुन कुमार सिंह 'अशान्त' २६७, [१६] महादेव प्रसाद सिंह 'घनश्याम' २६८, [२०] श्री रामेश्वर सिंह 'काश्यप', २७१, [२१] श्री विश्वनाथ प्रसाद 'सैदा' २७२, [२२] श्री रामनाथ पाठक 'प्रणयी' २७३ [२३] श्री मोती बी० ए० २७८, [२४] डा० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' २८१, [२५] श्री 'राहगीर' २८३, [२६] श्री भोलानाथ 'गहमरी' २८६, [२७] श्री चन्द्रशेखर मिश्र २८८, [२८] श्री जगदीश ओझा 'सुन्दर' २६०,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[२९] श्री श्यामसुन्दर ओझा 'मंजुल' २९१, [३०] श्री राधा मोहन 'राधेश' २९१, [३१] श्री सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश' २९२ [३२] श्री विवेकी राय २९३ [३३] श्री रामवृक्ष राय 'विधुर' २९४ [३४] हरिराम द्विवेदी २९५ [३५] श्री पाण्डेय कपिल २९५ [३६] श्री तारकेश्वर उपाध्याय २९६ [३७] श्री प्रभुनाथ मिश्र २९७ [३८] डा० कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' २९७ [३९] श्री भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु' २९९ [४०] कविवर पुण्डरीक २९९ [४१] हरेन्द्र देव नारायण ३०० [४२] श्री रविशंकर उपाध्याय ३०२, नयी कविता ३०३ [४३] डा० स्वर्ण किरण ३०४, [४४] बच्चन पाठक 'सलिल' ३०४।

अध्याय ६—भोजपुरी-गद्य ३०५-७६

[ख] भोजपुरी-गद्य-प्रवाह ३०५ [१] पुराने कागज-पत्रों में प्रयुक्त भोजपुरी गद्य ३०७ [२] आधुनिक गद्य ३११। १—नाटक ३१२-४३ [१] पं० रविदत्त शुक्ल ३१२, [२]—राम गरीब चौबे ३१७, [३] भिखारी ठाकुर ३२१, [४] राहुल सांकृत्यायन ३२४, [५] गोरखनाथ चौबे ३३२ [६] रामेश्वर सिंह 'काश्यप' ३३४ [७] डा० रामविचार पाण्डेय ३३७, [८] कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' ३३८, [९] श्री दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह ३३८, [१०] मोती बी० ए० ३३९ [११] रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' ३४१ [१२] विमल कुमार सिंह विमलेश' ३४२, [१३] चौधरी देव दत्त शर्मा ३४२ [१४] श्री यादव चन्द्र पाण्डेय ३४३ [१५] वैदेही शरण 'वनियापुरी' ३४३, [१६] श्री कैलाशनाथ ओझा ३४४, [१७] प्रो० उमाकान्त ३४४, [१८] श्री बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव ३४५, [१९] सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश' ३४५ [२०] शिव मूरत सिंह ३४३। [२] उपन्यास ३४८-५१ [१] रामनाथ पाण्डेय ३४८, [२] जगदीश ओझा 'सुन्दर' ३४९, [३] राधा मोहन 'राधेश' ३४९ [४] राम नगीना सिंह 'विकल' ३५०, [५] श्री रमेश चन्द्र झा ३५० [६] डा० बच्चन पाठक 'सलिल' ३५१। ३—कहानी ३५२-३१ [१] अवध बिहारी 'सुमन' ३५२,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[२] प्रो० चन्द्रभूषण सिनहा ३५५, ३५७ [३] ओङ्कारनाथ मिश्र तथा नरोत्तम पाण्डेय ३५५ [४] रामवृक्ष राय 'विधुर' ३५६, [५] श्रीरामबली पाण्डेय ३५८, ३६० [६] राय सच्चिदानन्द ३५९ [७] राधा मोहन 'राधेश' ३६०, [८] श्रीमती राधिका देवी ३६१ [९] गिरिजा शंकर गिरिजेश ३६१ । [४]–निबन्ध ३६२-६६ [१] प्रो० विवेकी राय ३६२, [२] डा० बच्चन पाठक 'सलिल' ३६४ [३] श्री राधा मोहन 'राधेश' ३६५ [४] श्री चन्द्रभूषण सिनहा ३६६ । ५–एकांकी ३६६-६७; रसिक विहारी ओझा 'निर्भीक' ३६७ । ६–यात्रा ३६८ डा० सत्यदेव ओझा ३६८ । ७–रेखाचित्र ३६९ [१] रसिक विहारी ओझा 'निर्भीक' ३६९ [२] प्रो० चन्द्र भूषण सिनहा ३६९ । ८–जीवनी ३६० । ९–संस्मरण ३७०-३७१ । १०–रिपोर्ताज ३७२ परमेश्वर दूबे शाहावादी ३७२ । ११–पत्र ३७३-३७५; चतुरी चाचा ३७३ । १२–कोश ३७६ ।

अध्याय ७--उपसंहार ३७७-८५

भोजपुरी भाषा और साहित्य की महत्ता तथा उसका भविष्य ३७७-८५ (१) सरल भाषा ३७७, (२) सशक्त भाषा ३७७, (३) क्षेत्र विस्तार की विपुलता ३७८, (४) भाषा–भाषियों की संख्या ३७९, (५) अन्तरराष्ट्रीय भाषा होने की क्षमता ३७९, [६] सन्त साहित्य तथा लोक साहित्य की विपुलता ३८०, [७] साहित्य रचना का प्रवाह ३८२, [८] फिल्मों द्वारा भोजपुरी का प्रचार ३८३, [९] राष्ट्रीय चेतना का जागरण ३८३, [१०] भोजपुरी का भविष्य ३८४ ।

अध्याय ८--भोजपुरी के उन्नायक ३८६-४०९

[१] डा० सर जार्ज ग्रियर्सन ३८७ [२] डा० सच्चिदानन्द सिनहा ३८९ ३) भारत रत्न राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ३९१ (४) बाबा राघव दास ३९३ (५) पं० दूधनाथ उपाध्याय ३९३ (६) राहुल सांकृत्यायन ३९४ (७) बाबू रघुवीर नारायण ३९५ (८) प्रिन्सिपल मनोरंजन प्रसाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिनहा ३९६ (९) बाबू दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह ३९६ (१०) डा० उदय नारायण तिवारी ३९८ (११) बाबू जगजीवन राम ३९८ (१२) डा० लल्लन प्रसाद सिंह ३९९ (१३) पं० महेन्द्र शास्त्री ४०० (१४) आचार्य पं० बलदेव उपाध्याय ४०१ (१५) सम्पादकाचार्य पं० बनारसी दास चतुर्वेदी ४०३ (१६) पं० गणेश चौबे ४०३ (१७) रघुवंश नारायण सिंह ४०४ (१८) डा० स्वामीनाथ सिंह ४०५ (१९) श्री राधा मोहन 'राधेश' ४०६ (२०) पाण्डेय नर्मदेशवर सहाय ४०७ (२१) रामेश्वर सिंह 'काश्यप' ४०८ (२२) भिखारी ठाकुर ४०८ ॥ परिशिष्ट—१ (४१०-२०)। भोजपुरी में प्रकाशित पत्र पत्रिकायें ४१०-१२। परिशिष्ट—२ भोजपुरी-सेवी-संस्थाएँ ४१३-१४। परिशिष्ट—३ भोजपुरी भाषा और साहित्य संबंधी पठनीय ग्रन्थ ४१५-१६। परिशिष्ट—४ भोजपुरी-अनुक्रमणिका ४१७-२० ॥ भोजपुरी भाषा का मानचित्र (प्रारम्भ में)

—:o:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेखक के द्वारा रचित लोक-साहित्य-संबंधी ग्रन्थ

क—मौलिक

१—भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन
२—भोजपुरी और उसका साहित्य
३—लोक साहित्य की भूमिका
४—भोजपुरी साहित्य का इतिहास
५—भोजपुरी लोक-साहित्य (प्रेस में)
६—भोजपुरी लोक-संस्कृति („ „)
७—फोकलोर आफ उत्तर प्रदेश („ „ अंग्रेजी में)

ख—सम्पादित

८—भोजपुरी-लोक-गीत भाग १
९—भोजपुरी-लोक-गीत भाग २
१०—भारतीय लोक-संस्कृति
११—हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास भाग १६ (लोक साहित्य)
१२—स्टडीज़ इन इण्डियन फोक कल्चर (अंग्रेजी में)
१३—अवधी लोक गीत भाग १ (प्रेस में)
१४—भोजपुरी लोक-कथा („ ,)

ग—इतर ग्रन्थ

१५—चारु चरितावली
१६—आसाम-दर्शन
१७—विद्यालय संगठन
१८—भगवद् गीता (हिन्दी में अनुवाद)
१९—निबन्ध चन्द्रिका
२०—व्रत-चन्द्रिका

—:०:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय १

भोजपुरी भाषा

भारत की आर्य भाषाओं में भोजपुरी हिन्दी की एक प्रमुख भाषा है। इस सरस भाषा में साहित्य की रचना अभी प्रचुर परिमाणों में नहीं हुई है। फिर भी जो कुछ रचनायें उपलब्ध हैं वे इसकी सरसता एवं मधुरता को प्रमाणित करने के लिये पर्याप्त हैं। भोजपुरी साहित्य की चर्चा के पूर्व इस भाषा के विषय में जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। इस भाषा के नामकरण का क्या कारण है? यह भाषा कहाँ बोली जाती है? इसका सामान्य व्याकरण क्या है? इन विषयों पर संक्षेप में यहाँ प्रकाश डालना समीचीन होगा।

भोजपुरी या भोजपुरिया—भोजपुरी भाषा को कुछ विद्वान् 'भोजपुरिया' के नाम से भी पुकारते हैं। डा० सुनीतिकुमार चटर्जी ने अपने ग्रन्थ में इसी नाम का व्यवहार किया है।[1] 'भोजपुरिया' शब्द 'भोजपुर' शब्द का विशेषण है। 'भोजपुर' शब्द से उन प्रदेश की भाषा का अर्थ द्योतितकरने के लिए 'इया' प्रत्यय का प्रयोग उतना ही

---

1. Origin and development of Bengali language.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उचित है जितना 'ई' प्रत्यय का। 'ई' प्रत्यय 'इया' से आकार में लघु है और यह अन्य विशेषणों—यथा बंगाली, आसामी, नेपाली—से समता भी रखता है। अतः उपर्युक्त कारणों से इस निबन्ध में सर्वत्र 'भोजपुरी' शब्द का ही प्रयोग किया गया है, 'भोजपुरिया' का नहीं। इसके अतिरिक्त बीम्स, ग्रियर्सन[1], हार्नली आदि विद्वानों ने भी 'भोजपुरी' शब्द का ही व्यवहार किया है। भोजपुरी प्रदेश के लोगों में इसी शब्द का अधिक प्रचार है।

आजकल 'भोजपुर' प्रदेश की भाषा के लिये 'भोजपुरी' तथा इस प्रदेश के निवासियों के लिये 'भोजपुरिया' शब्द का प्रयोग किया जाता है। जहाँ 'भोजपुरी' शब्द भाषा का वाचक है वहाँ 'भोजपुरिया' इस प्रदेश के बहादुर निवासियों को द्योतित करता है।

भारतीय भाषाओं में भोजपुरी का स्थान—भाषा शास्त्र के विद्वानों ने समस्त भारतीय भाषाओं का अनुशीलन कर इनको कुछ निश्चित सिद्धान्तों के आधार पर अंतरंग और बहिरंग इन दो विभागों में विभक्त किया है। अन्तरंग भाषा की दो प्रधान शाखायें हैं—१. पश्चिमी शाखा और २. उत्तरी शाखा। पश्चिमी शाखा के अन्तर्गत पश्चिमी हिन्दी (ब्रज आदि), राजस्थानी गुजराती और पंजाबी हैं और उत्तरी शाखा में पश्चिमी पहाड़ी, मध्य पहाड़ी और पूर्वी पहाड़ी भाषायें परिगणित हैं। बहिरंग भाषाओं की तीन प्रधान शाखायें हैं : १. उत्तर पश्चिमी शाखा—जिसमें काश्मीरी, कोहिस्तानी पश्चिमी पंजाबी, और सिन्धी भाषायें आती है। २. दक्षिणी शाखा—जिसमें मराठी भाषा की गणना है। ३. पूर्वी शाखा—इसके अन्तर्गत उड़िया, बंगला, आसामी और बिहारी भाषायें हैं। इस अन्ति

1. Linguistic Servey of India, Part 4 P. 4-5.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाषा—बिहारी—की तीन बोलियाँ (डाइलेक्ट्स) प्रसिद्ध हैं। १. मैथिली, २. मगही और ३. भोजपुरी। इस प्रकार भोजपुरी बहिरंग भाषाओं की पूर्वी शाखा के अन्तर्गत बिहारी भाषा की एक बोली है[1] जो क्षेत्र विस्तार और इस भाषा के बोलने वालों की संख्या के आधार पर अपनी बहिनों—मैथिली एवं मगही—में सबसे बड़ी है। भोजपुरी के भी अनेक भेद हैं जिनका उल्लेख यथास्थान किया जायेगा।

भोजपुरी भारत की आर्य भाषाओं में पूर्वी अथवा मागध श्रेणी की भाषाओं में सबसे पश्चिमी भाषा है। डा० ग्रियर्सन ने इस मागध श्रेणी (मगधन-ग्रूप) की भाषाओं को 'बिहारी' नाम से अभिहित किया है। बिहारी भाषा से उनका तात्पर्य केवल उस एक मात्र भाषा से है जिसके अन्तर्गत तीन बोलियाँ—१. मैथिली, २. मगही एवं ३. भोजपुरी—प्रचलित हैं। यद्यपि भाषाशास्त्र के दृष्टिकोण से देखने पर यह मत ठीक है, फिर भी मैथिली एवं मगही बोली में बहुत कुछ अन्तर है। इसी प्रकार भोजपुरी के बोलने वाले अपनी पृथक् सत्ता स्वीकार करते हैं।

डा० चटर्जी ने मागध भाषाओं का वर्गीकरण तीन विभागों में किया है। उनके मतानुसार भोजपुरी का संबंध पश्चिमी समुदाय (ग्रूप) से है। मैथिली और मगही का संबंध केन्द्रीय मागध से और बँगला, आसामी और उड़िया भाषा का संबंध पूर्वी मागध समुदाय (ग्रूप) से है। इस प्रकार हम देखते हैं कि बँगला, आसामी और उड़िया भाषायें भोजपुरी की चचेरी बहिनें हैं; जब कि मैथिली और मगही सगी बहिन होने का गौरव प्राप्त करती हैं।

उपर्युक्त तीनों बोलियों में विस्तार की दृष्टि से विचार करने पर भोजपुरी का स्थान सबसे बड़ा दिखाई पड़ता है। यह बहु-विस्तृत प्रदेश में फैली हुई है। उत्तर में हिमालय की तराई से लेकर मध्यप्रान्त

---

१. श्यामसुन्दर दास : भाषा विज्ञान पृ० १३३,१५०-५१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के भूतपूर्व सरगुजा रियासत तक इसका विस्तार है। बिहार प्रान्त में यह शाहाबाद, सारन, चम्पारन, रांची, भूतपूर्व जशपुर रिसायत, पलामू जिले का कुछ हिस्सा और मुजफ्फरपुर जिले के उत्तरी पश्चिमी भाग में प्रचलित है। यू० पी० के पूर्वी जिलों—बनारस, गाजीपुर, बलिया-जौनपुर और मिर्जापुर जिलों में तथा आजमगढ़, बस्ती, गोरखपुर एवं देवरिया जिलों में भी फैली हुई है।

प्रोफेसर मनोरंजन प्रसाद सिनहाने भोजपुरी भाषा के क्षेत्र-विस्तार का वर्णन करते हुए निम्नांकित सरस 'लोरी' (कविता) के माध्यम से बिहार और उत्तर प्रदेश के चौदह जिलों में इसके बोले जानेका उल्लेख किया है।

"आरे[१] आवऽ, छपरा[२] आवऽ; बलिया[३] मोतिहारी[४] आवऽ।
राँची[५] अउर पलामू[६], आवऽ; गोरखपुर[७], देवरिया[८] आवऽ।
गाजीपुर[९] आजमगढ़[१०] आवऽ; बस्ती[११] अउर जौनपुर[१२] आवऽ।
मिर्जापुर[१३], बनारस[१४] आवऽ; सोने के कटोरिया में।
दूध-भात ले ले आवऽ; बबुआ के मुँहवा में घूटूक"।

भोजपुरी नामकरण का कारण—भोजपुरी भाषा का नामकरण बिहार प्रान्त के शाहाबाद जिले में स्थित भोजपुर नामक गांव के नाम पर हुआ है। शाहाबाद जिले में बक्सर सब-डिविजन में भोजपुर नाम का एक बड़ा परगना है। इसी परगने में 'नवका भोजपुर' और पुरनका भोजपुर' दो छोटे-छोटे गाँव हैं जो भूतपूर्व डुमरावं राज्य की राजधानी डुँमराँव नगर से दो, तीन मील उत्तर गंगा के निकट बसे हैं। ये दोनों गाँव आसपास हैं और भोजपुर नामक प्राचीन नगर के ही स्थान पर स्थित हैं। इन्हीं गाँवों के कारण इस बोली का नाम भोजपुरी पड़ गया है।[१]

१. दुर्गाप्रसाद सिंह—भोजपुरी लोकगीतों में करुण रस—भूमिका पृष्ठ १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुर नगर का संक्षिप्त इतिहास—प्राचीन काल में 'भोजपुर' बड़ा समृद्धशाली नगर था। यह उज्जैन वंशी, पराक्रमी राजपूत राजाओं की राजधानी थी। इस वंश के प्रतिनिधि डुँमराँव राज्य के राजा आज भी विद्यमान हैं। डा० बुकानन ने सन् १८१२ ई० में सम्पूर्ण शाहाबाद जिले में परिभ्रमण किया था। उसने अपने यात्रा विवरण में यहाँ के मूल निवासी चेदी नामक जातिको परास्त कर उज्जैन वंशी राजपूतों के द्वारा, इस स्थान को जीतने की किम्बदन्ती का उल्लेख किया है। इन उज्जैनी राजपूतों की उत्पत्ति मालवा के सुप्रसिद्ध राजा भोज से मानी जाती है।

ब्लाखमैन[१] ने 'भोजपुर' नाम का उल्लेख किया है। उसने लिखा है कि "दक्षिणी बिहार और बंगाल के पश्चिमी सरहद के राजाओं ने दिल्ली के बादशाहों को बड़ा परेशान किया। अकबर के राज्यकाल में भोजपुर के राजा दलपति पराजित होकर पकड़े गये और जब अधिक नज़राना लेकर अकबर ने उन्हें मुक्त किया तो वे फिर सेना लेकर विद्रोह कर बैठे। जहाँगीर के समय तक उनका विद्रोह चलता रहा और शाहजहाँ ने उनके उत्तराधिकारी को फाँसी दे दी।"

ब्लाखमैन ने अपने 'आईने अकबरी' के अनुवाद में 'भोजपुर' के संबंध में अनेक घटनाओं का वर्णन किया है।[२]

आईने अकबरी में राजा दलपति सम्बन्धी विवरण की एक टिप्पणी में राजा दलपति को उज्जैनिया कहा गया है। 'आईने अकबरी' से यह भी पता चलता है कि उज्जैनिया राजाओं की राजधानी 'भोजपुर' थी जो आरा से पश्चिम और सहसराम से उत्तर थी। उन दिनों में यह स्थान विहार प्रान्त के रोहतास सरकार के भीतर एक

१. एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल की पत्रिका सन् १८७१ पृष्ठ ३–१२६
२. आईने अकबरी भाग १ (१५१३)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परगना था। शाहजहां के राज्यकाल के दसवें वर्ष में यहां के राजा प्रतापसिंह ने विद्रोह किया था। तब अब्दुल्ला खाँ ने भोजपुर पर आक्रमण कर इसे जीत लिया। प्रतापसिंह ने आत्म-समर्पण कर दिया और शाहजहाँ की आज्ञा से उसे फाँसी दे दी गई।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि प्राचीन काल में 'भोजपुर' एक प्रधान स्थान था जिसे मालवा के उज्जैनवंशी राजाओं की राजधानी होने का गौरव प्राप्त था। ये उज्जैनी राजा मालवा से यहाँ आये थे। इन राजपूतों का भारत के मध्यकालीन इतिहास में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। पश्चिमी बिहार में इनकी महत्ता सन् १८५७ ई० तक अक्षुण्ण रही है, जब कि वीराग्रणी बाबू कुँअर सिंह ने अंगरेजों के विरुद्ध बगावत का झंडा ऊंचा किया था। इस युद्ध में कुंवर सिंह पराजित हुए और इस प्रकार भोजपुर की प्राचीन महत्ता का नाश हो गया। परन्तु डुमराँव में आज भी एक उज्जैनवंशी राजा हैं जो पुराने उज्जैनी राजाओं का एकमात्र प्रतिनिधि हैं।

उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट है कि 'भोजपुर' स्थान का नाम उन उज्जैनी भोज राजाओं के नाम के कारण हुआ है जो उज्जैन (मालवा) से आकर यहाँ बस गये थे। यह बात यहाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि 'भोज' नाम उपाधि रूप से सभी उज्जैनी राजाओं के द्वारा धारण किया जाता था। यह 'श्रृंगार प्रकाश' के रचयिता सुप्रसिद्ध दानी, राजा भोज का व्यक्तिगत नाम ही नहीं था बल्कि यह उपाधि भी थी।[१] ये राजा उज्जैन से आने के कारण उज्जैनी भोज कहलाते थे। अतः इन्होंने जिस नगर को बसाया उसका नाम इन्हीं के नाम पर भोजपुर (भोज राजओं का नगर) रक्खा गया। इनकी राजधानी 'भोजपुर' में थी जो आज भी बिहार प्रान्त के डुमरांव नामक नगर

---

१. ऐतरेय ब्राह्मण ८।१४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के पास स्थित है। प्राचीन किला का भग्नावशेष आज भी इस भोजपुर गाँव में विद्यमान है। इसी प्राचीन छोटे से नगर के कारण यह नाम आसपास के स्थानों में भी फैल गया। पहिले 'भोजपुर' नाम का जिला भी था जिसके अन्तर्गत वर्तमान शाहाबाद जिले का उत्तरी भाग सम्मिलित था। १८वीं शताब्दी के अन्त में 'भोजपुर' का क्षेत्रफल अत्यन्त विस्तृत था। शनैः शनैः 'भोजपुर' नाम से बना हुआ भोजपुरी अथवा भोजपुरिया यह विशेषण यहाँ के निवासियों तथा क्रमशः इस प्रदेश के आस-पास बोली जाने वाली भाषा के लिए भी प्रयुक्त होने लगा। चूँकि यह बोली भोजपुर जिले के उत्तर, दक्षिण और पश्चिमी भागों में भी फैली हुई थी अतः यहाँ के लोग तथा उनकी बोली भी इसी नाम-भोजपुरी-से विख्यात हो गई।

इस प्रदेश के राजपूतों ने मुगल बादशाहों से लड़ने में बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त की थी तथा आसपास के लोगों में अपनी पृथक् सत्ता एवं महत्ता बतलाने के लिए वे इसी नाम से अपने को अभिहित करते थे।

सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में, मागध श्रेणी की इस भाषा के बोलने वालों के लिये भोजपुरी अथवा भोजपुरिया शब्द का प्रयोग पाया जाता है। इस प्रदेश के निवासी अपने शौर्य, वीरता और युद्ध-प्रियता के लिये प्रसिद्ध रहे हैं और इसी कारण वे मुगलों की सेनाओं में अधिक संख्या में भरती किये जाते थे। यह परम्परा ब्रिटिश राज्य के समय तक भी रही है। विशेषकर सिपाही विद्रोह के समय में भोजपुरियों ने जो वीरता दिखलाई वह किसी से छिपी नहीं है। निम्नांकित पद्य में—जो बिहार में अत्यधिक प्रसिद्ध है—"भोजपुरिया" शब्द का प्रयोग 'भोजपुर' प्रदेश में रहनेवाले लोगों के लिए किया गया है। इस पद्य से भोजपुरियों की वीरता का पता चलता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भागलपुर का भगेलुआ भैया
कहलगाँव का ठग्ग ।
पटना के देवालिया,
तीनू नामजद्द ।
सुनि पावै 'भोजपुरिया',
त तुरे तीनों का रग्ग ।

इसी प्रकार से 'भोजपुरिया' शब्द का प्रयोग इस भाषा के लिये भी कई स्थानों में हुआ है। एक उदाहरण लीजिये ।[1]

"कस कस कसमर, किना मगहिया,
का 'भोजपुरिया', की तिरहुतिया ।"

इस पद्य में यह बतलाया गया है मगही भाषा में जहाँ 'किना' का प्रयोग होता है वहाँ भोजपुरी भाषा में 'का' और तिरहुती में 'की' का व्यवहार पाया जाता है ।

भोजपुरी या भोजपुरिया का लिखित प्रयोग—भोजपुरी या भोजपुरिया शब्द का सर्वप्रथम लिखित प्रयोग सन् १७८६ ई० में पाया जाता है। डा० ग्रियर्सन ने रैमन का उद्धरण देते हुए लिखा है कि "१७८६ ई० में दो दिनों के पश्चात् सिपाहियों की एक टुकड़ी चुनार घर (गढ़) की ओर प्रातःकाल शहर से मार्च करती जा रही थी। मैं बाहर निकला और सेना की मार्चिंग को देखने

१. लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया भाग १, सप्लिमेण्ट २, पृ० २२ । भाग ५ पृ० ४७ की अतिरिक्त टिप्पणी ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लगा। वह टुकड़ी खड़ी हो गई। उस टुकड़ी के मध्य से कुछ आदमी निकलकर एक अंधेरी गली में गये और एक मुर्गी को पकड़ लिया। इस पर लोग करुण क्रन्दन करने लगे। तब उनमें से एक आदमी ने 'भोजपुरिया मुहावरे में उनसे कहा, 'इतना मत चिल्लाओ', आज हमलोग फिरंगी के साथ जा रहे हैं। परन्तु हम लोग चेतसिंह के ही नौकर (आसामी) हैं।"[1]

उपर्युक्त उद्धरण में सन् १७८९ ई० में 'भोजपुरिया' शब्द का उल्लेख पाया जाता है। जान बीम्स ने सन् १८६८ ई० में अपने एक लेख में सर्व प्रथम इस भाषा के लिये 'भोजपुरी' शब्द का प्रयोग किया है।[2] संभवत: उन्होंने उस समय में प्रचलित इस शब्द का व्यवहार किया है।

भोजपुरी लोगों के लिये अन्य शब्दों का प्रयोग—भोजपुरी लोग तथा उनकी भाषा के लिये दूसरे शब्दों का भी कहीं-कहीं प्रयोग पाया जाता है। मुगल काल में दिल्ली के आसपास के स्थानों में भोजपुरी लोगों के लिए 'बकसरिया' शब्द का भी प्रयोग किया जाता था। यह शब्द 'बक्सर' से बना हुआ है जो भोजपुर के पास ही एक बड़ा कस्बा है। 'बकसरिया' शब्द का व्यवहार विशेषकर उन सिपाहियों के लिए किया जाता था जो भोजपुरी प्रदेश से आते थे। उस समय में बक्सर एवं भोजपुर ये दोनों ही बड़े प्रसिद्ध भोजपुरी

१. रैमन-सेर मुतावेरिन का अनुवाद। द्वितीय संस्करण। अनुवादक की भूमिका पृ० ६।

2. Journal of the Royal Asiatic Society Part 3, p. 483-508. Notes on the Bhojpuri dialects of Hindi spoken in western Bihar.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केन्द्र थे जहाँ से १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दी में मुगल सेनाओं के लिये सिपाहियों की भर्ती की जाती थी। जब अंग्रेज लोगों ने १८ वीं शताब्दी में बंगाल में अपनी सेना के लिए भर्ती शुरू की तब उन्होंने भी इसी शब्द को बक्सरीज़ (Buxeries) के रूप में अपनाया।[1]

उक्त विभिन्न नामों के अतिरिक्त छपरा (बिहार प्रान्त का एक जिला) की बोली को छपरहिया, बनारस की बोली को बनारसी और बांगर की बोली को 'बँगरही' कहा जाता है। बांगर वह भूमिखंड (ट्रैक्ट) है जो बलिया के पश्चिम तथा आजमगढ़ के पूर्व में स्थित है और जो गंगा के बाढ़ से सिंचित नहीं होता है। इन बोलियों में स्थानीयता का बहुत कुछ पुट है तथा उच्चारण संबंधी एवं व्याकरण संबंधी इनकी निजी विशेषताएँ भी हैं। इसीलिये भोजपुरी के अन्तर्गत होने पर भी अपनी विशेषताओं के कारण इनका पृथक् नामकरण किया गया है।

भोजपुरी भाषा का व्यावहारिक एवं व्यापक प्रयोग तथा प्रेम—भोजपुरी एक जीवन्त भाषा है। जिस प्रकार इसके बोलने वालों में शौर्य, उत्साह एवं जीवट के गुण पाये जाते हैं उसी प्रकार इस भाषा में भी जीवट है। यद्यपि इस क्षेत्र के बालकों की प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा उनकी मातृभाषा (भोजपुरी) में न देकर हिन्दी-खड़ी बोली-में दी जाती है और लिखने पढ़ने की साहित्यिक भाषा भी आधुनिक हिन्दी ही है, फिर भी भोजपुरी भाषा-भाषियों के हृदय में इस भाषा के प्रति प्रेम एवं गौरव बहुत ही अधिक है। भोजपुरी प्रदेश के प्रत्येक भाग में यहाँ के लोग राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक सभी प्रकार के विषयों की मीमांसा अपनी प्रिय मातृभाषा में ही करते हैं। सभी प्रकार की कथा-वार्ता एवं उपदेश इसी भाषा में दिये जाते

1. William Irvin; The army of the Indian Mughuls (लन्दन, १९०३ ई०) पृ० १६८–६९।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं। विवाह, यज्ञोपवीत एवं अन्य अवसरों पर हस्तलिखित निमन्त्रण-पत्र भोजपुरी में लिखकर भेजे जाते हैं। सभी मंगल कृत्यों के अवसर पर स्त्रियाँ भोजपुरी में गीत गाती हैं जिन्हें जनता बड़े रुचि से सुनती एवं पसन्द करती है। विवाह के अवसर पर आजकल जो विदेसिया नाटक खेला जाता है उसकी भाषा ठेठ भोजपुरी होती है। मिर्जापुर, बनारस एवं बलिया जिले में जो कजली गाई जाती है उसकी भाषा विशुद्ध भोजपुरी है। इस प्रकार भोजपुरी का प्रयोग सभी धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक अवसरों पर किया जाता है।

भोजपुरी में साहित्य सृजन के अभाव का कारण—

भोजपुरी भाषा के प्रति इसके बोलने वालों का अगाध प्रेम होने पर भी यह बात अत्यैन्त आश्चर्यजनक है कि इस भाषा में साहित्य की सृष्टि प्रचुर परिमाण में नहीं हुई। इसके अनेक कारण हैं। काशी—जो भोजपुरी प्रदेश में अवस्थित है—भारतीय संस्कृति का केन्द्र रहा है। यहाँ संस्कृत के पठन-पाठन की सदा से प्रधानता रही है। धार्मिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र होने के कारण यहाँ देववाणी (संस्कृत) की ही अभ्युन्नति हुई। अतः भोजपुरी प्रदेश के ब्राह्मणों ने—जिनपर साहित्य सृष्टि का विशेष भार था—अपनी मातृभाषा की उपेक्षा कर देववाणी संस्कृत को ही अपनाया और उसी की अभिवृद्धि में अपने समय एवं शक्ति को लगाया। आज भी काशी में भोजपुरी प्रदेश के ही निवासी पंडितों की प्रधानता और बहुलता है। यदि इन पंडितों ने संस्कृत के अध्ययन में अपना समय न लगाया होता और भोजपुरी की उपेक्षा न की होती तो आज भोजपुरी का इतिहास कुछ दूसरा ही होता।

भोजपुरी में साहित्य सृष्टि के अभाव का दूसरा कारण इस भाषा का राजाश्रय प्राप्त न होना है। प्रोफेसर बलदेव उपाध्याय का मत है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि "भोजपुरी साहित्य की अभिवृद्धि न होने का कारण है राजाश्रय का अभाव। भोजपुर प्रदेश में किसी प्रभावशाली, व्यापक, प्रतापी नरेश का पता नहीं चलता। अधिकतर इसमें किसानों की ही बस्तियाँ हैं। किसी गुणग्राही नरेश का आश्रय न मिलने से इस भाषा का साहित्य समृद्ध न हो सका।"[1]

भोजपुरी ने किसी प्रतिभाशाली कवि की प्रतिभा का प्रसाद प्राप्त नहीं किया। व्रजभाषा को सूर और बिहारी का वैभव प्राप्त था, अवधी को जायसी और तुलसी ने अपनाया था। मैथिली को विद्यापति के रूप में 'कविता कामिनी कान्त' मिला था और बंगला को चंडीदास के रूप में 'मधुर कोमल कान्त पदावली' कहने वाला उपलब्ध हुआ था। परन्तु भोजपुरी को न तो तुलसी की ही प्रतिभा मिली और न बिहारी की वाग्विभूति, न विद्यापति का कोकिल कंठ और न चंडीदास का मधुर पद।

ऐसी दशा में समृद्ध, साहित्यिक भाषाओं के समान इसका न पनपना स्वाभाविक ही है। भोजपुरी प्रदेश में कवि अवश्य हुए परन्तु उनमें से अधिकांश ने हिन्दी (खड़ी बोली) को ही अपनी प्रतिभा का माध्यम बनाया। इस कारण भी भोजपुरी साहित्य की वृद्धि न हो सकी।

भोजपुरी भाषा के अध्ययन का प्रारम्भ—आधुनिक इंडो आर्यन भाषाओं के वैज्ञानिक अध्ययन का इतिहास इस देश में कुछ बहुत पुराना नहीं है। आज से लगभग १०० वर्ष पूर्व सर राम-कृष्ण गोपाल भंडारकर और डा० बीम्स के अनुसन्धानों से इसका श्रीगणेश होता है। भोजपुरी के संबंध में सर्वप्रथम अनुसन्धानकर्ता डा० बीम्स थे जिन्होंने अपने 'नोट्स आन दि भोजपुरी डायलेक्ट्स आफ हिन्दी

---

१. डा० कृष्णदेव उपाध्याय–भोजपुरी लोक गीत भाग १ (भूमिका से उद्धृत)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्पोकेन इन वेस्टर्न बिहार' शीर्षक एक लेख में इसका वैज्ञानिक विश्लेषण किया है।[१] श्री जे० आर० रीड ने भी अपने 'नोट्स आन दि डायलेक्ट करेन्ट इन आजमगढ़' शीर्षक लेख में भोजपुरी भाषा के व्याकरण पर प्रचुर प्रकाश डाला है।[२] सन् १८८० ई० में डा० ए० एफ० रुडाल्फ हार्नली ने अपना सुप्रसिद्ध व्याकरण ग्रन्थ प्रकाशित किया जिसमें पूर्वी हिन्दी (Eastern Hindi) के अन्तर्गत भोजपुरी व्याकरण की बहुमूल्य सामग्री उपस्थित की गई है।[३] डा० हार्नली ने बनारस की पश्चिमी भोजपुरी को पूर्वी हिन्दी का नाम दिया है। भाषा शास्त्र की दृष्टि से इस ग्रन्थ का मूल्य बहुत अधिक है क्योंकि यह ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक दोनों शैलियों से युक्त है। डाक्टर ग्रियर्सन ने भोजपुरी भाषा के अध्ययन के लिये प्रचुर सामग्री उपस्थित की है जिसका विस्तृत वर्णन अग्रिम अध्याय (भोजपुरी साहित्य) में किया जायेगा। यहाँ इतना जान लेना आवश्यक है कि इस विद्वान् ने भोज-पुरी के अध्ययन के लिये सामग्री ही नहीं उपस्थित की, बल्कि स्वयं इस विषय में प्रशंसनीय शोध कार्य किया है। डा० ग्रियर्सन द्वारा सम्पादित लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इंडिया, भाग ५, खण्ड २ में भोजपुरी भाषा संबंधी पठनीय सामग्री प्रचुर परिमाण में दी गई है। इस विशालकाय ग्रन्थ में भोजपुरी नामकरण का कारण, इस भाषा के बोलने वालों की संख्या, इसका क्षेत्र विस्तार तथा इसका व्याकरण दिया गया है। साथ ही भोजपुरी की विभिन्न बोलियों के उदाहरण भी उनकी विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए प्रस्तुत किये गये हैं। अन्त में इस भाषा का स्थूल व्याकरण (स्केलेटन ग्रामर) भी दिया गया है। इस प्रकार ग्रियर्सन ने इस ग्रन्थ में भोजपुरी भाषा संबंधी विपुल सामग्री उपस्थित की है। इनकी दूसरी पुस्तक 'सेवेन ग्रामर्स आफ दि डायलेक्ट्स एण्ड सबडायलेक्ट्स आफ

१. जे० आर० ए० एस० भाग ३ (१८६८ ई०) पृष्ठ ४८६–५०८।
2. **Settlement report for 1877 Appendix No. 2.**
3. **Comparative grammer of the Gaudian languages.**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दि बिहारी लैंग्वेज' है, जिसमें भोजपुरी भाषा का व्याकरण विस्तृत रू में पाया जाता है। इसी ग्रन्थ में बिसेसरप्रसाद नामक किसी सज्जन द्वारा संग्रहीत छपरा जिला की भोजपुरी के उदाहरण स्वरूप कु कथाओं और संभाषणों का अनुवाद भी प्रस्तुत है। इन्होंने अप 'बिहार पीजेण्ट लाइफ' नामक पुस्तक में हजारों भोजपुरी शब्दों क संग्रह विभिन्न वस्तुओं के नाम के रूप में किया है।

फेलेन की न्यू हिन्दुस्तानी इंगिलिश डिक्शनरी'— जो सन् १८७६ ई में प्रकाशित हुई थी—में भोजपुरी शब्दों, गीतों, मुहावरों और कहावतें का अच्छा संग्रह उपलब्ध होता है। परन्तु उपर्युक्त सभी विद्वान का कार्य प्रशंसनीय होने पर भी अधूरा या आंशिक ही रहा है किसी भी विद्वान् ने भोजपुरी भाषा की सर्वांगीण गवेषण नहीं की।

जबलपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी के विभागाध्यक्ष डाक्टर उद नारायण तिवारी एम. ए., डि. लिट् ने भोजपुरी भाषा के समस्त अंगों पर वैज्ञानिक पद्धति से 'दि ओरिजिन एंड डेवलेपमेण्ट आ भोजपुरी' नामक थीसिस में गंभीरतापूर्ण विचार किया है।

डा० तिवारी का यह ग्रन्थ अत्यन्त विद्वत्ता पूर्ण है। यह भोजपु भाषा के उद्भव और विकास पर प्रचुर प्रकाश डालता है। इस ग्र रत्न में विद्वान् लेखक ने भोजपुरी के व्याकरण की वैज्ञानिक त सर्वाङ्गीण मीमांसा प्रस्तुत की है। तिवारी जी की यह थीसिस अंग्रे में है परन्तु इसका हिन्दी रूपान्तर "भोजपुरी भाषा और साहित के नाम से राष्ट्रभाषा परिषद्, बिहार, पटना से प्रकाशित चुका है।

डा० कृष्णदेव उपाध्याय ने भी अपने 'भोजपुरी लोक गीत' भाग १ अन्त में कुछ भोजपुरी शब्दों का संग्रह उपस्थित किया है तथा भोजपु लोक-गीत भाग २ पुस्तक के अन्त में दी गई टिप्पणियों में इन्होंने अ भोजपुरी शब्दों की भाषा-शास्त्र-संबंधी निरुक्ति प्रस्तुत की है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी भाषा का क्षेत्र विस्तार—भोजपुरी भाषा लगभग ५० हजार वर्गमील में फैली हुई है। इसकी सीमान्त रेखायें किसी एक प्रान्त की राजनैतिक सीमा से सम्बद्ध नहीं हैं। भोजपुरी भाषा के प्रधान केन्द्र उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिले और बिहार प्रान्त के पश्चिमी जिले हैं। परन्तु इन जिलों के अतिरिक्त भी यह भाषा अन्य स्थानों में बोली जाती है।[1]

गंगा नदी से उत्तर इस भाषा (भोजपुरी) की सीमा मुजफ्फरपुर जिले के पश्चिमी भाग की मैथिली है। फिर इस नदी के दक्षिण इसकी सीमा गया और हजारीबाग की मगही से मिल जाती है। वहाँ से यह सीमान्त रेखा दक्षिण-पूर्व की ओर हजारीबाग की मगही भाषा के उत्तर घूमकर सम्पूर्ण रांची पठार और पलामू एवं रांची जिले के अधिकांश भागों में फैल जाती है। दक्षिण की ओर यह सिंहभूमि की उड़िया और भूतपूर्व गंगपुर स्टेट की स्थानीय भाषा से परिसीमित होती है। यहाँ से भोजपुरी की सीमा भूतपूर्व जसपुर रियासत के मध्य से होकर रांची पठार के सरहद के साथ-साथ दक्षिण की ओर जाती है जिससे सरगुजा और पश्चिमीय जसपुर की छत्तीसगढ़ी भाषा से इसका विभेद होता है। पलामू के पश्चिमीय प्रदेश से गुजरने के बाद भोजपुरी भाषा की सीमा उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले के दक्षिण भाग में फैलकर गंगा तक पहुँचती है। यहाँ यह गंगा के बहाव के साथ-साथ पूर्व की ओर घूमती है और बनारस के निकट पहुँचकर गंगा पार कर जाती है। इस प्रकार मिर्जापुर जिले के गांगेय प्रदेश के केवल अल्प भाग में ही इसका प्रसार है। मिर्जापुर के दक्षिण में छत्तीस-गढ़ी से इसकी भेंट होती है परन्तु उस जिले के पश्चिमी भाग के साथ-साथ उत्तर की ओर घूमने पर इसकी

१. भोजपुरी भाषा के विस्तार के लिये देखिए— मानचित्र।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सीमा पश्चिम में पहले बघेलखंड की बघेली और फिर अवध की अवधी से जा लगती है।

गंगा को पार करके भोजपुरी की सीमा फैजाबाद के जिले में सरयू नदी के निकट टाँडा तक सीधे उत्तर की ओर चली जाती है। इस प्रकार इसका विस्तार बनारस जिले की पश्चिमीय सीमा के साथ-साथ जौनपुर जिले के बीचो-बीच और आजमगढ़ जिले के पश्चिमीय भाग के साथ फैजाबाद जिले के आरपार फैल जाता है। टाँडा तहसील में इसका विस्तार सरयू नदी के साथ-साथ पश्चिम की ओर घूमता है और तब उत्तर की ओर हिमालय के नीचे की श्रेणियों तक बस्ती जिले को अपने में शामिल कर लेता है। इस विस्तृत भूभागके अतिरिक्त—भोजपुरी थारु नामक जंगली जातियों द्वारा, जो गोंडा और बहराइच के जिलों में बसती हैं, मातृभाषा के रूप में व्यवहृत की जाती हैं।[1]

भोजपुरी भाषा-भाषियों की संख्या—जिस भूभाग में भोजपुरी भाषा बोली जाती है उसका क्षेत्रफल ५० हजार वर्गमील है। भोजपुरी भाषा उत्तर प्रदेश के पूर्वी नौ जिलों—वाराणसी, मिर्जापुर, जौनपुर, गोरखपुर, देवरिया, बस्ती, आजमगढ़ गाजीपुर और बलिया—में बोली जाती है। बिहार राज्य के शाहाबाद (आरा), सारन (छपरा), चम्पारन, पलामू तथा राँची—इन पाँच जिलों में इसका व्यवहार मातृभाषा के रूप में किया जाता है। इसके

---

१. भोजपुरी भाषा के विस्तार के विवेचन के लिये देखिए।
(क) डा० ग्रियर्सन : लि० स० इ० भाग ५, खण्ड २, पृ० ४०—४१।
(ख) डा० तिवारी : दि ओरिजिन एण्ड डेवलेपमेण्ट आफ भोजपुरी
(ग) भोजपुरी भाषा और साहित्य, (रा० भा० प०, पटना)। इस विषय में डा० तिवारी का मत ग्रियर्सन के मत से थोड़ा भिन्न है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अतिरिक्त मध्य प्रदेश के भूतपूर्व जसपुर स्टेट में इसके बोलने वाले पाये जाते हैं। बंगाल के विभिन्न जिलों में—विशेषकर कलकत्ता नगर में, बम्बई के अन्धेरी, जोगेश्वरी आदि उपान्त्य स्थानों में लाखों की संख्या में भोजपुरी भाई बसे हुए हैं जिन्हें वहाँ के लोग 'भइया' के प्रिय नाम से पुकारते हैं। आसाम प्रदेश के चाय बगानों (टी गार्डेन्स) में लाखों भोजपुरिया काम करते हैं। इसप्रकार भोजपुरी भाषा भाषियों की संख्या पाँच करोड़ से भी अधिक है।

साहसी भोजपुरी लोगों ने अपने शौर्य तथा पराक्रम के बलपर अनेक उपनिवेशों में भी अपना निवेश बना लिया है। मारीशस, फीजी, ट्रीनीडाड, ब्रिटिश गाइना आदि द्वीपों को बसाने का श्रेय इन्हीं भोजपुरियों को प्राप्त है जो वहां आज से एक सौ वर्ष पहिले शर्तबन्दी कुली के रूप में गये थे। परन्तु अपनी कठोर मिहनत और मजदूरी के कारण इन द्वीपों को सस्य श्यामला भूमि बना दिया। मारीशस तथा फिजी टापुओं में निवास करने वाले ७०% प्रतिशत व्यक्ति भोजपुरी भाषा-भाषी हैं। दक्षिण अफ्रिका, केनिया तथा सुदूर दक्षिण अमेरिका में स्थित ब्रिटिस गाइना—जो अपनी स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 'गुआना' के नाम से पुकारा जाने लगा है—में भी भोजपुरी भाषा का व्यवहार पाया जाता है। इस प्रकार बिहार और उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त इस देश के अन्य प्रदेशों में तथा विदेशों में भी भोजपुरी बोलने वालों की संख्या को सम्मिलित कर लिया जाय तो समस्त भोजपुरी भाषा-भाषियों की संख्या का महायोग (टोटल) साढ़े पाँच करोड़ ५,५०,०००,०० से भी अधिक है। जहां भोजपुरी की अन्य बहिनों—मैथिली और मगही—के बोलने वालों की संख्या दो करोड़ से भी कम है वहाँ भोजपुरी को मातृभाषा के रूप में व्यवहार में लाने वालों की संख्या का साढ़े पाँच करोड़ से भी अधिक होना कुछ कम आश्चर्य का विषय नहीं है। इतना ही नहीं, बल्कि भोजपुरी भाषियों की संख्या हिन्दी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की अन्य बोलियों—अवधी, ब्रज, बघेली, बुन्देलखण्डी और छत्ती- गढ़ी—के भाषा-भाषियों से भी कहीं बहुत अधिक है।[1]" "इस प्रकार भोजपुरी अपनी हमजोलियों से ही संख्या तथा विस्तार में बढ़ी नहीं है, प्रत्युत दूर स्थित हिन्दी की अन्य बोलियों—ब्रज और छत्तीस- गढ़ी से भी कही बढ़ चढ़कर है।[2]

किम्बहुना, यदि भाषा-भाषियों की दृष्टि से विचार करें तब भोजपुरी भारत की अन्य समृद्ध भाषाओं—जैसे बँगला गुजराती और मराठी- को भी चुनौती देने में समर्थ है। जहाँ तक इन पंक्तियों के लेखक को जनसंख्या गणना के आँकड़ों से, ज्ञात है इन तीनों समृद्ध भाषाओं में किसी एक भाषा के बोलने वालों की संख्या तीन करोड़ से अधिक नहीं है। जब कि भोजपुरी भाषा-भाषियों की संख्या इनके डेढ़ गुना भी कहीं अधिक है। सन् १९७१ ई० की जनसंख्या गणना के अनुसार भारत की जनसंख्या ५५००००००० (पचपन) करोड़ के लगभग है इस प्रकार भोजपुरियों की संख्या इस देश के निवासियों की संख्या का $\frac{१}{११}$ वाँ भाग है अर्थात् इस महान् देश के निवासियों में से प्रत्येक एगारहवाँ व्यक्ति भोजपुरिया है।

जहाँ भारत की अन्य भाषायें इस देश की सीमा के भीतर ही बोली जाती हैं, वहाँ भोजपुरी ने इस देश की परिधि का अतिक्रमणकर सुदूर उपनिवेशों में भी अपना सुदृढ़ आसन जमा लिया है। इस प्रकार भोजपुरी को एक अन्तरराष्ट्रीय भाषा होने का गौरव प्राप्त है। भाषा-भषियों की प्रचुर संख्या के अतिरिक्त क्षेत्र विस्तार की दृष्टि से भी यह भाषा अपना सानी नहीं रखती। अतः इन दोनों दृष्टियों से भी यह अद्वितीय है

---

१. डा० कृष्णदेव उपाध्याय—भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन पृ० २६।

२. डा० कृष्णदेव उपाध्याय—भोजपुरी लोक-गीत भाग १ (भूमिका पृ० १७)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी का अन्य बिहारी भाषाओं से पार्थक्य

बिहारी भाषा के अन्तर्गत तीन भाषायें मानी जाती हैं—१. मैथिली २. मगही और ३. भोजपुरी। परन्तु प्रथम दोनों भाषाओं—मैथिली और मगही- का आपस में इतना अधिक साम्य है कि बिहारी को दो भागों में ही विभक्त करना अधिक उचित प्रतीत होता है (१) पूरबी बिहारी—जो मैथिली और मगही के भेद से द्विविध मानी गई है और (२) पश्चिमी बिहारी (भोजपुरी)। इन दोनों में उच्चारण तथा रूपगत अनेक भेद दीख पड़ते हैं। मैथिली में विशेषतः और मगही में सामान्यतः 'अकार' का उच्चारण बँगला के उच्चारण से मिलता-जुलता है क्योंकि 'अ' की ध्वनि ओकार के समान मुँह को गोलाकार बनाने से होती है। परन्तु भोजपुरी में आकार का उच्चारण पश्चिमी हिन्दी के समान नितान्त सुस्पष्ट अकार ही होता है। भोजपुरी में अकार की एक विभिन्न ध्वनि है जो 'हवे' (है) शब्द में वर्तमान है। यह कुछ विचित्र ध्वनि है और कुछ 'ओकार' के समान मुँह को अधिक गोल बनाने पर उच्चरित होती है।

मध्यम पुरुष के लिये मैथिली और मगही में आदरार्थ बोलते हैं—'अपने'। परन्तु भोजपुरी में इसके लिये 'रउरे' शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह 'रउरे' तथा 'राउर' (आपका) का प्रयोग भोजपुरी का स्पष्ट संकेत है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'मोहि लागत दुख रउरे लागा' और 'जो राउर अनुशासन पाऊँ' आदि चौपाइयों में इन्हीं भोजपुरी शब्दों का प्रयोग किया है। सहायक क्रिया के रूप में या सत्तार्थक धातु के लिये मैथिली में 'छइ' या 'अछि' का प्रयोग किया जाता है। मगही में 'हइ' प्रयुक्त होता है। परन्तु भोजपुरी में 'बाटी', 'बाड़ी' या 'बानी' का प्रयोग होता है। भोजपुरी के इस 'बाटे' या 'बाटी' का उपर्युक्त दोनों बोलियों में नितान्त अभाव है। 'हइ' (है) क्रिया—जो प्रायः तीनों बोलियों में समान रूप से पाई जाती है—का रूप, भिन्न-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भिन्न कालों में, भोजपुरी में इतना विभिन्न होता है कि इसे पहिचान भी कठिन है कि ये एक ही क्रिया के विभिन्न रूप हैं। प्रधान क्रिया रूप में भोजपुरी में वर्तमान काल में 'देखी ला' (मैं देखता हूँ) प्रयोग पाया जाता है जो अपनी विशेषता रखता है। ऐसा प्रयोग अ बोलियों में उपलब्ध नहीं होता।

संज्ञाओं के रूपों में भी भेद दीख पड़ता है। भोजपुरी में ष कारक का प्रत्यय 'के' है परन्तु मैथिली और मगही में इसके लिये 'कर' या 'केर' का प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त भोजपु के षष्ठीकारक की संज्ञा का रूप ओबलीक होता है। परन्तु अन्य दो बोलियों में इसका नितान्त अभाव है। अन्ततोगत्वा भोजपुरी व्याकरण यहाँ के निवासियों के स्वभावानुसार व्यावहारिक तथा सो है। यह मैथिली व्याकरण के समान जटिल तथा विषम नहीं। डाक्ट ग्रियर्सन[1] ने इन बोलियों के पार्थक्य को स्पष्ट करते हुए एक प्राचीन को उद्धृत किया है :

> कस कस कसमर, किना मगहिया,
> का भोजपुरिया, की तिरहुतिया।

भोजपुरी का अन्य भाषाओं (ब्रज) से पार्थक्य—आ कल हिन्दी के सामान्य नाम से जो भाषा अभिहित की जाती उसको भाषा-विज्ञान वेत्ताओं ने तीन बड़े भागों में बाँटा है। १. पश्चि हिन्दी (शौरसेनी अपभ्रंश से उत्पन्न) २. विहारी (मागध अपभ्रंश से उत्प तथा पूर्वी हिन्दी (अर्धमागधी प्राकृत से उत्पन्न)। मागधी से उत्पन्न होने कारण भोजपुरी का सम्बन्ध बँगला के साथ जितना घनिष्ट है, उत पश्चिमी हिन्दी ब्रजभाषा आदि से नहीं। ब्रजभाषा और बिहारी का

---

१. सेविन ग्रामर्स, पार्ट १, पृष्ठ १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनके क्रिया पदपर दृष्टि डालने से स्पष्ट हो जाता है। संस्कृत के 'क' प्रत्ययान्त भूतकालिक क्रिया पद 'मारितः' का परिवर्तन दोनों भाषाओं में देखने से पारस्परिक पार्थक्य साफ दीखता है। शौरशेनी भाषा में 'मारितः' का अपभ्रंश हुआ 'मारितो', जो प्राकृत के नियमानुसार 'मारिदो' बन गया। इससे ब्रज भाषा का भूतकालिक पद 'मार्यो' तैयार होता है। यही कारण है कि शौरसेनी से उद्भूत समस्त भाषाओं तथा बोलियों में 'इओ' प्रत्यय भूतकाल की सूचना के लिये धातु के अन्त में प्रयुक्त होता है। इधर मागधी में तकार के स्थान पर लकार होने से 'मारितः' 'मारिलो' के रूप में परिवर्तित हो गया है। मागधी से संभूत भाषाओं का भूतकाल इसी प्रकार 'ल' प्रत्यय के योग से बनता है।

•

इस सम्बन्ध में एक बात और ध्यान देने योग्य है। ब्रज भाषा के भूतकालिक रूपों में पुरुष का निर्देश कथमपि नहीं होता। 'मार्यो' कहने से यह पता नहीं चलता कि किसने मारा। उसने, तूने या मैंने मारा। इस पुरुष सम्बन्धी त्रुटि का मार्जन मागधी से उत्पन्न भाषाओं में स्पष्ट दीख पड़ता है। इनमें क्रिया के आगे पुरुष वाचक सर्वनाम का संक्षिप्त रूप भी जुटा हुआ मिलता है। बँगला में 'मारिलाम' (मैंने मारा) पद के आगे 'आमि' (मैंने) शब्द देने की कुछ भी आवश्यकता नहीं है। क्योंकि उत्तम पुरुष का द्योतक सर्वनाम पद 'आम्' के रूप में उसमें पहले से जोड़ा गया है। इसी प्रकार भोजपुरी के भूतकालिक रूप 'मारलों' में भूतकालिक 'ल' प्रत्यय के साथ उत्तम पुरुष का सूचक 'ओं' भी विद्यमान है। 'मरिलसि' और 'मरिलन' में प्रथम पुरुष के एक वचन और बहुवचन सूचक सर्वनाम पद क्रमशः रखे गये हैं।

भविष्य काल में भी ठीक इसी प्रकार का विभेद है। ब्रज भाषा में जहाँ 'ह' प्रत्यय के योग से भविष्य कालिक रूप तैयार होता है, वहाँ बिहारी में 'ब' प्रत्यय ही उसका काम करता है। ब्रज भाषा का 'चलिहै' शब्द संस्कृत के 'चलिष्यति' से बना हुआ है और चलिस्सदि, चलिहइ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के रूपान्तरों को पार कर वर्तमान रूप में आता है। किन्तु भोजपु का भविष्यकालिक रूप 'चलबि' चलिष्यति से न निकलकर कर्मकर्तृ 'चलितव्यम्' से निकला है। चलितव्यं, चलितब्बं—अलिअब्बं—चल रूपों को पार कर यह शब्द 'चलब' के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत है परन्तु भोजपुरी में इस विषय में एक विचित्रता दीख पड़ती है। इस उत्तम और मध्यम पुरुष के रूपों में तो 'ब' ही लगता है परन्तु प्रथ पुरुष में व्रज तथा अवधी की भाँति 'ह' प्रत्यय जोड़ा जाता है।

भोजपुरी की विभिन्न बोलियाँ

भोजपुरी के तीन प्रधान भेद माने गये हैं—१. आदर्श भोजपु (स्टैंडर्ड भोजपुरी) २. पश्चिमी भोजपुरी ३. नागपुरिया। इसके अतिरिक्त इसकी दो और उपबोलियाँ (Sub-dialects) भी हैं जो मधेसी और थारू के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन बोलियों का वर्णन क्रमशः प्रस्तुत किया जाता है।

विस्तार—आदर्श भोजपुरी प्रधानतया शाहाबाद, बलिया, गाजीपु जिले के पूर्वी भाग, और घाघरा (सरयू) एवं गंडक के दोआब में बोल जाती है। यह एक लम्बे भूभाग में फैली हुई है। पश्चिमी भोजपुरी जैसा कि इसके नाम से विदित होता है। आजमगढ़, जौनपुर, बनारस गाजीपुर का पश्चिमी भाग, तथा मिर्जापुर जिले के उस दक्षिणी भाग में बोली जाती है जो गंगा से सम्बद्ध है। नगपुरिया–छोटा नागपुर में बोली जाती ह। मधेसी चम्पारन जिले में प्रयुक्त होती है और थारू बोली गोंडा और बहराइच के जिलों के उस प्रदेश में बोली जाती है जो नेपाल की तराई से सम्बद्ध है। इस प्रकार भोजपुरी की विभिन्न बोलियों का विस्तार बहुत बड़ा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१) आदर्श भोजपुरी

आदर्श भोजपुरी भोजपुर गाँव के चारों ओर बोली जाती है। अतः इस स्थान के आसपास बोली जानेवाली बोली का आदर्श माना जाना स्वाभाविक ही है। आदर्श भोजपुरी एक विस्तृत भूभाग में फैली हुई है। इसमें अनेक स्थानीय विशेषतायें पाई जाती हैं। इसमें सबसे प्रधान एवं स्पष्ट प्रतीयमान पार्थक्य यह है कि जहाँ शाहाबाद, बलिया और गाजीपुर आदि दक्षिणी जिलों में सहायक क्रिया में 'ड' का प्रयोग किया जाता है वहाँ उत्तरी जिलों में 'ट' का प्रयोग होता है। इस प्रकार उत्तरी आदर्श भोजपुरी में जहाँ 'बाटे' का प्रयोग किया जाता है वहाँ दक्षिणी आदर्श भोजपुरी में 'बाड़े' प्रयुक्त होता है। उदाहरणार्थ बलिया की आदर्श भोजपुरी में हम कहते हैं 'मोहन घर में बाड़े'। परन्तु गोरखपुर की भोजपुरी में 'मोहन घर में बाटें' कहा जाता है। सारन जिले के उत्तर और मध्य में क्रिया के भूतकाल का एक विचित्र रूप पाया जाता है जिसमें 'ल' के स्थान पर 'उ' जोड़ा जाता है। परन्तु यह बात अन्यत्र नहीं पाई जाती है। उत्तरी गोरखपुर की भाषा में शाहाबाद की भाषा से अन्तर अवश्य है परन्तु विशेष नहीं। पश्चिमी गोरखपुर और बस्ती जिले की भाषा में आदर्श भोजपुरी से थोड़ा अन्तर है। और तो क्या, पूर्वी गोरखपुर—आधुनिक देवरिया जिला—और पश्चिमी गोरखपुर की भाषा में भी अन्तर है जो वहाँ की बोली सुनने पर तत्काल ही मालूम हो सकता है। पूर्वी गोरखपुर की भाषा को गोरखपुरी कहा जाता है और पश्चिमी गोरखपुर एवं बस्ती जिले की भाषा को 'सरवरिया' नाम दिया गया है।

'सरवरिया' शब्द 'सरुआर' से निकला हुआ है जो 'सरयूपार' का अपभ्रंश रूप है। सरयूपार का अर्थ है वह प्रदेश जो सरयू (घाघरा) के उस पार हो। इस प्रकार इस प्रदेश के अन्तर्गत बहराइच

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोंडा, बस्ती, गोरखपुर एवं सारन—ये सभी जिले आते हैं। परन्तु स्थानीय परम्परा के अनुसार आजकल सरुआर उसी प्रदेश को कहते हैं जो फैजाबाद जिले के अयोध्या से लेकर देवरिया जिले के मझौली स्थान तक फैला हुआ है।

सरवरिया बोली समस्त बस्ती जिले में और गोरखपुर के पश्चिमी भाग में बोली जाती है। सरवरिया और गोरखपुरी में शब्दों—विशेषतः संज्ञा शब्दों—के प्रयोग में भिन्नता पाई जाती है।

बलिया और सारन दोनों जिलों में आदर्श भोजपुरी बोली जाती है परन्तु कुछ शब्दों के उच्चारण में दोनों में अन्तर है। बलिया और शाहाबाद के लोग 'ड' का उच्चारण 'ड़' ही करते हैं, परन्तु छपरा वाले इसका 'र' उच्चारण करते हैं। उदाहरणार्थ–जहाँ बलिया निवासी 'घोड़ा-गाड़ी आवत बा' कहता है, वहाँ छपरहिया जवान 'घोरा गारी आवत बा' बोलता है। इस प्रकार आदर्श भोजपुरी में भी स्थान विशेष के कारण थोड़ा अन्तर दीख पड़ता है। आदर्श भोजपुरी का नितान्त निखरा एवं विशुद्धतम रूप बलिया जिले में बोला जाता है जिसका केवल एक ही उदाहरण यहाँ देना पर्याप्त होगा। यह उद्धरण ठेठ आदर्श भोजपुरी का है :—

"कपिलदेव आजु हम तोहरा के ढेर दिन पर देखत बानीं। अतना दिन तू काहां रहला हा। जब हम तोहरा बारे में तोहरा गांव के लोगन से पूछत रहलीं हाँ, मगर केहू हाल साफ ना बतावत रहल हा। अब कहऽ तोहरा घर के सभी बेकति अच्छी तरह बाड़ी नूऽ।

जीजोध भइया! तू का पूछत बाड़ऽ। हमरा हाल के सुनबऽ तऽ तोहरो दुःख बियापि औ आंखिन में से लोर गिरावे लगबऽ। जब हम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एठां से घरे गइलीं तब से गिरहती के काम में बझलीं दोसर केहू हमरा घर में अइसन नइखे जेकरा से हमके एकी लेहजा के आराम मिलि। काहे से कि हमरा बाप के अँखिये जबाब दे दिहलिस अउर हमरा जेठ जमा भाई हमरा पहुँचला का पहिले ही परदेस चलि गइले अउर तब से एको चिठियो ना भेजले हा। हमार काका जी अपना लरिका बाला समेत अलगे रहे ले। एही सब ओजह से हम राति दिन फिकिर ओ तरदुत से पिसाइल रहीं ले। महाराज के तहसीलदार मालगुजारी खातिर दुइ पियादा तनात कइले बाड़े। मामा से रुपया मँगलीं त ऊ साफे इनकार कइले। खीसा ह कि—

"घर के मारल बन में गइलीं
बन में लागल आगि।
बनँ बेचारा का करे,
जब करम में लागल आगि॥"[1]

(२) पश्चिमी भोजपुरी

पश्चिमी भोजपुरी फैजाबाद, जौनपुर, आजमगढ़, बनारस, गाजीपुर का पश्चिमी भाग और मिर्जापुर जिले के मध्य भाग में बोली जाती है। जैसा कि पहिले लिखा गया है, पश्चिमी भोजपुरी इंडोआर्यन भाषा परिवार के पूर्वी समुदाय की सबसे पश्चिमी सीमान्त बोली है जो अवधी आदि से कुछ समानता रखती है।[2] पश्चिमी भोजपुरी के

---

१. लि० स० इं० भाग ५ खंड २ पृ० २१०।

2. Western Bhojpuri is, in fact the most western outpost of the eastern group of the Indo-Aryan family of languages and possesses some of the features of its cousins to its west.

लि० स० इं० भाग ५, खंड २, पृ० २४८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्याकरण का विस्तृत उल्लेख श्री जे० आर० रीड ने किया है पर यह बहुमूल्य सामग्री कठिनाई से उपलब्ध सेटेलमेण्ट (बन्दोबस्त रिपोर्ट की फाइलों में दबी पड़ी है।[1] डाक्टर हार्नली ने अपने सुप्रसि व्याकरण में 'पूर्वी' हिन्दी के नाम से इस बोली का सुन्दर तथा विद्वत पूर्ण व्याकरण लिखा है।[2] इस प्रकार भोजपुरी की इस बोली व्याकरण के संबंध में प्रचुर सामग्री उपलब्ध होती है।

आदर्श भोजपुरी एवं पश्चिमी भोजपुरी में अन्तर—

आदर्श भोजपुरी और पश्चिमी भोजपुरी में बहुत अधिक अन्त है। संभवतः आदर्श भोजपुरी का अन्य बोलियों से इतना अधि पार्थक्य नहीं है जितना पश्चिमी भोजपुरी से। पश्चिमी भोजपुरी करण कारक के लिये क्रिया के आगे 'अन' प्रत्यय का प्रयोग दी पड़ता है, जो आदर्श भोजपुरी में बिल्कुल ही नहीं है। पश्चिमी भोजपु में आदरसूचक के लिये 'तुँह' का प्रयोग किया जाता है परन्तु आद भोजपुरी में इसके लिये 'रउरा' प्रयुक्त होता है। दोनों बोलियों सहायक क्रिया के दो रूप पाये जाते हैं—'बानी' और 'हवीं'। पर पश्चिमी भोजपुरी में हवीं का रूप 'होईं' पाया जता है।

उच्चारण की विशेषता से भी अनेक प्रभेद दृष्टिगोचर होते हैं बलिया जिले में उत्तम पुरुष के रूपों के साथ कुछ अनुस्वार सा मिल रहता है। अतः उसके उच्चारण के लिये नाक की सहायता अनिवा

---

1. J. R. Read-Report on the settlement operation in the district of Azamgarh· Appendix 2 and 3, Allahabad 188
2. A. F. R. Hornley-A comparative grammar of the Gaudia languages. London, 1880.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूप से ली जाती है। परन्तु पश्चिमी भोजपुरी में अनुनासिक का नाम तक नहीं है। 'मैंने काम किया' इसके लिये बलिया जिला के लोग सानुनासिक बोलेंगे 'हम काम कइलीं'। परन्तु पश्चिमी भोजपुरी बोलने वाले बनारसी लोग कहेंगे 'हम काम कइली'। उच्चारण का यह स्पष्ट भेद प्रत्येक मनुष्य को मालूम हो सकता है। इसी प्रकार से अन्य पुरुष के बहुवचन के रूप में भी अन्तर है।

संज्ञा के रूपों में भी एक प्रसिद्ध विशेषता है। जहाँ आदर्श भोजपुरी में संबंध कारक में 'के' का प्रयोग करते हैं, वहाँ पश्चिमी भोजपुरी में 'का' या 'कई' प्रयुक्त होता है। 'के' का परिवर्तित रूप तो 'का' बन जाता है परन्तु 'कई' का 'के' होता है। यह बात नीचे के उदाहरणों से स्पष्ट हो जायगी।

आदर्श भोजपुरी	पश्चिमी भोजपुरी
१. ओह देस का एक सहर का रहवइया का पास।	१. ओह देस के एक सहर के रहवैये के पास।
२. कपटी का मरला के कुछुओ दोख नइखे।	२. कपटी के मरले कई किछउ दोख नाहीं।
३. अपना बाप से कलहन	३. अपने बाप से कहलें।
४. ओह गाँव का कवनो आदमी।	४. ओह गाँव के कवनो आदमी।

सम्प्रदान कारक का परसर्ग (प्रत्यय) इन दोनों बोलियों में भिन्न-भिन्न पाया जाता है। आदर्श भोजपुरी में सम्प्रदान का परसर्ग 'लागि' है, परन्तु बनारस की पश्चिमी भोजपुरी में इसके लिये 'के' बदे' या 'वास्ते' प्रयुक्त होता है। जहाँ आदर्श भोजपुरी में 'तोहरा लागि उड़बों प्रकास' बोलते हैं वहाँ बनारसी बोली में 'किनली है रजा लाल दुसाला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तोरे बदे' कहा जाता है। इन दोनों उदाहरणों से यह पार्थक्य स्पष्ट प्रतीत होता है। एक और उदाहरण लीजिये :—

आदर्श भोजपुरी :—

"तलवा झुरइले कँवल कुम्हलइले
हंस रोयेला बिरह वियोग।
रोवत बाड़ी सरवन के माता
के काँवर ढोइहैं मोर।"

पश्चिमी भोजपुरी :—

"हम खरमिटाव कैलीहा रहिला चबाय के।
भेंवल धरल बा दूध में खाजा तोरे 'बदे'।
अत्तर तू मल के रोज नहायल कर रजा।
बीसन भरल धयल बा कराबा तोरे 'बदे'।
जानीला आजकल में झनाझन चली रजा।
लाठी, लोहांगी, खंजर और बिछुआ तोरे 'बदे'।"

पश्चिमी भोजपुरी में, हिन्दी भाषा के समान, विशेषण विशेष्य के लिंग, वचन और कारक के अनुसार बदलता रहता है। परन्तु आदर्श भोजपुरी में ऐसी बात नहीं पाई जाती। पश्चिमी भोजपुरी में कहते हैं "बड़े बेटे क इ घर; बड़ी बेटी; बीस बड़े-बड़े घर।" इस प्रकार विशेषण 'बड़ा' शब्द विशेष्य के लिंग और वचन के अनुसार बदलता रहता है। परन्तु आदर्श भोजपुरी में 'नीमन बेटा', 'नीमन बेटी' या 'सुन्नर लड़का', 'सुन्नर लड़की' में नीमन और सुन्नर का रूप परिवर्तित नहीं होता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस प्रकार नगपुरिया, मधेसी, सरवरिया और थरुई आदि का पारस्परिक विभेद उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना आदर्श भोजपुरी और पश्चिमी भोजपुरी का है। बलिया की बोली और बनारस की बोली—जो दोनों की प्रतिनिधि स्वरूप है—में उच्चारण तथा रूपगत इतनी विभिन्नता है कि एक बार सुनने पर ही भेद स्पष्ट मालूम पड़ जाता है। बलिया की आदर्श भोजपुरी का उदाहरण पीछे दिया जा चुका है। यहाँ बनारस जिले में बोली जाने वाली पश्चिमी भोजपुरी का नमूना प्रस्तुत किया जाता है[1]—

"एक आदमी के दुइठे बेटवा रहलन। ओ में से छोटका अपने बाप से कहलेस हे बावू ! जौन कुछ माल असबाब हमरे वखरा में पड़े तौन हमके दे द। तव ऊ आपन कमाई दूनों के बाँट दिहलेस। थोरिके दिन के बितले लहुरा का बेटवा सब माल समेट के बड़ी दूर परदेश चल गएल और उहाँ सब धन लुचपन में फूक दिहलेस। जब सब गवाँय चुकल तब ओहि देस में वड़ा काल पड़ल।"

(३) नगपुरिया

नगपुरिया भोजपुरी की ही एक बोली है जो छोटा नागपुर में बोली जाती है। इस पर छत्तीसगढ़ी बोली का प्रभाव अधिक पड़ा हुआ है। नगपुरिया को 'सदानी' या 'सद्री' के नाम से भी पुकारते हैं। मुंडा लोग इसे 'डिकु काजी' कहते हैं। 'सदरी' का अर्थ यहाँ की प्रादेशिक भाषा में 'बसे हुए' लोगों से है। अतः इस भाषा का 'सदरी' नामकरण का कारण यही जान पड़ता है कि यह एक स्थान पर बसे हुए लोगों की भाषा है, खानाबदोशों की नहीं।

---

१. बनारसी बोली के विशेष विवरण के लिए देखिये—
वाचस्पति उपाध्याय—नागरी प्रचारिणी पत्रिका में "बनारसी बोली" शीर्षक लेख।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रेवेरेण्ड इ० एच० ह्विटली ने इस भाषा का बड़ा ही पांडित्यपूर्ण व्याकरण लिखा है।[१] नगपुरिया आदर्श भोजपुरी से व्याकरण संबंधी अनेक बातों में पार्थक्य रखती है। नगपुरिया के अनेक शब्द और धातु रूपों को छत्तीसगढ़ी से लिया गया है। इस बोली में संज्ञा में निश्चयात्मकता लाने के लिये 'हर' शब्द जोड़ा जाता है तथा किसी संज्ञा का बहुबचन बनाने के लिए उसमें 'मन' प्रत्यय प्रयोग में लाया जाता है। परन्तु यह बात आदर्श भोजपुरी में नहीं पाई जाती है। इसी प्रकार दोनों के पार्थक्य के और भी अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं।[२]

(४) मधेसी

मधेसी शब्द संस्कृत के "मध्यदेश" से निकला है जिसका अर्थ है बीच का देश। चूँकि यह बोली तिरहुत की मैथिली बोली और गोरखपुर की भोजपुरी के बीच वाले स्थानों में बोली जाती है, अतः इसका नाम 'मधेसी (अर्थात् वह बोली जो इन दोनों प्रदेशों के मध्य या बीच में बोली जाय) पड़ गया है। मधेसी चम्पारन जिले में बोली जाती है। यह प्रायः कैथी वर्णमाला में लिखी जाती है। मैथिली से इसमें अनेक बातों में समानता उपलब्ध होती है।

(५) थारू

नैपाल की तराई में जो थारू लोग वसते हैं उनकी कोई अपनी भाषा नहीं है। जहाँ कहीं भी वे पाये जाते हैं वहाँ उन्होंने अपने आस-पड़ोसियों की भाषा को पूर्ण रूप से अपना लिया है। ये थारू लोग

१. रेवेरेन्ड ई० एच० ह्विटले—नोट्स आन दि गनवारी डाइलेक्ट आफ लोहरदगा (छोटा नागपुर) कलकत्ता १८९६.
२. लि. स. इं. भाग ५, खण्ड २ पृ० २७७-२८२.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहराइच से चम्पारन जिले तक पाये जाते हैं और ये भोजपुरी की विकृत रूप वाली बोली को बोलते हैं। यह एक विशेष उल्लेखनीय बात है कि गोंड़ा और बहराइच जिले के थारू लोग भोजपुरी बोलते हैं, जबकि वहाँ की भाषा पूर्वी हिन्दी है। हागसन (Hodgson) ने इनकी भाषा के ऊपर बड़ा ही अच्छा प्रकाश डाला है।[1] यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि मधेसी और थारू भोजपुरी की उपबोलियाँ हैं। भोजपुरी की प्रधान बोलियाँ तो तीन ही हैं, जिनका ऊपर उल्लेख किया जा चुका है।

भोजपुरी भाषा का स्थूल व्याकरण

भोजपुरी का व्याकरण मगही और मैथिली की भाँति जटिल नहीं है। कुछ विशेष अवस्थाओं को छोड़ कर इसकी क्रिया का रूप कर्ता पर अवलम्बित रहता है। कर्म के कारण क्रिया पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। आदर्श भोजपुरी में उत्तम पुरुष के एकवचन (मैं) का प्रयोग प्राय: नहीं होता है, इसके स्थान में प्राय: सदा बहुवचन (हम) का ही प्रयोग होता है। लेकिन पश्चिमी भोजपुरी में ऐसी बात नहीं है। हाँ, आदर्श भोजपुरी में, पद्यों में एकवचन का प्रयोग अवश्य मिलता है परन्तु वह भी बहुत कम। इसी प्रकार मध्यम पुरुष के एक वचन का प्रयोग तिरस्कार सूचित करता है, जैसे 'तू बाड़ऽ'। इसलिए इसके लिए भी बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। आदर्श भोजपुरी में आदरसूचक के लिये 'रउरा' या 'रौरा' शब्द का प्रयोग होता है जो अन्य उप-बोलियों में नहीं पाया जाता। इस आदरसूचक "रउरा" शब्द के साथ मध्यमपुरुष के स्थान पर उत्तम पुरुष के बहुवचन का प्रयोग किया जाता है जैसे "रउरा आईं", परन्तु साधारण मध्यम पुरुष में "तू लोग आव" प्रयुक्त होता है।

---

१. हागसन—ज. ए. सो. बं, भाग २६ (१८५७), पृ० ३१७ और इसके आगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी में वर्तमानकालिक रूप एक विशेष प्रकार का होता जो नैपाली के भविष्यकालिक रूप से समानता रखता है और स्वतः भविष्यकाल में प्रयुक्त भी होता है। यह वर्तमानकालिक में "ला" जोड़ने से बनता है। डा० हार्नली के मतानुसार इस " का अर्थ "गया" है, जो हिन्दी के भविष्य कालिक रूप "गा" की भां प्रयुक्त होता है। जिस प्रकार हिन्दी में 'देखूँगा' और नैपाली में 'देखू बोलते हैं उसी प्रकार से भोजपुरी में 'देखीला' बोला जाता है। इस व्यवहार प्रायः वर्तमानकाल में होता है।

भोजपुरी अपना निजी धातु-रूप रखती है। जिस प्रकार मगही 'ही' और मैथिली में 'छी' का प्रयोग होता है उसी प्रकार से भोज में बाटी, बाड़ी या बानी का प्रयोग किया जाता है। इन्हीं सहा क्रियाओं को अन्य धातुओं में जोड़कर क्रियायें बनाई जाती हैं।

संज्ञा

भोजपुरी में प्रत्येक संज्ञा पद के तीन रूप होते हैं:—१. लघु २. ३. दीर्घतम। जैसे—घोड़ा, घोड़वा, घोड़उवा; बेटा, बेटवा, बेट नाऊ, नउवा, नउअवा। इनमें मूल या लघु रूप शब्द-कोश में स पाता है परन्तु दीर्घ और दीर्घतम रूप जनता के मुख में निवास क है। 'वा' स्वार्थिक प्रत्यय है, परन्तु कभी-कभी दूसरे योग से बने में अर्थभेद भी पाया जाता है। 'घोड़वा ले आव' इस वाक्य में हम अभिप्राय किसी खास घोड़े से है।

भोजपुरी में एकवचन से बहुवचन बनाने के लिये नि, न्ह, या न प्र जोड़ते हैं। जैसे घोड़ा से घोड़नि, घोड़न्ह, या घोड़न रूप बनते हैं। प्रकार घर से घरनि, घरन्ह या घरन बहुवचनान्त रूप बनेंगे। क कभी समूहसूचक 'लोग' और 'सभ' शब्दों के योग से भी बहुव बनाया जाता है। जैसे, राजा से राजा लोग और राजा सभ। प्रकार आदमी से 'आदमी लोग' और 'आदमी सभ'।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वितीय खण्ड

भोजपुरी-साहित्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय २

भोजपुरी साहित्य का काल-विभाजन

भोजपुरी साहित्य के काल विभाजन का कार्य बड़ा कठिन है। इसका कारण यह है कि (१) इस साहित्य के आदिकाल की कोई निश्चित रेखा नहीं खिचीं जा सकती। यों तो सिद्धों के द्वारा लिखित ग्रन्थों में भोजपुरी के कुछ संज्ञा और क्रियाओं के पद उपलब्ध होते हैं परन्तु उन क्रिया पदों को देखकर इन सिद्ध कवियों को भोजपुरी का कवि मान बैठना तर्क संगत नहीं होगा। इनकी कविता की भाषा के संबंध में केवल इतना ही कहा जा सकता है कि इन्होंने जिस अतीत काल में अपने काव्य की रचना की थी उस समय भोजपुरी, मैथिली, मगही और बंगला भाषाओं की सत्ता पृथक् पृथक् विद्यमान नहीं थी। इनका इतना विकास नहीं हुआ था जितना आज कल दिखाई पड़ता है। पृथक् भाषा के रूप में विकास न होने के कारण ये भाषायें सभी आपस में मिली जुली थी। यही कारण है कि इन सिद्धों की कविता में इन सभी भाषाओं का मिला जुला रूप उपलब्ध होता है।

संभवतः यही कारण है कि इन सिद्धों की भाषा के संबंध में विद्वानों में बड़ा मतभेद है। महामहोपाध्याय डा० हर प्रसाद शास्त्री इस भाषा को बंगला कहते हैं; तो महापण्डित त्रिपिटकाचार्य राहुल सांकृत्यायन ने इसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मगही की संज्ञा प्रदान की है। 'भोजपुरी कवि और काव्य' के लेखक श्रीद् शंकर प्रसाद सिंह इसे भोजपुरी के नाम से अभिहित करते हैं। परन्तु वास् में इन सिद्धों की भाषा में उपर्युक्त तीनों भाषाओं का मिश्रण पाया जाता है।

"आजु भूसुक बंगाली भइली" इस पंक्ति में 'भइली' क्रिया पद के सिद्ध भूसुक को भोजपुरी का आदि कवि मानना उचित नहीं होगा। बात मैथिल-कोकिल विद्यापति के विषय में भी कहीं जा सकती है। महा विद्यापति का जन्म ऐसे समय हुआ था जब मैथिली, भोजपुरी और भाषायें अपने प्रारम्भिक रूप में थी। इन तीनों भाषाओं का मिला जुला विद्यापति के समय में विद्यमान था। अतः इन्होंने जिस भाषा का अपने काव्य के लिये किया वह यही मिश्रित भाषा थी। यही कारण है विद्यापति को बंगाली, मैथिली और भोजपुरी लोग समान रूप से अपना मानते हैं। विद्यापति ने लिखा है कि "कखन हमार दुःख हरवऽ ए भोला इस पंक्ति को देखकर 'कखन' शब्द के कारण विद्यापति को मैथिली कहना अथवा "हरवऽ" क्रिया के आधार पर इन्हें भोजपुरी का कवि का दावा करना औचित्य से बहुत दूर है। सच तो यह है कि विद्यापति प्रतिभा का प्रसाद उपर्युक्त तीनों भाषाओं को समान रूप से प्राप्त हुआ यद्यपि इस वातको कभी अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि मिथिला अमराइयों में ही इस मैथिल-कोकिल की काकली अधिक मुखरित हुई थी।

कहने का सारांश केवल इतना ही है कि किसी कवि की कवि भोजपुरी के दो चार संज्ञा शब्दों तथा क्रिया पदों को देखकर उसे भोजपुरी का कवि होने की घोषणा करना, भाषा और साहित्य के गंभीर आलो- और इतिहास लेखक का कार्य नहीं है। हाँ, इन सिद्ध कवियों तथा विद्या की भाषा के संबंध में केवल इतना ही कहा जा सकता है कि इन्होंने भो के कुछ शब्दों का प्रयोग अपनी कविता में अवश्य किया है।

(२) भोजपुरी साहित्य के इतिहास के काल विभाजन की दूसरी क

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई है कि इसके किसी एक काल में कोई एक ही काव्य-प्रवृत्ति परिलक्षित नहीं ती। उदाहरण के लिए सन्त कवियों को लिया जा सकता है। महात्मा बीर के समय से भोजपुरी में निर्गुण वानी लिखने का जो श्री गणेश हुआ इस बीसवीं शताब्दी में भी अविच्छिन्न रूप से चला जा रहा है। अतः सी स्थिति में भोजपुरी के सन्तसाहित्य को काल (या तिथि) की कारा में धना बड़ा कठिन कार्य है। हिन्दी साहित्य के भक्ति—काल और रीतिकाल समय—निर्णय के समान भोजपुरी के सन्त साहित्य का काल-विभाजन रना सरल कार्य नहीं है।

(३) इस कार्य में तीसरी क़ठिनाई यह है कि भोजपुरी में जिन सन्त कवियों था आधुनिक कवियों ने अपने काव्य की रचना की हैं उनमें से अधिकांश वियों का न तो काल-निर्णय ही निश्चित रूप से किया जा सकता है और न तो नका जीवन-वृत्त ही उपलब्ध है। ऐसी दशा में इतिहास लेखक का कार्य बड़ा ठिन हो जाता है। उदाहरण के लिये सरभंग संप्रदाय के कवियों को लिया ा सकता है। इस सम्प्रदाय के अनेक कवियों ने भोजपुरी को अपनी प्रतिभा का साद प्रदान किया है। इन्होंने विहार राज्य की भूमि को अपने जन्म से पवित्र या। परन्तु ये किस काल में, किस तिथि को पैदा हुए, इनका जीवन वृत्त क्या ा, इनकी रचनायें कितनी हैं ? इन विषयों के संबंध में कुछ विशेष सूचना स नहीं है। अतः इन कवियों के विषय में कुछ निश्चित रूप से लिखना संभव हीं है।

(४) भोजपुरी साहित्य के इतिहास लिखने में सबसे बड़ी कठिनाई यह कि इसका जितना साहित्य लिखित रूप में अब तक प्राप्त है उससे सौ गुना अधिक क-साहित्य अलिखित अवस्था में विद्यमान हैं। भोजपुरी का मौखिक साहित्य—से लोक साहित्य की संज्ञा प्राप्त है—प्रचुर परिमाण में उपलब्ध होता यह लोक साहित्य इतना अगाध है कि शताधिक शोधी, अनुसन्धानकर्ता ड़ों वर्षों तक इसका संकलन तथा प्रकाशन करते जाँय, तौभी यह समाप्ति का नाम नहीं ले सकता। इस प्रचुर लोक साहित्य का निर्माण किस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि ने किया और किस काल में इसकी रचना हुई, इसका पता लगाना अ
है। अतः ऐसी परिस्थिति में इस लोक—साहित्य का काल विभाजन
संभावना की परिधि से परे समझना चाहिए।

भोजपुरी के सन्त साहित्य की भाँति इसके लोक साहित्य का प्रवाह
अक्षुण्ण रीति से चला आ रहा है। लोक कवि आज भी मौन धारण
बैठा नहीं है; बल्कि उसकी सरस वाणी समय समय पर मुखरित हो
है। यद्यपि वर्तमान काल में जिन कविताओं का निर्माण हो रहा है
लोक साहित्य की संज्ञा प्रदान नहीं की जा सकती, फिर भी उन्हें लोक
की रचना तो स्वीकार करना ही पड़ेगा। कुछ आधुनिक लोक कवि
रचनाओं में अपना नाम देने की कृपा नहीं करते, ऐसी स्थिति में शुद्ध
प्राचीन लोक साहित्य से इन आधुनिक कवियों की कविताओं को
करने का काम कठिन हो जाता है। इन्हें केवल उनकी कविता के वर्ण्य
के आधार पर ही पहिचाना जा सकता है।

जो आधुनिक कविगण भोजपुरी भाषा को अपनी काव्य प्रतिभा
माध्यम बना रहे हैं उनमें से अधिकांश कवियों की कविता पुस्तक
अभी तक अप्रकाशित है। वे भोजपुरी के कवि-सम्मेलनों में अवश्य
पड़ जाते हैं परन्तु पुनः उनका दर्शन नहीं होता। ऐसी स्थिति में उनके
और जीवन-वृत्त का विवरण ज्ञात न होने के कारण उनके संबंध में
लिखना खतरे से खाली नहीं है। इन्हीं उपर्युक्त विषम परिस्थितियों के
में रहकर भोजपुरी साहित्य के इतिहास-लेखक को अपना कठिन कार्य
पड़ता है।

गत पृष्ठों में वर्णित कठिनाइयों के कारण भोजपुरी साहित्य के इतिहा
तिथिक्रम से विभाजित कर, प्रस्तुत करना अत्यन्त दुष्कर कार्य है।
अपने वर्णन की सुविधा के लिए भोजपुरी भाषा में जो लिखित और मौ
साहित्य आज उपलब्ध है उसके पौर्वापर्य का विचार करते हुए इस सा
को निम्नलिखित पाँच विभागों में विभक्त किया जा सकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१) सिद्ध साहित्य
(२) नाथ-साहित्य
(३) सन्त साहित्य
(४) लोक साहित्य
(५) आधुनिक साहित्य

—: ० :—

(१) सिद्ध-साहित्य

सिद्ध साहित्य में सरहपा, शवरपा, भूसुक, डोम्भिपा, कुक्कुरिपा आदि अनेक प्रसिद्ध कवि हुए हैं जिनकी कविता में भोजपुरी के अनेक संज्ञा तथा क्रिया पद पायें जाते हैं।

(१) सरहपा—यह एक प्रसिद्ध सिद्ध थे। इन्होंने अनेक विद्वत्ता पूर्ण ग्रन्थों की रचना की है। इनकी निम्नांकित कविता बहुत प्रसिद्ध है।

"जह मन पवन न संचरइ,
रवि शशि नाह पवेश।
तहि वट चित्त विसाम करु,
सरहे कहिअ उवेश॥

इस पद्य के प्रथम तथा तृतीय चरण में भोजपुरी के अनेक शब्दों का प्रयोग किया गया है।

(२) शबरपा—ये 'सरहपाद' के शिष्य थे। ये प्रायः श्री पर्वत पर रहा करते थे। ऐसा जान पड़ता है शबरों या कोल-भीलों के सम्पर्क के रहने के कारण ही इनका नाम 'शबरपा' पड़ गया होगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ऊँच ऊँच पावत तिहिं वसइ सवरी वाली ।
मोरंग पीच्छ परहिण सबरी गिवत गुंजरी माली ।।
उजु रे उजु छाड़ि, मा लेहु रे वंक ।
नि अहि वोहि मा जाहु रे लंक ।।

(३) भूसुक—ये नालन्दा के पास एक क्षत्रिय वंश में उत्पन्न हुए थे। ऐसा कहा जाता है कि इनका नाम 'शान्तिदेव' भी था। इनका यह पद प्रसिद्ध है जिसके आधार पर डा० भट्टाचार्य ने इन्हें वंगाली होना सिद्ध किया है जो भ्रामक है।

"आजु भूसुक वंगाली भइली ।
णिय घरिणी चण्डाली लेली ।।

(४) कण्हपा—(सं० ९०० वि० के लगभग) यह भी एक बहुत सिद्ध थे। वज्रयानियों की योग और तंत्र साधनाओं में मद्य तथा स्त्रियों विशेषत: डोमिनी, रज्जकी आदि का अवाध सेवन एक आवश्यक अंग समझा जाता था। सिद्ध कण्हपा डोमिनी का आह्वान करते हुए इस प्रकार कहते हैं।

"नगर वाहिरे डोंबि तोहरि कुड़िया छई ।
छोइ जाइ सो वाह्म नाड़िया ।।
आलो डोम्बि, तोए सम करिब म सांग ।
निघिण कण्ह कपाली जोइ लाग ।।

(५) कुक्कुरिपा—ये ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे। इनका यह विचित्र नाम कैसे पड़ा यह कहना कठिन है। इनका यह पद्य प्रसिद्ध है।

"ससुरी निंद गेल, वहुड़ी जागअ ।
कानेर चोर निलका गइ मागअ ।।
दिवसइ वहुणी काढ़इ ड़रे भाअ ।
रात गइले, कामरू जाअ ।।

—: ० :—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२) नाथ साहित्य

(१) **गोरखनाथ**—'नाथ सम्प्रदाय' के प्रवर्तक गोरखनाथ माने जाते । इनके व्यक्तित्व के विषय में डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी का मत है कि शंकराचार्य के वाद इतना प्रभावशाली महिमान्वित महापुरुष भारतवर्ष में परा नहीं हुआ । इनका जन्म विक्रम की दसवीं शताब्दो में हुआ था । डा० वेदी ने लिखा है कि गोरखनाथ ने लोक भाषा को भी अपने उपदेशों का ाध्यम वनाया। यद्यपि उपलब्ध सामग्री से यह निर्णय करना वड़ा कठिन कि इनकी भाषा का विशुद्ध रूप क्या था तथापि इसमें सन्देह नहीं कि न्होंने अपने उपदेश भोजपुरी में प्रचारित किये थे ।" इनकी कविता में भोज-री का प्रचुर पुट पाया जाता है जो स्वाभाविक है—

"हसिबा, खेलिबा, धारिबा ध्यान,
अहनिसि कथिबा ब्रह्म गियान ।
हसै खेलै न करे मन भंग,
ते निहचय सदा नाथ के संग ॥
× × × ×
गुर कीजै गरिला, निगुरा न रहिला ।
गुर विन ग्यांन न पायला रे भाईला ॥
दूधे धोया कोइला, उजला न होइला ।
कागा कंठै पहुप माल, हँसला न भैला ॥

(२) **भर्तृहरि**—भर्तृहरि लोक भाषा में भरथरी के नाम से प्रसिद्ध हैं । संस्कृत में शतकत्रय के रचयिता राजा भर्तृहरि से इन्हें नितान्त पृथक् व्यक्ति समझना चाहिए । गोपीचन्द और भरथरी के नाम से अनेक लोक गाथायें भोजपुरी-प्रदेश में प्रचलित हैं परन्तु इन्हें भरथरी की रचना मानना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समुचित न होगा। इनके शिष्यों ने संभवतः इन गाथाओं की रचना की है। इनके नाम से एक बारहमासा प्रसिद्ध है जिसकी अन्तिम पंक्तियाँ इस प्रकार

"जेठ तपे मिरड़हवा हो, वहे पवन हाहाय।
'भरथरी' गावे बारहमासा हो, पूजे मनके ग्रास ॥"

—: ० :—

हिन्दी कवि

हिन्दी के अनेक कवियों ने भी अपनी कविता में भोजपुरी शब्दों का प्रयोग किया है। इन कवियों में विद्यापति, जायसी और तुलसी प्रसिद्ध हैं।

(१) जैसा कि पहिले लिखा जा चुका है, महाकवि विद्यापति उस काल उत्पन्न हुए थे जब मैथिली, भोजपुरी और बंगला भाषायें पृथक् पृथक् के रूप में विकसित नहीं हुई थी। इसीलिए इस महाकवि की रचनाओं भोजपुरी के अनेक शब्द पाये जाते हैं। यहाँ कुछ उदाहरण दिये जाते हैं।

"नन्द क नन्दन कदम्ब के तरु तले।
धीरे धीरे मुरली बजाव ॥
× × × ×
कएल माधव हमे अकाज।
हाथ मेराउलि सिंह समाज ॥
जहि खने निअर गमन होअ तोर।
× × × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भागल॰ कपोल अलके लेल साजि ।

× × × ×

पकला केस कुसुम वर वास ।

× × × ×

सुखे न सूतलि कुसुम सयन ।

× × × ×

तहा की धरब पुरुष दूषण, जहा अइसन नारी ॥

इसी प्रकार से विद्यापति की पदावली में अनेक भोजपुरी शब्द उपलब्ध होते हैं ।

(२) जायसी ने अपने काव्य पद्मावत की रचना अवधी भाषा में की है । इनकी भाषा ठेठ अवधी है जिसे ग्रामीण लोग अपने व्यवहार में लाते हैं । इन्होंने भी भोजपुरी के संज्ञा शब्दों तथा क्रिया पदों का प्रयोग अपने काव्य में किया है । जब पद्मावती पालकी पर चढ़कर रतनसेन से मिलने के लिए जाती है तब कवि कहता है कि—

साजि सबै चंड़ोल चलाये ।

सुरँग ओहार मोति जनु लाये ॥

इसमें 'ओहार' शब्द भोजपुरी का है जिसका अर्थ है पालकी का पर्दा । जायसी एक स्थान पर कहते हैं कि—

"का पछिताव आउ जो पूजी" ।

अर्थात् आयु के समाप्त हो जाने पर पश्चात्ताप करना व्यर्थ है । हिन्दी में 'पूजना' का अर्थ पूजा अथवा आदर सत्कार करना होता है । परन्तु भोजपुरी में इसका अभिप्राय किसी वस्तु या कार्य के समाप्त होने से है । इसी अर्थ में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जायसी ने इस शब्द का प्रयोग यहाँ किया है इसी प्रकार योगी रतनसेन कठिन मार्ग का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि—

"ओहि मिलान जौ पहुँचै कोई।
तब हम कहब पुरुष भल सोई॥
बिच बिच नदी खोह औ नारा।
ठाँवहि ठाँव बैठ बटपारा॥

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि कहब क्रिया और खोह, नारा, ठ और बटपार (बटवार) शब्द ठेठ भोजपुरी भाषा के हैं।

(३) गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने 'रामचरित मानस' की रचना अव भाषा में की है। परन्तु यह निःसंकोच रूप से कहा जा सकता है तुलसी रामायण में पचास प्रतिशत से भी अधिक शब्द भोजपुरी भाषा से लिये हैं। इसका कारण यह है कि गोस्वामी जी लोक-संग्रही व्यक्ति थे। अ जहाँ से भी उन्हें सुन्दर तथा समीचीन शब्दावली उपलब्ध हुई उसका प्रयो करने में उन्होंने संकोच नहीं किया है। दूसरा कारण यह भी है कि गोस्वा जी ने भोजपुरी प्रदेश (विशेष कर बलिया और गाजीपुर के जिलों) प्रचुर भ्रमण किया था। काशी—जो काशिका भोजपुरी का केन्द्र है— में अनेक वर्षों तक निवास करने का भी गोस्वामी जी को अवसर मिला था ऐसी परिस्थिति में उनकी कृतियों में भोजपुरी की शब्दावली का प्रचुर परिमाण में उपलब्ध होना स्वाभाविक ही है। 'रउरे' और 'राउर' शब्दों—जिसक अर्थ भोजपुरी में 'आप' है—का प्रयोग रामायण की निम्नांकित पंक्तियों हुआ है।

"भलउ कहत दुःख रउरेहि लागा।

× × × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जो राउर अनुसासन पाऊँ।
कन्दुक इव ब्रह्माण्ड उठाऊँ ॥

× × × ×

जस दूलह तस बनी बराता।

यहाँ पर जइसन, तइसन भोजपुरी शब्दों के लिए जस, तस का प्रयोग किया गया है। वर के लिए दुलहा का प्रयोग—जैसा कि गोस्वामी जी ने किया है—भोजपुरी में होता है। कहीं कहीं तो तुलसीदास ने अत्यन्त ठेठ और ग्रामीण भोजपुरी के शब्दों को भी अपने रामायण में स्थान दिया है। जैसे गँव (अवसर, या मौका) और लूगा (साड़ी) शब्द। उदाहरण—

जिमि गँव तकइ किरात किसोरी।

इन शब्दों के प्रयोग से पता चलता है कि गोस्वामी जी की पहुँच ठेठ भोजपुरी के शब्द भाण्डार तक भी थी। गोस्वामी जी के द्वारा प्रयुक्त भोजपुरी के कुछ और ठेठ शब्दों को नीचे दिया जाता है।

नीक (अच्छा)—मरनु नीक तेहि जीवन चाही।
ढ़ारना—(उड़ेलना)—नारि चरित करि ढ़ारइ आँसू।
बिआह (विवाह)—करनवेध, उपवीत बिआहा।
खाँचना (रेखा खींचना)—रेख खँचाइ कहऊँ वलु भाषी।
माखी (मक्खी)—भामिनि भइहु दूध कई माखी।
पुरब (पूर्ण करना)—जौ विधि पुरब मनोरथ काली।
ठाढ (खड़ा होना)—उतरि ठाढ़ भये सुर सरि रेता।
उतराई (नदी को नाव से पार करने का शुल्क)
"कहेउ कृपाल लेहि उतराई"।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसी प्रकार से गोस्वामी जी ने हज़ारों भोजपुरी के ठेठ शब्दों का प्र अपनी कृतियों में किया है।

गत पृष्ठों में सिद्धों, नाथ-सम्प्रदाय तथा हिन्दी के कुछ प्रधान एवं वि कवियों का उल्लेख केवल यही दिखलाने के लिए यहाँ किया गया है इन्होंने भोजपुरी के कुछ संज्ञा तथा क्रिया-पदों का प्रयोग अपनी कविता किया है। परन्तु इस आधार पर इन्हें भोजपुरी का कवि स्वीकार करना जैसा कि दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह ने किया है—अनुचित ही नहीं होगा इन कवियों के साथ अन्याय करना भी कहा जायेगा।

—:०:—

(३) सन्त-साहित्य

भोजपुरी का सन्त साहित्य-काल सन् १४०० ई० से प्रारम्भ होता इस साहित्य की अक्षुण्ण धारा आज भी अविरल गति से प्रवाहित हो रही इस बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में भी अनेक ऐसे सन्त कवियों का आविर्भाव हुआ जिन्होंने अपनी प्रतिभा का प्रसाद भोजपुरी साहित्य को प्रदान किया इस प्रकार १४०० ई० से लेकर १६०० ई० तक अर्थात् इन पाँच सौ वर्षों में अनेक सन्त कवियों ने इस धरा धाम पर जन्म धारण कर भोजपुरी अपनी सरस कविता का माध्यम बनाया है। पाँच सौ वर्षों के इस सुदीर्घ काल में अनेक सन्त सम्प्रदायों का उदय हुआ जिनकी कृपा से भोजपुरी साहि की श्री वृद्धि हुई है। इन सम्प्रदायों में प्रधान ये हैं।

(१) निर्गुण सम्प्रदाय
(२) सगुण सम्प्रदाय
(३) सरभंग सम्प्रदाय
(४) सखी सम्प्रदाय
(५) शिवनारायणी सम्प्रदाय
(६) बावरी सम्प्रदाय

—:०:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१). निर्गुण सम्प्रदाय

इन सन्त सम्प्रदायों में कबीरदास के द्वारा प्रवर्तित निर्गुण सम्प्रदाय सर्व म है। सच तो यह है कि यहीं से भोजपुरी साहित्य का इतिहास प्रारम्भ होता पिछले पृष्ठों में जिन सिद्ध तथा नाथ सम्प्रदाय के कवियों का उल्लेख किया है उन्होंने अपने काव्य में भोजपुरी के कतिपय शब्दों का प्रयोग मात्र या है। परन्तु भोजपुरी साहित्य की धारा को अक्षुण्ण रूप से प्रवाहित ने का श्रेय इन्हीं निर्गुण सन्त कवियों को प्राप्त है जिनके अग्रणी कबीर स जी थे।

कबीरदास का जन्म सम्वत् १४५६ वि० अर्थात् १४०० ई० के लगभग या था। अतः इसी तिथि को भोजपुरी साहित्य के श्री गणेश की तिथि कार किया जा सकता है। कबीर ही ऐसे कवि थे जिनकी रचना शुद्ध भोजपुरी उपलब्ध होती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कबीर की भाषा को 'सधुक्कड़ी षा' की संज्ञा प्रदान की है। कहीं कहीं इसको 'खिचड़ी' भाषा भी कहा या है, जिसका भाव यह है कि इनकी भाषा में राजस्थानी, पंजाबी, खड़ी ली और ब्रजभाषा का मिश्रण पाया जाता है। परन्तु अपनी भाषा के म्बन्ध में कबीर ने स्वयं यह घोषणा की है कि हमारी बोली पूरब की । मुझे तो उचित रूप से वही देख या परख सकता है जो स्वयं पूर्बी प्रदेश ा निवासी हो—

"बोली हमरी पुरुब की, हमें लखे नहीं कोय।
हमको तो सोई लखै, जो धुर पुरब का होय॥"

यहाँ 'पूरब की बोली' का तात्पर्य भोजपुरी भाषा से ही समझना चाहिए। ० रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कि "इनकी (कबीर की) भाषा सधुक्कड़ी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अर्थात् राजस्थानी, पंजाबी मिली खड़ी बोली है; पर रमैनी और 'सबद' गाने के पद हैं जिनमें काव्य की ब्रजभाषा और कहीं कहीं पूरबी बोली भी व्यवहार है।"१ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का भी यही मत है कबीर के बीजक की भाषा भोजपुरी है।२

भोजपुरी भाषा के सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० उदय नारायण ति कबीर की भाषा के सम्बन्ध में लिखते हैं कि "यह बोली (भोजपुरी) बन के पश्चिम मिर्जामुराद थाने से दो तीन मील और आगे तमंचाबाद तक जाती है। वस्तुतः यही बोली (भोजपुरी) कबीर की मातृ-भाषा थी। प्रसिद्ध है कि कबीर पढ़े लिखे न थे। अतएव अपनी मातृ-भाषा में र करना उनके लिए सर्वथा स्वाभाविक था।"३

सुप्रसिद्ध भाषा-शास्त्री तथा भाषा-विज्ञान वेत्ता डाक्टर सुनीति कु चाटुर्ज्या ने भोजपुरी भाषा के संबंध में लिखा है कि इस भाषा का स पुराना नमूना कबीर के कतिपय पद्यों में पाया जाता है। यद्यपि इन्हों (कबीरदास ने) तत्कालीन हिन्दी कवियों की प्रथा के अनुसार साधारणत ब्रजभाषा और कभी कभी अवधी में कविता की है, परन्तु उसमें भोज

---

१. आचार्य शुक्ल-हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ८२ (१५ वां संस्करण

२. कबीर (हिन्दी ग्रन्थरत्न माला, बम्बई)।

३. डा० तिवारी—भोजपुरी भाषा और साहित्य पृ० २६ (विहार राष्ट्र परिषद्, पटना)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का पुट यत्र तत्र परिलक्षित हो जाता है। और उन्होंने जहाँ "अपनी भोजपुरिया" का प्रयोग किया है वहाँ व्रजभाषा के रूप कभी कभी दिखाई पड़ जाते हैं।१

कबीर की भाषा के संबंध में डा० चटर्जी द्वारा प्रयुक्त "अपनी भोजपुरिया" शब्द ध्यान देने योग है। इस उल्लेख से स्पष्ट प्रतीत होता है कि कबीरदास की भाषा भोजपुरी ही थी और इसी में इन्होंने अपने काव्य की रचना की थी।

इस प्रकार आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा डा० उदय नारायण तिवारी आदि शीर्षस्थ विद्वानों ने कबीरदास की भाषा को भोजपुरी स्वीकार किया है।

कबीरदास जी काशी में पैदा हुए थे जो पश्चिमी भोजपुरी का केन्द्र हैं। उनका लालन पालन भी यहीं हुआ था और अपने जीवन के अधिकांश समय को उन्होंने इसी नगरी में ही विताया था। अतः उनकी कविता की भाषा भोजपुरी होना स्वाभाविक ही है। यह दूसरी बात है कि अपनी घुमक्कड़ी प्रकृति के कारण उन्होंने दूसरे प्रदेशों की भाषा का भी अपनी कविता में प्रयोग किया है। परन्तु

---

१. The oldest specimen in this speech (Bhojapuri) that we possess are probably a few songs written by the great religious reformer and mystic teacher of Northern India who flourished in the 15th century. Kabir was an inhabitant of the Bhojapuriya tract, but following the practice of the Hindustani poets of the times, hegenerally used Braj-Bhakha and occassionally Awadhi. His Braj-Bhakha, at times, betrays an eastern-Bhojapuriya form here and there. And when he employs his own Bhojapuriya dialect, Braj-Bhakha and western forms show themselves. ओरिजिन एण्ड डेवेलेपमेण्ड ऑफ दी बैङ्गाली लैग्वेज—भाग १।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

इनके काव्य की प्रधान तथा मूल भाषा भोजपुरी ही है। इन्हीं सब कारणों से कबीर को भोजपुरी का आदि कवि स्वीकार किया जाता है।

डा० सुनीतिकुमार चटर्जी ने अपनी पुस्तक में कबीर के निम्नांकित चार पद्यों को भोजपुरी कविता के नमूने के रूप में उद्धृत किया है:—

(१) कनवा फराइ जोगी जटवा बढ़वले,
दाढ़ी बढ़ाई जोगी होइ गइले बकरा।
कहत कबीर सुनो भाई साधो,
जम दरवजवा बान्हल जइबे पकरा॥

(२) बावा घर रहलू त बवुई कहवलू,
सँइयाँ घर चतुर सेयान।
चेतब घरवा आपन रे॥

(३) का ले जइबो, प्रीतम घर अइबो,
गाँव के लोग सब, पूछन लगिहैं।
तब हम का रे बतइबो॥

(४) सूतल रहलौं में नींद भरि हो,
पिया दिहले जगाय।
चरन कँवल के अंजन हो,
नैना लेलू लगाय॥

डा० उदय नारायण तिवारी ने अपनी पुस्तक[1] में कबीर की भोजपुरी कविता के निम्नलिखित उदाहरण दिये हैं।

(५)

तोर हीरा हिराइल बा किचड़े में। टेक।
कोई ढूँढ़ै पूरब पच्छिम, कोई ढूँढ़ै पानी पथरे में। १।
सुर, नर, मुनि अरु पीर औलिया, सब भूलल बाड़े नखरे में। २।
दास कबीर ये हीरा को परखैं, बाँधि लिहलैं जतन से अँचरे में। ३।

× × × ×

१. डा० तिवारी—भोजपुरी भाषा और साहित्य पृ० २६–२७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(६)

सूतल रहलूँ मैं नींद भरि हो, गुरु दिहलैं जगाई ॥ टेक ॥
चरन कँवल कै अंजन हो, नैना लेलूँ लगाइ ।
जा से निंदिया न आवे हो, नहिं तन अलसाइ ॥१॥
गुरु के वचन निज सागर हो, चलु चली हो नहाइ ।
जनम-जनम के पपवा हो, छिन में डारब धुवाइ ॥२॥
वहि तन कै जग दीप कियो, स्रुत बतिया लगाइ ।
पाँच तत्त कै तेल चुआये, ब्रह्म अगिन जगाइ ॥३॥
सुमति गहनवाँ पहिरलौं हो, कुमति दिहलौं उतार ।
निर्गुन मँगिया सँवरलौं हो, निर्भय सेंदुर लाइ ॥४॥
प्रेम पियाला पियाइ के हो, गुरु दियौ बौरांइ ।
बिरह अगिन तन तलफै हो, जिय कछु न सुहाइ ॥५॥
ऊँच अटरिया चढ़ि बैठलुँ हो, जेहँ काल न खाइ ।
कहै कबीर विचारि के हो, जम देखि डेराय ॥६॥

—:०:—

(७)

अपने पिया की मैं होइवौं सोहागिन—अहे सजनी ।
भइया तजि सइयाँ सँग लागब रे की ॥१॥
सइयाँ के दुअरिया अनहद बाजा बाजै—अहे सजनी ।
नार्चाहं सुरति सोहागिनि रे की ॥२॥
गंग जमुन के औघट घटिया हो—अहे सजनी ।
तेहि पर जोगिया मठ छावल रे की ॥३॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

दे हौं सतगुरु सुतों के बिरवा हो—अहे सजनी।
जोगिया दरस देखे जाइब रे की ॥४॥
दास कबीर यह गवलें लगनियाँ हो—अहे सजनी।
सतगुरु अलख लखावल रे की ॥५॥

कबीर की भोजपुरी कविता के कुछ और उदाहरण निम्नांकित हैं।

(८)

"कलवारिन होइबो, पिअबो मैं मदिरा बनाय।
मन महुआ गुरु गेयान जतन करि, तन के भठी चढ़इबो॥
संत गाँछ के लकड़ी मँगइबो, प्रेम अगिनि धधकइबों।
यह बोतल के बहुत दाम हो, दारु सराब न पइबों॥
सभ सन्तन के लागल कचहरी, दरुअन ढ़ार चलइबों।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, राम नाम गोहरइबों॥"

× × × ×

(९)

"अइली गवनवा के सारी हो, अइली गवना के सारी।
साज समाज ले सँइयाँ मोरे, अइले कहरवाँ चारी॥
बाभन बेचारा दरदियो ना बूझे, जोरत गठिया हमारी।
सखी सब गावेली गारी॥
विधि भइले बाम नाहीं समुझि परे कुछ, बैरिन भइली महतारी।
रो रो अँखियाँ धुमिल भई सजनी, घरवा से देत निकारी॥
भइलीं सब के हम भारी।
माता, पिता बिदा कइ देलन, सुधि नाहीं लेलन हमारी॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धइ बँहिया झकझोरि चढ़वले, केहू ना छोड़ावन हारी।
देखहु यह बरियारी ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, प्यारी गवने सिधारी।
अब की गवनवा लवटि नाहि आवना, करि लेहु भेंट सब नारी ॥
चली मैं ससुरा बिहारी।"

× × × ×

(१०)

कौन ठगवा नगरिया लूटल हो।
चन्दन खाट के बनल खटोलवा, तापर दुलहिन सूतल हो।
उठो री सखी मोरे माँग सँवारो, दुलहा मोसे रूसल हो ॥
आइ जमराज पलंग चढ़ि बइठे, नैनन आँसू टूटल हो।
चार जने मिलि खाट उठवले, चहुँ दिसि धू धू उठल हो ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, जग से नाता टूटल हो।

—:०:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(२) धरमदास

कबीरदास की ही भाँतिधरम दास भी एक निर्गुण सन्त कवि थे जो की परम्परा में उत्पन्न हुए थे ऐसा कहा जाता है कि आप कबीर के शि और उनकी मृत्यु के पश्चात् पन्द्रह वर्ष तक जीवित रहे। कबीर ने क धरमदास को सम्बोधित करते हुए लिखा है। इस कथन से कबीर के इनका संबंध प्रमाणित होता है। कबीरदास की मृत्यु का समय संवत् १ वि० माना जाता है। अतः धरमदास का काल विक्रम की १६ वीं शताब्दी उत्तरार्ध माना जा सकता है। कहते हैं कि कबीर की वाणी का संग्रह शिष्य धर्मदास ने संवत् १५२१ में किया था। अनुमान है कि ये धर्मदास भोजपुरी के उपर्युक्त कवि धरमदास एक ही व्यक्ति थे।

इनके जीवन वृत्त के संबंध में विशेष विवरण ज्ञात नहीं हैं। परन्तु विद्वानों के मतानुसार धरमदास जी बाँधव गढ़ (भूतपूर्व रीवां राज्य निवासी एक बड़े महाजन थे। कबीरदास के चमत्कारों से प्रभावित ह ये इनके पूरे भक्त बन गये। इन्होंने अपना सारा धन लुटा दिया और में आकर गुरु के चरणों में रहने लगे। कबीरदास के परम धाम सिधारने ये ही उनकी गद्दी पर बैठे। आचार्य शुक्ल ने इनके विषय में लिखा है "ये बान्धव गढ़ के रहने वाले और जाति के बनिए थे। बाल्यावस्था में ही हृदय में भक्ति का अंकुर उत्पन्न हो गया था। मथुरा से लौटते समय कबीर के साथ इनका साचात् कार हुआ। संवत् १५७५ वि० में कबीरदास के पर वास होने पर उनकी गद्दी इन्हीं को मिली। ये कबीर की गद्दी पर बीस तक रहे और अत्यन्त वृद्धावस्था में इन्होंने अपना शरीर छोड़ा।

"इनकी रचना थोड़ी होने पर भी कबीर की अपेक्षा अधिक सरल है। कठोरता और कर्कशता नहीं है। इन्होंने पूरबी भाषा का ही व्यवहार है। इनकी अन्योक्तियों के व्यञ्जक चित्र अधिक मार्मिक है क्योंकि इन्होंने ख मण्डन से विशेष प्रयोजन न रख प्रेमतत्व को ही लेकर अपनी वाणी प्रसार किया है।"१

१. पं० रामचन्द्र शुक्ल—हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ० ८४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १९२३ ई० में इनकी वाणी का संग्रह वेलवेडियर प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हुआ है। इनकी कविता के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।

(१)

मितऊ मड़ैया सूनी करि गैलो।

अपना बलम परदेश निकरि गैलो, हमरा के किछुवौ न गुन दै गैलो।
जोगिनि होइके मैं वन वन ढूँढौं, हमरा के विरह वैराग दै गैलो॥
संग की सखी सब पार उतर गइलीं, हम धनि ठाढ़ अकेली रहि गैलों।
धरमदास यह अरजु करतु है, सार सबद सुमिरन दै गैलो॥

× × × ×

(२)

"कहवाँ से जीव आइल, कहवाँ समाइल हो॥१॥
कहवाँ कइल मुकाम, कहाँ लपटाइल हो॥२॥
निरगुन से जीव आइल, सरगुन समाइल हो॥३॥
कायागढ़ कइल मुकाम, माया लपटाइल हो॥४॥
एक बूँद से काया, महल उठावल हो॥५॥
बूँद परे गलि जाय, पाछे पछितावल हो॥६॥"

× × × ×

(३)

मोरा पिया बसे कवने देस हो ?
अपना पिया के ढूँढन हम निकसीं, केउ ना कहत सनेस हो।
पिया कारन हम भइली बावरी, धइलीं जोगिनिया के भेस हो॥
ब्रह्मा, बिसुन, महेस न जाने, का जानसु सारद सेस हो।
धन जे अगम अगोचर पवलन, हम सब सहत कलेस हो॥
उहाँ के हाल 'कबीर' गुरु जानेले आवत जात हमेस हो।

× × × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(४)

पिया बिनु मोहि नीक न लागे गाँव ।
चलत चलत मोरा चरन दुखा गइले, अँखियन परि गइले धूरि ॥
अगवाँ चलत पंथ ना सूझत, पछवाँ परत ना पाँव ॥
ससुरे जाऊँ त पिया न चिन्हइ, नइहर जात लजाऊँ ॥
इहाँ मोर गाँव उहों मोर पाही, बीचवा अमरपुर धाम ॥
'धरमदास' विनवे कर जोरी, तहाँ ठाँव न गाँव ॥

× × × ×

(५)

जमुनियाँ के डारि, ममोरि तोरि देवि हो ।
एक जमुनियाँ के चउदह डरिया, सार सबद लेके मोरि देवि हो ॥
काया कंचन अजब पिआला, नाम बूटी रस घोरि देवि हो ॥
सुरत सुहागिन गजब पिआसी, अमृत रस में वोरि देवि हो ॥
सतगुरु हमरे ज्ञान जवहरी, रतन पदारथ जोरि देवि हो ॥
'धरमदास' के आज गोसांई, जीवन बन्द छोरि देवि हो ॥

—: ० :—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(३) धरनीदास

सन्त कवियों में बावा धरनीदास का नाम प्रसिद्ध है। ये विहार प्रान्त के रन जिले के माँझी नामक गाँव के निवासी थे। ये स्वभाव से ही साधु थे। मिक प्रवृत्ति होने के कारण ये अपना समय हरिभजन में अधिक विताते थे। स्थानीय जमींदार के यहाँ मुन्शी थे। एक दिन अकस्मात् इन्होंने आफिस कागज पत्रों पर एक घड़ा पानी डाल दिया। कारण पूछने पर इन्होंने लाया कि जगन्नाथपुरी में भगवान् के वस्त्र में आग लग गई थी, अतः उसे ा बुझा देने के लिये इन्होंने ऐसा किया। पता लगाने पर यह घटना सच्ची कली। इस घटना के वाद इनको संसार से इतना वैराग्य हो गया कि इन्होंने करी छोड़ दी और विरक्त हो गये। इन्होंने स्वयं लिखा है कि :—

"राम नाम सुधि आई, लिखनी अब ना करबि ए भाई।"

अर्थात् अब मुझे राम, नाम का स्मरण हो गया है, अतः अब मैं लिखने ा काम (मुन्शी का पेशा) न करूँगा। तब से ये विरक्त होकर भगवान् के जन में ही समय विताने लगे थे। इन्होंने अपने विरक्त होने का काल 'प्रेम गास' नामक ग्रन्थ में १६५६ ई० (१७१३ वि०) दिया है, जिससे पता लता है कि इनका आविर्भाव काल सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ था। नके एक पद में औरंगजेव तथा उसके पिता शाहजहाँ का नाम आने से इनका वैराग्य-ाल निश्चित रूप से निर्णीत किया जा सकता है। इन्होंने लिखा है कि :—

"सम्वत् सत्रह सौ चलो गयऊ, तेरह अधिक ताहि पर भयऊ।
शाहजहाँ छोड़ो दुनियाई, पसरी औरंगजेब दुहाई॥
सोच विचारि आतमा जागी, धरनी धरेऊ भेस वैरागी।"

वावा धरनीदास जी सन्त कवि थे। परन्तु ये प्रधानतया सन्त थे। कविता ी इनके हार्दिक भावों की वाहिका मात्र थी।

ग्रन्थ—धरनीदास ने दो ग्रन्थों की रचना की है (१) शब्द प्रगास और २) प्रेम प्रगास। ये दोनों ग्रन्थ मांझी के पुस्तकालय में सुरक्षित हैं। शब्द

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

प्रगास सन् १८८७ ई० में बाबू रामदेव नारायण सिंह, चैनपुर, जिला श (बिहार) द्वारा नासिक प्रेस, छपरा से प्रकाशित किया जा चुका है। प्रगास का भी प्रकाशन हो चुका है। शब्द प्रगास की भाषा अवधी मि भोजपुरी है।

धरनीदास की भोजपुरी कविता में भाषा की प्रौढ़ता, सरसता और स्वा विकता पायी जाती है। इनकी वर्णन शैली बड़ी ही सरल और स्वाभाविक प्रेम प्रगास में पयार छन्द का प्रयोग किया गया है जो बंगला में अधिक पाया जाता है।

इनकी फुटकर कविताएँ 'प्रेम-प्रगास' में संग्रहीत हैं। इनकी कवि में जो भोजपुरी के पद उपलब्ध होते हैं, वे अत्यन्त सरस और सुन्दर इन्होंने उनमें प्रायः सर्वत्र मुहावरेदार भाषा का प्रयोग किया है। इनका श विन्यास और अलंकार-योजना विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

सन्त पलटूदास—जिनका वर्णन आगे किया जायेगा—की भोजपुरी रच में जहाँ हमें विशेष ओज एवं प्रसाद गुण दृष्टिगोचर होता है। वहाँ धरनीदास की कविता में पद-ललित्य प्रचुर परिणाम में उपलब्ध होता काव्य रचना करते समय ये दोनों ही कवि आत्म विभोर हो जाया करते और अपने काव्य-निर्माण कौशल द्वारा पाठकों के चित्त को आकृष्ट कर लेते वावा धरनीदास के धरनी सम्प्रदाय का प्रभाव पश्चिमी बिहार के अति उत्तर-प्रदेश के बलिया जिले में भी पाया जाता है १। इनकी कविता के उदाहरण निम्नांकित हैं :—

(१)

"सुमिरु, सुमिरु मन सिरजनहार,
जिन्ह केला सुर, नर, सरग, पताल। १।

---

१. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी—भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रे पृ० ७७ (साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग १९५५ ई०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रवि ससि अगिनि पवन कइला पानी,
जिआ जन्तु सनि सनि आनि आनि बानी । २ ।
धरती, समुद्र, बन, परबत, सुमेरु,
कमठ, फनीन्द्र, इन्द्र, बैकुंठ, कुबेरु । ३ ।
गुरु के चरण रज सिरवा चढ़ाई,
जिन्ह लेला भव-जल बुड़त बचाई । ४ ।
देवता पितर बिनवलों कर जोरी,
सेवा लेव मानि अल्प बुद्धि मोरी । ५ ।
जहाँ लगि जगत् भगत अवतार,
मोरे त जीवन धन प्रान अधार । ६ ।
तीरथ, बरत चारों धाम शालिग्राम,
माथे हाथे परसि करीलों प्रनाम । ७ ।
छोट मोट जिया जन्तु जहाँ लगि झारी,
बकसि बकसि लेहु औगुन हमारी ।" । ८ ।

(२)

"कि सुभ दिना अज्जु, सखी सुभ दीना
बहुत दिनन्ह पिया बसल विदेस,
आजु सुनल निजु आवन संदेस । १ ।
चित चित्र सरिया में लिहल लिखाई,
हिरदय कवल धइली दियरा लेसाई । २ ।
प्रेम-पलँग तहाँ धइली बिछाई,
नख-सिख सहज सिंगार बनाई । ३ ।
मन सेवकहि दिहु आगु चलाई,
नैन धइल दुई दुअरा बइसाई । ४ ।
धरनी सो धनी पलु पलु अकुलाई,
बिनु पिया जीवन अकारथ जाई । ५ ।

—:०:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(३)

पिया मोरा वसै गउर गढ़, मैं बसों प्राग हो।
सहजहिं लागु सनेह, उपजु अनुराग हो॥
असन, बसन तन भूषन, भवन न भावै हो।
पल पल समुझि मुरति मन, गहवरि आवै हो॥
पथिक न मिलहि सजन जन, जिनहिं जनावो हो।
विहवल विकल घिलखि चित, चहुँ दिशि धावो हो॥
होई अस मोहि ले जाइ, कि ताहि ले आवै हो।
तेकरि होइवों लउँड़िया, जे रहिया बतावै हो॥
तवहि त्रिया पत जाइ, दोसर जब चाहै हो।
एक पुरुष समरथ धन, बहुत न चाहै हो॥
धरनि गति नहिं आनि, करहु जस जानहु हो।

—:o:—

(४)

धरनि एह मन म्रीग भैला हो गुर भैला व्याध।
वान सबद हिये चुभी गैला हो दरसन साध॥
धरनि जेहो धनि विरहनि हो मन धीर्ज न धीर।
विहवल बिकल विलखि चित हो दुबर शरीर॥
धरनी धीरज न रहे हो बीनु बनवारि।
रोअत रकत के अँसुवन हो पंथ निहारि॥
धरनी पिय परवत पर हो हिए चढ़त डेराउ।
कवहिक पाँव डगमगै हो तब काहाँ ठाँउ॥
धरनी धरकत हिय जनु हो, हो करक करेज।
ढरकत भरि-भरि लोचन हो, पिय नाहीं सेज॥

—:o:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(५)

जीव समुझि परबोधहु हो, भैया जनि जानहु खेलवाड़ ।
जा दिन लेखवा पसरिहे हो, भैया करबहि कौन उपाय ।
मंत्र सिखाइ कवन सिधि हो, भैया जंत्र जुगुति नहिं काम ।
नहिं षट करम करम कटि हो, भैया अवर करम लपटाइ ।
ऐंहि बिसवास बिगरब ना हो, भैया देव दोहल दहिनाय ।
'धरनी' जन गुन गावल हो, भैया भजु लेहु आतम राम ।

—:०:—

(६)

डगरि चललि धनि मधुरि नगरिया, बीचे साँवर मतवाला हे ना ॥
अटपटि चलनि लटपटी बोलनि, धाइ लगवले अकँवरिया हे ना ॥
साथ सखिअ सब मुख हूँ ना ब्रोलें, कौतुक देखि भुलानि हे ना ॥
मद केरि बासल भइल मोरि ननदिया, जाइ चढ़ल, ब्रह्मंडे हे ना ॥
तवहि से हो धनि भइली मतवलिया, बिनु मरद रहलो ना जाइ हे ना ॥
प्रेम मगन तन गावे जन 'धरनि,' करिलेहु पंडित बिचार हे ना ॥

—:०:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(४) महाकवि दरियादास

महात्मा दरियादास का जन्म शाहाबाद जिलान्तर्गत ससराम सबडिवीजन के दीनार थाने के धरकंधा ग्राम में हुआ था। आपका जन्म संवत् १६६१ में और निधन संवत् १८३७ में हुआ। फलतः आपका जीवनकाल १४६ वर्ष का था। वेलवेडिअर प्रेस, इलाहाबाद से मुद्रित "दरिया-सागर" में आपका जन्म संवत् १७३१ लिखा है। किंवदन्ती है कि आप उज्जैन (परमार) जाति के क्षत्रिय थे। आपने दरियादासी सम्प्रदाय चलाया। आप एक सन्त-महात्मा और कवि भी थे। आपने अग्रज्ञान, अमरसार, काल चरित्र गणेशगोष्ठी, दरिया, सागर, निर्मल ज्ञान, प्रेममूल ब्रह्म-वेदान्त, ब्रह्म-विवेक, भक्तिहेतु, यज्ञसमाधि, विवेक-सागर, शब्द (बीजक) आदि अनेक कवितावद्ध धर्म-ग्रन्थ लिखे। आपके बहुत-से छन्द विशुद्ध भोजपुरी में हैं। इनकी रचनाओं में पूर्ण दार्शनिक तत्त्व मिलते हैं। आपकी कुछ भोजपुरी रचनाएँ यहाँ दी जाती हैं—

(१)

मोहि न भावै नैहरवा, ससुरवा जइबों हो।
नैहर के लोगवा बड़ अरिआर॥
पिया के बचन सुनि लागेला बिकार।
पिया एक डोलिया विहल भेजाय॥
पाँच पचीस तेहि लागेला कहाँर।
नैहरा में सुख-दुख सहलों बहूत॥
सासुर में सुनलों खसम मजगूत।
नैहरा में बारी भोली ससुरा दुलार॥
सत के सेनुरा अमर भतार।
कहे 'दरिया' धन भाग सोहाग॥
पिया केरि सेजिया मिलल बड़ भाग।

—:o:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२)

कुबुधि कलवारिनि बसेले नगरिया हो रे।
उन्हक मोरे मनुआँ मतावल हो रे॥
भूलि गैले पिया पंथवा द्रस्टिया हो रे।
अवघट परलीं भुलाए हो रे॥
भवजल नदिया भेआवन हो रे।
कवने के विधि उतरव पार हो रे॥
दरिया साहब गुन गावल हो रे।
सतगुर शब्द सजीवन पावल हो रे॥

—:०:—

(३)

अबकी के बार बकसु मोरे साहब, जनम जनम के चेरि हे।
चरन कँवल में हृदय लगाइब, कँपट कागज सब फारि हे।
मैं अबला किछुओ नहीं जानौ, परपंचन के साथ हे।
पिया मिलन बेरी इन्ह मोरा रोकल, तब जिय भयेल अनाथ हे।
जब दिल में हम निहचे जानल, सूझि परल जमफंद हे।
खूलल दृष्टि दिया मनि लेसल, मानहु सरद के चंद हे।
कह 'दरिया' दरसन सुख उपजल, सुख दुख दूरि बहाय हे।

—:०:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(५) पलटूदास

ये फैजाबाद जिले के मालीपुर स्टेशन से दस-बारह मील पूर्व जला नामक कस्बा के निवासी थे। इनके गुरु का नाम गोविन्द साहब था जो गाजीपुर जिले के निवासी बाबा भीखमराम के शिष्य थे। पलटूदास एक बड़े सिद्ध सन्त थे। इन्होंने एक सम्प्रदाय की स्थापना की थी जो आज भी नाम से प्रचलित हैं। इनकी सभी रचनाएँ जलालपुर के पास मठ में वि है। इनकी रचनाओं का संग्रह 'पलटूदास की बानी' के नाम से प्रकाशि चुका है। इनकी रचना के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।

(१)

काहे के लगावले सनेहिया हो, अब तुरल न जाय।
जब हम रहलों लरिकवा हो, पियवा आवहिं जाय॥
अब हम भइलों सयनिया हो, पियवा ठेकलें बिदेस।
पियवा के भेजलों सनेसवा हो, अइहें पियवा मोर॥
हम धनि पइयाँ उठि लागवि हो, जिया भइल भरोस।
सोने के थरिअवा जेवनवा हो, हम दिहल परोस॥
हम धनि बेनिया डोलाइव हो, जेंवले पियवा मोर।
रतन जड़ल एक झरिया हो, जल भरल अकास॥
मोरा तोरा बीच परमेसर हो, ए कहले 'पलटूदास'।

—:०:—

(२)

कइ दिन मेरा तोरा जिअना ए, नर चेतु गँवार॥
काँचे माटी कर घइलवा हो, फुटत लागत न बेर।
पनिया बीच बतसवा हो, लागल गलत न देर॥
धुआँ केरा धवरहर हो, वालू केरा भीत।
लागत पवन झरि जाले हो, तृन ऊपर सीत॥
जस कागद कइ कलई हो, पाकल फलवा डारि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सपने केरा सुख॰ सम्पति हो, अइसन हवे संसार ॥
बाँस केरा घन पिंजरा हो, ताहि बीच दस दुआर ।
पंछी लिहले बसेरा हो, लागल उड़त न बार ॥
आतसबाजि तन भइलेह, हाथे काल के आगि ।
'पलटूदास' उड़ि जइवहु हो, जवहीं देइहें दागि ॥

—: ० :—

(३)

बनिया समुझि के लादु लदनियाँ ।
ई सब मीत काम ना अइहें, संग ना जइहें करधनियाँ ॥
पाँच मने के पूँजी लदले, अतनें में गरत गुमनिया ।
करलेऽ भजन साधु के सेवा, नाम से लाउ लगनिया ॥
सउदा चाहसि त इहवें करिले, आगे न हाट दुकनियाँ ।
पलटूदास गोहराइ के कहेले, अगवा देस निरपनियाँ ॥

—:०:—

(४)

प्रेम बान जोगी मारल हो कसके हिया मोर ॥
जोगिया के लालि लालि अखियाँ हो जसकंवल के फूल ।
हमरी त सुरुख चुनरिया हो दूनो भये तूल ॥
जोगिया के लेंउ मिर्गछलवा हो आपन पट चीर ।
दूनो के सियब गुदरिया हो होई जाब फकीर ॥
गगना में सिंगिया बजाइन्हि हो ताकिन्हि मोरि ओर ।
चितवनि में मन हरि लियो हो जोगिया बड़ चोर ॥
गंग जमुनवा के बिचवा हो बहे झिरहिर नीर ।
तेहि ठैयाँ जोरल सनेहिया हो हरि ले गइले पीर ॥
जोगिया अमर मरै नाहिन हो पुजवल मोरि आस ।
करम लिखा वर पावल हो गावै 'पलटूदास' ॥

—:०:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(२) सरभंग सम्प्रदाय

भोजपुरी के सन्त कवियों में सरभंग सम्प्रदाय के कवियों का एक विशे स्थान है। इन कवियों की विशेषता यह है कि इनका संबंध एक ऐसे सम्प्रदा विशेष से हैं जिसे 'अघोरपन्थ' कहते हैं। लोक-भाषा में इसे अघोरी या औघ सम्प्रदाय कहा जाता है। इस पन्थ के कवियों की जन्म-भूमि बिहार रा का चम्पारन जिला है यद्यपि इनके शिष्यों की गद्दियाँ उत्तर प्रदेश में उपलब्ध होती हैं।

'सरभंग' नामकरण का कारण—सरभंग शब्द की व्युत्पत्ति और अ निर्विवाद रूप से स्पष्ट नहीं है। इस पन्थ के साधु लोग इसका यह अर्थ बतला हैं कि 'सर साधे सरभंग कहावे'। अर्थात् सर की साधना करने वाला सरभं कहलाता है। 'सर' शब्द की व्युत्पत्ति शर (बाण) तथा स्वर (नाद) इ दोनों शब्दों से मानी जा सकती है। शर का अर्थ होता है बाण और वह का के पाँच बाणों की दृष्टि से 'पाँच' संख्या का द्योतक भी है। इस प्रकार श का अर्थ जीवात्मा को विद्ध करने वाली पाँच इन्द्रियों से भी हो सकता है। तं शास्त्र में स्वर एक पारिभाषिक शब्द है और वह 'स्वरोदय' आदि ग्रन्थों में इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना—इन तीन श्वास-प्रश्वास की क्रियाओं को सूचि करता है। अतः इस व्युत्पत्ति के अनुसार 'सरभंग' शब्द का अर्थ हुआ व साधक अथवा सन्त जो अपनी इन्द्रियों और वासनाओं का नियंत्रण कर सके।

सरभंग सन्तों को मुख्यतः दो भागों में विभक्त किया जा सकता है (१) निरवानी (निर्वाणी) और घरबारी। किनाराम और भिनकराम दो निरवानी थे। अतः चम्पारन में इन दोनों के मतों को एक माना जाता है। निरवानी मत में स्त्रियों को स्थान नहीं दिया गया है। ये साधु ही खेती-बा भी नहीं करते और न भिक्षाटन ही करते हैं।

---

१. डाक्टर धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री—संतमत का सरभंग सम्प्रदाय पृ० ११४–१५ (बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरभंगों की निरवानी और घरबारी शाखाओं को देखते हुए यह अनुमान किया जा सकता है कि निरवानियों पर वैष्णव धर्म का प्रभाव अधिक पड़ा है और घरबारियों पर तांत्रिक शाक्तों का। इस सम्प्रदाय के साधुओं का खान-पान रहन-सहन, पूजा-पद्धति भी कुछ औघड़ पन्थियों से मिलती जुलती है। इस सम्प्रदाय के कुछ विशिष्ट सन्त कवियों और उनकी कविता का परिचय पाठकों के सन्मुख प्रस्तुत किया जाता है।१

—:०:—

(१) बाबा किनाराम

अघोर-पन्थ के आचार्य बाबा किनाराम का जन्म वाराणसी जिले के चन्दौली तहसील के प्रसिद्ध रामगढ़ नामक गाँव में एक संभ्रान्त रघुवंशी क्षत्रिय कुल में, संवत् १६८४ विक्रमाब्द (सन् १६२७ ई०) में हुआ था। ये तीन भाई थे जिनमें ये सबसे जेठे, प्रतिभावान् तथा विलक्षण गुणों से युक्त थे। बचपन से ही इनकी रुचि धर्म में थी। इनके माँ-बाप ने १२ वर्ष की ही अवस्था में इनका विवाह कर दिया था परन्तु गवना के पहिले ही इनकी स्त्री का देहान्त हो गया। इस घटना के कुछ ही दिनों के बाद अकस्मात् ये विरक्त होकर घर से निकल पड़े और अनेक प्रान्तों में भ्रमण करते रहे।

किनाराम ने पहिले शिवाराम नामक एक वैष्णव सन्त को अपना गुरु बनाया था। परन्तु किसी बात पर मतभेद हो जाने के कारण इन्होंने अपने प्रथम गुरु को छोड़कर कालूराम को अपना द्वितीय गुरु स्वीकार किया। ये कालूराम औघड़ पन्थ के अनुयायी थे। अतः किनाराम ने इसी सम्प्रदाय में दीक्षा ग्रहण की। किनाराम के अद्भुत चमत्कारों तथा सिद्धियों के संबंध में

१. इस विषय के विस्तृत तथा प्रामाणिक विवरण के लिए देखिए—डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री—संतमत का सरभंग सम्प्रदाय पृ० ११७—१२१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अनेक कथायें प्रचलित हैं जिससे इनकी अलौकिक शक्ति का पता चलता है। कालूराम के द्वारा किनाराम को गुरुमंत्र देकर उनके लुप्त हो जाने का सं... निम्नलिखित बानी से मिलता है।

"कीना कीना सब कहै, कालू कहै न कोय।
कालू कीना एक भये, राम करैं सो होय॥"

ऐसा कहा जाता है कि स्वयं भगवान् दत्तात्रेय ने कालूराम का रूप धा... कर किनाराम को गुरुमन्त्र दिया था। भगवान् दत्तात्रेय के पश्चात् ब... किनाराम ने ही 'अघोर-पन्थ' का प्रचार तथा प्रसार किया।

किनाराम जी छन्द:शास्त्र के विशेष ज्ञाता और कवि थे, परन्तु ये अप... करामात, चमत्कार और सिद्धियों के लिये ही अधिक प्रसिद्ध हैं। इनका प्र... मठ भेलूपुर (वाराणसी) थाने के दक्षिण, मुहल्ला भदैनी (अब रवीन्द्रपुरी) में स्थिति है जो कृमिकुण्ड के नाम से प्रसिद्ध हैं। आज भी बाबा किनारा... के नाम पर यहाँ वार्षिक मेला लगता है। कुछ वर्षों पहिले, इस मेले के अव... पर, वाराणसी की प्रसिद्ध वारवनितायें यहाँ आती थी और अपनी नृत्य... का प्रदर्शन नि:शुल्क किया करती थी। परन्तु अनेक कारणों से यह प्रथा ... अब वन्द कर दी गई है। फिर भी बाबा किनाराम की समाधि के दर्शन... लिए इस मेले में लोगों की बड़ी भीड़ एकत्रित होती है। बाबा किनाराम ... अपने प्रथम गुरु शिवाराम की स्मृति में निम्नांकित चार स्थान बनवाये—

(१) मारुफपुर (२) नयी डीह (३) परानापुर और (४) महुअर। इ... अतिरिक्त अपने द्वितीय गुरु कालूराम की स्मृति में नीचे लिखे स्थानों में ... मठों की स्थापना की।

(१) कृमिकुण्ड (वाराणसी नगर में)

(२) रामगढ़ (तहसील चन्दौली, जिला–वाराणसी)

(३) देवल—चौसा (गहमर–जिला गाजीपुर)

(४) हरिहरपुर—गोमती नदी के तट पर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबा किनाराम के द्वारा लिखी गई चार पुस्तकें उपलब्ध हैं।
(१) विवेकसार (२) रामगीता (३) रामरसाल और (४) गीतावली।
इनकी कविता के कुछ उदाहरण लीजिए—

(१)

जग लेखवाँ हम बाउर भैलीं।
जात कुटुम सब ताना मारैं। छाड़ि परिवार फकीर संग खेलीं॥
करवा कोपीन अरु सैन कुपरिया। मथवाँ में तिलक अजब रूप धैलीं॥
कर परतीत नाम दुइ अक्षर। तेहिं के भरोसवा तिरथ नाहीं कैलीं॥
रामकिना बौराह राम के। पावल राम नाम धन थैलीं॥

—:o:—

(२)

कपट कोटि कह जानि नसावै। निर्भय प्रेम में रमि रमि धावै।
लाभ हानि नहि उर कछु धरई। अनुभव प्रगटि निरन्तर भरई॥
समता शान्ति उदय नवनेहा। सतगुरु वचन सार सोइ गेहा॥
शत्रु मित लै रहै अकेला। निज पराय परिहरि जग खेला॥
सब भूतन पर करै अनुग्रह। संत संग यह शिष्य सुअग्रह॥
यह मत गहि जित नित ठहरावै। जानें बहुरि नाश नहिं पावै॥

—:o:—

(३)

खाह्व मन सुरती सुरति लगाय। फेरि न जन्म नर बड़ी सहाय॥
बुद्धि जमीन विचार बनाय। गुरु के शब्द बीज सोहाय॥
अंकुर दल श्रद्धा सत भाय। बस प्रेम यामें गुन छाय॥
स्वाद सहज सुख कुमति उड़ाय। दोनो जल अनुराग जनाय॥
कनखा काम क्रोध मद तोरि। काटी काया करम बटोरि॥
सूखे काम भजन मन दौरी। सीतल दया सीत रस भौरी॥
जुरी जतन तत्व सुभ सोये। मांते ज्ञान अमल के होये॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

काया भवन भरि धर्यो विवेक। मन को क्रम कर जतन अनेक॥
चित चेतन जौ खोजौ आन। तब सो देय तमाखू आन॥
ऐसी खाय तमाखू सोय। जाके धड़ पर सीस न होय॥
खोयो मन संतन तजि लाज। रामकिना मिलि संत समाज॥

—:०:—

(४)

अलि लै भयऊ तवति निरंजन, जानि लेहु अध्यातम सज्जन।
देव निरंजन ते शिव भूयऊ, निरालंव को आसन कयऊ॥
शिव ते भये काल अति भारी, जो शुभ अशुभ प्रलय संहारी।
काल माँह ते शून्य अनूपा, यह अनुभव को रूप अनूपा॥
अविनाशी सो शिव प्रगटानो, सो सब शास्त्र वेद मत जानो।

× × × ×

(५)

अब मन ले लो हरि का नाम॥
सुख संपत यह चार दिना के। कोउ न आवत काम॥
हित मित उत कोउ संग न जैहे। सुत बनिता धन धाम॥
रामकिना सतगुरु सरन पा। नाथ लह्यो विश्राम॥

—:०:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२) भिनकराम

भिनकराम का जन्म आज से लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व (१८२५ ई० के आसपास) के चम्पारन जिले के सहोरवा गोनरवा नामक स्थान में हुआ था। यह स्थान राजपुर से लगभग सोलह मील दूर है। यहाँ भिनकराम की समाधि विद्यमान है। ये बड़े ही सिद्ध महात्मा थे। मनसा बाबा भिनकराम के शिष्य थे। ये सिमनौरगढ़ नेपाल की तराई में कंकालिन माई के स्थान पर रहते थे। इनके मठ पटना, शाहाबाद, बलिया आदि जिलों में भी पाये जाते हैं। किम्बहुना, इनके मत के अनुयायी पश्चिमी बंगाल और आसाम में भी उपलब्ध होते हैं। इनकी कविता के कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं१—

(१)

हरि मदिआ मोरे लागल सजनी।
मन कर महुआ तनकर भट्ठी, ब्रह्म अगिनि में बारले सजनी।
सब संतन मिलि छानले दोकनिया, मात पिता कुल सब त्याग देले सजनी।।
प्रेम पेयाला जब सुख आवे, पियत पियत भ्रम भाग गैले सजनी।
सूतल सिरी भिनकराम सामी, उठि जागले सजनी।।

—:o:—

(२)

चल चल मनुआ हो गुरु का नगरिया किया हो रामजी
जहवाँ उपिजल हिरवा लाल नू हो राम।
सतगुरु किरपा करिहें हिरवा लखा दिन्हें।।

—:o:—

१. (क) दुर्गाशंकरप्रसाद सिंह—भोजपुरी के कवि और काव्य पृ० १२२-१२३
(ख) डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री—सन्तमत का सरभंग सम्प्रदाय पृ० १२६, १३१ १३३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(३)

नीको हो मोरा आजु के लगनवा, जाहि दिन संत हमरा अइले पहुनवा।
बाहर भीतर भइल बा अँगनवा, दरसन से सुख पावे नयेनवा॥
रोम रोम अंग भये चरनवा, सब संतन मिलि कइले समनवा।
हरिदम प्रभु संग रहिले मंगनवा, सिरि भिनकराम दया सतगुरु के॥
गगनमंडल में मिलि गेल पुरुस अमनवा।

—:०:—

(४)

केऊ ना जाइ संग साथी बन्दे ! केऊ ना०
जइसे सती हँसकर बन्दे ! ऊ काया जल जाती।
दिन चार राम के भजिले बान्ह का ले जइबऽ गाँठी॥
भाई-भतीजा हिलमिल के बइठे वोही बेटा वोही नाती :
अंत काल के काम ना अइहें समुझि समुझि फाटि छाती॥
जम्हुराजा के पेआदा जब अइले आइ रोके घँट-छाती।
प्राण निकल बाहर हो गइले तन मिल गइले माँटी॥

—:०:—

(५)

पिअवा मिलन कठिनाई रे सखिया।
पिअवा मिलन के चलली सोहागिनि धइले जोगिनीया के भेसवा हो॥
रहली राँड, भइली एहवाती, सेनुरा ललित सोहाइ।
एह दुलहा के रूप ना देखल दुलहिन चलत लजाई॥
सिरी 'भिनकराम' दया सतगुरु के चरण चित लाई।
त्रिकुटी घाट बाट ना सूझे मोरा बुते चढ़ल ना जाई॥

—:०:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(६)

आगि लागे बनवा जरे परबतवा,
मोरे लेखे हो साजन रे नइहरवा।
आवऽ आवऽ बभना बइठु मोरा अँगना,
सोचि देहु ना मोरा गुरु के अवनवा॥
जिन्हि सोचिहें मोरा गुरु के अवनवा,
तिन्हें देबों ना साजन ग्यान के रतनवा।
नैना भरि कजरा, लिलार भरि सेनुरा,
मोरा लेखे सतगुरु भइले निरमोहिया॥
सिरी 'भिनकराम' स्वामी गावले निरगुनवा,
धाइ धरबों हो साधु लोग के सरनवा।

—:०:—

(७)

वटिया जोहते दिन रतिया बीती गइले।
राम सुरतिया देखि के ना सतगुरु नैनवा लोभवले।
तेजलीं नइहर लछ लोगवा सासुर राम जोगिनिया बन के ना।
कइली अपना साधु के संघतवा।
सिरी 'भिनकराम' स्वामी गावले निरगुनिया।
राम दरदिया भइले हो सतगुरु रउरा भेजुना कहरिया।

—:०:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(३) भीखमराम

बाबा भीखमराम गाँव माधोपुर जिला चम्पारन (बिहार) के नि थे। ये जाति के ब्राह्मण थे और इनकी उपाधि मिश्र थी। इनके पूर्वज नदी के उस पार नवापार रम्हौली गाँव में रहते थे जहाँ से स्थानाभा कारण ये लोग तीन-चार पुश्त पहिले चम्पारन चले आये थे। भीख एक निर्धन कुल में उत्पन्न हुए थे और मजदूरी करके अपनी जीविका उपार्जन किया करते थे। ये दो भाई थे—भीखा मिश्र और काशी मिश्र। बाल्भावस्था का नाम भीखा मिश्र ही था। परन्तु साधु हो जाने पर ये भीखमराम के नाम से प्रसिद्ध हुये। इनके पुत्र का नाम रामनेवाज मि जो बाद में संन्यासी हो गये थे। भीखमराम के भाई काशी मिश्र की परम्परा चिरकाल तक चलती रही।

बाल्यावस्था में ही भीखनराम में वैराग्य के लक्षण दिखाई पड़ने ल तीस वर्ष की आयु में इन्होंने एक ऐसा चमत्कार दिखलाया जिससे सभी आश्चर्य चकित हो गये और महात्मा के रूप में इनका प्रभाव सर्वत्र हो गया। सर्व प्रथम ये वैष्णव सम्प्रदाय में दीक्षित हुए। इनके गुरु का प्रीतम बाबा और दादा गुरु का नाम केशो बाबा था। प्रीतम बाबा की के पश्चात् ये जगन्नाथपुरी आदि तीर्थ स्थानों की यात्रा के लिए चल पड़े बहुत दिनों के पश्चात् इस तीर्थ यात्रा से लौटे। शान्ति की प्राप्ति के इन्होंने बाद में सरभंग सम्प्रदाय में दीक्षा ग्रहण की।

इनके दो प्रधान शिष्य हुए टेकमनराम और हरिहरराम। इन प्रथम—टेकमनराम बहुत प्रसिद्ध सन्त हुए और इनकी गणना सरभंग सम् के प्रधान प्रवर्तकों में से की जाती हैं। इनकी शिष्य परम्परा बहुत दि चलती रही। हरिहर राम अपने गुरु के अनन्य सेवक और शिष्य थे। भीख ने माघ शुक्ल तृतीया को जीवित समाधि ली थी। इनकी तथा इनके रामनेवाज मिश्र की समाधि माधोपुर में आज भी विद्यमान है। ये ब सिद्ध तथा चमत्कारी पुरुष थे तथा इनके चमत्कारों की अनेक कथायें प्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

। भीखमराम का लिखा हुआ बीजक नामक ग्रन्थ प्रसिद्ध है। इनके जन्म था मरण की निश्चित तिथियों का कुछ पता नही है। चूँकि माघ शुक्ल तीया को इन्होंने समाधि ली थी अतः आज भी माधोपुर में इस तिथि को नकी समाधि पर मेला लगता है। इनकी कविता के कुछ उदाहरण हैं१—

(१)

हंसा करना नेवास, अमरपुर में।
चलै ना चरखा, बोलै ना ताँती
अमर चोर पेन्है वहु भाँती ॥ हंसा० ॥
गगन ना गरजै, चुए ना पानी
अमृत जलवा सहज भरि आनी ॥ हंसा० ॥
भुख नाहीं लागे, ना लागे पियासा;
अमृत भोजन करे सुख बासा ॥ हंसा० ॥
नाथ भीखम गुरु सबद बिबेका।
जो नर जपे सतगुरु उपदेसा ॥ हंसा० ॥

× × × ×

१. धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री—सन्तमत का सरभंग सम्प्रदाय पृ० १४२–४४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(४) टेकमनराम

टेकमनराम चम्पारन जिला (विहार) के अन्तर्गत धनौती नदी के पर स्थित झखरा गाँव के निवासी थे। ये जाति के लोहार थे। गरीबी के कारण ये राजमिस्त्री का काम करते थे। माधोपुर में मंदिर का किवाड़ व समय ये वहाँ के प्रसिद्ध सन्त, बाबा भीखमराम के सम्पर्क में आये और उ शिष्य वन गये। कहा जाता है कि भीखमराम के तीन शिष्य थे जिनमें टेक राम सबसे प्रसिद्ध थे। ये सिद्ध तथा चमत्कारी पुरुष थे। ऐसी प्रसिद्धि है इन्हें ब्रह्म साक्षात्कार हुआ था। चम्पारन में इनकी परम्परा के बहुत से हैं। कहा जाता है कि एक बार इनके गुरु भीखम बाबा अपने शिष्य (टेक राम) का मठ देखने के लिए बाघ पर चढ़कर आये। उस समय ये ओ के ऊपर बैठे हुए थे। दूर से ही अपने गुरु को आते देखकर इन्होंने उ अगवानी करने की सोची। अतः इनके चमत्कार से ओसारा ही अगव करने के लिए चलने लगा। इन्होंने माघ मास की शुक्लपक्ष की पंचमी— जो वसन्त पंचमी के नाम से प्रसिद्ध है—को समाधि ली थी। अतः आज झखरा गाँव में जहाँ इनकी समाधि बनी हुई है—प्रतिवर्ष इस तिथि को मे लगता है जिसमें सरभंग सम्प्रदाय के अनेक साधु महात्मा सम्मिलित होते है इनके शिष्यों में टहलराम, मिसरीबाई, दर्शनराम और सुदिष्ट बाबा प्रसिद्ध है इनकी गुरु और शिष्य परम्परा इस प्रकार है—

१ केशो राम बाबा
|
२ प्रीतम राम बाबा
|
३ बाबा भीखम राम
|
४ बाबा टेकमन राम
|
टहलराम — ५ मिसरी बाई
|
६ रामस्वरूप दास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टेकमन राम के पदों का संग्रह भजन-रत्नमाला में पाया जाता है जिसमें कुछ पद यहाँ प्रस्तुत किये जाते हैं।

(१)

भँवरो भवरा मर्म में भूलैल हो फूल बनको वास ॥
जैसे अकासे जल बरसे, निरमल धरती में ढाबर होय।
वैसे हंसा माया में लिपटले, फूल वनके वास,
मृगा नाभे कस्तूरी महको दिन रात, उनहूँ मरम न जाने ढूढ़े वन घास ॥
भँवरा मर्म भूलैल हो, फूल वनके वास ॥
जैसे बाजीगर बान्दर हो, नाचे दिन रात, जैसे सेमर शुगना सेवे दिन रात ॥
मारत लोल भुआ उड़ गैले, पीछे पछताय ॥
राम भिषम निर्गुन गाइले, सन्तन लेहु न विचार ॥

× × × ×

(२)

संत से अन्तर ना हो नारद जी ! सन्त से अन्तर ना० ।
भजन करे से बेटा हमारा ग्यान पढ़े से नाती।
रहनी रहे से गुरु हमारा, हम रहनी के साथी।
संत जैंवाके तवही मैं जेइलें संत सोए हम जागी।
जिन मोरा संत के निन्दा कइले ताही काल होइ लागी।
किरतनिया से बीस रहीले नेहुआ से हम तीस।
भजनानंदन का हिरदा में रहिले संत का घर शीश।
संतन मोरा अवल सरीरा हम संतन के जीव।
सब संतन से हम रमी रहीले जइसे मखन के धीव।
श्री टेकमन महराज भीखम स्वामी जइसे मखन के घीव।

× × × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(३)

नर तन होइ सतगुरु के न भजले, फेर काल घइ खाय।
विस्ठा मूत्र नरक के लेधुर, तेहि में दिहे तोहे डार।
वोही में दूत मारन लागे, तब के करिहें गोहार॥

× × × ×

(४)

कुलवा में दगवा बचइह हे सोहागिनि !
दूध से दही, दही से माखन, घीउवा बनके रहिहऽ हे सोहागिनि !
ऊँख से गुड़, गुड़ से चीनी, मिसरी बनके रहिहऽ हे सोहागिनि।
सीरी टेकमनराम दया कर सतगुरु के, जगवा से नतवा लगइहऽ हे सोहागिनि।

× × × ×

(५)

बिना भजन भगवान राम बिनु के तरिहें भवसागर।
पुरइन पात रहे जल भीतर करत पसार हो।
बुन्द परे जापर ठहरत नाहीं ढरकि जात जइसे पारा हो।
तिरिया एक रहे पतिबरता पतिवचन नहीं टारा हो।
आपु तरे पति को तारे तारे कुल परिवारा हो।
सुरमा एक रहे रन भीतर पिछा पगु ना धारा हो।
जाके सुरतिआ हव लड़ने में, प्रेम मगन ललकारा हो।
लोभ मोह के नदी बहत बा लछ चौरासी धारा हो।
सीरी टेकमन महराज भीखम सामी कोई उतरे संत सुजाना हो।

× × × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(५) योगेश्वराचार्य

सरभंग सम्प्रदाय के सन्तों में योगेश्वराचार्य का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। चम्पारन जिले के रूपौलिया नामक गाँव के निवासी थे। इनके पिता का पं० नकछेद पाण्डेय था जो पाराशर गोत्रीय ब्राह्मण थे। बहुत दिनों तक कोई सन्तान नहीं थी। सन्त भिनकराम के आशीर्वाद से इन्हें दो पुत्र हुए। सन् १८८४ ई० के आस पास श्री योगेश्वराचार्य का जन्म हुआ। का विवाह १३ वर्ष की आयु में ही हो गया था परन्तु विवाह के केवल वर्ष के उपरान्त ही इनकी पत्नी का देहान्त हो गया। फिर ये विरक्त रहने । इनके हृदय में ज्ञान की ज्योति जगी जैसा कि नीचे के पद से ज्ञान होता है।

"उमगेउ हृदय विचार, वृथा जन्म हरि भजन विनु।"

एक दिन आधी रात को विरक्त होकर इन्होंने घर छोड़ने का निश्चय कर लिया। परन्तु माता-पिता की ममता और घर-बार का मोह इनका पीछा नहीं छोड़ता था। अपनी इसी दशा का वर्णन इन्होंने इस प्रकार किया है।

"अहि छुछुन्दर की दशा, उगिलत बनै न खात।
योगेश्वर दुःख को कहि सके; रहत बनै न जात॥"

इन्होंने अपने ग्रन्थों में कबीर आदि निर्गुणी सन्तों और किनाराम भिनकराम आदि सरभंग सम्प्रदाय के महात्माओं का स्मरण किया है। इन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की है जो प्रायः हस्तलिखित रूप में ही उपलब्ध हैं। जैसे स्वरूप-गीता, स्वरूप प्रकाश, विज्ञान-सार, भवानी-संवाद और विष्णु-स्तुति आदि। इनकी कुछ कवितायें इस प्रकार हैं :—

(१)

सुनु मोरा सखिया, प्रेम दुलारी हो रामा!
आ किया हो रामा!
बटिया सम्हरिया अब कहुँ, पीसहुँ रे की॥१॥
कथी के बनैवो रामा, पाला जोड़ी जंतवाँ हो रामा!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कथिये के किलवा धै निर्मायब रे की ॥२॥
ज्ञान विचार के पाला जोड़ी जँतवा हो रामा !
किलवा धीरज धरि रोपब रे की ॥३॥
कथी के चँगोलिया में, किये धरि गेहुँआ हो रामा !
कितने - कितने झिकवा डालब रे की ॥४॥
शब्द चँगोलिया में, मर्म धरि गेहुँआ हो रामा ॥
थोड़हीं - थोड़हीं झिकवा डालहुँ रे की ॥५॥
पाँच पचीस मिलि, तासो सहेलिया हो रामा ।
रगरि - रगरि गेहुँआ पीसब रे की ॥६॥
हरखि निरखी के अँटवा उठायेब हो रामा ।
देसवा सम्हारि यों साँचि राखब रे की ॥७॥
फणि का मणि सम, सम्हरि यतनवाँ हो रामा ।
उहवाँ न पँइचा उधारहुँ रे की ॥८॥
योगेश्वरदास इहे गवले निर्गुणिया हो रामा ।
आ किया हो रामा !
अपने संगतिया संगत्रा साथी रे की ॥९॥

× × × ×

(२)

काया पुर खेती कैलों, बोअलों कुसुमिया ! हे ननदिया मेरो ।
गगन में फुलवा फुलाय, हे नदिया मेरो ॥१॥
दस पाँच सखिया मिलि, फुलवा लोढ़े चलली, हे ननदिया मेरो ।
नैना चंगेलिया बनाये हे ननदिया मेरो ॥२॥
रंगलो में पिया के पोशाक, हे ननदिया मेरो ।
योगेश्वर पिया पहिरी, सोअलो पलंगिया हे ननदिया मेरो ।
देखि देखि नैना जुड़ाए, हे ननदिया मेरो ॥३॥

—:०:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(३) सगुण (रसिक) सम्प्रदाय

यह कहना कुछ अनुचित न होगा कि प्रधानतया निर्गुण सम्प्रदाय के कवियों ही विशेष रूप से भोजपुरी को अपनी आत्मानुभूति के प्रकाशन का माध्यम या है। परन्तु सगुण सम्प्रदाय के मतानुयायी ऐसे भी कुछ सन्त उपलब्ध हैं न्होंने इस भाषा को अपनी प्रतिभा का प्रसाद प्रदान किया है। यह बात कुछ खो सी जान पड़ती है ये सभी कवि सगुण सम्प्रदाय की राम-भक्ति शाखा अनुयायी थे। संभवतः इसका कारण यह है कि भोजपुरी प्रदेश अयोध्या के धिक सन्निकट है जो भगवान् राम की भक्ति का केन्द्र सदा से रहा है और ज भी है। भोजपुरी प्रदेश में उत्पन्न होने वाले कवियों ने इस क्षेत्र की जनता आराध्यदेव भगवान् राम की लीला का वर्णन करना ही अपना कवि-कर्म भा और इन्होंने राम-भक्ति का आश्रय लेकर अपने काव्यों की रचना की। हाँ इतना और कह देना आवश्यक है कि भोजपुरी के इन कवियों ने भगवान् म के जिस रूप को अपनी सरस वाणी का विषय बनाया है वह मर्यादा षोत्तम, धनुषधारी, दशवदननिधनकारी तथा प्रजारक्षक रामचन्द्र नहीं हैं; लि सरयू के किनारे, झौआँ के झुरमुट में लुक छिप कर कृष्ण की भाँति हार करने वाले रसिक-शिरोमणि राम हैं। कहने का आशय यह है कि इन जपुरी कवियों ने राम के जिस स्वरूप का वर्णन किया है वह उनका रसिक रूप है, "लछुमन बेगि सरासन आनू। सोखौं बारिधि बिसिख कृसानू॥" ला उग्र रूप नहीं है। अतः इन कवियों को सगुण सम्प्रदाय के अन्तर्गत सिक सम्प्रदाय का अनुयायी कहा जा सकता है। इस मत के अवलम्बियों की पासना 'मधुर' भाव की उपासना से अभिहित की जाती है। ये भगवान् को यतम और अपने को उनकी प्रेमिका के रूप में देखते हैं। इन कवियों के धा दो नाम पाये जाते हैं। एक तो गुरु से दीक्षा लेने पर शरणागत सूचक म्प्रदायिक नाम और दूसरा सखी-भाव से उपासना करने वालों के संबन्धी म। इस सम्बन्ध में डा० भगवती प्रसाद सिंह लिखते हैं कि "वय, वर्ग और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सेवा निर्धारित हो जाने पर चित् देह का अन्तरंग सेवा सम्बन्धी नाम जाता है। इसे 'महली' तथा आत्म सम्बन्धी नाम भी कहते हैं। यह मन्त्र दीक्षा के समय रखे गये शरणागतिसूचक नाम से सर्वथा भिन्न होता सखी-भावोपासकों के भावना सम्बन्धी नाम अली, लता, सखी, कली, मंजरी, प्रिया इत्यादि छापों के सहित रखे जाते हैं—जैसे अग्रअली, रूप प्रेमलता, प्रियासखी, और युगलमंजरी आदि। ये नाम प्रायः उपास्य से सा शरीर के भाव सम्बन्ध अथवा सेवा के स्वरूप पर आधारित होते हैं।१"

रसिक-सम्प्रदाय के इन कवियों की साधना, पूजा-पद्धति, आचार वि वेश-भूषा, आदि अपना एक विशेष महत्त्व रखती है। इस सम्प्रदाय प्रामाणिक तथा विस्तृत विवेचन के लिए निम्नांकित ग्रन्थ देखिए।२

भोजपुरी भाषा और साहित्य के लिए यह गर्व और गौरव का विष कि इस प्रदेश के कवियों ने कबीरदास के अनुकरण पर जहाँ 'निर्गुन' गाये हैं, वहाँ भगवान् राम के रसिक स्वरूप का वर्णन कर अपनी को पवित्र किया है। इस रसिक सम्प्रदाय के केवल प्रधान, प्रधान का यहाँ वर्णन किया जाता है।

---

१. डा० भगवती प्रसाद सिंह—रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय पृ० २३७-३८

२. डा० भगवती प्रसाद सिंह—रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय (प्रकाशक अवध साहित्य मन्दिर, बलरामपुर सं०—२०१४ वि०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१) शंकर दास

शंकरदास का जन्म छपरा जिले (विहार) के एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण-परिवार में अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ था। इनके पिता का नाम राधेश्याम चतुर्वेदी था। बाल्यावस्था में ही इनके पिता का देहान्त होने के कारण इनकी शिक्षा-दीक्षा का भार इनकी माता पर आ पड़ा। परन्तु निर्धनता के कारण इनके अध्ययन का क्रम कुछ आगे नहीं वढ़ सका। ये अपने गाँव में रहकर गायों को चराने का कार्य किया करते हैं। ऐसी जनश्रुति है कि इसी समय इन्हें एक दिन शिकारी के वेष में, घोड़े पर चढ़े हुए भगवान् राम का दर्शन हुआ था। फिर ये घर का धन्धा छोड़कर भगवान् की भक्ति में लीन हो गये और अयोध्या, वद्रीनाथ, उज्जैन, नैमिषारण्य आदि तीर्थ स्थानों की यात्रा करने निकल पड़े। कुछ दिनों के वाद ये नैमिषारण्य लौट आये। गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के पश्चात् ये अपने गाँव इसुआपुर में निवास करने लगे। इनके चार पुत्र हुए—(१) रामकिंकर (२) प्रयागदत्त (३) गङ्गा गोविन्द और (४) जीवाराम। इनमें से अन्तिम पुत्र—जीवाराम—वहुत विख्यात सन्त हुए जिन्होंने आगे चलकर 'युगलप्रिया' के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त किया। जब शंकरदास जी के पुत्र वयस्क और घर का काम-धाम सँभालने योग्य हो गये तव ये घर-वार छोड़कर सरयू और गंगा के संगम पर छपरा (विहार) जिले के 'चिरान' नामक स्थान पर आकर स्थायी रूप से निवास करने लगे। कुछ वर्षों के पश्चात् इनके पुत्र जीवाराम भी विरक्त होकर पिता के पास चले आये और उन्हीं से मंत्र-दीक्षा लेकर उनके साथ ही रहने लगे। गंगा तट पर स्थित 'चिरान' वाले अपने आश्रम का इन्होंने कई स्थानों पर उल्लेख किया है। ये अपनी वृद्धावस्था तक उसी स्थान पर रहे ऐसा उनके एक पद से ज्ञात होता है—

"आइल बिरधापा नियराइल है अन्तकाल।
शंकरदास राम रटह गंगा जल पीता।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

शंकरदास का केवल एक ही ग्रन्थ उपलब्ध होता है जिसका ना 'राम-नाम-माला' । महात्मा जानकी शरणजी–जो इनकी शिष्य परम्परा में ने समय समय पर कहे गये इनके गेय पदों और दोहों का संग्रह इस ग्र किया है जिसका प्रकाशन सर्वप्रथम १६०१ ई० में हुआ था । शंकरदा की कविता के कुछ उदाहरण—

(१)

धन्य सोई प्राणी जिन्ह राम नाम लेल ।
वेद औ पुराण इतिहास ढूंढ़ि ढूंढ़ि हूँढ़ावह, प्राणपान खोज खोज भइले जे
होइ पवित्र वे पवित्र प्रेम अनप्रेम अनखाय, अलसाय अकुलाय स
शंकरदास सुख दुख वो हानि लाभ होइबें करे कोई न मिटावे

× × × ×

(२)

जइसन तु कइलह ते पइबह कत आपन फल,
जल्द राम जपहू जते बाटह तु जिंदा ।

× × × ×

(३)

राम राम राम जपे सेई तपसी
सीता जी माता हैं, जगत सकल बालक हैं,
पालक श्री रामचंद्र सबन्हि के बसी ।
राम एक आत्मा अनात्मा प्रमात्मा हैं,
कोई वेद विदख जाने केऊ एक जपसी ।
सहज से न राम मिलहिं प्राक्तन संस्कार बिना
चार दिन सहि न जात माघ के एक झपसी ।।
खोआ, चीनी, मिश्री, कंद रामनाम भजि अनंद
शंकरदास जगत सुख महुआ के लपसी ।।

—:०:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२) रामशरण

महात्मा रामशरण के जीवन का अधिकांश समय मिथिला में ही व्यतीत था। अतएव इनकी जितनी प्रसिद्धि विहार में हुई उतनी अपनी जन्म-भूमि अवध प्रदेश) में नहीं। इनका जन्म अवध के तिलोई राज्य में पंडितपुरवा मक ग्राम में आषाढ़ शुक्ल द्वितीया सं० १८६४ वि० (सन् १८१७ ई०) हुआ था। इनके पिता का नाम पं० रामस्वरूप था जो ज्योतिषी थे। ० रामदत्त नामक किसी विद्वान् से इन्होंने थोड़ी शिक्षा प्राप्त की परन्तु पढ़ने मन नहीं लगने के कारण इसका अध्ययन समाप्त हो गया। संसार से रक्ति होने के कारण केवल सोलह वर्ष की आयु में ही गृह-त्याग कर तीर्थाटन के लिए निकल पड़े और काशी, प्रयाग तथा अयोध्या में भ्रमण करते हे। अन्त में इन्होंने मिथिला को अपना प्रधान स्थान बनाया और स्थायी प से वहीं रहने लगे।

रामशरण जी की भगवत्-उपासना सख्य-भाव की थी। इस श्रेणी के हात्माओं में इनका स्थान सर्वोत्तम माना जाता है। इनके द्वारा रचित दो न्थ उपलब्ध हैं। (१) राम-तत्व-सिद्धान्त-संग्रह और (२) मैथिली-रहस्य-दावली। प्रथम सिद्धान्त ग्रन्थ है और दूसरा समय समय पर की गई इनकी ावात्मक रचनाओं का संग्रह। शृङ्गारी सन्तों की तरह प्रभु की केवल विहार लीलाओं के वर्णन में ही इनकी रूचि रही है। इनकी रचनायें अधिकतर सोहर छन्द में लिखी गई जिनका विषय है—जनक का हलयज्ञ, जानकी जन्म था फुलवारी लीला आदि। इससे पता चलता है कि उन्होंने इनकी रचना र घर गाये जाने के विचार से की थी। इस प्रकार इनका संकल्प लोक-जीवन को राम मय बनाने का था।१ इनकी कविता के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

१. डा० भगवती प्रसाद सिंह—राम भक्ति में रसिक सम्प्रदाय पृ० ४५६–६१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(१)

हलवा जोतै ते राजा जनक न ये हो राजा जनक न हो ।
ललना अनुपम कन्या पाये सुमोद बढ़ायेल हो ॥
मास वैसाख शुक्ल पक्ष नवमी न हो ।
ललना सीता नाम धराये मुनिन गुन गायेल हो ॥
वेद पुरान प्रसंसत जाहि प्रसंसत हो ।
ललना सुनयना जू गोद खिलायिल हिये हुलसाइल हो ।
'रामसरन' मिथिलेस द्वार पर मिथिलेस द्वार पर हो ।
ललना चहुँदिसि मंगलचार सुसोहर गायेल हो ॥

× × × ×

(२)

आये मिथिलेस के बगिया हो नृप युगल किशोर ।
बाँधे वसन्ती के पगिया हो दिनकर छवि छोर ।
मारे नजर के कोरवा हो सुधि हरि लिन्हों मोर ।
चितवन बढ़ी जोरवा हो हिया सालत मोर ।
गर बीच मोतिन के हरवा हो बुलकन चित चोर ।
लसत वसन्ती के जामा हो दामिनि दुति थोर ।
'रामसरन' दोउ छैलवा हो सखि श्यामल गोर ।
लखितेंहि मोहनि मूरति हो सुधि बुधि भई भोर ।

× × × ×

(३)

रस रंगन धूम मचाये रसिया ।
तेरे रे अवध में सरयू बहति हैं उमगि उमगि सब आई नदिया ।
'रामसरन' धन धन पुरवासी पिया प्यारी जहँ करैं केलिया ।

—:०:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(३) रूपकला जी

इनका पूरा नाम सीताराम-शरण भगवान् प्रसाद 'रूपकला' था। रूपकला जी १९ वीं शताब्दी के विख्यात रसिक महात्मा थे। इनका आविर्भाव श्रावण कृष्ण ६ सं० १८९७ वि० (सन् १८४० ई०) में छपरा जिले के मुबारकपुर नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता श्री तपस्वी राम श्री सम्प्रदाय के रामानन्दीय भक्त थे परन्तु इनके जीवन पर सबसे अधिक प्रभाव इनके चाचा का पड़ा जो वैष्णव साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित थे। इन्होंने एन्ट्रेन्स तक की अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त की थी। फल-स्वरूप इन्हें शिक्षा विभाग में सरकारी नौकरी मिल गई। सं० १९२४ वि० में ये विहार के पूर्णिया जिले में डिप्टी इन्सपेक्टर थे जहाँ दो वर्षों तक इन्होंने कार्य किया।

रूपकला जी की उपासना रसिक-भाव की थी। इस क्षेत्र में इन्हें सारन (छपरा) जिले के परसा स्थान के महात्मा रामशरण जी से पथ-प्रदर्शन प्राप्त हुआ। इन्हीं महात्मा से इन्होंने मंत्र दीक्षा ली। सरकारी नौकरी के कारण इन्हें भगवान् के भजन में बाधा उपस्थित होती थी। अतः सं० १९५० वि० में इस सरकारी चाकरी को धता बता कर इन्होंने भगवान् की नगरी अयोध्या में शरण ली और वहीं स्थायी रूप से रूपकला-कुंज में निवास करने लगे। इसी स्थान पर ९५ वर्ष की सुदीर्घ आयु में पौष शुक्ला द्वादशी सं० १९८९ वि० (सन् १९३२ ई०) में इन्होंने गोलोक को प्रयाण किया। इन्होंने ४० वर्षों तक अखण्ड रूप से अयोध्या में निवास किया। यही इनके जीवन का सबसे उत्तम काल समझना चाहिए। इस काल में इन्होंने निम्नांकित ग्रन्थों की रचना की।

(१) भागवत् गुटका (२) भगवद्वचनामृत (३) मीराबाई (४) भक्ति-सुधा-विन्दु-स्वाद-तिलक (भक्तमाल की टीका), (५) रामायण रस-विन्दु (६) श्री पीपा जो (७) सीतारामीय प्रथम पुस्तक (८) मानस अष्टयाम (९) काल (१०) प्रेम-गंग-तरंग।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

रूपकला जी की उपर्युक्त पुस्तकों में गद्य की रचनायें ही अधिक हैं। [illegible] रूप से लिखे गये काव्य ग्रन्थों की संख्या बहुत कम है। इनकी जो स्फुट र[illegible] मिलती हैं इनकी भाषा भोजपुरी है। परन्तु कहीं कहीं भोजपुरी मिश्रित [illegible] भी उपलब्ध होती है। इनकी सबसे प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय रचना नाभादा[illegible] के भक्तमाल की टीका 'भक्तिसुधाविन्दुस्वादतिलक' मानी जाती हैं। इ[illegible] रचना के कुछ नमूने निम्नलिखित हैं।

(१)

अधिक विलम अब जनि करु बालम,
लेहु मोहि बेगि बुलाय रामा।
जनम अनेक को गनै गोरे प्रीतम,
एहु में छब्बिस साठ रामा॥
जरजर देहिया भजन ना बने कछु,
ठाढ़ि न हूँ बिनु लाठि रामा।
लगत पहाड़हु ते दिन भारी,
ताहि बिनु परम सुजान रामा॥
बीतत चिन्तत सोचत रतिया,
जस तस होत बिहान रामा।
इहँके समैया महोत्सव प्यारे,
अब जनु गुड़िया के खेल रामा॥
खास निवास जहाँ तोर सिववर,
आऊँ तजि जग के झमेल रामा।
सेऊँ मैं निसिदिन सिय पद पंकज,
लखि पिय परम निहाल रामा॥
'रूपकला' सिय किंकरि विनवे,
होहु पिय बेगि दयालु रामा॥

—:o:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२)

सखि मोहि कत दिन तरसत बीते, सुधि न लीन्ह पिय बिरहिन हिय की ।
आह धुँआ मुख, हिय विरहागी, ठाढ़ि जरौं जैसी बाती दिय की ॥
अधिक दाह चित चातक कोकिल, विरह अनन्त जिमि आहुति घिय की ।
सब उर व्यापक अन्तरयामी, जानत हैं पिय रुचि तिय जिय की ॥
साँचेहु सपनेहु कब लगि देखिहौं, मधुर मनोहर छबि सिय पिय की ।
कृपानिधान दयासुख सागर, मनिहै सखि विनती लघु तिय की ॥

—:०:—

(३)

साजि लेली भूषन सँवारी लेली वसन से हाथ लेली री ।
कनक थार आरती से हाथ लेली री ॥
ओढ़ि-पहिरी सुन्दरी, सहेली सखी सहचारी, ओही बीचे री ।
से विराजे श्रीकिसोरीजी ताही बीचे री ॥
मिथिला जुवति गन गावेली मुदित मन, साथ लेली री ।
ए सामग्री गौरी पूजन से साथ लेली री ॥
हरियर फुलबरिया ललिता गिरजा-बरिया सखिन बीच री ।
ले बिराजे श्रीकिसोरीजी सखिन बीचे री ॥
सियाजी के पूजा से प्रसन्न भइलीं गौरी जो असीस देलीं री ।
से सुफल मन कामना, असीस देलीं री ॥
'रूपकला' गावेली श्री स्वामिनी बुझावेली, बिनु जोगे-जापे री ।
ए प्रीतम प्रेम पावेली, बिनु जोगे-जापे री ॥

—:०:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(४) लक्ष्मीनारायण दास 'पौहारी'

पौहारी जी का जन्म देवरिया जिले में राप्ती नदी के तट पर स्थित … नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम पं० शिवराम पाण्डे … इनकी शिक्षा-दीक्षा कुछ विशेष नहीं हो सकी। बाल्यावस्था से ही इनमें विरक्ति … भावना उत्पन्न हो गई थी। वयस्क होने पर पिता ने इनका विवाह कर … परन्तु इनकी प्रवृत्ति पूर्ववत् ही विरागोन्मुख बनी रही। शनैः शनैः इनकी वि… की भावना उद्दीप्त होती गयी और एक दिन इन्होंने संसार से नाता … भगवान् से नाता जोड़ लिया। ये अपने गाँव के महेन्द्रनाथ के मंदिर में … स्थायी रूप से निवास करते हुए भजन भाव करने लगे।

कुछ वर्षों तक यहाँ निवास करने के पश्चात् लक्ष्मीनारायण जी अ… चले गये और वहाँ महात्मा अवधप्रसाद से दीक्षा ग्रहण की। सं० १… वि० में इन्होंने पैकोली ग्राम को अपना प्रधान स्थान बनाया और वहाँ एक बरगद के वृक्ष के नीचे कुटी बना कर रहने लगे। सं० १८७७ वि… इन्होंने सन्तों की जमात सहित चित्रकूट की यात्रा की जहाँ इन्हें अनेक स… के दर्शन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इसके अनन्तर इन्होंने अपना स… जीवन भजन और पर्यटन में ही व्यतीत किया।

पौहारी जी के भक्तों ने अपने गुरु के जीवन से संबंधित तीन स्थानों … इनकी गद्दियाँ स्थापित की—(१) पैकोली (२) बड़हलगंज (३) बैकु… पुर इन्होंने इन तीनों गद्दियों में व्रतोत्सवों को मनाने की एक नई परि… चलाई। पैकोली में राम-जन्म, बड़हलगंज में रथयात्रा और वैकुण्ठपुर में … विवाह का उत्सव बड़े धूम-धाम से मनाया जाता था। उनकी यह परम… आज भी अविरल गति से चली आ रही है।

लक्ष्मीनारायण जी ने अन्न के आहार का सर्वथा परित्याग कर दिया … और ये फलाहार तथा दुग्धपान कर अपना जीवन यापन करते थे। सदा … अर्थात् दूध का आहार करने के कारण ही इनका नाम 'पयाहारी' पड़ ग… इसी 'पयाहारी' शब्द का अपभ्रंश रूप' 'पौहारी' है जो इस गद्दी के मह… या, साधुओं की अब उपाधि बन गई है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कबीरदास नें लिखा है कि—

"सिंहन के लेहड़े नहीं, नहीं हंसन की पाँत।
रत्नों की नहीं बोरियाँ, साधु न चले जमाँत॥"

अर्थात् सच्चा साधु कभी जमात (साधुओं का झुण्ड) इकट्ठा कर नहीं चलता। परन्तु इन गद्दियों पर बैठने वाले महन्तों का नियम है कि वे सदा जमात लेकर चलते हैं। उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों में विशेषकर गोरखपुर, देवरिया और बलिया में पौहारी जी की जमात चला करती है जिसमें हाथी, घोड़े, ऊँटों के साथ ही साथ साधुओं का झुण्ड भी चला करता है। 'पौहारी बाबा'— इसी नाम से प्रसिद्ध हैं—स्वयं पालकी पर चला करते है और अपने हाथों द्रव्य का स्पर्श तक नहीं करते हैं। पौहारी बाबा की जमात गाँवों में जाकर कई दिनों तक वहाँ अपना डेरा डाले रहती है। कुछ दिनों तक एक गाँव में निवास करने के पश्चात् वह दूसरे गाँव के लिए कूच कर देती है। इस प्रकार भगवान् के भजन और नामकीर्तन का प्रचार गाँवों की भक्त जनता में किया जाता है। सामान्य जनता में सदाचरण, भक्ति तथा श्रद्धा के प्रचार करने का यह जमात अनन्यतम साधन है।

पौहारी जी का गोलोकवास आषाढ़ शुक्ल तृतीया सं० १६०२ वि० में हुआ। इनकी लिखी हुई केवल एक ही पुस्तक हस्तलिखित रूप में प्राप्त है जिसका नाम "श्री भक्ति प्रकाशिका" है। इस ग्रन्थ से इनकी कविता के कुछ उदाहरण दिये जाते हैं।१

(१)

काम कहै हमरो कहवावहु क्रोध कहै हमरो कह भाई।
लोभ कहै हमे मोल लियो तहँवा रघुनाथ को दीन दोहाई॥
सूनि लियो महराज धनो हनुमान बली कहँ दीन पठाई।
लातन मारिकै काँड़ि दियो अपने जन जानि के लीन्ह छोड़ाई॥

—:०:—

१. डा० भगवती शरण सिंह रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय पृ० ४४६—४४८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(२)

हौं मैं हरि चरणन की दासी ॥

जा दिन तैं हरिशरणन्हि आए मेटलि सकल उदासी ।
गुरु की सेवा साधु की संगति मीली गए अविनाशी ॥
तव ते काम क्रोध भय छूटल होइ गए सुख रासी ।
ज्ञान विराग योग बहु बाढ़त भति भई हिय वासी ॥
होइ अनुराग परम पद पावत भए अवध के बासी ।
तव ते लोभ भए वोहि नृप के जानेउ निज पुरवासी ॥
प्रभुकरु कमल शीस परँ परसत यम मुख लागत मासी ।
अस संयोग पूर करि रघुपति सिया लषन संग वासी ॥
'लक्ष्मीनारायण' दासि तुम्हारी छूटि गई जग लासी ।

—:o:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(५) रामाजी

रामा जी का जन्म सारन (छपरा) जिले के सीवान स्थान के निकटस्थ टाय नामक गाँव में सं० १९२८ वि० (सन् १८७१ ई०) में हुआ था। के पिता का नाम मुन्शी रामयाद लाल और माता का नाम रामप्यारी थी था। मुन्शी जी पटना की किसी कचहरी में नकलनवीस थे। रामाजी शिक्षा पटना में ही प्रारम्भ हुई परन्तु एन्ट्रेन्स के आगे इनका अध्ययन हीं चल सका। छोटी आयु में ही राम के दुलहा रूप में इनकी आसक्ति हो ई और पढ़ाई तथा विद्यालय से जब कभी अवकाश मिलता तब बालकों को कत्रित कर ये राम विवाह की लीला किया करते। धीरे धीरे संसार ले न्हें विरक्ति होने लगी और स्कूली जीवन से इन्होंने अपना पिण्ड छुड़ा लिया। नका विवाह छपरा जिले के ही वगौरा नामक गाँव में हुआ था। ये गृहस्थाश्रम रहते हुए खेती वारी करके अपना जीवन-यापन करते थे।

राम के दुलहा रूप पर इनकी विशेष आसक्ति थी। अतः जहाँ कहीं भी और जिस किसी भी जाति की वारात में दुलहा को जाते हुए, जब ये देखते थे तब इनकी भक्ति-भावना तरंगित हो उठती थी और ये उस दुलहे के लिये चंवर डुलाते थे तथा चँवर के अभाव में अपने गमछा (तौलिया) से पंखा झलने लगते थे। राम के दुलहा रूप को ये प्रेम से "नौशे बबुआ" कहा करते थे। जिस प्रकार से गोस्वामी तुलसीदास जी को सारा संसार 'सियाराममय' दिखाई पड़ता था—

"सिया राम मय, सब जग जानी।
करहुँ प्रनाम जोरि जुग पानी॥"

उसी प्रकार से रामा जी को सभी जाति के दुलहे (वर) "नौशे बबुआ" (राम का दुलहा रूप) के स्वरूप में दृष्टि गोचर होते थे। अपने जनपद में विवाहोत्सव को स्थायी रूप प्रदान करने के उद्देश्य से रामा जी ने छपरा जिले के मठवा ग्राम में एक विशाल मण्डप बनवाया था। इसी प्रकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

से अपने उपास्यदेव राम की जन्म भूमि तथा विवाह लीला से संबंधित स्था अयोध्या, सीतामढ़ी और जनकपुर आदि—की स्मृति को स्थायिता प्रदान के विचार से सरयाँ (छपरा) गाँव में इन्होंने चार मण्डप बनवाये और बीच विवाह-मण्डप स्थापित किया। विवाह लीला के साथ ही भगवान् के नाम-संकीर्तन के प्रचार में भी रामा जी की सेवायें चिरस्मरणीय रहें इस प्रकार से लगभग चालीस वर्षों तक पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा विहार सामाजिक जीवन को राम मय बनाकर रामा जी ने ज्येष्ठ कृष्णा द्वितीया १९८५ वि० में इस धरामय को छोड़कर स्वर्ग लोक को प्राप्त किया।

अपने उपास्यदेव के प्रति अपने हार्दिक उद्‌गारों की अभिव्यक्ति के रामा जी ने लोकगीतों का आश्रय लिया। यह माध्यम उनकी भावसा के लिए अधिक उपयुक्त भी था। इनके विवाहगीतों के कुछ उदाहरण लीजिए

(१)

अवध नगरिया से चलली बरियतिया, हे सुहावन लागे।
जनक नगरिया भइले सोर हे सुहावन लागे।
सब देवतन मिलि चलले बरियतिया हे सुहावन लागे।
बजवा बजेला घनघोर हे सुहावन लागे।
बजवा के सबद सुनि हुलसे मोरी छतिया हे सुहावन लागे।
रोसनी के भइलवा अंजोर हे सुहावन लागे।
परिछन चललीं सब सखिया सलेहरी हे सुहावन लागे।
पहिरेली लहरा पटोर हे सुहावन लागे।
कहत रसिक जन दुलहा के सुरतिया हे सुहावन लागे।
सुफल मनोरथ भइलें मोर हे सुहावन लागे।

—:०:—

१. रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय पृ० ५३२–५३५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२)

अवध नगर से जनकपुर आये दुलहा सुन्दर हे ।
मदन मोहन छवि निरखत लिये हिये अन्दर हे ।
अनुपम सोहे सिर मौर भूषन पितम्बर हे ।
अलक कुटिल भहुँवा धनु-सम कमल नयन सर हे ॥
साजि साजि कंचन थार लिये सब मिलि जुथ नारी हे।
आरती उतारैंली सुनैना रानी वीरी दे दे जादू डारैं हे ॥
जोगी जन जतन करत हारे वस नाहीं भये हरि हे ।
से हरि नाथ के नाथ, सियावर बस भैले हे ॥

—:०:—

(३)

सुन्दर पलकिया के कामदार छहियाँ, सुनबे सजनी ।
सुन्दर लगलबा कहार, सुनबे सजनी ॥
ताही पर चढ़ल बाटी रामचन्द्र दुलहा, श्री लषनलाल दुलहा,
भरतलाल दुलहा, शत्रुघनलाल दुलहा, सुनबे सजनी ।
सोभा अमित अपार, सुनबे सजनी ॥
आसा सोटा वल्लम लाये सब परिकर-गन, सुनबे सजनी ।
'रामा जी' महली चमरढार, सुनबे सजनी ॥

—:०:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(४) सखी सम्प्रदाय

भारतीय भक्ति-साधना की सगुण धारा में सखी सम्प्रदाय का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस सम्प्रदाय के अनुयायियों ने दाम्पत्य भाव से भगवान् की भक्ति कर इसमें सरसता का संचार किया है। इस मत की विशेषता के संबंध में सन्त साहित्य मर्मज्ञ आचार्य परशुराम चतुर्वेदी लिखते हैं कि "सखी सम्प्रदाय की विशेषता उसके अनुयायियों द्वारा अपने इष्टदेव को दाम्पत्य-भाव की दृष्टि से आराधित किया जाना है। ये लोग अपने को वैष्णवों से भिन्न नहीं माना करते। किन्तु इनकी विचार धारा का अधिक मेल निर्गुनिया सन्तों के सिद्धान्तों से ही प्रतीत होता है। इनकी एक अन्य विशेषता इनके वहुधा अघोर पंथियों जैसा व्यवहार करने में भी दीख पड़ती है। इनके भजनों में लगभग वे सभी विषय आये हैं जो हमें सन्त कवीर साहब तथा अन्य उस प्रकार के सन्तों की रचनाओं में हैं। उनकी वर्णन शैली भी बहुत कुछ वैसी ही है।"१

जैसा कि आचार्य चतुर्वेदी जी ने लिखा है इस सम्प्रदाय के भक्तों की उपासना दाम्पत्य भाव की है, अर्थात् वे अपने उपास्यदेव को प्रियतम और अपने को उनकी प्रियतमा या प्रेमिका के रूप में मानते हैं। अतएव ये लोग स्त्रियोचित वेश-भूषा धारण कर तद्वत् आचरण भी करते हैं।२

(१) लक्ष्मी सखी

लक्ष्मी सखी इसी सखी सम्प्रदाय के प्रधान प्रवर्तकों में से माने जाते हैं। इनका पहिले का नाम बावा लछिमीदास था परन्तु उपर्युक्त सम्प्रदाय के प्रवर्तक होने के नाते ये 'लक्ष्मी सखी' के नाम से ही अधिक प्रसिद्ध हैं। इनके पाँच प्रधान शिष्य हुए—(१) कामता सखी (२) सिद्धनाथ सखी (३) प्रतीप सखी (४) गीता सखी (५) त्यागी सखी।

---

१. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी—भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएं पृ० ७६ (साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग)।

२. इस सम्प्रदाय के विशेष विवरण के लिए देखिए—आचार्य परशुराम चतुर्वेदी—उत्तरी भारत की सन्त परम्परा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन पाँचो शिष्यों में कामता सखी ही इनके पट्ट शिष्य माने जाते हैं और अपने गुरु के बाद ये ही उनकी गद्दी के उत्तराधिकारी हुए। इस सम्प्रदाय का प्रधान स्थान विहार राज्य के छपरा नामक स्थान में हैं जहाँ आज भी इनकी गद्दी विराजमान है।

लक्ष्मी सखी भोजपुरी भाषा के एक प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। इनका जन्म विहार प्रान्त के सारन जिले के अमनौर नामक गाँव में हुआ था। इनका आविर्भाव काल १९ वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध है। जैसा कि इनके नाम में विदित होता है ये सखी सम्प्रदाय के अनुयायी थे। इनके पिता का नाम मुन्शी जगमोहन दास था। इनके जीवन वृत्त के संवंध में विशेष कुछ भी ज्ञात नहीं है। लक्ष्मी सखी ने अपना परिचय एक स्थान पर इस प्रकार दिया है जिससे इनके जीवन वृत्त पर कुछ प्रकाश पड़ता है—

"सुनु सखी सुनहु कहब कुछ अऊर। सारन जिला तखत अमनऊर।१।
कायथ बनस में जनमेऊ बऊर। राम लखन फल फरि गइले दोऊर।२।
जन्म भूमि कवो पुजलों गऊर। मीलि गइले सतगुरु माथे चढ़ल मऊर।३।
जियते मरि गइलीं लउकल ठऊर। सन्त समाज में चलि गइलीं दऊर।४।
सतगुरु दिहले ग्यान के लऊर। झटपट मरलीं मैं माछर सऊर।५।
पाकल ब्रह्म अगिनि कर भऊर। खइलों मैं साधु सन्त मिलि अऊर।६।
मौजे 'टेरुआं' अइलों दऊर। मीलि जुलि भगत बनावल ठऊर।७।
'लछिमि सखि' के सुन्दर पियवा। आरे तुम लगि मेरी दऊर।८।"

इस वर्णन से ज्ञात होता है कि ये कायस्थ कुल में उत्पन्न हुए थे। इनका जीवन वड़ा ही सात्विक था। अपने जीवन की गोधूलि में इन्होंने संसार से नाता तोड़, भगवान् से सम्बन्ध जोड़ लिया था। बाल बच्चों से मुख मोड़, कामिनी और कांचन को छोड़, अपने गाँव अमनौर से थोड़ी दूरी पर 'टेरुआं' में एक आश्रम वनवाया था जिसमें ये सदा रहा करते थे। जीवन के अन्तिम दिनों में ये भजन वना कर तथा गाकर अपना समय विताया करते थे।

७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

ग्रन्थ—लक्ष्मी सखी ने कुल चार ग्रन्थों की रचना की है जिनमें विवि प्रकार के छन्द और राग-रागिनियाँ उपलब्ध होती हैं। इन ग्रन्थों के नाम (१) अमर सीढ़ी (छन्द संख्या ८८५) (२) अमर विलास (छन्द संख्या ८७ (३) अमर फरास (छन्द संख्या ६=५) और (४) अमर कहानी (छं संख्या ७७५) हैं। इस प्रकार इन चारों ग्रन्थों के छन्दों का कुल योग ३५ है। ये रचनाएँ अत्यन्त प्रौढ़ और काव्य-गुणों से सम्पन्न हैं। इनका एक ग्र 'हटाका' भी है जो प्रकाशित हो चुका है। इनके ग्रन्थों में झूमर, ठुमरी, साव पूरबी, खेमटा, गारी, होली आदि विविध प्रकार के गीतों का समावेश पा जाता है।

लक्ष्मी सखी की दो रचनायें 'अमर सीढ़ी' और 'अमर कहानी' पहिले प्रकाश में आ चुकी थी। इनकी अन्य पुस्तकें भी अब प्रकाशित हो गई हैं इनके अनुयायी इन ग्रन्थों को बड़े ही आदर तथा सन्मान की दृष्टि से देख हैं। आज भी सखी सम्प्रदाय के मठों में इन ग्रन्थों की पूजा होती है। सिक्ख के गुरु 'ग्रन्थ साहब' की भाँति इन पवित्र ग्रन्थों को 'ग्रन्थ-रामजी' की सं प्रदान की गई है और ग्रन्थ रामजी के नाम से ही मठ की सारी सम्पत्ति है सखी सम्प्रदाय के मठों में लक्ष्मी सखी के भजनों को गा गा कर शिष्य मण्ड कीर्तन किया करती है।

लक्ष्मी सखी का सबसे बड़ा, प्रधान तथा प्रसिद्ध ग्रन्थ 'अमर सीढ़ी' है इनके अन्य ग्रन्थों से परिमाण में भी अधिक है। इस ग्रन्थ में ३६० पृष्ठ हैं जिन भिन्न-भिन्न रागों में भगवद्-भक्ति के पद गाये गये हैं। कबीर की भाँति इनके पदों में कहीं तो योग-साधना का उल्लेख मिलता है तो कहीं रहस्य वाद की बाँकी झाँकी उपलब्ध होती है। इनकी रहस्यमयी यह उक्ति सुनिये:—

"सखी तोरे पियवा देइ गइले एगो पतिया।
बारहु दियवा चुड़ाइ लेहु हियवा, समुझि समुझि के बतिया।१।
इहवाँ ना केहू साथी ना संघतिया, कामिनी कंत तोरे जोहत बटिया।२।
सोने के खाटी रूपे के पटिया, करु मंजन चलु त्रिकुटी के घटिया।३।
ओहि रे घाट पर सुन्दर पियवा, निरखत रहु दिन रतिया।४।
'लछिमी सखी' के सुन्दर पियवा, सूत रहू लगाइ के छतिया।५।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस पद में ईश्वर को पति मानकर उसके साथ प्रेम करने की व्यंजना कितनी मधुर बन पड़ी है। लक्ष्मी सखी "सखी सम्प्रदाय" के प्रवर्तक थे जिसमें परमात्मा को पति और आत्मा को स्त्री मानकर प्रेम किया जाता है। उपर्युक्त पद में इसी प्रेम-पद्धति की ओर संकेत किया गया है।

लक्ष्मी सखी का दूसरा ग्रन्थ "अमर कहानी" है। इसमें भी विद्यापति का अनुकरण कर भक्ति के पद गाये गये हैं। झूमरा, विवाह, गारी और कजली इनके अन्य छोटे ग्रन्थ हैं। इनके पट्ट शिष्य कामता सखी ने 'छुट्टा दोहा' नामक ग्रन्थ लिखा है। इन सभी ग्रन्थों को इनके शिष्य महेशप्रसाद वर्मा ने सन् १९१२ में छपरा से प्रकाशित किया था।

लक्ष्मी सखी की कविता बड़ी ही सुन्दर, सरस, मधुर और हृदयस्पर्शी है। इनकी कविता में भोजपुरी की शुद्ध मिठास पाई जाती है। ये परम भक्त कवि थे और प्रेम मार्ग के अनुयायी थे। अतः उनकी कविता में प्रेम का पुट मिलना स्वाभाविक ही है। नीचे की इस सरल कविता का आस्वादन कीजिए:—

"मने मने करीले गुनावनि हो पिया परम कठोर,
पाहनो पसीजि पसीजि के हो बहि चलत हिलोर।१।
जे उठत विषय लहरिया हो, छने छने में घंघोर,
तनिको ना कनखि नजरिया हो, चितवत मोरे ओर।२।
भावे घर, आंगन ना सेजरिया हो, नाहिं लहर पटोर,
बेंजन कवनो तरकरिया हो, जइसे माहुर घोर।३।
तलफीले आठो पहरिया हो, गति मति भइली भोर,
केहु ना चीन्हेला अजरिया हो, विनु अवध किसोर।४।
कइसे सहीं बारी रे उमरिया हो, दुखः सहस कठोर,
'लछिमी सखी' मोरा नाहिं भावेला हो, पथ भात परोर।५।

इस गीत में शब्दों का माधुर्य जितना लुभावना है, भावों का चमत्कार भी उसी प्रकार श्लाघनीय है। यह गीत क्या है करुण रस का कलश है। 'पाहनो पसीजि पसीजि के हो बहि चलत हिलोर' इस एक पद में प्रेम का समुद्र हिलोरें मार रहा है। 'तनिको ना कनखि नजरिया हो ; चितवत मोरे ओर' में कितनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

करुणा और विवशता सिमटी पड़ी है। प्रियतम इतना कठोर है कि 'दृष्टि की बात तो दूर रही वह आँख के कोने से भी नहीं देखता। 'तलफीले पहरिया हो' में गूढ़ भाव पड़ा है। संस्कृत शब्दों के सरस प्रयोग के भोजपुरी की खालिस मिठास के साथ, हमें संस्कृत की मधुर चाशनी भी को मिलती है। इस प्रकार यह कविता बड़ी सरस और मधुर बन पड़ी है।

लक्ष्मी सखी की कविता रहस्यवाद की ओर उन्मुख दिखाई पड़ती है। सच्चे रहस्यवाद की झाँकी हमें देखने को मिलती है। भगवान् को प्रियतम मा यह रूपक बाँधा गया है जो कितना सरस और सुन्दर है—

"सुनि सुनि पिया के सनेस हमरो जियरा ललचे ना,
टपर टपर गिरे लोर सखिया चलते चलते ना।१।
काहे जे औंगुन भईल बहुत गलते गलते ना,
तेहि से चले के साथ सखिया हाथ मलते मलते ना।२।
पिया बिना जियवा हमरो हियवा कलपे ना,
जेकर तेज प्रताप घट घट नूर झलके ना।३।
बेरि बेरि हेरीलें बाट सखिया पलके पलके ना,
करि मंजन असनान सरजू जल जल जल के ना।४।
राजा जनक के बेटी हम त दोसरा खलके ना,
'लछिमी सखी' पिया धरबो बहियाँ छोड़बो बलके ना।५।"

नीचे के इस चौमासे में इसी तत्त्व का सुन्दर प्रतिपादन किया गया है:—

"झमर झमर उजे बरसेला मेघवा, गगन घटा घनघोर हे।
खोलिले हे सखि कपट केवरिया, अपवे जे होला अँजोर हे।१।
खासा खसम पिआ लौटेला सुन्दर, माया मोर भागेला चोर हे।
बारी बयस मोरा घरे रहु पियउ, मिनती करीले करजोर हे।२।
सकल भुवन कर करता धरता, जो कुछ करिए से थोर हे।
अपने सुजान पिया का समुझाओ, मैं अबला मतिभोर हे।३।
'लछिमी सखी' के सुन्दर पियवा पुरुष दुभुज किसोर हे।
भजबऽत भजिले आपन पियवा, ना त होखेला हाथी से घोर हे" ।४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२) कामता सखी

सखी सम्प्रदाय में लक्ष्मी सखी के पश्चात् इनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। क्ष्मी सखी के पाँच शिष्यों—जिनका उल्लेख पहिले किया जा चुका है—में ये सबसे प्रधान थे और अपने गुरु के बाद उनकी गद्दी के उत्तराधिकारी हुए। सखी सम्प्रदाय के प्रचार तथा प्रसार का बहुत कुछ श्रेय कामता सखी को प्राप्त जिन्होंने अपनी स्वाभाविक भक्ति, निश्च्छल साधना तथा प्रेमपूर्ण व्यवहार द्वारा सर्व साधारण जनता का ध्यान अपनी ओर विशेष रूप से आकृष्ट क्या। सखी ने 'छुट्टा दोहा' नामक एक ग्रन्थ लिखा है जो प्रकाशित भी हो का है। इनकी कविता बड़ी सरस तथा सुन्दर होती है।

(५) शिवनारायणी सम्प्रदाय

इस सम्प्रदाय के संस्थापक सन्त शिवनारायण है जिनके संबंध से इनके शिष्यों ने बहुत सी कल्पना जनित पौराणिक कथायें प्रचलित कर रखी है। रन्तु शिव नारायण के जन्म और मरण की तिथियाँ अभी तक निश्चित रूप विदित नहीं हैं। इनके द्वारा उचित 'सन्त सुन्दर' नामक ग्रन्थ में किये गये कतिपय उल्लेखों के आधार पर इनके जीवन काल के संबंध में कुछ अनुमान किया जा सकता है। इस ग्रन्थ से पता चलता है कि जिस समय दिल्लो का सुलतान अहमदशाह आगरे में रहा करता था और इलाहाबाद का सूबा गाजीपुर से प्रारम्भ होता था, उसी समय इस ग्रन्थ की रचना गाजीपुर में ही सं० १८११ में हुई। इनके एक दूसरे ग्रन्थ "गुरु अन्यास" से भी पता चलता है कि उसकी रचना सं० १७९१ वि० में हुई थी जब कि दिल्ली का बादशाह मुहम्मद शाह था।

संवत सत्रह सौ इक्कानबे होई।
ग्यारह सै सन पैंतालीस होई॥
अगहन मास पक्ष उजियारा।
तिथि त्रयोदसी शुक्र से बारा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तेहि दिन निर्मल कथा पुनीता।
गुरु अन्यास कथा सब होता॥
मोहम्मद शाह दिल्ली सुलताना।
काशी छत्र आगरा थाना॥

इस प्रकार सन्त शिवनारायण का जन्म काल अनुमानतः विक्रम १८ वीं शताब्दी के तृतीय चरण में माना जा सकता है। इस सम्प्रदाय एक पुस्तक "मूल ग्रन्थ" से भी प्रकट होता है कि इनका जन्म कार्तिक तृतीया को सं० १७७३ वि० में हुआ था। इनके पिता का नाम वाघ और माता का नाम सुन्दरी था। इनका विवाह सुमति कुँवरि नामक से हुआ था जिससे इन्हें एक पुत्र और पुत्री की प्राप्ति हुई थी।

इनके गुरु का नाम दुःखहरन था जिनसे केवल सात वर्ष की आयु ही शिव नारायण ने दीक्षा ली थी। इनके गुरु के विषय में अभी विशेष ज्ञात नहीं है। आधुनिक अनुसन्धानों से इनके द्वारा रचित 'पुहुपा' नामक एक प्रेम गाथा का पता चलता है जिसका रचना-काल सं० १ वि० दिया गया है। यह भी पता चलता है कि इस प्रेम गाथा का रचयिता कायस्थ-कुल-भूषण व्यक्ति था और वह उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले निवासी था। इसके अतिरिक्त इन्होंने 'भक्त माल' नामक ग्रन्थ भी लिखा इस ग्रन्थ में यत्र-तत्र भोजपुरी शब्दों के प्रयोग पाये जाते हैं। उदाहरण:

"झंरवत झुरवत राति दिन, लगन निअर जब आई।
बहुत बिकल भइली रुकमिनी, तनिको कछु ना सोहाई"॥

इस प्रकार इनके गुरू दुःखहरन की दो रचनायें प्रसिद्ध है जो तक अप्रकाशित हैं।

सन्त शिवनारायण का जन्म गाजीपुर जिले में स्थित 'चन्दवार' नाम गाँव में हुआ था। परन्तु यह गाँव इस समय (१९७२ ई० में) गाजी जिले में न होकर बलिया जिले में पड़ता है। उसका परगना भी इस दूसरा ही हो गया है। यह गाँव अब इस सम्प्रदाय के अनुयायियों प्रधान केन्द्र सा बनता जा रहा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग्रन्थ—सन्त शिवनारायण की रचनाओं के नाम और उनकी संख्या के संबंध में बड़ा मत भेद है। महर्षि शिवव्रत लाल के अनुसार इनके ग्रन्थों की संख्या ११ है जो इस प्रकार हैं।

१. ग्रन्थ २. सन्त विलास ३. भजन ग्रन्थ ४. सन्त सुन्दर ५. गुरु न्यास (गुरु अन्यास) ६. सन्त अचारी ७. सन्त उपदेश ८. शब्दावली ९. सन्त वचन १०. सन्त महिमा तथा ११. संत सागर। सन्त शिवनारायण के ग्रन्थों में 'गुरु अन्यास' सबसे अधिक मान्य तथा प्रसिद्ध है। इसे इस सम्प्रदाय के अनुयायी 'ज्ञान दीपक', 'बीजक' अथवा 'गुरु ग्रन्थ साहब' आदि नामों से अभिहित करते हैं। इस ग्रन्थ की वड़ी श्रद्धा से पूजा की जाती है। कुछ विद्वानों के अनुसार सन्त शिव नारायण की १६ रचनायें प्रसिद्ध हैं किन्तु इनमें से संभवतः 'गुरु अन्यास', 'शव्दावली', 'शव्द ग्रन्थ', 'सन्त विलास', 'सन्त अचरी' और 'सन्त वचन' ही अभी तक प्रकाशित हुए हैं। इनकी कविता के कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं।[१]

(१)

चलहु सखी खोज लाउ निज सँइयाँ।
पिया रहले अभी साथ में, हे छोड़ि गइले कवन ठँइयाँ।
बेला से पूछों चमेली से पूछों पूछों मैं वन भटकोइयां।
ताल से पूछों तल्लैया से पूछों पूछों मैं पोखरा कुंइयां।
'शिवनारायण' सखि पिआ नहिं भेटे, हरि ले ले मन जदुरइयाँ।

(२)

तनि एक मनुआं धरा तूं धीर ॥टेक॥
पांच सखी आइल मेरो अंगना, पांचों का हथवा में पांच-पांच तोर ॥

---

१. इस विषय के विशेष-विवरण के लिए देखिए—
(क) आचार्य परशुराम चतुर्वेदी—उत्तरी भारत की सन्त परम्परा पृ० ६३३—६५०
(ख) डा० ओम् प्रकाश शर्मा—सन्त साहित्य की लौकिक पृष्ठ भूमि (हिन्दुस्तानी एकाडमी, प्रयाग)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

खइंचब सुन तब छांड़ब तीर, मुदाये मरन कर करो तदबीर ॥
'शिवनारायण' चीन्हल वीर, जनम जनम कर मेटल पीर ॥१॥

(३)

गुनवा एको नहीं, कैसे मनैबो सैयां ॥टेक॥
गहरी नदिया नाव पुरानी, भइ गइले सांझ समइया ॥१॥
संग की सखी सब पार उतरि गईं, मैं बपुरिन एहि ठइंयाँ ॥२॥
'शिवनारायण' विनती करत है, पार लगा दो मेरी नइया ॥३॥

(४)

गगन तार गनत गइ रतिआ ॥टेक॥
गगन गहागह अनहद बाजत, बरसत अमृत धार ।
जो जन पीवै सोइ जन जीवै, मान गुमान हकार किरतिआ ॥१॥
गगन बीच भरि मकर तार धरि, चढ़ि गए चतुर सुजान ।
अजपा जाप जाहिर भयो जबते, बिसरि गये दारा, सुत, नतिआ ॥२॥
करनी काम किये जग जबते, करता तीनि सुभाव ।
इंगला, पिंगला, सूषमना सुरते, कटि गए काल कराल कुमतिआ ॥३॥
पिय परदेस उदेश न पावों, पिय बेलमे कहि भाव ।
का करों लोभी पिया जैसो रहि गयो, राखि पराई थतिया ॥४॥
जो पिय पावों अंक भरि लावों, निज परतीत बढ़ाय ।
तबहिं सुहागिनी प्रान पुरुषकी, चढ़ि मैदान लड़ी सुरा छतिआ ॥५॥

(६) बावरी सम्प्रदाय

सन्त सम्प्रदाय के इतिहास में बावरी सम्प्रदाय का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस सम्प्रदाय का प्रभाव-क्षेत्र प्रधानतया दिल्ली प्रान्त तथा उत्तर-प्रदेश के पू[र्वी] जिलों तक सीमित है। इसमें उच्चकोटि के महात्मा हो चुके हैं। परन्तु इ[स] सम्प्रदाय का कोई क्रमबद्ध इतिहास प्राप्त नहीं होता। जनश्रुति के आधार प[र]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माना जाता है कि सर्व प्रथम इस ग्रन्थ का प्रादुर्भाव उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में हुआ था। यद्यपि इस पन्थ की रूपरेखा दिल्ली में जाकर निर्मित हुई किन्तु पूर्वाञ्चल में ही इसका सम्यक् विकास हुआ, जिसका प्रधान श्रेय वूला साहव और गुलाल साहव को दिया जा सकता है।

वावरी सम्प्रदाय की परम्परा का आरंभ, इसके आदि प्रवर्तक रामानन्द माना जाता है जो संभवतः प्रसिद्ध स्वामी रामानन्द से भिन्न व्यक्ति थे। इनका निवास स्थान गाजीपुर जिले का पटना नामक गाँव था। इस रामानन्द के शिष्य दयानन्द भी इसी गाँव के रहने वाले थे। इनके शिष्य मायानन्द हुए जिन्होंने इस मत का प्रचार किसी प्रकार सुदूर दिल्ली तक किया। वावरी साहिवा–जिनके नाम से ही इस सम्प्रदाय का नाम करण हुआ हैं–इन्हीं मायानन्द की शिष्या थीं। वावरी साहिवा के शिष्य बीरू साहव हुए जिनके शिष्य यारी साहव के नाम से प्रसिद्ध हैं। इसी शिष्य परम्परा में वूला साहव, गुलाल साहव, और भीखा साहव हुए जिन्होंने इस मत को प्रसिद्धि प्रदान की। वावरी सम्प्रदाय का प्रदान स्थान गाजीपुर जिले के भुरकुड़ा नामक गाँव में है। यहीं पर इस सम्प्रदाय की गद्दी है जो आज भी विद्यमान है। बूला साहव, गुलाल साहव तथा भीखा साहव ने क्रम से इस गद्दी पर आसीन होकर इसे सुशोभित किया है। इन महान् सन्तों के कारण यह स्थान सचमुच ही महात्माओं के लिए तीर्थ स्थान बन गया है। इस गद्दी के मठाधीश ने "महात्माओं की वाणी" नामक एक पुस्तक प्रकाशित की है जिसमें इस सम्प्रदाय के सन्तों की वानियों का संकलन पाया जाता है।

(१) बावरी साहिबा

वावरी साहिवा मायानन्द की शिष्या थीं। इनके अनुयायियों का कहना है कि ये किसी उच्च कुल में उत्पन्न भद्र महिला थीं। ऐसा अनुमान किया जाता है कि इनका आविर्भाव सम्राट् अकबर के समय में अर्थात् सं० १५९९–१६६२ के लगभग हुआ था। इस प्रकार ये सन्त दादू दयाल (सं० १६०१–६०) की समकालीन थीं। इनके व्यक्तिगत जीवन की किसी घटना का पता नहीं है और न इनके द्वारा रचित कोई ग्रन्थ ही उपलब्ध होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

इनका असली नाम क्या था, इसका कुछ भी पता नहीं चलता। 'बावरी' शब्द का अर्थ बावली या पगली होता है। इसलिए यह नाम इनका उपनाम ही जान पड़ता है। इनके नाम से एक कविता (सवैया) प्रचलित है। इन्होंने लिखा है कि हे भगवान् आपकी गति को देखकर मैं 'बावरी' हो गई हूँ। अतः निश्चित रूप से 'बावरी' इनका उपनाम ही था, वास्तविक नाम नहीं। इस पद्य से यह भी लक्षित होता है कि इनकी लगन परमात्मा के प्रति कितनी सच्ची तथा उत्कट थी। इनके नाम से उपलब्ध दो कवितायें इन्हें उच्चकोटि की साधिका के साथ ही अच्छी कवयित्री भी सिद्ध करती हैं।१

(१)

बावरी रावरी का कहिये, मन ह्वै के पतंग भरे नित भांवरी।
भांवरी जानहिं संत सुजान, जिन्हें हरिरूप हिये दरसावरी ॥
सांवरी सूरत मोहनी मूरत, देकरि ज्ञान अनन्त लखावरी।
खांवरी सौंह तेहारी प्रभू, गति रावरी देखि भई मति बावरी ॥१॥

(२)

अजपा जाप सकल घट वरतै, जो जानै सोइ पेखा।
गुरुगम जोति अगम घर बासा, जो पाया सोइ देखा ॥
मैं बन्दी हौं पर्म तत्व की, जग जानत कि भोरी।
कहत बावरी सुनो हो बीरू, सुरति कमल पर डोरी ॥२॥

(२) बीरू साहब

बीरू साहब बावरी साहिबा के प्रमुख और संभवतः एक मात्र शिष्य थे। ये अपने गुरु का देहान्त हो जाने पर उनकी गद्दी पर बैठे थे। दिल्ली में रहकर इन्होंने बहुत वर्षों तक सत्संग किया था। परन्तु इनकी उपलब्ध रचनाओं की भाषा में पाये जाने वाले 'बाझल', 'आयल' 'रहल,' 'कर...' आदि शब्दों के प्रयोग के द्वारा यह प्रतीत होता है कि इनका संबंध ...

१. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी—सन्त काव्य पृ० २८१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रदेश (भोजपुरी प्रदेश) से भी अवश्य रहा होगा। यह पूर्वी प्रदेश, संभवतः इस पन्थ के आदि पुरुष रामानन्द और दयानन्द की जन्मभूमि—जिला—गाजीपुर ही रहा होगा। इनके जीवन वृत्त के सम्बन्ध में हमें कुछ विशेष बातें ज्ञात नहीं है। सच तो यह है कि इस पन्थ के संस्थापक रामानन्द से लेकर बीरु साहब तक इन पाँच महात्माओं का परिचय इस मतानुयायियों की कतिपय मान्यताओं पर आश्रित है। 'महात्माओं की वाणी' के संग्रहों में इनकी केवल तीन रचनायें ही पायी जाती है जिससे इनकी साधना पद्धति पर कुछ प्रकाश पड़ता है।

(१)

हंसा रे बाझन मोर याहि घरां, करबों मैं कवनि उपाय।
मोतिया चुगन हंसा आयल हो, सो तो रहल भुलाय॥
झीलर को बकुला भयो है, कर्म कीट धरि खाय।
सतगुरु सत्य दया कियो, भवबन्धन ते लियो छोड़ाय॥
यह संसार सकल है अन्धा, मोह मया लपटाय।
'बीरु' भक्ति भयो हंसा सुख, सागर चल्यो हे नहाय॥

(३) बूला साहब

बूला या बूल्ला साहब का मूल नाम बुलाकी राम थे। ये जाति के कुनबी या कुर्मी थे। ये उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के भुरकडा गाँव के निवासी थे। इसी गाँव के एक जमींदार के यहाँ ये हल चलाने का काम करते थे। एक दिन किसी मुकदमें के सिलसिले में इन्हें अपने मालिक के साथ दिल्ली जाना पड़ा जहाँ इन्हें यारी साहब से सत्संग करने का अवसर प्राप्त हुआ। उनसे उपदेश ग्रहण कर इन्होंने अपने मालिक का साथ छोड़ दिया और अकेले ही घर की राह ली। ये घूमते फिरते पुनः भुरकुड़ा पहुँच गये। इनके मालिक ने घर लौटकर जब इनकी खोज की तब पता चला कि ये निकट के ही जंगल में बुलासी दास के रूप में रहा करते है। मालिक ने इन्हें पुनः हल जोतने का आग्रह किया। परन्तु इन्होंने अपनी सिद्धि का ऐसा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

चमत्कार दिखलाया जिससे वह जमींदार अत्यन्त प्रभावित हुआ और इनके चरणों पर गिरकर इनका शिष्य बन गया। जीवन के अन्तिम दिनों में जंगल में कुटिया बनाकर रहा करते थे जहाँ इनसे सत्संग करने को लोग एकत्रित होते थे। बूला साहब का जन्म सं० १६८६ वि० में हुआ और ७७ वर्षों का दीर्घ जीवन पाकर इन्होंने सं० १७६६ वि० में दिव्य लोक को प्रयाण किया।

इनके जीवन की घटनाओं का कुछ पता नहीं चलता। किन्तु इनकी उपलब्ध रचनाओं से ऐसा ज्ञात होता है कि ये एक उच्च कोटि के साधक थे। इनकी आध्यात्मिक पहुँच बहुत गहरी थी। इनकी रचनाओं का एक संग्रह 'शब्दसार' नाम से वेलबेडियर प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हो चुका है। इनके कुछ अन्य पद मरकुड़ा, जिला गाजीपुर से प्रकाशित "महात्माओं की वाणी" में उपलब्ध होते के। इन पदों से इनकी प्रेम विह्वलता और रहस्य ज्ञान का अच्छा परिचय मिलता है। इनकी भाषा साधारण है और इनमें पद लालित्य भी पाया जाता है। इनकी कविता में एकान्त निष्ठा, सुरति, आत्मा की अमरता, सन्त व्यवहार आदि विषयों का वर्णन पाया जाता है १। उदाहरण—

(१)

सत गुरु नावल अधर हिंडोलना। हम धनि झूलन सुघर हिंडोलना ॥१॥
झूलन-झूलत गइलुँ गगनहि तटना। तहवाँ साधन का देखलुँ अखरना ॥२॥
सेत सुनावन जगमग देखलना। तहवाँ प्रान हमारा समैलना ॥३॥
अबकी समैले फिर न अइबना। जन 'बूला' गावल निरगुन हिंडोलना ॥४॥

(२)

सोहं हंसा लागलि डोर। सुरति निरति चढु मनुवां मोर ॥१॥
झिलिमिलि झिलिमिलि त्रिकुटी ध्यान। जगमग जगमग गगने तान ॥२॥
गहगह गह अनहद नीसान। प्रान पुरुष तहं रहता जान ॥३॥
लहरि लहरि उठि पछिव घाट। फहरि फहरि चल उतरु बाट ॥४॥
सेत बरन तहं आवै आप। कह 'बुल्ला' सोई माई बाप ॥५॥

---

१. परशुराम चतुर्वेदी-भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएँ पृ. ८७.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(३)

आपु कहैं आपुही पतियाई । निर्गुन नाम सदा सुखदाई ॥१॥
आपै औवल आपै आखिर । आपै भीतर आपै बाहिर ॥२॥
आपु आप अरु सर्वबियापी । आपुहि ध्यानी आपुहि जापी ॥३॥
आपुहि बोलै आपु बोलावै । आपुहि देखै आपु देखावै ॥४॥
आपुहि आवै आपुहि जावै । यह मति अचल कोऊ जन पावै ॥५॥
'बूला' बोले सुनु नर लोई । गुरु वचन सुनि जगहि विलोई ॥६॥

(४) गुलाल साहब

गुलाल साहब जाति के क्षत्रिय थे । ये गाजीपुर जिले के निवासी जमीन्दार थे । इन्हीं के यहाँ बूला साहब बुलाकी राम (कुर्मी) के नाम से हलवाही का काम किया करते थे । बूला साहब मालिक तथा जमीन्दार होते हुए भी जब उनके चमत्कारों से प्रभावित हो गये तब उनके (बूला साहब) के चरणों पर गिर पड़े और उनका शिष्यत्व स्वीकार कर लिया । तबसे ये उन्हीं के सत्संग में सदा रहने लगे । बूला साहब की मृत्यु के पश्चात् ये उनकी गद्दी के उत्तराधिकारी हुए । इनके हृदय की उदारता, भावुकता और महानता का पता केवल इसी बात से चल सकता है कि इन्होंने अपने नौकर और एक साधारण हल-वाहे के आध्यात्मिक व्यक्तित्व के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और अपने पूर्व संस्कारों को तिलाञ्जलि देकर सदा के लिए अपने गुरु के सच्चे अनुयायी बन गए । वास्तव में हमें इनकी रचनाओं के अन्तर्गत भक्ति तथा प्रेम की भावना इनके गुरु (बूला साहब) तथा इनके दादा गुरु (यारी साहब) से भी अधिक मिलती है । भरकुड़ा (जिला गाजीपुर) की गद्दी पर ये अन्त समय तक रहे । सं० १६१६ वि. में इनका देहान्त हुआ । इनके जीवन-वृत्त के संबंध में विशेष कुछ ज्ञात नहीं है ।

इनकी रचनाओं का एक संग्रह 'गुलाल साहब की बानी' के नाम से बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित हो चुका है । इनके कुछ अन्य पद इनको गद्दी भरकुड़ा (गाजीपुर) से प्रकाशित 'महात्माओं की बाणी' में भी संग्रहीत हैं । इनके दो ग्रन्थ 'ज्ञान गुष्टि' तथा 'राम सहस्रनाम' के नाम से सुने जाते हैं किन्तु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

इनका प्रकाशन अभी तक नहीं हो पाया है। गुलाल साहब की भाषा में भोज शब्दों, क्रिया-पदों एवं मुहावरों की प्रचुरता पायी जाती है। इनकी कविता इनके प्रेम की विह्वलता, हृदयोल्लास तथा श्रद्धामयी भक्ति का सर्वत्र परि मिलता है। ये एक उच्चकोटि के साधक भी थे। इनकी वर्णन शैली में तन्मय के साथ-साथ स्वानुभूति की भी झलक मिलती है और इसमें प्रवाह की भी म कुछ कम नहीं है१। अपने हृदय के उद्गार को प्रकाशित करते हुए ये क हैं कि—

(१)

हे मन धोवहु तनकी मैली।
यह संसार नहिं सूझत घट, खोजत निसु दिन गैली ॥टेक॥
नहीं नाव नहिं केवट बेड़ा, फिरत फिरत दिन ऐली।
पांच पचीस तीन घट भीतर, कठिन कलुख जिम भैली ॥१॥
गुरु परताप सा धुकी संगति, प्रान गगन चढ़ि गैली।
कहैं 'गुलाल' राम भयो मेला, जन्म सुफल तब कैली ॥२॥

(२)

रसना राम नाम लव लाई।
अंतरंगते प्रेम जो उपजैं, सहज परमपद पाई ॥टेक॥
सत गुरु बचन समीर थीर धरि, भाव सो बंद लगाई।
ऊड़ै हंस गगन चढ़ि धावै, फटि जाय भ्रम काई ॥१॥
जोग, यज्ञ, तप, दान, नेम, ब्रत, यह मोही नहीं आई।
संतन को चरनोदक लैले, गिरा जूठ मैं पाई ॥२॥
कहा कहौं कछु कहल न लागै, नाहक जग बौराई।
कहै 'गुलाल' नाम नहिं जानत, खुझि है हमरी बलाई ॥३॥

१. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी-सन्त काव्य पृ. ३७७-७८ (किताब मह इलाहाबाद)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(३)

राम मोर पुंजिया राम मोर धना,
निस बासर लागल रहु मना ॥टेक॥
आठ पहर तहं सुरति निहारी,
जस बालक पालै महतारी ॥१॥
धन सुत लछमी रह्यो लोभाय,
गव मूल सब चल्यो गंवाय ॥२॥
बहुत जतन भेष रचो बनाय,
बिन हरिभजन इंदोरन पाय ॥३॥
हिंदू तुरुक सब गयल बहाय,
चौरासी में रहि लिपटाय ॥४॥
कहै 'गुलाल' सतगुरु बलिहारी,
जाति पांति अब छुटल हमारी ॥५॥

५--भीखा साहब

भीखा साहब का पूर्व नाम भीखा नन्द चौबे था। इनका जन्म आजमगढ़ ले के खानपुर बोहना नामक गाँव में हुआ था। आठ वर्ष की अवस्था से ये साधुओं का सत्संग करने लगे। बारह वर्ष की आयुमें इनका विवाह गया था। परन्तु ये घर छोड़कर भाग निकले। काशी आकर ये विद्याध्ययन रना चाहते थे परन्तु पढ़ने में मन न लगने के कारण, ये घर लौट गये। ये लाल साहब के एक पद (ध्रुपद) को किसी मंदिर में गाते सुनकर बहुत ही प्रभावित ए। अतः भुड़कुड़ा जाकर इन्होंने गुलाल साहब की शिष्यता ग्रहण की जिनकी रि-भूरि प्रशंसा इनके पदों में पायी जाती है। भीखा साहब दीक्षा ग्रहण करने उपरान्त अपने गुरु के साथ भुरकुड़ा में रहने लगे। गुरुकी मृत्यु के पश्चात उनकी गद्दी के उत्तराधिकारी बने और सं० १८१७ वि० से लेकर ३१ वर्षो क भुरकुड़ा की गद्दी को सुशोभित करते रहे। इन्होंने सं० १८४८ वि० में लोकवासको प्राप्त किया। इनके जीवन की अन्य घटनाओं का कोई विवरण प्त नहीं होता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भीखा साहव ने छः ग्रन्थों की रचना की है जो १–राम कुण्डलिया, सहस्र नाम ३–राम सबद ४–रामराग ५–राम कवित्त और ६–भगतवच्छा नाम प्रसिद्ध हैं। इनकी रचनाओं का संग्रह वेलवेडियर प्रेस, प्रयाग द्वारा प्र हो चुका है। इनके कुछ अन्य फुटकल पदों का संग्रह 'महात्माओंकी वा भी उपलब्ध होता है। इनका सबसे बड़ा ग्रन्थ 'राम सवद' और 'भगत वील' का प्रकाशन कदाचित् अभी तक नहीं हुआ है। भीखा साहव की रचना उनके आत्म-निवेदन का भाव बहुत स्पष्ट रूप से लक्षित होता है। दार्शनिक विचार-धारा वेदान्त के सिद्धान्तों से प्रभावित हुई है जिसे कहीं इन्होंने किसी न किसी रूपमें स्वीकार किया है। इनकी कविता में गेय त अभाव नहीं पाया जाता। इनकी वर्णन शैली सरल और सुबोध है जिसमें छन्दों का सफल प्रयोग किया गया है।१

(१)

मनुवां नाम भजत सुख लीया ।।टेक।।
जनम जनम कै उरझनि पुरझनि, समुझत करकत हीया
यह तौ माया फांस कठिन है, का धन सुत वित तिया ।।१।।
सत्त शब्द तन सागर मांही, रतन अमोलक पीया ।
आपा तेजि धंसै सो पावै, लै निकसै मरजीया ।।२।।
सुरति, निरति लौलीन भयो जब, दृष्टि रूप मझि थीया ।
ज्ञान उदित कल्पद्रुम को तरु, जुक्ति जमावो बीया ।।३।।
सतगुरु भये दयाल ततच्छिन, करना था सो किया ।
कहै भीख परकासी कहिये, घर अरु बाहर दीया ।।४।।

१—बावरी सम्प्रदाय का विवरण प्रस्तुत करने में लेखक को आचार्य पर चतुर्वेदी की निम्नांकित पुस्तकों से बड़ी सहायता मिली हैं। इसके लिए वे उनका अत्यन्त आभारी है।—

(क) उत्तरी भारत की सन्त परम्परा (भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहा २०२१ वि०

(ख) सन्त काव्य (किताब महल, इलाहाबाद; तृतीय संस्करण, १९६७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय ४

भोजपुरी लोक-साहित्य

भोजपुरी का साहित्य आज भी अधिकांश रूप में मौखिक अवस्था में विद्यमान है। यह अलिखित साहित्य इतना विपुल है कि सैकड़ो शोधी छात्र अनेक वर्षों तक इसका संग्रह करते रहें तौभी यह समाप्त नही हो सकता। नयी पाश्चात्य सभ्यता के आक्रमण के कारण यह मौखिक साहित्य कराल काल के काल में बड़ी द्रुत गति से चलता चला जा रहा है। अतः यदि शीघ्र ही इस विशाल साहित्य को लिपि की कारा में बाँधकर सुरक्षित नहीं कर लिया गया तो इसका सर्वाङ्गीण लोप निश्चित प्राय है।

यह प्रसन्नता का विषय है कि इस लोक साहित्य को लिपिवद्ध करने का प्रयास कुछ विद्वानों ने किया है। इस संग्रह को दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है—(क) यूरोपीय विद्वानों के द्वारा संग्रह (ख) भारतीय विद्वानों के द्वारा संग्रह। ईसा की विगत शताब्दी (१९वीं) तथा वर्तमान शती में भी कुछ यूरोपीय विद्वानों—जो इस देश में शासन करने के लिये आये थे—का ध्यान इन लोक गीतों क महत्व की ओर आकृष्ट हुआ। इन्होंने आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व भोजपुरी के लोकगीतों के संग्रह का श्री गणेश किया था। इन्होंने बड़ी ही वैज्ञानिक पद्धति से इस कार्य को सम्पादित किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सच तो यह है कि उनका यह शोध कार्य भारतीय विद्वानों के लिए प्रदर्शन का दीप स्तम्भ रहा है। अतः इन विदेशी विद्वानों की जितनी प्रशंसा की जाय सब थोड़ी है।

जिन यूरोपीय विद्वानों ने भोजपुरी लोक-गीतों का संग्रह तथा प्रकाशन किया है उनमें डाक्टर सर जी० ए० ग्रियर्सन का नाम अत्यन्त प्रसिद्ध है। इन्होंने भारतीय तथा यूरोपीय अनेक शोध पत्रिकाओं में भोजपुरी गीतों को प्रकाशित किया। ग्रियर्सन के अतिरिक्त विलियम क्रुक, ग्राउस, इरविन, फ्रेजर और शिरेफ आदि सज्जनों ने भी लोक-गीतों का संग्रह किया है। इन यूरोपीय विद्वानों का संगृहीत गीतों का संकलन किसी स्वतन्त्र पुस्तक के रूप में प्राप्त नहीं है बल्कि इनके ये गीत प्राचीन शोध सम्बन्धी विभिन्न पत्रिकाओं में बिखरे पड़े हैं जिनका मिलना भी अब कठिन हो रहा है।

अ—यूरोपीय विद्वानों द्वारा लोक-गीतों का संग्रह

१--डाक्टर सर जार्ज ग्रियर्सन

डाक्टर सर जार्ज ग्रियर्सन एक अंग्रेज सिविलियन थे जो गत शताब्दी के चतुर्थ चरण में बंगाल की सिविल सर्विस में नियुक्त होकर भारत आये थे। डा० ग्रियर्सन एक प्रकाण्ड भाषा शास्त्री थे जिनका महान् ग्रन्थ 'लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया' है। यह ग्रन्थ इनके गंभीर भाषा शास्त्रीय ज्ञान का ज्वलन्त प्रमाण है। इन्होंने काश्मीरी भाषा का भी शब्द-कोश अनेक भागों में प्रस्तुत किया है।

परन्तु भाषा-शास्त्र के अतिरिक्त लोक साहित्य के क्षेत्र में भी डाक्टर ग्रियर्सन का योगदान अत्यन्त अधिक है। जब बहुत से विद्वान् भोजपुरी भाषा का नाम भी नहीं जानते थे और इसके लोकसाहित्य को उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे, उस समय आज से लगभग एक सौ वर्ष पूर्व, डा० ग्रियर्सन ने भोजपुरी के लोक गीतों का मूल्य समझा और इनका संकलन तथा सुसम्पादन कर प्रकाशन किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकार भोजपुरी के लोक गीतों के सर्व प्रथम संग्रह करने का श्रेय इसी नामधन्य मनीषी को प्राप्त है। इन्होंने भोजपुरी लोक साहित्य के अनेक विद्वत्ता-पूर्ण लेखों को लिखकर तथा उन्हें अंग्रेजी में अनूदित कर विद्वानों के सामने प्रस्तुत किया और उसके महत्त्व का सम्यक् रीति से प्रतिपादन किया है।

डाक्टर ग्रियर्सन ने रायल एशियाटिक सोसाइटी की पत्रिका में कुछ 'विहारी लोक गीतों' का संग्रह प्रकाशित किया है १। ये गीत बिहार राज्य के आरा और पटना जिलों से संग्रहीत हैं। अतः प्रधानतया ये भोजपुरी के ही गीत हैं। इनमें कुछ गीतों में मगही का भी पुट पाया जाता है परन्तु उनकी आत्मा भोजपुरी है। इस लेख के प्रारम्भ में विहार की तीन प्रधान बोलियों—मगही, मैथिली और भोजपुरी का थोड़ा विवेचन भी किया गया है। इसके पश्चात् सोहर, जतसार, बिरहा आदि के गीत दिये गये हैं। इन गीतों का अंग्रेजी में अनुवाद भी दिया गया है।

डा० ग्रियर्सन का दूसरा लेख इसी पत्रिका में 'भोजपुरी लोक गीत' के नाम से प्रकाशित हुआ है २। लेख के प्रारम्भिक आठ पृष्ठों में लेखक ने भोजपुरी भाषा की विशेपता, उसका साहित्य तथा संग्रहीत गीतों के छन्द आदि विषय पर सुन्दर प्रकाश डाला है ३। इस लेख में कुल मिला कर ४९ गीतों का संग्रह किया गया है जिनमें केवल विरहों की ही संख्या ४२ है। इसके पश्चात् घांटो या चैता और जतसार के भी गीत हैं। जहाँ तक प्रस्तुत लेखक को ज्ञात है भोजपुरी लोक-गीतों का यह सर्वप्रथम संग्रह है। इस लेख में गीतों का अंग्रेजी अनुवाद भी किया गया है परन्तु इसकी सबसे बड़ी विशेपता टिप्पणियाँ है। डॉ० ग्रियर्सन ने गीतों में आये हुए प्रायः प्रत्येक शब्द की उत्पत्ति, उनका विभिन्न अर्थ, रूप—

१. जे० आर० ए० एस० खण्ड १६ (१८८४) पेज १९६।
'सम विहारी फोक सौन्ग्स।'
२. जे० आर० ए० एस० खण्ड १८ (१८८६) पृ० २०७।
'सम भोजपुरी फोक सौन्ग्स।'
३. वही, पृ० २०७–२१४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

निर्माण और गीतों के प्रसंग को लिखकर इस लेख के महत्त्व को बहुत अ बढ़ा दिया है। स्थान-स्थान पर ऐतिहासिक तथा भौगोलिक टिप्पणियाँ भी दी हैं जिनसे गीतों को समझने में बड़ी आसानी होती है। इन पंक्तियों के लेख अपनी 'भोजपुरी लोक-गीत' भाग २ में लगभग सौ पृष्ठों की जो टिप्प लिखी हैं उसमें डॉ० 'ग्रियर्सन की इन टिप्पणियों से बड़ी सहायता ली गई है

डा० ग्रियर्सन ने बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी की पत्रिका में 'विजय के गीत को प्रकाशित किया है १। लेख के प्रारम्भ में विजयमल की संक्षिप्त और इसके संग्रह-क्षेत्र का भी उल्लेख पाया जाता है। यह गीत विहार शाहाबाद जिले से संग्रह किया गया है। विजयमल भोजपुरी भाषा का महा है जो ११३८ पंक्तियों में समाप्त हुआ है। विद्वान् लेखक ने इस समस्त का अंग्रेजी में अनुवाद भी किया है और स्थान, स्थान पर पाद टिप्प भी दी हैं जो बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं। विजयमल का इतना प्रामाणिक संस्क अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है। दूधनाथ प्रेस, कलकत्ते में 'कुँअर विज नामक एक पुस्तक अभी प्रकाशित हुई है परन्तु इसका विशेष महत्त्व नहीं है

उक्त पत्रिका के एक दूसरे अंक में ग्रियर्सन ने 'राजा गोपीचन्द के गीत दो विभिन्न पाठों' (versions) को संग्रहीत किया है २। राजा गोपी की कथा बड़ी प्रसिद्ध हैं और इसका प्रचार भोजपुरी प्रदेश के अतिरिक्त प्रान्तों में भी है। अतः भिन्न भिन्न प्रान्तों में गोपीचन्द के गीत विभिन्न रूपों में जाते हैं। डाक्टर ग्रियर्सन ने विहार राज्य के मगध प्रदेश तथा भोजपुरी में प्रचलित इस गीत के विभिन्न पाठों को एक स्थान पर संग्रह किया है इन पाठों के कथानक में जो अन्तर है उसे भी बतलाया है। गोपीचन्द के की तुलनात्मक आलोचना करने वाले विद्वानों के लिये यह लेख उपयोगी ही अत्यन्त आवश्यक भी है। गीत के अन्त में उसका अंग्रेजी अनुवाद और टिप्पणियाँ भी दी गई हैं। यह गीत गद्य-पद्यात्मक है।

---

१. जे० ए० एस० बी० भाग ५३, (१८८४) खंड ३ पृ० ६४। 'दि सांग विजयमल'।

२. जे० ए० एस० बी० भाग ५४, (१८८५) खंड १ पृ० ६४। 'टू व आफ दि सौंग आफ गोपीचन्द'।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसी पत्रिका के एक अन्य अंक में डाक्टर ग्रियर्सन ने 'मानिकचन्द का गीत' शीर्षक एक लेख लिखा है १। यह लेख बड़ा विस्तृत है तथा १०४ पृष्ठों में समाप्त हुआ है। मानिकचन्द राजा गोपीचन्द के पिता थे। अतः इस लेख में गोपीचन्द के जीवन आदि के सम्बन्ध में भी प्रचुर प्रकाश डाला गया है। लेखक ने प्रारम्भिक चौदह पृष्ठों में राजा मानिकचन्द की जन्मभूमि, आविर्भाव काल, कथा, गुरुपरम्परा आदि के सम्बन्ध में तथा इनकी स्त्री मयनावती और पुत्र गोपीचन्द के विषय में अनेक ज्ञातव्य बातें लिखी हैं। 'मानिकचन्द्र की कथा' बंगला भाषा में है जो नागरी अक्षरों में छापी गई है। गोपीचन्द से संबद्ध होने के कारण इस लेख का बड़ा ही महत्व है। इस गीत का अंग्रेजी अनुवाद और अनुवाद टिप्पणियाँ भी दी गई हैं।

डाक्टर ग्रियर्सन ने 'इंडियन एटिक्वेरी' नामक बम्बई से प्रकाशित होने वाली शोध सम्बन्धी प्रसिद्ध पत्रिका में 'आल्हा के विवाह के गीत' को प्रकाशित किया है २। भोजपुरी प्रदेश में आल्हा के गीत बहुत ही प्रसिद्ध है तथा बड़े चाव से गाये और सुने जाते हैं। लेखक ने इन्हीं गीतों को संग्रह कर इन्हें प्रकाश में लाने का प्रशंसनीय प्रयत्न किया है। यह गीत भी भोजपुरी का एक महाकाव्य है जो ५५८ पंक्तियों में समाप्त हुआ है। इसमें आल्हा के केवल विवाह का ही वर्णन है। उसके प्रारंभिक जीवन का इसमें उल्लेख नहीं है। फिर भी यह संग्रह हमारे बड़े काम है। ग्रियर्सन ने लेख के प्रारम्भ में 'आल्हा के गीत' के विभिन्न पाठों का उल्लेख किया है और आल्हा की ऐतिहासिकता पर भी संक्षेप में प्रकाश डाला है। इसी पत्रिका में .एक अन्य स्थान पर लेखक ने 'आल्हा खंड' का पूर्ण कथानक संक्षेप में उपस्थित किया है३। जिससे आल्हा

---

१. जे० ए० एस० बी० भाग ५३, (१८७८) खंड १ नं० ३ 'दि सांग आफ मानिकचन्द।'

२. इन्डियन एन्टिक्वेरी भाग १४, (१८८५) पृ० २०६।
'दि सांग आफ आल्हाज मैरेज।'

३. वही पृ० २२५ 'ए समरी आफ दि आल्हखंड।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

के पूरे जीवन चरित को जानने में बड़ी सहायता मिलती है। यह पूर्ण क अंग्रेजी पद्य में अनूदित है परन्तु मूल भोजपुरी गीत नहीं दिया गया है।

लन्दन की स्कूल आफ ओरियण्टल एण्ड अफ्रीकन स्टड़ीज (प्राच्य परिषद्) की पत्रिका में डाक्टर ग्रियर्सन ने 'उत्तरी भारत का लोक सा नामक एक लेख प्रकाशित किया है जिसमें भोजपुरी भाषा के भी अनेक सम्मिलित हैं[१]। इस लेख में लेखक ने उत्तरी भारत में प्रचलित तुलसीदा का रामचरित-मानस, बिहारी की सतसई, सूरदास के पद और विद्याप पदावली से उदाहरण देते हुए आल्हा के सुप्रसिद्ध गीत का कुछ अंश किया है। साथ ही भगवती देवी की अत्यन्त प्रसिद्ध लोक गाथा और सिंह के गीत का संग्रह किया गया है। 'लाइट आफ एशिया' के ख्यात कवि सर एडवि आरनाल्ड कृत भगवती देवी के गीत का अंग्रेजी अ भी दिया गया है।

डाक्टर ग्रियर्सन ने जर्मन भाषा की एक सुप्रसिद्ध पत्रिका में 'न वनजरवा' नामक एक लेख लिखा है [२] जिसमें उन्होंने 'नायका' नामक वनजारा या सौदागर के गीत का संग्रह किया है जो ६२९ पंक्तियों यह गीत बहुत बड़ा है तथा यह भी एक भोजपुरी महाकाव्य है। यह शाहाबाद जिले से संग्रहीत है। लेखक ने प्रारम्भ के सोलह पृष्ठों में इसी गी आधार पर भोजपुरी भाषा का संक्षिप्त व्याकरण भी दिया है जो बहु उपयोगी है। इन्होंने गीत की व्याकरण संबंधी विशेषताओं पर प्रचुर प्र डाला है। गीत में आये हुए कठिन शब्दों का अर्थ भी अंग्रेजी में दिया गया स्थान-स्थान पर टिप्पणियाँ भी हैं। भोजपुरी भाषा तथा लोकगीत के वि के लिये यह लेख अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

---

१. बुलेटिन आफ दि स्कूल आफ ओरियन्टल एण्ड अफ्रिकन स्टडीज, लं भाग १ खंड ३ (१९२०) पृ० ८७ (दि पापुलर लिटरेचर आफ नार्दर्न इन्डिया)।

२. जे० डी० एम० जी० भाग ४३, (१८८९) पृ० ४३८ 'सेलेक्टेड स्पेसीमेन्स आफ दि बिहारी लैंग्वेज।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२—विलियम क्रुक

विलियम क्रुक भी डा० ग्रियर्सन की ही भाँति एक अंग्रेज सिविलियन थे, जो अनेक वर्षों तक उत्तर प्रदेश ये मिर्जापुर जिले के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट थे। ये एक गंभीर विद्वान् और लोक संस्कृति-शास्त्री थे। इन्होंने "पापुलर रिलिजन एण्ड फोकलोर आफ नार्दर्न इण्डिया" नामक अत्यन्त पांडित्य पूर्ण पुस्तक लिखी है जिसमें उत्तरी भारत के लोक विश्वास, अन्धपरम्पराओं; ग्रामीण देवी-देवताओं तथा लोक-धर्म का बड़ा ही वैज्ञानिक विवेचन किया है। सन् १८८० ई के आस-पास इन्होंने "नार्थ इण्डियन नोट्स एण्ड क्वेरीज" नामक एक शोध पत्रिका भी प्रकाशित की थी जिसमें लोक साहित्य की बहुमूल्य सामग्री भरी पड़ी है। इन्होंने "ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स आफ नार्थ वेस्टर्न प्राविन्स" ग्रन्थ की रचना चार विशाल भागों में की है जिसमें इस प्रदेश की प्रत्येक जाति के संबंध में प्रचलित लोकोक्तियों तथा मुहावरों का भी प्रचुर प्रयोग किया गया है।

विलियम क्रुक ने पं० राम गरीब चौबे के साथ भोजपुरी के अनेक लोक-गीतों का संकलन कर उसे "इण्डियन एण्टिक्वेरी" नामक शोध पत्रिका में प्रकाशित किया है। सन् १८५७ ई में जो सिपाही विद्रोह हुआ था उसकी प्रति-ध्वनि भोजपुरी के अनेक लोक गीतों में सुनाई पड़ती है। क्रुक ने इन महत्त्वपूर्ण गीतों को भी एकत्रित कर इन्हें प्रकाश में लाने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। इस प्रकार इस दिशा में क्रुक का योगदान अत्यन्त महत्व-पूर्ण समझना चाहिए।

३—ह्यूज फ्रेजर

फ्रेजर एक अंग्रेज सिविलियन थे जो गोरखपुर जिले के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट थे। इन्होंने बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी की पत्रिका में गोरखपुर जिले में प्राप्त भोजपुरी गीतों का संग्रह प्रकाशित किया हैं १। इन गीतों की कुल संख्या तेरह है जिनमें छः गीत कजली के, एक जतसार और शेष विभिन्न विषयों के गीत हैं। इन गीतों को लेखक ने सरकारी आज्ञा से गजेटियर में उपयोग करने

१. जे० ए० एस० बी० भाग ५२, (१८८३) पृ० १–३२
'फोकलोर फ्राम ईस्टर्न गोरखपुर।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

के लिये संग्रहीत किया था परन्तु किसी कारण से इन गीतों का उसमें उपयो[illegible] हो सका। इन गीतों का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद भी प्रस्तुत किया ग[illegible] जिसे फ्रेजर ने स्वयं किया है। परन्तु इनका सम्पादन डाक्टर ग्रियर्सन के द्वारा[illegible] है जिन्होंने पाद टिप्पणियों में भोजपुरी भाषा की विभिन्न विशेषताओं पर [illegible] प्रकाश डाला है। साथ ही इन गीतों के छन्द पर भी विचार किया गया[illegible]

(४) जे. बीम्स

यह भी एक सिविलियन थे। इन्होंने बंगाल एशियाटिक सोसायटी [illegible] पत्रिका में 'भोजपुरी भाषा' में पर टिप्पणियाँ लिखी हैं[1]। ये भो[illegible] व्याकरण के बड़े उत्कृष्ट विद्वान् थे। इनके द्वारा लिखा गया 'हिन्दी[illegible] व्याकरण' आज भी अत्यन्त प्रामाणिक माना जाता है। उपर्युक्त लेख में [illegible] 'भोजपुरी बोली' के व्याकरण का ही विस्तृत विवेचन किया गया है [illegible] लेखक ने अनेक भोजपुरी गीतों को भी उदाहरण के रूप में उद्धृत किया है।

(५) ए. जी. शिरेफ

आप भी अंग्रेज सिविलियन थे। आप कुछ दिनों तक जौनपुर जि[illegible] डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट थे। वहीं आपका परिचय पं० रामनरेश त्रिपाठी से [illegible] और उन्हीं के सम्पर्क से संभवतः आपका ध्यान भोजपुरी लोकगीतों की [illegible] आकृष्ट हुआ। आप हैलेटशाही शासन में गवर्नर के सलाहकार थे। [illegible] "हिन्दी फोक-सांग्स" नामक एक पुस्तक सम्पादित की है जिसमें भो[illegible] भाषा के उन्नीस गीतों का संग्रह है[2]। ये गीत विभिन्न प्रकार के हैं [illegible] सोहर और जतसार के गीतों की अधिकता है। इन गीतों का अंग्रे[illegible] पद्यात्मक अनुवाद भी उपस्थित किया गया है। इस पुस्तक में जो गीत सं[illegible] हैं उनमें से प्रायः सभी पं० रामनरेश त्रिपाठी की कविता कौमुदी [illegible] (ग्राम गीत) से लिये गये हैं।

---

१. जे० ए० एस० बी० भाग ३, एन० एस० (१८६८) पृ० ४८३
'नोट्स आन दि भोजपुरी डायलेक्ट आफ हिन्दी, स्पोकेन इन वेस्टर्न बिहा[illegible]

२: हिन्दी फोक सांग्स। (हिन्दी मन्दिर, इलाहाबाद, १९३६)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(आ) भारतीय विद्वानों के द्वारा लोक-गीतों का संग्रह

किसी देश की वास्तविक संस्कृति जानने के लिए वहां के लोक-गीतों का ...ध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। पाश्चात्य देशों में लोक-गीतों की रक्षा पर बड़ा ...न दिया जाता है। वहाँ प्रत्येक देश में 'फोकलोर सोसाइटी' स्थापित हैं ... गाँव गाँव में योग्य विद्वानों को भेज कर स्थानीय लोक गीतों का संग्रह ...राकर प्रकाशित करती है। विशप पर्सी तथा प्रोफेसर चाइल्ड ने इंगलैण्ड ... लोक-गीतों का बड़ा प्रामाणिक संग्रह कर उन्हें वैज्ञानिक रीति से सम्पादित ...या है। परन्तु इस देश में लोक-गीतों के संरक्षण की ओर अभी विद्वानों का ...न विशेष रूप से आकर्षित नहीं हुआ है। गत शताब्दी में सर्वप्रथम ग्रियर्सन ...दि अंग्रेज विद्वानों का ध्यान इस दिशा की ओर आकृष्ट हुआ था और उन्होंने ... गीत-रत्नों का संग्रह तथा प्रकाशन किया था।

क—पं० रामनरेश त्रिपाठी

लोकगीतों के संग्रह का सर्वप्रथम उद्योग पं० रामनरेश त्रिपाठी ने सन् १६२६ ई० ...या। त्रिपाठी जी का यह कार्य अनेक दृष्टियों से मौलिक और महत्वपूर्ण है। इन्होंने ...तों का संग्रह कर न केवल हमारी संस्कृति की रक्षा की है प्रत्युत सभ्य समाज ...ा ध्यान भी इन देहाती तथा उपेक्षित गीतों की ओर आकर्षित किया है। ...त्रिपाठी जी ने समस्त भारत की यात्रा कर, अपने समय, स्वास्थ्य और द्रव्य का ...प्रचुर व्यय कर कई हजार गीतों को एकत्रित किया है जिसका एक भाग इन्होंने ...अपनी कविता कौमुदी के भाग ५ में 'ग्राम गीत' के नाम से प्रकाशित किया है[1]।

---

१. हिन्दी मन्दिर, प्रयाग से सन् १६२६ में प्रकाशित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

१—कविता कौमुदी भाग ५—ग्राम-गीत

इस पुस्तक में सोहर, जनेऊ, विवाह, जाँत, सावन, निरवाही, हि कोल्हू, मेला और वारहमासा-इन दस प्रकार के गीतों का संग्रह है। पु प्रारम्भ में त्रिपाठी जी ने १३८ पृष्ठों की 'ग्राम गीतों का परिचय' नाम महत्वपूर्ण वृहत् भूमिका लिखी है जिसमें लोक-गीत संबंधी अनेक आवश्यक का विस्तृत विवेचन किया गया है। लोक गीतों के रचयिता, इनका काल, कवित्व, ऐतिहासिकता आदि विषयों का बड़ा ही सुन्दर वर्णन हुआ इन गीतों में निहित संस्कृति और सभ्यता के ऊपर प्रकाश डाला गया है। त्रि जी ने अपने विस्तृत संग्रह में से चुने हुए गीतों को ही इस पुस्तक में दिया है। अतः जो गीत यहां प्रकाशित हैं वे बड़े ही महत्वपूर्ण हैं। संग्रहकर्त्ता ने उत्तर प्रदेश और विहार प्रान्त में हिन्दी की विभिन्न वोलियों- वोली, व्रज भाषा, अवधी, भोजपुरी और वैसवाड़ी—में गाये जाने वाले गीतों संग्रह कर अपनी व्याख्या के साथ इन गीतों का सम्पादन किया है। चूंकि गीतों के संग्रह का चेत्र प्रधान रूप से उत्तर प्रदेश का पूर्वी भाग और विहार का प भाग रहा है, अतः इस पुस्तक में भोजपुरी गीतों की संख्या प्रचुर मात्रा में जाती है। किसी एक विशिष्ट योली के गीतों का संग्रह न होने के कारण त्रि जी को यह पुस्तक प्रकीर्ण संकलन है। इसलिए भाषा-शास्त्र की दृष्टि से पुस्तक का विशेष मूल्य नहीं है। यदि हिन्दी की किसी एक वोली का शा अध्ययन हम इन गीतों के द्वारा करना चाहें तो हमें निराश ही होना पड़ लोक गीतों के संग्रह में त्रिपाठी जी की यह कृति हमारे लिए पथ-प्रदर्शक काम करती है। इस पुस्तक में कुछ बड़े ही सुन्दर तथा मर्म—स्पर्शी गीतों संकलन किया गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२--सोहर

यह पुस्तक पं० रामनरेश त्रिपाठी द्वारा संग्रहीत और प्रकाशित की गई १। इसमें पुत्र जन्म के अवसर पर गाये जाने वाले गीतों का—जिन्हें सोहर हते हैं,—संग्रह है। इस पुस्तक में कुछ गीत तो कविता कौमुदी भाग ५ (ग्राम त) में प्रकाशित गीतों से लिए गए हैं और कुछ नूतन भी हैं। साधारण जनता लोक गीतों का प्रचार हो, इसी उद्देश्य को ध्यान में रख कर यह सस्ती, छोटी पुस्तिका प्रकाशित की गई है। संभवतः सोहरों का इतना अधिक एकत्र संग्रह न्यत्र उपलब्ध नहीं है।

३--हमारा ग्राम साहित्य

इस पुस्तक के भी संग्रहकर्त्ता और सम्पादक पं० राम नरेश त्रिपाठी ही हैं २। त्रिपाठी जी ने प्रारम्भ के ५६ पृष्ठों में जो 'ग्राम-साहित्य का संक्षिप्त परिचय' दिया है वह बड़ा उपयोगी है। इस परिचय में उन्होंने ग्राम-साहित्य की महत्ता का बड़ी सुन्दर रीति से प्रतिपादन किया है। देहाती कहावतों, मुहावरों, कहानियों तथा जातीय गीत एवं नृत्य पर प्रकाश डाला गया है। इस ग्रन्थ में विविध प्रकार के गीतों के भी संकलन हैं जिनमें सोहर, अन्नप्राशन, मुंडन, जनेऊ, विवाह, चक्की, खेत, कोल्हू आदि के गीत सम्मिलितहैं। विभिन्नजातियों द्वारा गाये जाने वाले गीतों का भी संग्रह है जिनमें मुख्यतया अहीर, कहाँर, तेली गड़ेरिया, धोबी, चमार आदि के गीत हैं। इनके अतिरिक्त घाघ और भड्डरी की कहावतें, खेती के विषय में प्रचलित कहावतें तथा निरोग रहने के चुटकुले भी दिये गये हैं। इन गीतों में भोजपुरी गीतों की संख्या अधिकता से पाई जाती है।

---

१. हिन्दी मन्दिर, प्रयाग द्वारा प्रकाशित।

२. प्रकाशक: हिन्दी मन्दिर, प्रयाग, १९४० ई०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(ख) डा० कृष्णदेव उपाध्याय

भोजपुरी लोक साहित्य के इतिहास में डा० कृष्णदेव उपाध्याय का दान नितान्त मौलिक है । इन्होंने आज से तीस-पैंतीस वर्ष पूर्व उस समय भो के लोक-गीतों के संग्रह का कार्य प्रारम्भ किया था जब कि हिन्दी के इस कार्य को उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे । डा० उपाध्याय ने भोजपुरी के सहस्त्र लोक-गीतों, कथाओं, लोकोक्तियों आदि का बड़ परिश्रम के साथ सं किया हैं जिनमें से 'भोजपुरी लोक-गीतों' के दो भाग अब तक प्रकाशित हो हैं । इन्होंने भोजपुरी लोक-संस्कृति पर एक वृहत् ग्रन्थ की रचना की है जो ही प्रकाशित होरही है । इसके अतिरिक्त डा० उपाध्याय ने लोक साहि सिद्धान्त पक्ष को भी अपने शोध का विषय बनाया है । भोजपुरी लोक के संबंध में इनकी एक पुस्तक शीघ्र ही प्रकाश्य है । कहने आशय यह है भोजपुरी लोक-साहित्य का कोई भी अंग ऐसा नहीं है जो उपाध्याय लेखनी से अछूता बचा हो । भोजपुरी के संबंध में इनके विभिन्न ग्रन्थों का यहाँ प्रस्तुत किया जाता है ।

१—भोजपुरी लोक-गीत (प्रथम भाग)

इस ग्रंथ का संग्रह और सम्पादन डा० कृष्णदेव उपाध्याय ने किया है भोजपुरी लोक-गीतों के संग्रह की यह सबसे प्रथम तथा मौलिक रचना है। पुस्तक में संग्रहीत गीतों का संग्रह लेखक ने बड़े परिश्रम से भोजपुरी प्रदे गाँव गाँव में घूम कर किया है । प्रत्येक गीत के संग्रह की अपनी राम क हैं । पुस्तक के प्रारम्भ में पं० बलदेव उपाध्याय एम० ए०, साहित्या प्रोफेसर, हिन्दू विश्व विद्यालय, वाराणसी, ने सौ पृष्ठों की अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण भू लिखी है । इस भूमिका में भोजपुरी भाषा और साहित्य पर प्रचुर प्रकाश

१- हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग सं० २००० द्वारा प्रकाशित,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

...ा है तथा लोक गीतों की पाश्चात्य और भारतीय परम्परा, उनका महत्त्व, ...के गाने के प्रकार एवं गीतों के ऐतिहासिक तथा भौगोलिक आधार का सम्यक् ...ति से विवेचन किया गया है। अन्त में लोक गीतों में अलंकार और रस का ...रूपक दिखला कर 'विरहा की वहार' का आनन्द पाठकों को दिया गया है।

इस संग्रह में कुल २७१ गीतों का संकलन है। ये गीत संस्कार और ऋतु ...म से निम्नांकित पन्द्रह भागों में विभक्त हैं:—सोहर, खेलवना, जनेऊ, ...वाह, वैवाहिक परिहास, गवना, जांत, छठी माता, शीतला माता, झूमर, ...रहमासा कजली, चैता, विरहा और भजन। पुस्तक का सम्पादन वैज्ञानिक ...द्धति से किया गया है। प्रत्येक गीत का प्रसंग या संदर्भ पहले दिया गया है ...ससे पाठकों को गीत समझने में सरलता हो। पुनः गीत लिखकर उसके प्रत्येक ...ठिन शब्द का अर्थ पाद टिप्पणियों में दिया गया है। गीत की प्रत्येक पंक्ति का ...वं खड़ी बोली में प्रस्तुत है। पुस्तक के अन्त में २४ पृष्ठों में भोज-...री शब्दकोष है। इस पकार भोजपुरी गीतों का यह सर्व प्रथम वैज्ञानिक ...ंग्रह है।

२– भोजपुरी लोक-गीत (द्वितीय भाग)

इस पुस्तक का भी संग्रह और सम्पादन डा० कृष्णदेव उपाध्याय ने किया है[१]। इसकी भूमिका प्रयाग विश्वविद्यालय, के वाइस चान्सलर डाक्टर अमरनाथ झा ने लिखी है। अपनी भूमिका में डा० झा लिखते हैं कि "उपाध्याय जी ने एक सौ पृष्ठों की टिप्पणियों लिख कर पुस्तक की उपयोगिता बहुत बढ़ा दी है। इससे प्रान्तान्तर के निवासियों को गीतों को समझने में सहायता मिलेगी। आशा है कि साहित्य जगत् इस पुस्तक का आदर करेगा"[२]। इस पुस्तक में पचीस प्रकार के भोजपुरी गीतों का संग्रह किया गया है जिनकी कुल संख्या ४३० है। संग्रहीत गीतों का विभाजन प्रधानतया तीन भागों में

१. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग सं० २००५ द्वारा प्रकाशित,

२. भोजपुरी लोक गीत, भाग २, भूमिका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

किया गया है । १. संस्कार संबंधी २. ऋतु संबंधी और ३. पर्व संबंधी। निम्नलिखित प्रकार के गीत इसमें संग्रहीत हैं:—सोहर, जोग, सेहला, वहुरा, पिड़िया, गोधन, नागपंचमी, जतसार, झूमर, कजली, वारहमासा, डफ, चैता, सोहनी, रोपनी, विरहा, कांहारवा, गोंडउ, पचरा, निरगुन, देश पूर्वी, पाराती और भजन । प्रत्येक गीत के संपादन का क्रम वही है जो भाग का है । अपने वक्तव्य में लेखक ने गीत संग्रह संबंधी अपनी यात्राओं वड़ा ही रोचक वर्णन प्रस्तुत किया है । पुस्तक के अन्त में लगभग सौ की टिप्पणियाँ दी गई हैं जिसमें गीतों में आये हुए विषयों तथा शब्दों को भौगोलिक, ऐतिहासिक, भाषा-शास्त्र संबंधी विवेचन किया गया है । इस में भाषा-शास्त्र के विद्वानों के लिये अनुसंधान की प्रचुर सामग्री विद्यमान है।

३— भोजपुरी और उसका साहित्य

यह पुस्तक भी डा० कृष्णदेव उपाध्याय के द्वारा लिखी गई है प्रकाशन, 'राजकमल प्रकाशन' दिल्ली से हुआ है । इस पुस्तक में १० अध्याय जिनमें भोजपुरी भाषा, भोजपुरी का सन्त-साहित्य, लोक-साहित्य, आधुनिक साहित्य, लोक-नृत्य नाट्य आदि विषयों का सुन्दर विवेचन किया गया है। इसके अतिरिक्त भोजपुरी के लोक संगीत के अध्याय में भोजपुरी के कुछ प्रसिद्ध की स्वर लिपि भी प्रस्तुत की गई है । जहाँ तक लेखक को ज्ञात है भोजपुरी लोक संगीत और लोक कला का सर्व प्रथम विवेचन यहाँ प्राप्त होता है । भोजपुरी लोक साहित्य का संक्षिप्त परिचय प्रदान करने में यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई है[1] ।

---

१. सन् १९५७ में प्रकाशित ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४—भोजपुरी लोक-साहित्य का अध्ययन

यह ग्रन्थ डा० उपाध्यायका शोध प्रवन्ध—थीसिस—है जिस पर उन्हें लखनऊ विद्यालय से सन् १९५१ ई० में पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त हुई थी१। ग्रन्थ में भोजपुरी साहित्य का साङ्गोपाङ्ग विवेचन प्रस्तुत किया गया है। उपाध्याय का यह ग्रन्थ नितान्त मौलिक और शोध-पूर्ण है। क्योंकि इनके किसी भी विद्वान् ने भोजपुरी साहित्य का विवेचन नहीं किया था। भोजपुरी लोक-साहित्य का वर्गीकरण, लोक गीतों के श्रेणी विभाजन का आधार (क्रैटेरिया) उसके प्रकार, लोकगाथाओं की उत्पत्ति के संबंध में विभिन्न विद्वानों ..त, लोक गाथाओं का विभाजन और उनकी विशेषतायें, लोक कथाओं की ..न परम्परा, इनकी विशेषता और आधुनिक कहानियों से इनकी तुलना .. विषयों का बड़ी ही वैज्ञानिक पद्धति से विवेचन किया गया है। लोक ..पित के अन्तर्गत भोजपुरी लोकोक्तियों, मुहावरों, पहेलियों, पालने के गीत, ..ों के खेल के गीत आदि का भी सुन्दर समावेश प्राप्त होता है। इसके ..रिक्त भोजपुरी लोक-गीतों में प्रतिविम्वित लोक संस्कृति की भी बाँकी झाँकी ..त की गई है। प्रत्येक कथन की पुष्टि गीतों को उद्धृत कर की गई है। इस ..र यह ग्रन्थ अनेक दृष्टियों से मौलिक, शोधपूर्ण और उपादेय है। ऐसा ..वास है कि भावी शोधकर्ताओं के पथ—प्रदर्शन के लिए यह पुस्तक दीप—शिखा ..कार्य करेगी।

५—लोक-साहित्य की भूमिका

इस ग्रन्थ में डा० उपाध्याय ने लोक साहित्य के सिद्धान्तों की विशद समीक्षा ..त की है। जहाँ भोजपुरी लोकगीत भाग १ और २ लोक गीतों का संकलन ..है, वहाँ "लोक साहित्य की भूमिका" में इस साहित्य के मूल भूत सिद्धान्तों ..वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। सच तो यह है कि यह पुस्तक लोक साहित्य

१ हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी से सन् १९६० ई में प्रकाशित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

का 'प्राइमर' है जिससे इस विषय के अध्येता छात्रों को इस शास्त्र का परिचय प्राप्त होता है। जिस प्रकार से अंग्रेजी में सोफिया वर्न की उपयोगी है, उसी प्रकार से हमारी राष्ट्र भाषा में प्रणीत यह पुस्तक अत्यन्त है। अपने विषय के स्पष्टी करण के रूप में लेखक ने भोजपुरी के अनेक और लोकोक्तियों को उदाहरण के रूप में इस ग्रन्थ में स्थान दिया है। पुस्तक अनेक विश्वविद्यालयों द्वारा लोक-साहित्य (एम. ए.) के पाठ्य में स्वीकृत की जा चुकी है १।

६—हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास भाग १६

(हिन्दी का लोक साहित्य)

यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य के वृहत् इतिहास का सोलहवाँ भाग है संबंध पूर्णतया हिन्दी के लोक साहित्य से हैं। इसका सम्पादन डा० कृ उपाध्याय ने त्रिपिटकाचार्य, महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन के साथ हैं २। इस विशालकाय ग्रन्थ में हिन्दी की वीस वोलियों अथवा उप के लोक साहित्य का विवरण उस भाषा के विशिष्ट विद्वानों ने प्रस्तुत कि यह पहिला ही अवसर है जव कि हिन्दी साहित्य के इतिहास में इस साहित्य को भी स्थान दिया गया हैं। यह कथन पुनरुक्ति मात्र ही हो हिन्दी साहित्य के उत्थान और अभ्युदय में लोक साहित्य का महान् योगदा है। अतः इस दिशा में यह ग्रन्थ एक श्लाघनीय प्रयास है।

डा० कृष्णदेव उपाध्याय ने इस ग्रन्थ में भोजपुरी लोक-साहित्य प निवन्ध लिखा है जो लगभग ८० पृष्ठों का है। इसके अतिरिक्त इन्होंने इ की भूमिका के रूप में १८० पृष्ठों का एक विद्वतापूर्ण प्राक्कथन भी जिसमें लोक साहित्य के विभिन्न अवयवों का संक्षिप्त रूप में विशद वर्णन किया गया है। पुस्तक के अन्त में डा० उपाध्याय ने लोक साहित्य संबंधी सामग्री भी प्रस्तुत की है जो अत्यन्त उपयोगी हैं।

१. साहित्य भवन, लिमिटेड, प्रयाग। द्वितीय संस्करण—१९७०

२. काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी से सन् २०१७ वि. में प्र पृ० सं० ७८१, मूल्य २५ रुपये मात्र।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(७) भोजपुरी लोक-गाथा और लोक-कथायें

डा० उपाध्याय ने अपने गीत संग्रह के दौरे में कई हजार गीतों का संग्रह किया था जिनमें लगभग सात सौ चुने हुए गीतों का प्रकाशन भोजपुरी लोक-गीत भाग १, २ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से हो चुका है। लेखक के संग्रह में हजारों ऐसे गीत सुरक्षित हैं जिनका प्रकाशन अभी नहीं हुआ है। उन गीतों में भोजपुरी लोक-गाथाओं की प्रधानता है। इन गाथाओं में कुछ तो छोटी हैं जैसे भगवती देवी और कुंअर सिंह, परन्तु कुछ बहुत ही लम्बी हैं जैसे विजयमल, आल्हा, नयकवा वनजारा, सोरठी, विहुला और ढोलन के गीत। इन गीतों को भोजपुरी महाकाव्य कहें तो कुछ अनुचित न होगा। यह संग्रह अभी प्रकाशित नहीं हुआ है परन्तु आशा है कि यह शीघ्र ही प्रकाश में आ जायेगा।

इन गीतों के संग्रह के अतिरिक्त लेखक ने लोक कथाओं का भी विशाल संग्रह किया है। ये लोक कथाएँ वे ही हैं जिन्हें बूढ़ी दादियाँ अपने बच्चों को सुलाने के समय रात को सुनाती हैं और खेत से आये हुये थके-माँदे किसान जाड़े के दिनों में शाम को जलतीहुई आग (कउड़ा) के पास बैठ कर कहा करते हैं। इन कहानियों में मनोरंजन, उपदेश, रहस्य, रोमांच और कौतुक की मात्रा विशेष रहती है। लेखक ने इन गाथाओं और कथाओं के प्रकाशन की जो वृहत् योजना तैयार की है उसका उल्लेख 'भोजपुरी लोक-गीत भाग २' के वक्तव्य में किया गया है। इनके अतिरिक्त लेखक के पास भोजपुरी मुहावरों, कथाओं, और पहेलियों आदि का भी पर्याप्त संग्रह है जिनका प्रकाशन वांछनीय ही नहीं अत्यावश्यक भी है।

८—भोजपुरी लोक-संगीत

यह पुस्तक भी डा० उपाध्याय के द्वारा लिखी गई है। इसमें भोजपुरी लोक गीतों के विशिष्ट विधाओं—जैसे सोहर, विवाह, गवना, होली, चैता, विरहा आदि के विशेष धुनों को लेकर उनकी स्वर लिपि प्रस्तुत की गई है। इस पुस्तक में लगभग ५० गीतों का 'सरगम' दिया गया हैं। संभवतः भोजपुरी लोक गीतों की स्वर-लिपि प्रथम वार इस ग्रन्थ में इतने विस्तार के साथ उपलब्ध है। यह ग्रन्थ उत्तर प्रदेश संगीत-नाटक एकेडमी, लखनऊ के द्वारा शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

९–भोजपुरी लोक-साहित्य

भारतीय लोक संस्कृति शोध संस्थान, वाराणसी के तत्त्वाधान में एक संस्कृति ग्रन्थ-माला शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है । इस ग्रन्थ माला का भारतीय लोक संस्कृति का प्रचार तथा प्रसार करना है । अतः इस माला प्रकाशन व्यावसायिक दृष्टि को ध्यान में न रखकर शुद्ध सांस्कृतिक दृष्टि में गया है ।

इसी लोक-संस्कृति-ग्रन्थ-माला में डा० उपाध्याय की 'भोजपुरी लोक-सा नामक पुस्तक प्रकाशित हो रही है । इस ग्रन्थ में भोजपुरी के लोक साहित्य विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है । लोक गीत की प्रत्येक विधा के उदाहरण दिये गये हैं जिससे पाठकों को गीतों की विशेषताओं को समझने में हो । भोजपुरी के लोक गीतों की प्रत्येक विधा का इतना सर्वाङ्गीण तथा विवेचन अत्यन्त उपलब्ध नही हैं ।

१०–भोजपुरी लोक-संस्कृति

डा० उपाध्याय का यह ग्रन्थ भी इसी लोक-संस्कृति ग्रन्थ–माला का पुष्प है । प्रथम ग्रन्थ में जहाँ भोजपुरी लोक-साहित्य का वर्णन किया गया वहां इस पुस्तक में भोजपुरी संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है । भोजपुरी जन जीवन—जैसे रहन-सहन, रीति-रिवाज, खान-पान, वेश आचार-विचार, अलंकरण-प्रसाधन आदि से संबंधित जितने भी विषय हो हैं उनका बड़े परिश्रम के साथ यहाँ विवेचन प्राप्त है । संभवत: भोजपुरी सं का इतना विशद वर्णन यहाँ सर्व प्रथम उपलब्ध है । इस संस्कृति अध्ययन के लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त आवश्यक सिद्ध होगा । उपर्युक्त दोनों (संख्या ९ और १०) के प्रकाशन से भोजपुरी साहित्य में एक बहुत बड़े की पूर्ति हो जायेगी ।

---

१. भारतीय लोक-संस्कृति शोध संस्थान, वाराणसी से काप्राप्य ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग—श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह "नाथ"

श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह भोजपुरी के अनन्य सेवक, लेखक, नाटककार गीतकार हैं। इन्होंने बड़े लगन, उत्साह तथा परिश्रम के साथ भोजपुरी हित्य की यावत् जीवन सेवा की। इन्होंने भोजपुरी में अनेक ग्रन्थों की रचना है जिनका यथास्थान वर्णन किया जायेगा। यहाँ हमें उनकी केवल उन्हीं ग्रन्थों से प्रयोजन है जिनमें भोजपुरी लोक गीतों का संग्रह उपलब्ध होता इस श्रेणी की उनकी दो कृतियाँ उपलब्ध होती है। (१) भोजपुरी लोक-गीतों में करुण रस। (२) भोजपुरी के कवि और काव्य। इनका संक्षिप्त विवरण यहाँ प्रस्तुत किया जाता है।

(१) भोजपुरी लोक-गीतों में करुण रस

इस पुस्तक के संग्रहकर्त्ता और सम्पादक दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह हैं। विद्वान् सम्पादक ने बड़े परिश्रम से गीतों का संग्रह और सम्पादन किया है। इस पुस्तक में लगभग ६०० पृष्ठ हैं।१ इसमें करुण रस का अच्छा वर्णन है। पुस्तक के प्रारम्भ में अस्सी पृष्ठों की एक लम्बी भूमिका भी सम्पादक महोदय ने लिखी है जिसमें भोजपुरी भाषा और साहित्य के विषय में अनेक ज्ञातव्य बातें दी गई हैं। भोजपुरी की व्युत्पत्ति, प्राचीनता, विस्तार, विशेषता तथा इसके साहित्य पर प्रकाश डालने का स्तुत्य प्रयत्न किया गया है। भोजपुरी गीतों में करुण रस के अतिरिक्त अन्य रसों की भी कवितायें इसमें मिलती हैं जिनका सोदाहरण विवेचन पुस्तक में किया गया है। इसमें निम्नांकित पन्द्रह प्रकार के गीतों का संग्रह किया जाता है :—

सोहर, जँतसार, झूमर, कहंरुआ, भजन, बारहमासा, अलचारी, खेलवना, विवाह, पूरवी, कजरी, रोपनी, और निराई, हिंडोले, देवी जी के गीत।

---

१ हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से १९४४ ई० में प्रकाशित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(२) भोजपुरी के कवि और काव्य

यह ग्रन्थ विहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना से प्रकाशित हुआ है। श्री सिंह ने बड़े परिश्रम के साथ उन अज्ञात कवियों को खोज निकाला है विषय में लोगों को अभी तक कुछ भी पता नहीं था। विशेषतया सम्प्रदाय के कवियों का जो वर्णन दिया गया है वह सर्वथा नवीन है। अतिरिक्त अनेक ऐसे कवियों का भी इस ग्रन्थ में वर्णन किया गया है कविता केवल जनता की जिह्वा पर ही सुरक्षित थी। सिद्ध कवियों से आधुनिक कवियों की कविता तक की बानगी इस ग्रन्थ में दी गई है। सिंह के मत से कोई भले ही सहमत न हो परन्तु इसमें किसी को भी नहीं हो सकती कि इस कृति की रचना में लेखक को घनघोर परिश्रम पड़ा होगा। अनेक दृष्टियों में यह ग्रन्थ उपादेय है[१]।

घ—पं० गणेश चौबे

पं० गणेश चौबे का जन्म विहार राज्य के चम्पारन जिले के बंगरी गाँव में हुआ है। चौबे जी भोजपुरी लोक साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित इन्होंने अपने जनपद के गाँव गाँव में घूमकर सहस्त्रों लोक-गीतों और कथाओं का संग्रह किया है। इस प्रकार आपके द्वारा भोजपुरी लोक साहि संकलन प्रचुर मात्रा में किया गया है। आपने अपना विशाल संग्रह राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना के अभिलेखागार (आरकाइव्ज़) को सुरक्षि के लिए प्रदान कर दिया है। परन्तु दुःख है कि आपके संकलन का अभी तक नहीं हुआ है। चौबे जी ने भोजपुरी लोक साहित्य के सम्ब पचासों शोध-पूर्ण लेख लिखा है जो अनेक प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में प्र हो चुका है। आपने "विहार इन फोकलोर स्टडी" नामक पुस्तक का

---

१ सन् १६५८ ई० में प्रकाशित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ललिता प्रसाद विद्यार्थी के साथ किया है जो अभी हाल ही में प्रकाशित है१। भारतीय लोक संस्कृति शोध संस्थान, वाराणसी से प्रकाशित होने वाली "जर्नल आफ इण्डियन फोक कल्चर" नामक त्रैमासिक शोध-पत्रिका के स्थानीय सम्पादक (रीजनल एडिटर) भी हैं। सच तो यह है कि चौबे जी साहित्य के शोधी छात्रों के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं, जिनके कार्यों से लोगों ने प्रोत्साहन प्राप्त किया है। इनका व्यक्तित्व सरल और सीधा है। चौबे जी ने अपना समस्त जीवन भोजपुरी साहित्य की सेवा में खपा दिया और वे आज भी इस साहित्य की समृद्धि में दिन रात लगे हुये हैं।

ङ—श्री आर्चर

भोजपुरी ग्राम्य गीत

इस पुस्तक के संग्रहकर्त्ता और सम्पादक श्री डब्लू० जी० आर्चर आई० सी० एस० और श्री संकठा प्रसाद हैं२। डब्लू० जी० आर्चर का नाम लोक गीतों के क्षेत्र में बड़ा प्रसिद्ध है। ये एक सुयोग्य तथा अनुभवी शासक ही नहीं बल्कि लोक गीतों के उत्साही संग्रहकर्त्ता और मर्मज्ञ भी थे। इन्होंने छोटा नागपुर, (विहार) की विभिन्न जातियों के लोक गीतों का संग्रह कर प्रकाशन किया है जिसका एक भाग हमारे सामने प्रस्तुत है। इस पुस्तक का नाम 'लील खो रआ खेल' है जो छोटा नागपुर में रहने वाली उरांव नामक जंगली जाति के गीतों का संग्रह है। इनकी दूसरी पुस्तक 'ब्लूग्रोभ' के नाम से प्रसिद्ध है जो आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस से निकली है। ये सज्जन रांची में कमिश्नर थे जहाँ इन्होंने उपर्युक्त गीतों का संग्रह किया।

१. इण्डियन पब्लिकेशन्स, कलकत्ता सन् १९६१ ई० में प्रकाशित।

२. विहार और उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, पटना १९४३ ई० से प्रकाशित और पटना ला प्रेस, पटना से मुद्रित। मूल्य ४ रुपया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

यहाँ हमारा संबंध इनकी 'भोजपुरी ग्राम्य-गीत' नामक पुस्तक से ही है। वर्ष पूर्व आर्चर ने बिहार और उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, पटना की शोध के विभिन्न अंकों में भोजपुरी गीतों का प्रकाशन किया था। प्रस्तुत पुस्तक गीतों का संग्रह है। इसमें समस्त गीतों की संख्या ३७७ है। ये गीत राज्य के शाहाबाद जिले के कायस्थ परिवार से संग्रह किये गये है। इसका काल १९३९-४१ ई० है। इस पुस्तक में पचीस प्रकार के गीतों का संग्रह गया है जिनके नाम ये हैं—सगुन, तिलक, शिवविवाह, प्रातः काली, हलदी, जोग, टोना, विवाह, मंगल, सोहाग, परीछन, कोहवर, जेवनार, अवटौनी, टापा, सोहर, भुंडन, चैता, माता के गीत, कजरी, बरसाती, जतसार, और सोहनी के गीत। इस संग्रह की सबसे बड़ी त्रुटि यह है कि न तो गीतों की व्याख्या ही दी गयी हैं और न कठिन शब्दों का अर्थ ही।

च—श्री देवेन्द्र सत्यार्थी

इस पुस्तक के लेखक श्री देवेन्द्र सत्यार्थी हैं[१]। लोक गीतों के क्षेत्र में करने वाला शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो सत्यार्थी जी के नाम और से परिचित न हो। इन्होंने भारत के प्रत्येक राज्य में घूम-घूम कर भाषाओं के गीतों का प्रचुर संग्रह किया है। सत्य तो यह है कि सत्यार्थी अपने अमूल्य जीवन को ही इन लोक-गीतों के संग्रह में लगा दिया है। लोक-गीतों के संबंध में अनेक पुस्तकें लिखी हैं जिनमें "धरती गाती है" 'वेला फूले आधी रात' मुख्य है।

१--धरती गाती है

"धरती गाती है" नामक पुस्तक में सत्यार्थी जी ने विभिन्न भाषाओं के का संग्रह किया है। ये संग्रह किसी विशेष क्रम के आधार पर नहीं किए बल्कि लेखक को जो भी गीत सुन्दर जान पड़ा उसी का संग्रह कर लिया

१. राजकमल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली सन् १९४८ से प्रकाशित। मूल्य १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस पुस्तक में भोजपुरी के भी कुछ गाने दिए गये हैं जिनमें सोहर का एक गीत बड़ा ही सुन्दर है। इस पुस्तक में गीतों की स्वतन्त्र व्याख्या बड़ी सुन्दर रीति से की गई है। यद्यपि गीतों की संख्या इसमें अधिक नहीं है परन्तु जो गीत हैं वे बड़े महत्वपूर्ण हैं। "रेलवा न वैरी जहजिया ना वैरी" वाला अध्याय बड़ी मार्मिकता से लिखा गया है।

२--बेला फूले आधी रात

इसके भी लेखक श्री देवेन्द्र सत्यार्थी हैं १। इस पुस्तक में विभिन्न भाषाओं के गीतों का संग्रह है। 'बेला फूले आधी रात' वाले अध्याय में अनेक भोजपुरी गीतों का संकलन किया गया है जिनमें बेला के फूलने का वर्णन पाया जाता है। 'धरती के गीत' नामक पुस्तक हिन्दी की विभिन्न बोलियों में रचे गए गीतों का संग्रह है २। प्रस्तुत पुस्तक बम्बई के कम्युनिस्टों का प्रकाशन है जिसके द्वारा जनता में विद्रोह की भावना भरने का प्रयत्न किया गया है। खड़ी बोली, अवधी और व्रजभाषा के गीतों के अतिरिक्त इसमें भोजपुरी के भी कुछ गीत हैं जिनमें से कुछ की रचना राहुल जी ने की है। ये गीत किसानों की समस्या से संबंध रखते हैं।

छ—डा० श्रीधर मिश्र

डा० श्रीधर मिश्र ने अपने शोध ग्रन्थ के अतिरिक्त "भोजपुरी लोक-गीतों के विविध रूप" नामक पुस्तक लिखी है जिसमें इन्होंने भोजपुरी लोक-साहित्य में उपलब्ध लोक-गीतों की विभिन्न विधाओं का विवरण प्रस्तुत किया है। अपने कथन के समर्थन में इन्होंने अनेक भोजपुरी गीतों को उद्धृत किया है। यद्यपि यह ग्रन्थ लोक-गीतों का संग्रह नही है, फिर भी उदाहरण रूप में ही सही, अनेक गीत इसमें पाये जाते है। यदि डा० मिश्र ने केवल लोक-गीतों का संग्रह ही प्रस्तुत किया होता तौभी इनकी भोजपुरी लोक-साहित्य की सेवा अमूल्य होती।

---

१. राजकमल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

२. बम्बई की कम्युनिस्ट पार्टी के द्वारा प्रकाशित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

ज—डा० उदय नारायण तिवारी

भोजपुरी लोक-साहित्य के जिन विद्वानों का ध्यान भोजपुरी लोक- को छोड़कर उसकी अन्य विधाओं के संग्रह की ओर आकृष्ट हुआ है डा० उदय नारायण तिवारी अग्रणी हैं। इनका उल्लेख भोजपुरी भाषा संबंध में पहिले किया जा चुका है। डा० तिवारी ने आज से तीस वर्ष भोजपुरी लोकोक्तियों, मुहावरों और पहेलियों का संग्रह प्रकाशित किया था यह संकलन बहुत ही उपयोगी है परन्तु दुःख है कि इस बहुमूल्य सामग्री प्रकाशन अभी तक पुस्तक रूप में नहीं हो सका है जिससे यह लोक-सा के विद्वानों के लिए सरलता से प्राप्त नहीं हैं।

झ—डा० मुक्तेश्वर तिवारी

डा० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' भोजपुरी के गद्य लेखक, कवि और आलो हैं। भोजपुरी गद्य और पद्य के प्रसंग में इनकी कृतियों का उल्लेख यथा स्थ किया जायेगा। इन्होंने "भोजपुरी की कहावतें और मुहावरें" नामक एक पुस्तक लिखी हैं जो इनकी एम० ए० की परीक्षा का शोध प्रवन्ध है।

इस पुस्तक में तिवारी जी ने भोजपुरी की कहावतों और मुहावरों का वर्गीकरण, उनकी विशेषतायें, उनमें निहित संस्कृति आदि विषयों का वर्णन बहुत ही सुन्दर रीति से किया है। इसके साथ ही अपने कथन की पुष्टि के लिए, उदाहरण के रूप में इन्होंने सैकड़ो लोकोक्तियों तथा मुहावरों को उद्धृत किया है। भोजपुरी लोक-साहित्य की उपर्युक्त दोनों विधाओं का इतना वैज्ञानिक विवेचन अन्यत्र उपलब्ध नहीं हैं।

१. हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग से इस संस्था की शोध पत्रिका में प्रकाशित।
   (क) भोजपुरी मुहावरे ('हिन्दुस्तानी' पत्रिका अंक अप्रैल तथा अक्टू १९४० ई०, एवं जनवरी १९४१ ई०)।
   (ख) भोजपुरी पहेलियाँ—(वही—अक्टूबर तथा दिसम्बर १९४२ ई०)
   (ग) भोजपुरी लोकोक्तियाँ—(वही—अप्रैल १९३९ ई०, जुलाई १९३९ ई०)

२. भोजपुरी साहित्य परिषद्, आशापुर, जिला बलिया से प्रकाशित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस प्रकार भोजपुरी के विद्वानों ने भोजपुरी लोक-गीतों, लोक-गाथाओं, कोक्तियों तथा मुहावरों का बड़े परिश्रम के साथ संकलन-सम्पादन तथा प्रकाशन या है। इसके अतिरिक्त इन विद्वानों ने भोजपुरी भाषा और साहित्य की भिन्न विधाओं पर अनुसन्धान कार्य भी किया है जिसका विवरण अगले में प्रस्तुत दिया जायेगा। अभीतक भोजपुरी लोक-कथाओं का न तो कोई माणिक संकलन ही प्रकाशित हुआ है और न किसी विद्वान् इन कथाओं अपने शोध का ही विषय बनाया है। आशा है निकट भविष्य में इस भाव की भी शीघ्र ही पूर्ति हो जायेगी।

इ—भोजपुरी में शोध संबंधी कार्य

इस कथन में किञ्चित्मात्र भी अत्युक्ति नहीं है कि हिन्दी की बोलियों अथवा भाषाओं में जितना अनुसन्धान कार्य भोजपुरी भाषा और साहित्य के विषय हुआ है उतना अन्य किसी में नहीं। राजस्थानी के लोक गीतों और लोक थाओं और कथाओं का संग्रह तथा प्रकाशन हुआ है परन्तु जहां तक भाषा र साहित्य—उभय पक्षों—में शोध कार्य का संवन्ध है वहां भोजपुरी अद्वितीय था अतुलनीय है। भोजपुरी साहित्य की विशेषता यह है कि इसके दोनों क्षों—भाषा और साहित्य को लेकर विद्वानों ने इसे अपने शोध का विषय नाया है। यह और भी सन्तोष का विषय है कि विश्वविद्यालयों में शोध का कार्य करने वाले अनेक अनुसन्दिधित्स, भोजपुरी साहित्य के बिखरे रत्नों को कत्र कर उन्हें सम्पादित तथा प्रकाशित करने के लिए बद्ध परिकर दिखाई ते हैं। इस शोध का संक्षिप्त विवरण यहां प्रस्तुत किया जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(क) भोजपुरी-भषा

(१) डा० उदयनारायण तिवारी

भोजपुरी भाषा पर शोध कार्य करने वाले सर्व प्रथम डा० उदय नारायण तिवारी (भूतपूर्व अध्यक्ष, हिन्दी जबलपुर विश्वविद्यालय जबलपुर) हैं—जिन्होंने आज से लगभग (४०) वर्ष पहले भोजपुरी भाषा के अध्ययन का प्रारम्भ किया था। एक लेख "ए डाइलेक्ट आफ भोजपुरी" नाम से सन् १९३४-३५ ई० पटना के "बिहार एण्ड ओरिसा रिसर्च सोसाइटी" की शोध पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। डा० तिवारी ने प्रयाग विश्वविद्यालय में "भोजपुरी भाषा की उत्पत्ति और विकास" विषय को लेकर शोध कार्य प्रारम्भ किया और अनेक वर्षों के सतत परिश्रम के पश्चात् सन् १९४५ ई० इन्हें इस विषय पर डि० लिट् की उपाधि प्राप्त हुई। इस प्रकार डा० तिवारी ने इस शोध प्रबन्ध को लिखकर डाक्टर की उपाधि ही नहीं प्राप्त की, बल्कि इसके अतिरिक्त, भोजपुरी में शोध कार्य अध्ययन की परम्परा भी प्रवर्तित कर दी। तिवारी जी की यह थीसिस मूलरूप-अंग्रेजी—में एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, कलकत्ता से संभवतः प्रकाशित भी हो चुकी है। यह ग्रन्थ अत्यन्त मौलिक तथा विद्वत्तापूर्ण है भोजपुरी भाषा का अध्ययन आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से किया गया है। १९५१ ई० में बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना ने डा० तिवारी को भोजपुरी भाषा और साहित्य पर भाषण देने के लिए आमंत्रित किया था। ये "भोजपुरी भाषा और साहित्य" के नाम से परिषद् के द्वारा सन् १९५४ ई० प्रकाशित किया गया। इस पुस्तक में भोजपुरी व्याकरण का बड़ा ही तथा प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत किया गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२) डा० विश्वनाथ प्रसाद

डा० विश्वनाथ प्रसाद अनेक वर्षों तक पटना विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग में अध्यक्ष थे। कुछ वर्षों तक ये आगरा विश्वविद्यालय के के० एम० मुन्शी हिन्दी तथा भाषा विज्ञान शोध संस्थान के संचालक भी थे। इन्होंने लन्दन विश्वविद्यालय में भोजपुरी भाषा के ध्वनिशास्त्र (फोनोलाजी) पर शोध कार्य किया था और वहीं से इन्होंने पी. एच–डी. उपाधि प्राप्त की थी। डा० तिवारी का शोध कार्य जहां भोजपुरी भाषा के व्याकरण से संवन्ध रखता है वहां डा० विश्वनाथ प्रसाद का अनुसन्धान इस भाषा के ध्वनिशास्त्र से संवद्ध है। इस प्रकार अपने चेत्र में डा० प्रसाद का शोध भी अद्वितीय तथा वेजोड़ हैं।

(३) डा० शुकदेव सिंह

काशी विश्वविद्यालय के डा० शुकदेव सिंह, प्राध्यापक हिन्दी विभाग ने भोजपुरी और खड़ी वोली–इन दोनों भाषाओं तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। इस थीसिल पर इन्हें हिन्दू विश्वविद्यालय से पी. एच–डी० की उपाधि मिल चुकी है। डा० सिंह ने वड़ी विद्वत्ता के साथ इन दोनों भाषाओं के व्याकरण की तुलनात्मक आलोचना प्रस्तुत की है। यह शोध प्रवन्ध अब प्रकाशित भी हो चुका है। १

(ख) भोजपुरी-साहित्य

(१) डा० कृष्णदेव उपाध्याय

डा० कृष्णदेव उपाध्याय—संस्थापक संचालक, भारतीय लोक संस्कृति शोध संस्थान, वाराणसी—ने भोजपुरी के लोक साहित्य पर प्रशंसनीय शोध कार्य किया हैं। डा० उपाध्याय ने भोजपुरी लोक–साहित्य को अपने अनुसन्धान का विषय वनाया था और अनेक वर्षों के सतत अनुसन्धान के पश्चात् लखनऊ

१. वाराणसी से प्रकाशित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

विश्वविद्यालय ने सन् १९५१ ई० में "भोजपुरी लोक साहित्य का अध्य[illegible] नामक थीसिस पर इन्हें पी. एच. डी. की उपाधि प्रदान की। डा० उपा[illegible] का यह शोध सर्वथा मौलिक और अद्वितीय है। क्योंकि इस ग्रन्थ के [illegible] भोजपुरी की तो बात ही दूर रही, हिन्दी की अन्य किसी भी उपभाषा—ब्रज[illegible] को छोड़कर—के लोक साहित्य पर किसी ने शोध—कार्य का साहस ही [illegible] किया था। इसलिए डा० उपाध्याय को अपना पथ-प्रदर्शन स्वयं ही करना प[illegible]

उपाध्याय जी ने इन ग्रन्थ में लोक साहित्य के वर्गीकरण की पद्धति [illegible] पहिली बार प्रस्तुत की जिसका अनुकरण पश्चात् अनेक विद्वानों ने कि[illegible] जिस प्रकार डा० तिवारी का शोध कार्य भोजपुरी भाषा के क्षेत्र में अद्विती[illegible] उसी पकार भोजपुरी लोक–साहित्य के क्षेत्र में डा० उपाध्याय के शोध[illegible] समझना चाहिए। १

(२) डा० सत्यव्रत सिंह

सत्यव्रत सिंह ने भोपुजरी की लोक गाथाओं पर शोध कार्य किया है [illegible] पर इन्हें प्रयाग विश्वविद्यालय से डी० फिल० की उपाधि प्राप्त हो चुकी [illegible] भोजपुरी में आल्हा, विजयमल, सोरठी, गोपीचन्द, भरथरी और नय[illegible] बनजारा आदि की गाथायें अत्यन्त प्रचलित है। डा० सिंह ने इन्हीं गाथाओं [illegible] एकत्रित करके इनकी समीक्षा प्रस्तुत की है२।

(३) डा० सत्यदेव ओझा

डा० सत्यदेव ओझा, कोआपरेटिव कालेज, जमशेदपुर के हिन्दी विभा[illegible] प्राध्यापक हैं। इन्होंने भोजपुरी की लोकोक्तियों को अपने शोध का विषय ब[illegible] है। इन्होंने भोजपुरी प्रदेश के गाँवों में घूम-घूम कर अनेक सहस्त्र लोकोक्ति[illegible] का संग्रह कर उसकी आलोत्मनात्मक समीक्षा प्रस्तुत की हैं। रांची विश्वविद्या[illegible]

१. प्रकाशक—हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी १९६१ ई०।

२. हिन्दुस्तानी एकाडमी, प्रयाग से प्रकाशित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राँची (बिहार) से इन्हें इस शोध प्रबन्ध पर पी० एच०–डी० उपाधि प्राप्त हो चुकी है। इस शोध प्रबन्ध को देखने से पता चलता है कि इन लोकोक्तियों में भोजपुरी प्रदेश की संस्कृति का कितना चित्रण हुआ है। डा० ओझा आजकल अपनी डि० लिट् के लिए शोधकार्य कर रहे हैं। आशा है उनका यह शोधकार्य भी भोजपुरी - साहित्य की श्री वृद्धि में सहायक सिद्ध होगा।

४ डा० श्रीधर मिश्र

डा० श्रीधर मिश्र, खालसा कालेज, बम्बई के हिन्दी विभाग में प्राध्याक हैं। इन्होंने "भोजपुरी लोक गीतों का सांस्कृतिक अध्ययन" प्रस्तुत किया है इस शोध प्रबन्ध पर राँची विश्वविद्यालय ने इन्हें पी०.एच०–डी की उपाधि प्रदान की है डा० मिश्र का यह कार्य 'फील्ड-वर्क' की अपेक्षा 'टेबुलवर्क' ही अधिक समझना चाहिए। भोजपुरी लोक गीतों के जो संग्रह अब तक दूसरे विद्वानों द्वारा सम्पादित तथा प्रकाशित किये जा चुके हैं उन्हीं गीतों को लेकर मिश्रजी ने अपना शोध-कार्य किया है।

५—डा० हरिशंकर उपाध्याय

डा० हरिशंकर उपाध्याय आजकल अमेरिका के जार्जिया स्टेट के विश्व-विद्यालय में इतिहास तथा समाजशास्त्र विभाग में एशोशियेट प्रोफेसर हैं। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राचीन भारतीय इतिहास तथा पुरातत्व विभाग से डी० फिल० की उपाधि प्राप्त की है। इसके पश्चात् आप अमेरिका की इण्डियाना यूनिवर्सिटी (ब्लुमिङ्गटन) के समाज शास्त्र विभाग से "भोजपुरी लोक गीतों का समाज शास्त्रीय अध्ययन" विषय पर पी० एच०–डी० की उपाधि से सन्मानित किये गये हैं। इन्होंने अपनी थीसिस को बड़ी ही वैज्ञानिक पद्धति से अंग्रेजी में लिखा है जिसमें लोक साहित्य के क्षेत्र में उद्भूत नवीनतम पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। डा० उपाध्याय की यह थीसिस—जो अपने मूलरूप (अंग्रेजी) में शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है—में अनेक मौलिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है जिससे इस ग्रन्थ का मूल्य बहुत ही बढ़ गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

६--डा० भरत सिंह

आपने आगरा विश्वविद्यालय से "भोजपुरी लोकनाट्य" विषय को शोधकार्य किया है जिस पर इन्हें पी० एच०—डी० की उपाधि प्राप्त हो चुकी इन्होंने भोजपुरी भाषा में लिखित 'विदेसिया' 'लोहसिंह' 'उलटा जमाना' प्रसिद्ध लोक नाट्यों के साथ अनेक छोटे मोटे लोक—नाटकों का संकलन उनका विवरण इस शोधप्रवन्ध में प्रस्तुत किया है। इन्होंने जिन नाटकों अपनी इस थीसिस में वर्णन किया है वे सभी लोकनाट्य हैं अथवा नहीं विवाद का विषय हो सकता है। परन्तु जिस लगन और परिश्रम के इन्होंने इन नाटकों का संकलन किया है वह प्रशंसनीय है।

७-डा० नवल किशोर राय

डा० राय, गवर्नमेण्ट जुवली हायर सेकेण्डरी स्कूल, गोरखपुर में हिन्दी अध्यापक हैं। आपने भोजपुरी क्षेत्र विशेषकर गाजीपुर जिले के कृषक संबंधी शब्दावली के विषय में शोध कार्य किया है। डा० राय ने लग १०,००० (दस हजार) शब्दों का संकलन करके अपने इस शोध प्रवन्ध लिखा है। अम्वाप्रसाद सुमन ने व्रज प्रदेश के अलीगढ़ जिले कृपक शब्दावली का वड़ा वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया है। डा० राय का भी कुछ-कुछ वैसा ही समझना चाहिए। लेखक का अपनी थीसिसके संबंध गर्वपूर्ण यह दावा है कि ऐसा ग्रन्थ 'न भूतो न भविषयति'। भूत के विषय में ठीक हो सकता है परन्तु भविष्य के संवंध मे ऐसा दावा मूर्खतापूर्ण ही कहा सकता है। आगरा विश्वविद्यालय द्वारा इस पर पी० एच० डी० की उपाधि दी जा चुकी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

८—श्री सत्यदेव तिवारी

श्री सत्यदेव तिवारी वलिया जिले के कृषक जीवन संबंधी शब्दावली को र अनुसधान कार्य कर रहे हैं। इन्होंने अनेक सहस्त्र शब्दों का संग्रह कर नकी संख्या दस सहस्र से अधिक ही है—उनका वड़े परिश्रम से वर्गीकरण या गया है। इस थीसिस की विशेषता यह है कि इसमें कृषक शब्दावली के को स्पष्ट करने के लिए कुछ चित्र तथा डाइग्राम भी दिये गये हैं। इस ार श्री तिवारी की यह थीसिस वड़े परिश्रम का फल है।

९ श्री रमाशंकर राय

श्री रमाशंकर राय लोक साहित्य के गंभीर विद्वान् हैं। आपने मिर्जापुर कजलियों का सुन्दर संग्रह किया है। इस समय आप भोजपुरी लोक-गीतों 'कामकथा' विषय को लेकर हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से 'साहित्य-होपाध्याय' (पी० एच० डी) की उपाधि के लिए शोध कार्य कर रहे हैं। आपने ई हजार भोजपुरी लोक गीतों का संकलन कर उनमें राम के चरित के कथा-तुओ (सूत्रों) को जोड़कर राम के जीवन-चरित्र को वड़े परिश्रम से तैयार किया । राम कथा के संवंध में इन गीतों से नवीन प्रकाश पड़ता है। आशा है इस ोसिस के प्रकाशित हो जाने पर अनेक नये तथ्य प्रकाश में आवेगें।

१०—पं० हरगोविन्द तिवारी

पं० हरगोविन्द तिवारी—प्राध्यापक राष्ट्रीय इण्टर कालेज, करम्मर, ला वलिया—"भोजपुरी के (संस्कार) गीतों का सांस्कृतिक अध्ययन" विषय र शोधकार्य में संलग्न हैं। पं० जी ने भी भोजपुरी के हजारों लोक गीतों का ंग्रह स्वयं किया अथवा करवाया है। आशा है आगरा विश्वविद्यालय से इन्हें ीघ्र ही पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त हो जायेगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

उ—भोजपुरी लोक-गीतों का रचना काल

भोजपुरी लोक गीतों का रचना कब हुई इस विषय में कुछ निश्चित बतलाना बड़ा कठिन है। जब से मानव सृष्टि है तभी से लोक गीतों की भी प्रारम्भ हुई होगी। इन गीतों की परम्परा अत्यन्त प्राचीन काल से आ रही है। परन्तु इनकी कोई निश्चित तिथि बतलाना कठिन है। भोजपुरी गीतों में से कुछ के रचनाकाल का अनुमान हम आसानी से सकते हैं।

किसी वस्तु की परीक्षा के लिए दो प्रकार के प्रमाणों की आवश्यकता है। १. वहिरंग तथा २. अन्तरंग। लोक गीतों के समय निर्धारण वहिरंग प्रमाणों की उपलब्धि नहीं होती। आजकल भोजपुरी लोक गीतों कोई भी प्राचीन हस्तलिखित प्रति प्राप्त नहीं है जिससे इनके सम निर्धारण किया जा सके। डाक्टर चाइल्ड ने इंगलैण्ड और स्काटलैण्ड के का जो विराट संग्रह प्रकाशित किया है उसमें उन्हें गीतों की अनेक हस्त प्रतियों की उपलब्धि हुई थी जिससे उन गीतों के काल निर्णय में मिलती है। परन्तु भोजपुरी में आजतक कोई भी ऐसी पुरानी प्रति नहीं है। जगनिककृत आल्ह खण्ड की भी कोई प्राचीन प्रति नहीं मिलती हम उसके निर्माण काल का निर्णय कर सकें। आजकल जो लोक गीत उनके उद्धरण या निर्देश भी किसी ग्रन्थ में नहीं मिलते। इन गीतों के के नाम भी अज्ञात ही हैं जिनके काल निर्णय से इन गीतों की प्राचीनता पता चल सकता। इस प्रकार वहिरंग प्रमाणों के आधार पर हम इन गीतों निर्णय करने में नितान्त असमर्थ हैं।

भोजपुरी लोक गीतों में कुछ ऐसी ऐतिहासिक घटनाओं का उल्ले ऐसे समाज का चित्रण है जिनके आधार पर हम इन गीतों के निर्माण का कुछ अनुमान कर सकते हैं। इनमें ऐतिहासिक घटनायें बहुत थोड़ी हैं।

वलिया जिले के एक लोक गीत में स्थानीय इतिहास का पुट पाया जा यह पंक्ति इस प्रकार है :—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"राजा भइले, रजुली वहोरन भइले घुनिया ।
मारेले दलगंजनदेव, दलकेले दुनिया ।"

इस गीत में वलिया जिले के वैरिया नामक कस्बे के निवासी सुप्रसिद्ध [व]रन पांडे का,—जिनके वंशज वहां आज भी मौजूद हैं—और हलदी के राजा [दल]गंजनदेव का नाम आया हैं। ये दोनों सज्जन आज से १०० वर्ष पूर्व [वर्त]मान थे। अतः इससे यह ज्ञात होता है कि यह गीत इस काल से पुराना [न]हीं है। हमारे पास ऐसे वहुत से गीत संग्रहीत हैं जिनमें सिपाही विद्रोह के [सम]य अवध के नवावों की वेगमों का लखनऊ छोड़कर भागने और इस कारण [दुःख] प्रकट करने का वर्णन पाया जाता है।

"महल में बैठी बेगम रोवे डेहरी पर रोवे खवास रे।
मोती महल के बैठक छूटल, छूटल मीना बाजार रे।
बाग जमनिया के घूमल छूटल, छूटल मुलुक हमार रे।"

एक दूसरे गीत में सिपाही विद्रोह के समय की लूट का जीता जागता वर्णन [कि]या गया है। अन्य गीत में लार्ड लेक के नाम का भी उल्लेख हुआ है १ :—

"मेरी जान कहीं देखा कम्पनी निशान।
लाट लेक मार लेला ओइके हिन्दुस्तान।"

अंग्रेजों से वगावत कर स्वतन्त्रता का झंडा ऊँचा करने वाले कुँवरसिंह के [वि]षय में अनेक गीत उपलब्ध होते हैं। इन उल्लेखों से पता चलता है कि ये [क]म से कम लगभग एक सौ वर्ष प्राचीन होंगे।

कुछ ऐसे गीत भी उपलब्ध हैं जिनमें मुगलों के अनाचार एवं व्यभिचार का [व]र्णन पाया जाता हैं २। हिन्दू स्त्रियों को वलात् पकड़ लेना, उनके साथ [वि]वाह कर लेना, आदि विषयों का इन गीतों में उल्लेख मिलता है। इन गीतों में [क]हीं पर वहन अपने भाई को गाय का दूध पीकर मुगल से लड़ने के लिये [उ]त्तेजित करती हैं और कहीं वह उसकी लम्बी सूप जैसी दाढ़ी को देखकर उससे [घृ]णा करती है३ :—

१. लेखक का निजी संग्रह पृ० ५०।
२. त्रिपाठी—ग्रामगीत परिचय पृ० १६। ३. वही. पृ० २०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

"सूप अइसन दाढ़ी मोगलवा के वरधा अइसन आंखि,
ओहि मुहें लिहलन मोगल चुमवा, रजलो के छूटि उकिलाई।"

एक अन्य गीत में मुगलों से लड़ने का वर्णन पाया जाता है। इस इन गीतों का समय मुगलकाल समझा जा सकता हैं।

इसके अतिरिक्त गीतों में कुछ ऐसी प्रथायें मिलती हैं जो प्राचीन थी परन्तु आजकल नहीं हैं। जैसे कन्या का अपने लिये स्वयं वर पसन्द और किसी कुमारी से विवाह के लिये वर का स्वयं प्रस्ताव करना। प्रथायें इस देश में पहले थीं। परन्तु ग्रामीण समाज में इस समय नहीं है। में पर्दे की प्रथा का अभाव भी पाया जाता है। इनमें स्त्रियों का समाज में स्थान दिखलाया गया है। वे पुरुषों के वश में पराधीन दिखलाई गई हैं। सामाजिक परिस्थिति मुगलों के पूर्व काल की सूचना देती है। इस प्रकार भोज लोक-गीत लगभग ३०० वर्ष पुराने सिद्ध होते हैं।

वहिरंग साक्ष्य के आधार पर भोजपुरी लोकगीतों का रचना काल प्राचीन ठहरता है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामलला नहछू में सोहर प्रयोग कर भगवान् राम के जन्म का वर्णन किया है। भोजपुरी प्रदेश में जन्म के अवसर पर 'सोहर' के गाने की प्रथा हैं। चूंकि गोस्वामीजी ने भोज प्रदेश की सांस्कृतिक राजधानी—काशी—में ही अपने जीवन का अधिकांश व्यतीत किया था और यहीं पर इन्हें गोलोकवास भी प्राप्त हुआ, अतः यह संभव है कि इस प्रदेश में प्रचलित सोहर के गीतों के अनुकरण पर रामललानहछू की रचना की हो। गोस्वामीजी ने रामचरित में भी राम के जन्म के अवसर पर सोहर गाने का उल्लेख किया है जिसे मंगल—नाम दिया है। तुलसी के 'मानस' की रचना आज से (चार सौ) वर्ष पूर्व हुई थी। अतः भोजपुरी के लोक गीत कम से कम सौ वर्ष प्राचीन तो हैं ही।

भोजपुरी लोक गीतों की रचना तिथि का वर्णन करते हुए मेरे कहने यह आशय कदापि नहीं हैं कि ये गीत चार सौ वर्षों से प्राचीनतर नहीं मेरे कथन का अभिप्राय केवल इतना ही है कि अन्तःसाक्ष्य और बाह्य साक्ष्य आधार पर, हम अपने वर्तमान ज्ञान के वल पर, केवल इतना ही कह हैं कि ये इतने प्राचीन हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

भोजपुरी लोक-गीत

भोजपुरी लोक-साहित्य का वर्गीकरण प्रधानतया निम्नांकित श्रेणियों में किया जा सकता है ।

(१) भोजपुरी लोक-गीत (२) भोजपुरी लोक-गाथा (३) भोजपुरी लोक-कथा (४) भोजपुरी लोक-नाट्य (४) भोजपुरी सुभाषित ।

भोजपुरी प्रदेश में लोक-गीत प्रचुर परिमाण में पाये जाते हैं। प्रत्येक गाँव हजारों की संख्या में ये गीत उपलब्ध होते हैं जिनका श्रेणी-विभाजन निम्न-लिखित प्रकार से किया जा सकता है ।

(क) संस्कार संवंधी गीत । (ख) ऋतु संवंधी गीत ।
(ग) व्रत संवंधी गीत । (घ) जाति संवंधी गीत ।
(ङ) श्रम संवंधी गीत । (च) विविध गीत ।

हमारे प्राचीन शास्त्रों में षोड़श संस्कारों का विधान किया गया है। किन्तु भोजपुरी प्रदेश में केवल पाँच संस्कारों के अवसर पर ही लोक गीत गाये जाते हैं—(१) पुत्र जन्म (२) मुण्डन (३) यज्ञोपवीत (४) विवाह और (५) द्विरागमन (गवना)। कुछ प्रदेशों में मृत्यु गीत भी पाये जाते हैं परन्तु भोजपुरी प्रदेश में इनका प्रायः अभाव है ।

ऋतु संवंधी गीतों में (१) कजली, (२) होली या फगुआ (३) चैता और (४) वारहमासा प्रधान है। विभिन्न व्रतों के अवसर पर स्त्रियाँ गीतों को गाती हैं। इन व्रतों में से प्रधान हैं—(१) नागपंचमी (२) बहुरा (३) गोधन (४) पिड़िया (५) छठी माता और (६) शीतला माता। जाति संवंधी गीतों में अहीर, चमार, कहार, तेली, गड़ेरिया, धोबी, नाथ और गोड़ लोगों के गीतो की गणना की जा सकती है। जँतसार, रोपनी और सोहनी के गीतों का अन्तर्भाव श्रम गीतों के अन्तर्गत होता है। विविध गीतों में झूमर, लचारी, पूर्वी, निर्गुन, पराती, भजन, पालने और बच्चों के गीतों का समावेश माना जाता है। इन्हीं लोक गीतों का यहाँ क्रम-बद्ध विवरण प्रस्तुत किया जाता है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

(क) संस्कार सम्बन्धी गीत

१—सोहर

पुत्र जन्म के अवसर पर गाये जाने वाले गीतों को 'सोहर' क
किसी-किसी गीत में इस शब्द का प्रयोग भी पाया जाता है जैसे :—

"बाजेला अनंद वधावा, महल उठे 'सोहर' हो।"

'सोहिलो' अथवा 'मंगल' शब्द के अभियान से इन्हीं गीतों का संके
गया है। कह-कहीं पर सोहर के स्थान पर 'मंगल' शब्द भी व्यवहृत हुआ

"गावहु ए सखि गीवहु, गाइ के सुनावहु हो,
सब सखि मिलिजुलि गावहु, आजु मंगल गीत हो।"

तुलसीदासजी ने भी रामचरितमानस में राम जन्म के अवसर पर
गीत ही गवाया है।

"गाँवहि मंगल, मंजुल बानी,
सुनि कलरव कलकंठ लजानी।"

सोहर शब्द की उत्पत्ति 'शोभन' से ज्ञात होती है सोहर के गीत सोहि
नाम से भी प्रसिद्ध हैं। संभवतः यही 'शोभन' शब्द शोभिलो, सोहिलो,
रूप में परिवर्तित होता हुआ इस रूप में आ गया है। भोजपुरी में 'सोह
अर्थ अच्छा लगना या सुहाना है जो संस्कृत के 'शोभन' का अपभ्रंश है।

पुत्र जन्म के अवसर पर जो मंगल गीत गाये जाते हैं वे 'सोहर'
होते हैं। इस सोहर छन्द में निबद्ध होने के कारण ही इन गीतों का
'सोहर' पड़ गया है। भोजपुरी गीतों में जो सोहर उपलब्ध होते हैं उन
नहीं होता और न वे पिंगल शास्त्र के नियमों से जकड़े ही रहते हैं।
पहाड़ी नदी की भाँति स्वच्छन्द रूप से बहते चले जाते हैं। तुलसीदा

१. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग १।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

लाल नहछू' में जो सोहर लिखे हैं उनमें तुक मिलाया है और प्रत्येक पद में यें भी बराबर रखी हैं। उन्होंने पिंगल के अनुसार शुद्ध करके सोहर छन्द या है :—

बनि बनि आवति नारि जानि गृह मायन हो।
बिहँसत आउ लोहारिनि हाथ बरायन हो।
अहिरिनि हाथ दहेड़ि दहेड़ि सगुन लेइ आवइ हो।
उभरत जोबन देखि नृपति मन भावइ हो।
रूप सलोंनि तंबोलिनी बीरा हाथहि हो।
जाकी ओर बिलोकहिं मन उन साथहि हो।
दरजिनी गोरे गात लिये कर जोरा हो।
केसरि परम लगाइ सुगन्धन बोरा हो।
नैन बिसाल नउनियाँ भौं चमकावइ हो।
देइ गारी रनिवासहिं प्रमुदित गावइ हो।

पुत्र जन्म भारतीय ललनाओं की ललित कामनाओं की चरम परिणति है। नी गई मनौतियों का मनोरम परिणाम है। इस शुभ अवसर पर पास-पड़ोस की यां (विशेषत: लोक गीतों की पंडिता वृद्धायें) एकत्र होकर नव प्रसूता स्त्री 'सूतिकागृह' के दरवाजे पर बैठ जाती हैं और रमणीय गीतों को सुना सुना- र घर भर की स्त्रियों—विशेषत: जच्चा—का मनोरंजन किया करती हैं। गीत बारह दिन तक गया जाता है और जब बालक का 'बरही' संस्कार प्त हो जाता है तभी इन गीतों की भी समाप्ति होती हैं।

सोहर का वर्ण्य विषय—पुत्र जन्म के गीतों में आनन्द के उल्लास का र्णन होना स्वाभाविक है। इसमें जच्चा के हृदय में गुदगुदी पैदा करने ली झाँकी भी देखने को मिलती है। कहीं-कहीं सन्तानहीन बांझ स्त्रियों की रुण दशा का चित्र सहृदयों के हृदय में विशद सहानुभूति उत्पन्न करता है। ई वन्ध्या स्त्री अपनी मनोव्यथा का वर्णन करती हुई कह रही है कि जिस कार वन में कोयल कुहुकती है उसी प्रकार मेरा हृदय पुत्र के बिना दुःखी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

रहता है। जिस प्रकार अँगीठी (बोरसी) की आग धीरे-धीरे जलती है उसी प्रकार मेरा पुत्र रहित हृदय धीरे-धीरे कष्ट पाता हुआ जलता रहता है।

"जइसन बन में के कोइलिया, बने बने कुहुकेले हो।
ए राम ओइसन जियरा हमार कुहुकेला, एक रे बालक बिनु हो।
जइसन बोरसी के आग हवे धीरे-धीरे सुनुगेला हो।
ओइसे जियरा हमार सुनुगेला, एक रे बालक बिनु हो।"

इस गीत में पुत्रहीन स्त्री का विलाप सचमुच पाषाण हृदय को भी देने वाला है।

सोहरों का प्रधान वर्ण्य विषय प्रेम है। इसमें स्त्री पुरुष की रति, गर्भाधान, गर्भिणी की शरीर-यष्टि, प्रसव पीड़ा, दोहद, उसकी पूर्ति, धाई बुलाना और पुत्र जन्म का वर्णन पाया जाता है। भवभूति ने पुत्र या को स्त्री और पुरुष—दोनों—के अभिन्न प्रेम की गांठ कहा है।१ वास्तव में दोनों का प्रेम मूर्त रूप ग्रहण करता है तब उसे सन्तति कहते हैं। जिस इन दोनों के प्रेम में गांठ पड़ती है उस दशा का वर्णन निम्न गीत में कितनी भाषा में किया गया है। स्त्री कहती है २ :—

"ए सझइत बुझि जाहु आपन अवगुनवा,
मुसुकि जनि बोलहु हो।
ए सझइत मिलि जुलि बन्हली मोटरिया,
खोलत बेरियां अकसर हो।"

भवभूति ने जिसे ग्रन्थि कहा है, गीतों में इसी को 'गठरी' कहा गया गर्भवती होने पर गर्भिणी अनेक वस्तुओं को खाना चाहती है। इसे सं

१. अन्तःकरण-तत्वस्य, दम्पत्यो : स्नेहसंश्रयात्।
आनन्दग्रन्थिरेकोयमपत्यमिति कथ्यते॥ (उत्तर राम चरित)।
२. डा०—उपाध्याय—भो० लो० गी०, भा० १, पृ० ६७-६८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

हद' कहते हैं। कालिदास ने रघुवंश में इसका बड़ा सुन्दर वर्णन किया है।१ तों में दोहद का उल्लेख अनेक स्थानों पर आया है तथा पति उस दोहद की करता हुआ प्रयत्नशील पाया जाता है। पति स्त्री से पूछता है कि तुम्हें न सी वस्तु खाने में अच्छी लगती है।२

"आरे आतरि, पातरि, सुनर-मुख, ढुरहरि हो।
कवन कवन फलवा मन भावे, कहि ना समुझावहु हो।

इस पर स्त्री उत्तर देती है :—

"भातावा त भावेला धानहि केरा,
दलिया रहरि केरा हो।
ए प्रभु रेहुआ त भावेला मछरिया,
मासु तीतिले केरा हो।
ए प्रभु फलवा त भावेला निबुआ

गर्भ का सांगोपांग तथा विस्तृत वर्णन इन गीतों में उपलब्ध होता है। र्भिणी का शरीर पिराने लगता है, वह प्रसव वेदना से व्याकुल है३। ऐसी शा में वह उस पुरुष (अपने पति) को बुलाने का आग्रह करती है जिसने उसे यह कष्ट दिया है।

"कापारा त हमरो टनकेला ओदारा चीलीकेला ए।
राजा दुनियाँ भइले अनसुन, कवन कही कुसल ए।"

इतने में उसका पति धगड़िन (धाय) को बुलाने के लिए दौड़ पड़ता है और धगड़िन से अपने घर चलने के लिए कहता है। जब वह पूछती है तुम किस-लिए मुझे बुला रहे हो तब वह उत्तर देता है कि४ :—

---

१. न मे ह्रिया संशति किंचिदिप्सितं, स्पृहावती वस्तुषु केषु मागधी।
इतिस्म पृच्छत्यनुवेलमादृतं, प्रियासखीमुत्तरकोशलेश्वरः॥ रघुवंश ३।५
२. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग १, पृ० ५१-५२।
३. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग १पृ० ५६। ४. वही पृ० ५७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

"ना मोरी माई बियाले, ना बहिना आसापति ए।
ए धड़गिन मोरा घरे घरनी बेयाकुल, रउरा के चाहेले ए।"

गर्भिणी की शरीर यष्टि का कितना सहानुभूतिपूर्ण वर्णन इस मनोर[illegible] में पाया जाता है।१

"दुवरा सें अइले नंदलाला, नाजो के मुंहवा देखेले हो।
आमा दुलहिन के ओठवा झुरइले, हरदी मुंहवा पियर रे।
सासु मोरा मुंहवा निरेखें, ननद मुंहवा चूमेले हो।
बहुआ धीरे धीरे अंगव वेदनिया, होरिल तोहरा होइहै हो।

पुत्र जन्म के एक गीत में लव और कुश के जन्म का जब समाचार रा[illegible] मिलता है तब हाथी, घोड़ा, गाय, भैंस आदि दान करते हैं। पुत्र जन्म के [illegible] सीता वाल्मीकि के आश्रम से, जब अयोध्या लौटती है तब वहाँ घोड़ा, [illegible] कुछ भी नहीं पाती। इस पर जब वे प्रश्न करती हैं तो उत्तर मिलता [illegible] पुत्र जन्म के उत्सव पर रामचन्द्र ने घोड़ा, हाथी, गाय, भैंस आदि को ब्राह्मण[illegible] भाटों को दान में दे दिया है।२

"हथिया ना देखो हथिसारावा, भँइसि डोल डाबर हो।
ललना गोऊ ना देखो गोऊसालावा, अजोध्या हमार लुटि गइले हो।
हथिया त देखो बभन दान, भँइसि भटन दान हो।
ललना गइया भइलं साधु दान, गोबिन क। जनम भइले हो।"

किम्बहुना रामचन्द्र ने ही नहीं, सीता की सास और ननद ने भी इस अ[illegible] पर प्रचुर दान दिया :—

"काकाना ननद दान कइली, दुलरी कइलो सासु दान हो।
राम धन, धान लुटवले, उछाह सतति भइले हो।"

१. भो० लो० गी० भाग १—भूमिका पृ० ३०। २. वही पृ० ६४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

जहाँ इन गीतों में पुत्र के पैदा होने पर महान् उत्सव मनाया जाता है वहाँ …ी के जन्म के कारण विषाद की गहरी रेखा माता के मुख पर दिखाई पड़ती … वह कहती है कि जैसे पुरैन का पत्ता हवा के कारण काँपता है वैसे ही मेरा …य पुत्री के जन्म होने से, भावी दुःख की कल्पना के कारण थरथर काँप रहा है। …हले पुत्र पैदा होने पर मुझे शाल ओढ़ने और बिछाने को मिलता था, मैं मेवा खाती …र सुख पूर्वक सोती थी। परन्तु अब पुत्री जनने के कारण कुश ओढ़ने के लिये …र कुश ही बिछाने के लिये मुझे दिया गया है। जंगली फल भोजन में मिलता … और खुखुड़ी–मक्का की सूखी वाल या हल्की लकड़ी जो जल्दी जल जाती है— …संग' जलाने को मिलती है। वस्त्र न मिलने के कारण रात को नींद भी नहीं …ती। यह गीत सुनिये १ :—

"साल ओढ़न साल डासन मेवा फल भोजन रे।
ए ललना चनन के ज़रेला पसंगिया, निनरि भल आवे ला रे।
जइसन दह में के पुरइन दहे बिचे कांपेले रे।
ए ललना ओइसन कांपेले हमरो हियरा धिया का जनम लेले रे।
कुस ओढ़न, कुस डासन, बन फल भोजन रे।
ए ललना खुखुड़ी के जरेला पसंगिया, निनरियो ना आवेला रे।

२. खेलवना

यह गीत भी सोहर के समान पुत्र जन्म के सुखद अवसर पर गाया जाता है …रन्तु सोहर से इसमें कुछ भिन्नता रहती है। सोहर में विशेषकर पुत्र जन्म की …र्व पीठिका का वर्णन रहता है पर खेलवना के गीतों में उत्तरपीठिका का१। पुत्र …के लिये ललचने वाली स्त्री, गर्भ की वेदना से व्याकुल तरुणी, वधू के मंगल …साधन में लगी सास, धाय को दौड़कर बुलाने वाला पति, बालक के उत्पन्न होने …पर धन धान्य माँगने वाली धाय–ये सब सोहर के प्रतिपाद्य विषय हैं। परन्तु

१. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग १, पृ० ७१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सद्योजात शिशु का रोदन, माता का आनन्द, सास की प्रसन्नता, अपने पुत्र के पैदा होने के हेतु सर्वस्व लुटा देने वाले पिता का हर्ष आदि 'खेलवना' के मुख्य विषय हैं। यद्यपि सोहर और खेलवना के गीतों के बीच में कोई निश्चित सीमान्त रेखा नहीं खींची जा सकती परन्तु स्थूल रूप से दोनों गीतों में पार्थक्य है। इन दोनों प्रकार के गीतों का वर्ण्य विषय समान होने के कारण 'सोहर' के गीतों में ही 'खेलतना' का अन्तर्भाव माना जाता है। खेलवना की गीत में ननद अपनी भावज से कहती है कि मैं तुम्हारे पुत्र होने पर नथिया, झुलनी, हार, जोसन, हलका, हसुली, कंगना, कंठा और टीका आदि गहनों को उपहार (नेग) में लूंगी १—

"जाहु तोरा ए भउजी होरिला होइहें, तबे आइबि तोरा आंगनवा।
नथिया भी लेबो, झुलनी भी लेबो, लेबो जड़াऊ कांगनवा।
कंठा भी लेबो, टीका भी लेबो, लेबो सब सोना के गहनवा।"

३. मुंडन के गीत

बालक जब कुछ बड़ा हो जाता है तब उसका मुंडन संस्कार किया जाता है। इसे संस्कृत में 'चूड़ाकर्म' कहते हैं। तुलसीदास ने वशिष्ठ के द्वारा राम के चूड़ाकर्म संस्कार करने का उल्लेख 'रामचरित मानस' में किया है। यह हिन्दुओं के षोडश संस्कारों में से एक संस्कार है। इस संस्कार के पहले बालक के बालों को नहीं काटा जाता। देहातों में तो केशों को साफ रखने के लिये कंघी भी नहीं लगाते। फलस्वरूप बालों में जटायें पड़ जाती हैं। यह संस्कार बालक के तीसरे, पाँचवें या सातवें वर्ष—विषम वर्ष—में किया जाता है। इससे अधिक दिनों तक, बालक को बिना मुंडन संस्कार किये रखना अनुचित समझा जाता है।

कोई-स्त्री जिसके पुत्र का मुंडन संस्कार बारह वर्ष तक नहीं हुआ है, इस घटना के अनौचित्य की ओर अपने पति का ध्यान आकर्षित करती हुई कहती है कि२ :—

१. डा० उपाध्याय—वही पृ० १०४।
२. आर्चर—भोजपुरी ग्राम्य गीत पृ० १६३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

'आरे आरे स्वामी कवन राजा, कहल कुछ मानहु हो।
बारह बरस के लाल भये, तुहु मुंडन करावहु हो।"

अर्थात् हे पति ! मेरा कहना मानो। मेरा बालक बारह वर्ष का हो गया है। अब तो इसका मुंडन करावो। स्त्रियाँ पुत्र की प्राप्ति के लिए भिन्न-भिन्न देवताओं की मनौती मानती हैं और कहती हैं कि यदि मुझे पुत्र होगा तो हे देव ! तुम्हारे स्थान पर उसका मुंडन करूँगी। इस प्रकार बालक का मुंडन संस्कार किसी पवित्र तीर्थ या देवस्थान में होता है। इस कार्य के लिए भोजपुरी प्रदेश के अधिकांश लोग मिर्जापुर जिले में स्थित विन्ध्याचल की देवी के पास जाते हैं और वहीं बालक का मुंडन संस्कार किया जाता है। जो लोग किसी विशिष्ट तीर्थ स्थान में मुंडन कराने की मनौती नहीं मानते वे गंगा या किसी समीपस्थ नदी के किनारे बालक का मुंडन कराते हैं।

मुंडन के गीतों में कहीं तो कोई स्त्रीं इन्द्र भगवान् से जल न बरसाने की प्रार्थना करती है तो कहीं बालक की फूआ अपने भानजे के मुंडन में शामिल होने के लिए चली आ रही है। कहीं भाई अपनी बहन से 'झालर' परीछने की प्रार्थना करता है तो कहीं वह बहन अपने पिता से 'नेग' के रूप में आभूषण माँगती हुई दिखाई पड़ती हैं। नीचे के गीत में जब कोई बालक अपनी फूआ से 'नेग' मांगने के लिए आग्रह करता है तब वह विभिन्न गहनों की याचना करती है। १

"दादी के जनमल कवन फुआ, फुआ झालरि परीछहु हो।
आज हमार मुंडन नेग रउरा माँगहु हो।
लेबो मैं नाके के बेसर काने के तरिवन हो।
लेवों मैं हाथ के कंगनवां, त झालर परीछबी हो।"

एक दूसरे गीत में बालक कीं फूआ अपने नेग के रूप में पाँच मुहर और एक कपड़ा (साड़ी) माँग रही हैं। २

१. आर्चर—भो० ग्रा० गी० पृ० १६३।
२. आर्चर—भो० ग्रा० गीत पृ० १६२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

"परिछब ए बाबू परिछबि परिछि देखाइब हो।
पाँच मोंहर एक चीर भतीजवा नेछावर हो ॥"

बालक के मुंडन के लिए सारे गाँव में निमंत्रण देने का यह उ...
देखिए :१

"पांच ही पान के बिड़वा त लवंग डोभल हो।
नउवा सगरे नेवत देई आव ललन जी के मुंडन हो ॥"

मुंडन के दिन वर्षा न करने के लिए भगवान् से प्रार्थना करने वाली बा...
की फूआ की यह विनती कितनी प्रेम पूर्ण हैं।

"अंगना के ठाढ़ी कवनी फुआ देव मनावेली हो।
जनी देव गरोजहु, जनी देववरोसहु जनी झूर लावहु हो।
आज भतीजवा के मुंडन हम झालर परीछवि हो।"

५. जनेऊ के गीत

भोजपुरी-समाज में जनेऊ तथा विवाह दो प्रधान संस्कार समझे जाते हैं। यद्यपि विवाह के समान जनेऊ के अवसर पर विशेष धूमधाम नहीं रहता पर... तौभी उच्च वर्ण के लोग—ब्राह्मण और क्षत्रिय—बड़े उत्साह के साथ अ... बालकों का यज्ञोपवीत संस्कार करते हैं।

जनेऊ शब्द यज्ञोपवीत का अपभ्रंश रूप है। इसे 'उपनयन' संस्कार भी कहते हैं। 'उपनयन' शब्द का अर्थ है वह संस्कार या विधि जिसके द्वारा विद्यार्थी गुरु के समीप लाया है। 'उपनीयते' गुरुसमीपं प्राप्यते अनेन इति उपनयनम्।' प्राचीन काल में यज्ञोपवीत संस्कार के पश्चात् बालक गुरु के पास आश्रम या गुरुकुल में पढ़ने लिये भेज दिया जाता था। इसलिये इस संस्कार...

१. आर्चर—भो० ग्रा० गी०, वही पृ० १९२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

को 'उपनयन' कहते थे। यज्ञोपवीत धारण करने के समय से ब्रह्मचारी को कुछ व्रतों अर्थात् नियमों का पालन करना आवश्यक होता है। इसलिये इसे 'व्रतबन्ध' भी कहते हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के लिये यज्ञोपवीत धारण करना नितान्त अनिवार्य है। मनु ने लिखा है कि मनुष्य जन्म से शूद्र होता है परन्तु संस्कार के पश्चात् ही द्विज कहलाता है :—

"जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्यते"

वर्ण्य विषयः—जनेऊ के जो गीत गाये जाते हैं उनमें इस संस्कार में किये जाने वाले प्रायः विभिन्न कृत्यों का वर्णन पाया जाता है। कहीं पर ब्रह्मचारी किसी स्त्री को माता कह कर सम्बोधित करता हुआ भिक्षा देने की प्रार्थना करता है तो कहीं वह विद्या पढ़ने के लिये काशी और काश्मीर जाने के लिये प्रस्तुत है। नीचे के गीत में कोई ब्रह्मचारी किसी स्त्री से भिक्षा की याचना कर रहा है। गृहस्वामिनी उससे पूछती है कि तुम क्या लोगे ?

"किया लेबे बरुआ रे धोती रे पोथी, किया लेबे पीयर जनेव।
किया लेबे बरुआ रे सोबरन भिखिया, जाही धरे कान्हर जनेव।"

भिक्षा माँगने का यह दूसरा दृश्य देखिये। ब्रह्मचारी काशी से आकर किसी के घर भिक्षा माँगने गया है। वह कहता है कि हे माता! मुझे भिक्षा दो, हम दूर देश के रहने वाले हैं। परन्तु भिक्षा देने में विलम्ब होने के कारण वह अन्यत्र चला जाता है और पुनः भिक्षा देने पर भी नहीं लेता है। तब गृहस्वामिनी कहती है कि तुम भिक्षा माँगकर चले जाते हो और देने पर भी नहीं लेते १।

"काशी जी से उजे अइली रे बरुआ ठाढ़ भइले।
कवन बाबा दुआर भीखि देहु।
मायरी कवनी देई हम दूर देसी हो लोग।
दीहल भीखियो ना लेला रे बरुआ। माँगी घरे चलि जाई।"

१. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग १, पृ० १११।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

प्राचीन काल घर में चर्खें से सूत कात कर उसका जनेऊ बनाकर ... जाना था। एक गीत में बहन द्वारा काते गये सूत के जनेऊ का माई ... पहनने का उल्लेख पाया जाता है :

"कवनी सुहइया सूत कातेली, भल ओटेली।
पूरेले कवन राम जनेऊ, कवन बरुआ पहिरसु।"

बालक अपनी माता से पूछता है कि ए माता जनेऊ कैसे होगा। इस ... वह उत्तर देती है कि पहिले 'मूंज की डांडा' (करधनी) पहिनना पड़ेगा, ... मृग चर्म धारण करना होगा, फिर जनेऊ पहिनोगे[1]।

"माई हमरो जनेउवा रे बाबा कवन विधि होइ हैं।
आरे पहिले परिहे मूंज के डाँडा, तब मिरिगछाला,
तब परिहे बरुआ रतन जनेउवा रे।"

यज्ञोपवीत में पलाश दंड धारण करना ब्रह्मचारी के लिए अत्यन्त आवश्... है। अतः एक गीत में पिता अपने पुत्र के जनेऊ के लिए पलाश का दंड ... रहा है और मृगछाला को ढूंढ़ रहा है। जनेऊ की सामग्री एकत्रित करने ... लिए पिता की बेचैनी देखने योग्य है:[2]—

"ए जाहि वन सिकियो ना डोलेला,
बघवो ना गरजेला रे।
ए ताहि बने चलले कवन बाबा,
काटेले पारास डांड़ा खोजेले मिरिगछाला रे।
ए हमरा दुलरुवा के जनेव हवे,
काटिले पारास डांड़ा, खोजिले मिरिगछाला रे।"

१ डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग १ पृ० १०६।
२. डा० उपाध्याय—वही पृ० १०८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मनु ने द्विजातियों के यज्ञोपवीत के लिए एक निश्चित काल निर्धारित किया है और उस अवधि को पार कर लेने पर उनको 'व्रात्य' की संज्ञा दी है। एक गीत में उस माता की चिन्ता कितनी स्पष्ट झलकती है जिसका लड़का १२ वर्ष का हो गया परन्तु जनेऊ से वंचित है। वह अपने पति से कहती है:—

"ओसारे पइसी जगावेली कवन देई। सुनु पिया पंडित रे।
बरहो बरिसवा के लालाना बरुआ देह घालहु रे।"

इस पर चतुर पति उत्तर देता है कि:—

"आरे धनी छुलछनी बरुआ कछु चाहेला रे।
अछत, चनन, मोतिया, गेंठी बन्हन रे।
लाख टका, लाख धोती, मोतिया गेंठी बन्हन रे।

इस प्रकार इन जनेऊ के गीतों में माता और पिता की प्रसन्नता, विविध विधि-विधानों एवं नियमों का उल्लेख पाया जाता है।

५—विवाह

विवाह हमारा सबसे प्रधान और प्रसिद्ध संस्कार है। हिंदुओं में जहाँ मुंडन और यज्ञोपवीत संस्कार नहीं होता वहाँ भी विवाह संस्कार अवश्य ही सम्पादित होता है। यह इतना व्यापक और प्रधान संस्कार है जो संसार की सभी सभ्य अथवा असभ्य जातियों में समान रूप से पाया जाता है।

मनु ने आठ प्रकार के विवाहों का विधान किया है:—१. ब्राह्म २. दैव ३. आर्ष ४. प्राजापत्य ५. आसुर ६. गान्धर्व ७. राक्षस और ८. पैशाच। आजकल जो विवाह प्रचलित हैं और जिसका उल्लेख लोक गीतों में पाया जाता है उसे ब्राह्म और दैव का मिश्रण कहा जा सकता है। यों तो गान्धर्व विवाह आये दिन हुआ करते हैं परन्तु गीतों में इनका उल्लेख नहीं मिलता। अन्य समाजों की भाँति भोजपुरी समाज में भी विवाह बड़ी धूमधाम से सम्पादित किया जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

वर्ण्य विषय—विवाह के गीतों का वर्ण्यविषय बड़ा विस्तृत है। कहीं पुत्री अपने पिता से सुन्दर और योग्य वर खोजने की प्रार्थना क... तो कहीं उसकी माता पुत्री के वर खोजने के लिये पति को प्रेरित करती... कहीं पिता योग्य वर न मिलने की चिन्ता से व्याकुल दीख पड़ता है तो... माता पुत्री-जन्म के कारण अपने भाग्य को कोसती है। कहीं बारात के... और बाजा बजने का उल्लेख है तो कहीं माता अपने जामाता से यह ... करती है कि मेरी पुत्री को आराम से रखना। इन गीतों में एक ऐसी प्र... वर्णन मिलता है जो आजकल प्रायः प्रचलित नहीं है। वह है वर का क... कुटुम्बियों से विवाह का प्रस्ताव करना। कुछ गीत ऐसे उपलब्ध हैं जिन... कन्या के आँगन में जाकर बैठा है और आने का कारण पूछने पर कहता ... इस घर में एक कुमारी कन्या है, मैं उससे विवाह करने आया हूँ। नी... गीत में यह दृश्य देखिये : १

"पुरुब से अइले रे जोगी, पछिम कइले जाले।
कवन बाबा चौपरिया ए जोगी, बइसे आसन मारी।
हम त बिआहन अइलीं ए बाबा, तोहार बिटिया कुंवारी।"

कोई पूछता है कि ए जोगी ! तुम कहाँ से आये हो और यहाँ क्यों बैठे... इस पर वह उत्तर देता है कि इस घर में एक कुंवारी कन्या है। मैं उ... विवाह करने के लिये यहां आया हूँ। सयानी पुत्री अपने पिता से ऐसे सु... एवं योग्य वर को खोजने के लिये कहती है जिसे देखकर घर के लोग हंसे ना... वह बार-बार इसके लिये आग्रह करती हुई कहती है कि : २

"वर खोजु, वर खोजु, वर खोजु रे बाबा।
अब भइलौं वियाहन जोग ए।
आरे हमारा के बाबा सुनर वर खोजिह
हँसे जनि दुअरवा के लोग ए।"

१. डा० उपाध्याय—भो० लो० ग्रा० गी० भाग १, पृ० १२०।
२. वही पृ० १२४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

वर के खोजने में कन्या के पिता की परेशानी का जैसा जीता जागता चित्र गीतों मे मिलता है वैसा अन्यत्र उपलब्ध नहीं। इस गीत में उसकी दुःखद दशा का हाल सुनिये। पिता अपनी पुत्री से कहता है : १—

"पुरुब खोजलों बेटी पछिम रे खोजलों,अवरु ओड़इसा जगन्नाथ ए।
आरे तीनों भुवन तुहँ वर खोजलों, कतहो ना मिले सिरिराम ए।"

अर्थात् मैंने दुनिया की खाक छान डाली परन्तु तुम्हारे योग्य वर कहीं नहीं मिला।

इन गीतों में बाल-विवाह का वर्णन पाया जाता है। पुत्र विवाह करने के लिये जा रहा है। माता उसकी छोटी अवस्था देखकर चिन्तित होकर कहती है कि मेरा लाल ब्याहने जा रहा है। दूध के विना उसके होंठ सूख न जायँ। इसी प्रकार से पुत्री की माता कहती है कि बेटी मेरी छोटी है। दूध और पान के बिना उसका गला न सूख जाय।२

"ऊँच रे मन्दिल चढ़ि हेरेली कवन देई, कवन गाँव नियरा कि दूर ए।
हमरा कवन दुलहा वियहन चलेले। दूध विनु ओठ सुखाई ए।
हमरा कवनी सुहवा सासुर चलेली, दूध विनु ओठ सुखाई ए।"

इस गीत से पता चलता है कि दुधमुँहे बच्चों का विवाह भी हुआ करता था। विवाह में दहेज देने की प्रथा है। परन्तु जहाँ जामाता को अभिलषित दहेज नहीं मिलता वहां वह रूठ जाता है और उसे दहेज दिये बिना पुत्री के पिता का पिंड नहीं छूटता।३ 'शिवजी के विवाह' के गीतों में उनकी वीभत्स आकृति और अलौकिक बारात का बड़ा सुन्दर चित्रण हुआ है। तुलसीदास जी ने रामायण में शिव-विवाह का जो वर्णन किया है उससे यह बहुत समानता रखता है।४ कन्या के घर बारात आने का यह दृश्य कितना सुन्दर है।५

१. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग १, पृ० १२१। २. वही पृ० १५३।
३. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग २, पृ० ४०। ४. डा० उपाध्याय—वही भाग १ पृ० १६६। ५. वही पृ० १८४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

"काहांवां के हथिया सोगांरलि आवेले, कांहावा के झीन लाहास।
काहांवा के राजा बिअहन आवेले, माथे मुकुट मुखे पान।
गोरखपूर के हथिया सींगारलि आवेले, पटना के झीन लाहास।
कासी के राजा रे बियहन आवेले, माथे मुकुट, मुखे पान।"

विवाह में कोहवर के समय गाये जाने वाले गीतों में वर से मीठा ... किया गया है। ये परिहास बड़ी शिष्ट भाषा में है :

"ठीक दुपहरिया अइह मोरे राजा हो, हम रउरा से करवि लड़ाई।
निचवा रजाई रे उपरा दोलाई, ताहि बीचे होखेला लड़ाई॥"

यह ग्रामीण प्रेम की लड़ाई कितनी मधुर है। इस प्रकार इन गी... अनेक प्रसंगों की योजना बड़ी ही समुचित रीति से की गई है। यह वर्णन ... संजीव है कि आंखों के आगे चित्र उपस्थित कर देता है।

६. गवना

गवना शब्द संस्कृत के 'गमन' का अपभ्रंश रूप है जिसका अर्थ जाना... इस दिन लड़की पिता के घर से चली जाती है—विदा हो जाती है—इ... इसे 'गवना' कहते हैं। कुछ लोग विवाह के दूसरे ही दिन बारात के ... लड़की की विदाई कर देते हैं परन्तु जिनके यहाँ यह प्रथा नहीं है वे '... विवाह के पहले, तीसरे, पाँचवें अथवा सातवें वर्ष अर्थात् विषम व... करते है। पहिले जब छोटे-छोटे लड़के और लड़कियों का विवाह होता था... समय तीन, पाँच या सात वर्ष के बाद गवना कराना आवश्यक था जिससे ... और कन्या वयस्क हो जायँ। परन्तु आजकल युवक युवतियों का विवाह हो... कारण गवना एक वर्ष के भीतर ही हो जाता है।

वर्ण्य विषय—पुत्री की विदाई के अवसर पर गाये जाने के कारण ... गीतों में वियोग की धारा अविच्छिन्न रूप से बहती है। विवाह के गीतों में ... आनन्द, उल्लास एवं परिहास का वर्णन है, वहां गवना के गीतों में विषाद... दृश्य दीख पड़ता है। कहीं भाई अपनी बहन की पालकी के पीछे-पीछे ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ता हुआ दिखाई पड़ता है, तो कहीं बहिन अपने भाई, माता, एवं पिता के योग के दुःख से दुःखी होकर रोती, कलपती, विलखती चली जाती है। कहीं की माता अपने जामाता प्राण-प्यारी पुत्री को आदर के साथ रखने तथा से प्रेम करने का उपदेश देती है तो कहीं अपनी पुत्री के भावी वियोग जन्य का अनुमान कर विलाप करती है। सारांश यह है कि इस अवसर पर विषयों का वर्णन किया गया है वे सभी करुण रस में ओत-प्रोत हैं।

पुत्री की विदाई का यह दृश्य कितना करुण है। इसमें माता, पिता, भाई विह्वल होकर रोते दिखाई पड़ते हैं। परन्तु भावज की आँखों में आँसू की बूंद भी नहीं है।[१]

"केकरा ही रोवले गंगा बढ़ि अइली,
केकरा के रोवले अनोर।
केकरा ही रोवले चरण धोती भीजे,
केकरा नयनवा ना लोर॥
बावा के रोवले गंगा बढ़ि अइली,
आमा के रोवले अनोर।
भइया के रोवले चरन धोती भीजे
भऊजी नयनवाँ ना लोर॥"

इन पंक्तियों में पुत्री के प्रति पिता की कितनी ममता भरी पड़ी है। लिदास ने शकुन्तला की विदाई के अवसर पर वनवासी कण्व को भी रुलाया है। ससुराल जाते समय रोती हुई पुत्री को सान्त्वना देती हुई माता कहती कि ए बेटी ! चुप रहो। मैं पीछे से तुम्हारे सहोदर जेठे भाई को भेजूंगी। अतः रोओ मत।[२]

"आरे रोवेली माइके रे धिया भीजेला रे पटुक।
आरे चुप होखु, चुप ए बाचवा चुप होखु रे।
आरे पाछा से पठइवो रे बाचावा, सहोदर जेठ भाई।"

१. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग १ पृ० १६६।
२. डा० उपाध्याय—वही पृ० १६५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

पुत्री की माता अपने जेठे पुत्र से कहती है कि तुम मेरी समधिन से कह देना कि वह मेरी बेटी को गाली न देगी और न पैर से ठुकरायेगी। और जब सोई हो तो उसे कच्ची नींद में न जगायेंगी।१

"सुन-सुन लोकनी सुनहु जेठ भाई,
कहिह समधीनी आगे अरज हमारी।
लाते जनि मरिहैं, पाराते जनि गारी,
आरे काँच ही नीनीये जनि जगइहै मोरि दुलारी।"

इस गीत में माता की ममता छलकी पड़ती है।

बहन के प्रेम के कारण उसका भाई उसकी विदाई के समय पालकी के दरवाजे को रोक लेता है जिससे वह ससुराल न जाय। संभवतः वह प्रेम विह्वल हो यह समझता है कि मेरे दरवाजा रोक लेने से बहिन का जाना न हो सकेगा।

"आठहि काठ केरा डंडिया, नेतवे लागेला ओहार।
फानावेले कवन राम बहू चढ़ि चलु रे हमार।"
छेंकेले कवन भइया डंडिया, बहिना जाये ना देउ।"

इस प्रकार गवना के गीतों में करुण रस की नदी बल खाती, बिना अविच्छिन्न गति से चलती जाती है।

---

१. डा० उपाध्याय-भो० लो० गी० भाग १, पृ० १८९-९०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

(ख) ऋतु सम्बन्धी गीत

१—कजली

सावन के मन भावन महीने में भोजपुरी प्रदेश में जो गाने गाये जाते हैं 'कजली' कहते हैं। सावन के महीने में प्रकृति सर्वत्र हरी दिखाई पड़ती है मेघों के आगमन के साथ ही साथ प्रकृति में एक विचित्र प्रकार की कता व्याप्त हो जाती है। महाकवि कालिदास ने 'मेघालोके भवति खिनोऽप्यन्यथावृत्तिचेत:" लिखकर इसी मादकता या मस्तीपन की ओर संकेत या है। प्रकृति की इसी पृष्ठभूमि में सावन मास में 'कजली' गायी जाती है।

सावन के महीने में हरएक गाँव में, बाग में या तालाब के किनारे झूले गाये जाते हैं जिनमें गाँव के स्त्री और पुरुष झूला झूलते हैं। इन झूलों को लगाने लिए बड़ी तैयारी की जाती है। सुन्दर रंगीन रस्सी होती है और काठ के टे में उसे बांध कर किसी पेड़ की शाखा से लटका देते है। इसी सुसज्जित के पर बैठ कर नर नारी झूले का आनन्द लेते हैं और 'कजली' गाते हैं। कोई स झूले पर खड़े होकर उसे झटका देकर जोर से चलाता रहता है जिसे 'पेंग ढ़ाना' कहते हैं। इस प्रकार सावन में झूले का दृश्य बड़ा ही आनन्ददायक ता है।

सावन में भोजपुरी प्रदेश में कजली गाने की बड़ी प्रथा है। प्राय: प्रत्येक गाँव में झूले पड़ते हैं और वहाँ स्त्रियाँ झूला झूलती हुई गाना गाती हैं। मिर्जापुर की कजली बहुत प्रसिद्ध है जैसा कि इस उक्ति से पता चलता है:

लीला रामनगर को भारी, कजली मिर्जापुर सरदार।"

अर्थात् रामनगर की रामलीला बहुत बड़ी होती है परन्तु मिर्जापुर की कजली श्रेष्ठ है। यहाँ कजली के दंगल भी हुआ करते हैं जहाँ गवैयों की दो पार्टियाँ रात-रात भर कजली गाती रहती हैं। इसमें दंगल जीतने वालों को पुरस्कार भी दिया जाता है। दोनों दलों के गवैये मधुर राग में अपनी कजली सुनाते हैं। ये प्राय: स्वरचित होती हैं जिनमें सामयिक विषयों पर रचना की गई रहती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

वर्ण्य विषय—कजली का वर्ण्य विषय प्रेम है। इसमें शृंगार के ... की झाँकी में हमें देखने को मिलती है। परन्तु संभोग श्रंगार का वर्णन ... प्रधानता रखता है जो स्वाभाविक ही है। एक गीत में राधा और ... झूला झूलने का उल्लेख मिलता है। यह वर्णन कितना सुन्दर है।१

झूला झूले राधिका प्यारी, संग में कृष्ण मुरारी ना। टेक
कथि के पलना कथि के डोरी, कथि के गछिया ना।
सोने के पालना रेसम की डोरी, चनन के गछिया ना।"

कहीं कहीं इन गीतों में पति-पत्नी की प्रेमलीला का वड़ा ही सुन्दर ... वन पड़ा है। नीचे का यह गीत देखिए :२

"आरे बाबा बहेला पुरवैया, अब पिया मोरे सोवे ए हरी। टेक
कलिया चुनि-चुनि सेजिया डसवली,
संइयाँ सुतेला आधी रात, देवर बड़ी भोरे ए हरी।
लवंग खिलि-खिलि विरवा लगवली,
संइयाँ चाभेंले आधि राति देवर बड़े भोरेए हरी।"

कही झूला झूलने के लिए उत्सुक भावज अपनी ननद से पूछती है ... ए ननद ! बादल उमड़े चले आ रहे हैं, मैं सावन में कजली खेलने कैसे जाऊँ ...

"कइसे खेले जाई हम सावन में कजरिया, बदरिया घिरि अइले ननदी ...

इस पर ननद मना करती हुई कहती है कि आज कल मस्ती का ... हैं। कोई मनचला रास्ते में पकड़ लेगा, अतः तुम कजली खेलने मत जाओ :-

"तू तो चललू अकेली, तोरा संग ना सहेली
गुंडा घेरिलीहैं तोहि के डगरिया में।
बदरिया घिरि अइले ननदी।"४

---

१. डा० उपाध्याय-भो० लो० गी० भाग २ पृ० १७६।
२. डा० उपाध्याय-भो० लो० गी० भाग २ पृ० १७५। ३. वही, पृ० १७...
४. डा० उपाध्याय-भो० लो० गी० भाग १, पृ० १७५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

संभोग श्रृंगार के साथ ही इन गीतों में वियोग श्रृंगार की गंभीर अभिव्यंजना हुई है। पति वियोग के कारण इनमें विरहिणी की वेदना मूक स्वर से फूट रही है। उनका करुण क्रन्दन श्रोताओं को करुण रस की धारा से सिंचित कर देता है। डा० ग्रियर्सन ने इन गीतों के विषय में ठीक ही कहा है कि इन गीतों का वातावरण करुण रस से पूर्ण है यद्यपि इनमें विभिन्न अनुभूतियाँ और भावनायें पायी जाती हैं।१

सावन के महीने में पति के आगमन की अवधि है। परन्तु उसके न आने पर प्रोषितपतिका स्त्री की व्याकुलता का यह वर्णन कितना स्वाभाविक है। वह स्त्री अपनी सखी से कहती है कि पति ने आज आने को कहा था। अब सूर्य डूब चला, सन्ध्या हो गई परन्तु अभी तक पति नहीं आया। ए काग! शुभ शकुन सूचित करने वाली अपनी बोली बोलो। परन्तु अब तो काली घटायें घिर आई, बादल बरसने लगे, बिजुली कौंधने लगीं। भला मेरा पति अब कैसे आयेगा।२

"सोने के थारी में जेवना परोसलो, जेवना ना जेंवे हो,
सखिया साझे भइल बेरी बिसवे, सामी घरे ना अइले हो।
बोलु बोलु कागवा सुलच्छन बोलिया। हरि घरे ना अइले हो।"

इसी प्रकार एक दूसरी कजरी में कोई विरह विधुरा नायिका सखियों के उल्लास को देखकर अपने भाग्य को कोसती हुई पश्चाताप कर रही है।३

"बादर बरसे बिजुरी चमके, जियरा ललचे मोर सखिया
सइयाँ घर ना अइले, पानी बरसे लागल, मोर सखिया।"

---

१. दि एयर्स आफ दीज सांग्स आर रादर मेलंकली, दो दे आर टयून्ड टू एक्सप्रेस डिफ्रेन्ट फीलिंग्स एण्ड सेन्टीमेन्ट्स। ज० ए० सो० बं० भाग ५३ खंड १ (१८८४) पृ० २३७। २. डा० उपाध्याय-भो० लो० गी० भाग १, पृ०३३६-३७। ३. डा उपाध्याय—भो० लो गी० भाग १, पृ० ३३४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

२—फगुआ

नामकरण—होली के त्योहार के अवसर पर जो गीत गाये जाते हैं उन्हें 'फाग' या 'फगुआ' कहते हैं। होली का उत्सव फाल्गुन पूर्णिमा को मनाया जाता है। अतः फाल्गुन मास में गाये जाने के कारण ही इन गीतों का नाम 'फाग' या 'फगुआ' पड़ गया है। होली के अवसर पर गेय होने के कारण इन्हें 'होली' या 'होरी' भी कहते हैं। माघ मास की शुक्ल पंचमी 'वसन्त पंचमी' के नाम से प्रसिद्ध है। इसी दिन से वसन्त का आगमन माना जाता है। आज से गाँव-गाँव में 'फाग' गाना प्रारम्भ हो जाता है जिसे ग्रामीण भाषा में 'ठोकना' कहते हैं। गाँव के लोग आज से किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के द्वार पर एकत्रित होकर फाग गाते हैं और श्रोताओं को आनन्दित करते हैं। परन्तु इसका चरम उत्कर्ष होली के दिन देखने में आता है। जिस दिन होली होती है उसके एक दिन पूर्व की रात्रि में 'होलिका' जलाई जाती है, जिसे भोजपुरी में 'संवत् जलाना' कहते हैं। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नया वर्ष प्रारम्भ होता है और पुराना वर्ष समाप्त हो जाता है। संभवतः इसी कारण इस प्रथा को 'संवत् जलाना' कहा जाता है। संवत् जलाने के लिए गाँव का कोई चौराहा या मुख्य स्थान चुना जाता है। वहाँ पर गाँव के लड़के बीसों दिन पहले से ही लकड़ी, उपला, टूटा छप्पर, पुराना काठ, पत्ती, और सूखी घास आदि लाकर इकट्ठा करते रहते हैं। हिन्दी के किसी कवि ने होली जलाने के लिये काष्ठादि वस्तुओं के चुराने का संकेत अपने एक पद्य में किया है :

'चोरी करि होरी रची, भई तनक में छार।'

होली के अवसर पर जो गालियाँ गाई जाती हैं उन्हें 'कबीर' कहते हैं। इन सभी गालियों के साथ कबीर का नाम संबद्ध है। जैसे :—

"अ र र र र र र र र भइया सुनलऽ मोर कबीर।"

इन गालियों को 'कबीर' क्यों कहते हैं यह निश्चित रूप से बतलाना कठिन है। कबीर की अटपटी निर्गुन बानी तत्कालीन समाज के लिये लोकप्रिय न हो सकी। अतः कबीर के प्रति अपनी अस्वीकृति या आत्मक्षोभ दिखलाने के लिए ही लोगों ने इन गालियों को 'कबीर' का नाम दे दिया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

इस प्रकार होली का हुरदंग—जिसमें गाली और गीत का अनुपात प्रायः बराबर होता है—सबेरे से दोपहर तक निरन्तर चलता रहता है। इस दिन भोजन के लिए विशिष्ट पकवान पकाया जाता है। स्नान और भोजन के पश्चात् खेलने का समय आता है। गाँव के लोग एक दूसरे के गले मिलते हैं, उनके गाल में गुलाल—मलते हैं। गुलाल—जिसे 'अबीर' कहते हैं—प्रायः सभी लोगों को लगाया जाता है। इस दिन ऊँच-नीच का विचार छोड़कर प्रायः सभी लोग आपस में मिलते हैं और निजी वैर भाव को गुलाल मल-मलकर मसल देते हैं।

वर्ण्य विषय—होली हमारा परम आनन्द और मस्ती का त्योहार है। अतः इस मंगलमय अवसर पर गेय गीतों में उछाह एवं हर्ष का वर्णन होना स्वाभाविक है। इन गीतों में कहीं राधा और कृष्ण के होली खेलने का वर्णन है तो कहीं शिवजी 'होरी खेलते' हुए दिखाई पड़ते हैं। कहीं राम और सीता सोने की पिचकारी में रंग भर कर एक दूसरे पर डाल रहे तो कहीं पवनसुत हनुमान जी लंका में होरी मचाते हुए पाये जाते हैं। राम और सीता के होली खेलने का यह वर्णन सुनिये।१

"होरी खेले रघुबीरा अवध में होरी। टेक
केकरा हाथ कनक पिचकारी, केकरा हाथ अबीर।
राम के हाथ कनक पिचकारी, सीता के हाथ अबीर।
होरी खेले रघुबीरा अवध में होरी।"

'फगुआ' के इस गीत में राम के बाल रूप का कितना मधुर वर्णन किया गया है:२।

"प्रन एहि मेरो रघुबर जी से खेलबि होरी। टेक
जाके सिर पर मुकुट बिराजे, साँवर गोर दुनो जोरी।

१. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग० २, पृ० १२६।
२. वही० पृ० २२४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भाल विसाल तिलक बिच सोभे, सोभा सिन्धु खरोरी।
जाके कर सर, धनुष विराजे, फिरत अवध के खोरी।
वालक रूप अनूप बनल बा, ओढ़त पीत पटोरी
प्रन एहि मेरो, रघुबर जी से खेलबि होरी।"

इस प्रकार होली के गीतों में सर्वत्र आनन्द ही दिखाई पड़ता है।

३—चैता

चैत के मनभावन मास में 'चैता' गाया जाता है। चैत्र के महीने में होने के कारण ही इसका नाम 'चैता' पड़ गया है। वसन्त में चैता की बड़ी आनन्ददायिनी होती है। नदी के किनारे, किसी मेले में, अमराई की छाया में, मन्दिर में—जहाँ देखिये वहीं मस्त भोजपुरिया चैता गाने में दिखाई पड़ता है। लोक गीतों के जितने भी प्रकार हैं उनमें मधुरता, एवं कोमलता की दृष्टि से चैता अपना सानी नहीं रखता। यह सत्य है सोहर और जंतसार में भी करुण रस का संचार है परन्तु हृदय को करने की जो शक्ति 'चैता' में पाई जाती है, वह अन्यत्र उपलब्ध नहीं है। दृष्टि से चैता को लोक-गीतों में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है।

वर्ण्य विषय—चैता प्रेम के गीत हैं। अतः इनमें संभोग शृंगार की रागों में लिखी गई है। इनमें कहीं आलसी पति को सूर्योदय के बाद तक से जगाने का वर्णन है, तो कहीं पति-पत्नी के प्रणय-कलह की झाँकी देखने मिलती है। कहीं ननद और भावज के पनघट पर पानी भरते समय मनचले छोकड़े के द्वारा छेड़खानी का उल्लेख है, तो कहीं सिर पर मटका रखे दही बेचने वाली ग्वालिन से—कृष्ण जी के द्वारा 'गोरस' माँगने का वर्णन है। जानकी के विवाह के लिए स्वयम्वर की रचना की गई है तो कहीं फूल के लिए गई हुई किसी नायिका के कोमल करों में चुभे काँटे को उसके प्रि द्वारा निकालने का उल्लेख पाया जाता है। प्रियतम के साथ सेज पर सोने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

कोई स्त्री किसी बहेलिया से प्रार्थना करती है मेरे अखंड प्रेम में विघ्न पहुंचाने वाली कोयल को तुम मार डालो। आशय यह है कि संभोग शृङ्गार के विभिन्न पहलुओं का, चैता के इन गीतों में, बड़ा सुन्दर चित्र उपस्थित किया गया है। कोई स्त्री बहेलिया से कहती है कि मैं जब पति के साथ सोती हूँ तभी यह कोयल शब्द सुनाकर जगा देती है। १

'आहो रामा, सूतल रहलीं पिया संगे सेजिया हो रामा।
बिरही कोइलिया, सबद सुनावे हो रामा।
बिरही कोइलिया।
आहो रामा, गोड़ तोर लागेनी बाबा के बहेलिया हो रामा।
बिरही कोइलिया, मारि ले आऊ हो रामा।
बिरही कोइलिया।

ननद के आचरण पर आशंका करनेवाली भावज की यह दुष्टता भरी उक्ति कितनी तथ्यपूर्ण है। २

"आहो रामा, हम तोसे पूछेली ननदी सुलोचनीं हो रामा।
तोहरो पिठिया, धूरिया कइसे लागल हो रामा। तोहरो पिठिया।
आहो रामा, बाबा के दुअरवा नाचेला नेटुअवा हो रामा।
भितिया सटल धूरि लागल हो रामा, भितिया सटल।"

आलसी, दीर्घसूत्री एवं निष्क्रिय पति को बार बार जगाने वाली स्त्री की यह प्रेम पूर्ण उक्ति कितनी मर्मस्पर्शिनी है। जब उसका पति जगाने पर भी नहीं जागता तब वह अपनी ननद से उसे जगाने की प्रार्थना करती है। ननद के अस्वीकार करने पर वह कहती है कि तुम्हारे लिये तो तेरा भाई सो रहा है परन्तु मेरे लिये इसका सोना सूर्य और चन्द्रमा के अस्त होने के समान है :—

---

१. डा० उपाध्याय—मो० लो० गो० भाग २, पृ० २४८-४६।
२. वही. पृ० २५०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

"रामा साँझहि के सूतल फूटलि किरिनिया हो रामा।
तबो नाहीं, जागेला हमरो बलमुआ हो रामा।
रामा चुर घोंची मरलीं पइरिया घोंची मरली हो रामा।
तबो नाहीं, जागेला सँइयाँ अभागा हो रामा।
रामा तोरा लेखे ननदी तोर भइया निंदिया के मातल हो रामा।
मोरा लेखे, चान सुरुज छपित भइल हो रामा।"

यमुना में क्रीड़ा करते समय कृष्ण जी के छिप जाने पर गोपियों की चिन्ता का कितना सुन्दर चित्रण नीचे लिखे चैते में हुआ है। यह सरलता, मधुरता और हृदय की द्रावकता में अत्यन्त सुन्दर है। यहाँ कृष्ण को उपमा माणिक्य से दी गई है। १

"आहो रामा, मानिक हमरो हेरइले हो रामा। जमुना में।
ओही यमुना में, केहु नाहीं खोजेला हमरो पदारथ हो रामा।
ओही यमुना में।
आहो रामा, ओही रे जमुनवा के चीकटी मटिया,
चलत पाँव बिछिलइले हो रामा। ओहि यमुना में।
आहो रामा, ओहि रे जमुनवा के चीकटि मटिया,
देखत मन घबरइले हो रामा। ओहि जमुना में।"

अधिकांश चैता गीतों के रचयिताओं का नाम प्राप्त नही होता है। पर बुलाकीदास का नाम अनेक चैतों की अन्तिम पंक्ति में आता है। जैसे!—

"रामा दास बुलाकी चइत घाटो गावे हो रामा।
गाई गाई, बिरहिनि समुझावे हो रामा। गाई गाई।"

---

१. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग १, पृ० ३४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

४—बारहमासा

पावस ऋतु में जो आनन्दमय गीत गाये जाते हैं उन्हें बारहमासा कहते हैं। इन गीतों में विरहिणी की वेदना की अभिव्यक्ति पायी जाती है। वाणिज्य व्यवसाय के लिए कोई पति परदेश चला गया है। वह बरसों से लौटकर घर नहीं आया। वर्षा का दिन है। छप्पर चू रहा हैं। परन्तु छाने वाला कोई नहीं है। ऐसी दशा में विरहिणी का विरह उत्कर्ष को प्राप्त करता है और उसकी वेदना 'बारहमासा' के रूप में प्रकट होती है। चूँकि इन गीतों में वर्ष भर के समस्त मासों—बारह महीनों—में होने वाले दुखों का वर्णन पाया जाता है अतः उन्हें 'बारहमासा' कहते हैं। इन लोक गीतों में विरह की अधिकता होती है, इसलिए इन्हें यदि 'विरहमासा' कहें तो कुछ अत्युक्ति नहीं होगी। जिन गीतों में बारहों महीने का विरहजन्य प्रकृति चित्रण होता है उसे 'बारहमासा', जिनमें छः मासों का वर्णन होता है उन्हें 'छः मासा' और जिनमें केवल चार मास—आषाढ़, सावन, भादों, कुवार—का प्रकृति चित्रण उपलब्ध होता है वह 'चौमासा' के नाम से पुकारा जाता है। भोजपुरी में विशेषकर बारहमासा ही पाये जाते हैं। 'छः मासा' तो प्रायः होता ही नहीं, हां दो चार 'चौमासे' अवश्य प्राप्त होते हैं।

वर्ण्य विषय—बारहमासा प्रायः वर्षा ऋतु में गाया जाता है परन्तु अन्य ऋतुओं में गाने के लिए इसका निषेध नहीं है। मन में जब भी भावों की घटा छा जाय तभी इन्हें गाया जा सकता है। भोजपुरी प्रदेश में बारहमासा गाने का बहुत प्रचार है। देहात के लोग इन गीतों को गाना और सुनना बहुत पसन्द करते हैं क्योंकि उन्हें एक साथ ही बारहों महीने के दुःख-सुख का दृश्य सामने दिखाई पड़ने लगता है। बारहमासा प्रायः आषाढ़ मास के वर्णन से ही प्रारम्भ होता है और जेठ मास के वर्णन से समाप्त होता है।

इन बारहमासों में विप्रलम्भ शृंगार का ही वर्णन प्रधान रूप से पाया जाता है। जिस प्रकार संस्कृत भाषा में प्रवास कथन में मन्दाक्रान्ता छंद का प्रयोग किया जाता है उसी प्रकार लोकगीतों में वियोग वर्णन में यह छन्द (बारहमासा) बहुधा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

प्रयुक्त हुआ है। बहुत संभव है कि जायसी ने लोक साहित्य में प्रचलित बारह की लोकप्रियता को देखकर नागमती वियोग वर्णन के लिए इनका प्रयोग उचित समझा हो। कहीं तो इन गीतों में परदेश जाने वाले पति को के लिए स्त्री की प्रार्थना सुनाई पड़ती है तो कहीं प्रोषित्पतिका स्त्री अपनी से विषम वियोग-जन्य अपने दुखों का वर्णन करती हुई दृष्टिगोचर होती नीचे के इस गीत में कोई विरहिणी प्रत्येक मास में अपने दुखों को गिनाती कहती है कि : १

> "प्रथम मास आसाढ़ सखि हो, गरजि गरजि के सुनाई।
> सामी के अइसन कठिन जियरा, मास असाढ़ नहिं आई।
> सावन रिमझिम बुनवा बरिसे, पियवा भीजेला परदेस,
> पिया पिया कहि रटेले कामिनी, जंगल बोलेला मोर।"

विरहिणी को अपने उजड़े हुए जीवन के साथ प्रकृति के सौन्दर्य में साम नहीं दिखाई पड़ता। उसे भादों की रात्रि भयावनी मालूम पड़ती है और का महीना मदमस्त व्यक्ति की भांति आचरण करता है २।

> "भादों भवन सोहावन न लागे, आसिन मोहि न सोहाई।
> कातिक कन्त विदेस गइले हो, समुझि समुझि पछताई॥
> अगहन आवन कहि गइले ऊधो, पूस बितल भरि मास।
> माघ मास जोबन के मातल, कैसे धरब जिय आस॥

एक दूसरी वियोगिनी पति के विरह से उत्पन्न अपनी हार्दिक वेदना किसी सखी से प्रकट करती हुई कहती है३ कि:—

> "भादों मास भयावन ए सखि, गगन बहुत घहराई।
> केकरा सरनवा हम जाई के बइठीं, जीव मोरे बहुत डेराई।
> कातिक में सखि, कतिकी लागे, सभ सखि गंगा नहाई।
> हमरो ललन परदेस ए सखि, केकरा संगे गंगवा नहाई।'

१. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग १, पृ० ३२३।
२. वही पृ० ३२९। ३. वही, भाग २ पृ० २०३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

(ग) व्रत-संबंधी गीत

स्त्रियाँ विभिन्न मासों में बहुरा, तीज, पिड़िया और गोवन आदि का व्रत ती हैं और उस दिन गीत गाती हैं। इन सभी प्रकार के गीतों का वर्णन विभिन्न ों के क्रम से प्रस्तुत किया जाता है। यों तो माता देवी की पूजा किसी स भी की जा सकती है परन्तु चैत मास की शुक्ल पक्ष को नवमी को ता देवी' की पूजा विशेष रूप से होती है। देहात में सात प्रकार की ता देवी मानो जाती है जैसे—शीतला माता, गलमुआ माता, पनिसहा माता की माता एवं छोटकी माता आदि। परन्तु इन सबमें शीतला माता ही क प्रसिद्ध हैं। इनकी पूजा एक विशेष अवसर पर होती है। विभिन्न मासों होने वाले व्रतों के अवसर पर गाये जाने वाले ये व्रत संबंधी गीत स्त्रियों रा ही गाये जाते हैं।

१—शीतला माता के गीत

चेचक को शीतला माता के नाम से पुकारते हैं। यह कहना कठिन है कि सी भयंकर बीमारी को जिसमें शारीरिक गर्मी की विशेष प्रधानता रहती है तला क्यों कहते हैं। डा० तारापुरवाला[१] ने लिखा है कि मनुष्य की यह वृत्ति होती है कि वह नीच तथा भयंकर वस्तु को किसी सुन्दर नाम से पुकारने प्रयत्न करता है। जैसे रसोई बनाने वाले ब्राह्मणों को महाराज (बहुत बड़ा राजा) कहते हैं। इसी प्रकार से इस भयंकर बीमारी को लोग शीतला कहने लगे तो कुछ आश्चर्य नहीं। कुछ काल के अनन्तर इसी शीतला देवी को अधिक महत्व देने के लिए 'मातादेवी' के नाम से पुकारने लगे। सारी बिमारियों में संभवतः चेचक या शीतला ही ऐसी बीमारी है जो देवी या देवता के रूप में पूजी जाती है। इसका कारण संभवतः इसकी भयंकरता ही है। शीतला देवी का वाहन गधा है जो भयंकरता एवं वीभत्सता को सूचित करने के लिए पर्याप्त है।

१. एलिमेन्ट्स आफ दि साइन्स आफ लैंग्वेज; (कलकत्ता विश्वविद्यालय।)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

यद्यपि शीतला माता का वाहन गधा है परन्तु गीतों में उनके वाहन का उल्लेख घोड़ा किया गया है। सम्भवतः पूजनीय एवं पवित्र माता को अपवित्र पशु वाहन के रूप में देना भक्त को रूचिकर नहीं प्रतीत हुआ, उसने घोड़े का वर्णन किया है। शीतला माता को बंगालिन देवी कहा गया है। इसका प्रधान कारण यह है कि प्राचीन काल में बंगाल शक्ति-पूजा का केन्द्र था। अतः शक्ति की प्रतीक शीतला माता को बंगालिन देवी कहना स्वाभाविक ही है। एक गीत लीजिए जिसमें देवी को मूर्तिमान् स्वरूप प्रदान किया है:१। इस गीत से यह भी पता चलता है कि शीतलादेवी को तितिल (तीतर) पसन्द है और यह उन्हें भेंट चढ़ाया जाता है।

"कवना बरने तोहरा घोड़वा ए सीतलि, कवना बरने असवार।
बांगालिन देवी हो, लीही ना पुजवा हमार।
लाल बरने मोरा घोड़वा ए सेवका, सुरुज बरने असवार।
मइया रंग रसिया रे हाथ लेले बंसिया,
तीतील ले ले जोड़िआई ॥"

शीतला माता के विषय में अन्य जो गीत उपलब्ध होते हैं उनमें भक्त की प्रगाढ़ भक्ति का भली भाँति परिचय मिलता है। इन गीतों में चेचक से पीड़ित बालक के लिए आरोग्य प्रदान की प्रार्थना की गई है। शीतला माता बड़ी दयालु हैं, थोड़े से उपकार के लिए भक्त के मनोरथ की सद्यः पूर्ति कर देती हैं। वह नीम के पेड़ में हिंडोला लगाकर झूल रही हैं, इतने में उन्हें प्यास लगती है। रात का समय, गाँव है दूर। गाँव में आकर वे मालिन की बेटी को जगाती हैं और पीने के लिये पानी माँगती हैं। मालिन की बेटी कहती है कि ए माता! मेरी गोद में लड़का सो रहा है, मैं कैसे उठूं? शीतला के आग्रह करने पर वह उठती है और पानी पिलाती है। तब शीतला माता प्रसन्न होकर उसकी अभिलाषा की पूर्ति कर देती हैं। वह इतनी दयालु हैं कि भक्त की आर्त प्रार्थना को अस्वीकार नहीं कर सकतीं २।

---

१. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग १, शीतला माता के गीत।
२. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग १, पृ० २६६-७०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

"निमिया की डाली मइया लावेली हिलोरवा, कि झुली, झुली।
मइया गावेली गीत, कि झुली झूली ॥
झुलत झुलत मइया का लगली पियसिया कि, चली भइली।
मलहोरिया अवास कि चली भइली ॥
सुतलु बाड़ू कि जागलि ए मालिनि।
उठि के मोहीं के पनिया पिआऊ ॥"

पानी पीकर प्रसन्न हुई माता आशीर्वाद देती हैं :—

"बिअवा जुड़ासु मालिन आपन ससुरवा, पतोहिया तोर जुड़ासु नइहरवा।"

शीतला माता पुत्र ही नहीं देतीं, प्रत्युत यदि वह बालक बीमार पड़ जाता है उसकी रक्षा भी करती हैं। चेचक के निकलने से जब बालक का शरीर जलने लगता है और बेहद पीड़ा होती है, तब उसकी दयामयी जननी भक्ति-भावना में झूमते-झूमते शीतला माता से प्रार्थना करती है कि मैं बालक की माता हूँ। मैं आँचर पसार कर भीख माँग रही हूँ। ए मेरी दुलारी माँ ! इस बालक के जीवन की भिक्षा दीजिये:१—

"पटुका पसारि भीखि माँगेली बालकवा के भाई
हमरा के बालकवा भीखि दीं।
मोरी दुलारी हो मइया,
हमरा के बालकवा भीखि दीं।
मोरी मानावा राखनि मइया,
हमरा के बालकवा भीखि दीं।"

बालक की दर्द भरी आहों से व्याकुल होकर उसकी मां जब इन गीतों को गलों में झूम-झूमकर गाती है, तो सुनने वालों के शरीर में रोमांच हो जाता है और जान पड़ता है कि नीम की डाल पर झूलने वाली शीतला माता अपने

१. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग १, पृ० २६१-६२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

आनन्दमय झूले से उतरकर, जल्दी-जल्दी बालक की सेज के पास आकर हो जाती हैं और अपना वरद हस्त फैलाकर उसे नीरोग होने का आशीर्वाद देती शीतला माता को लाल फूल—विशेष कर अड़हुल का फूल—परम प्रिय है। कहीं कहीं उनकी पूजा के लिये चम्पा का फूल चुनने का भी उल्लेख जाता है।१

२—नागपंचमी के गीत

श्रावण शुक्ला पंचमी' को नागपंचमी कहते हैं। इस दिन सर्प की पूजा है। इस दिन लड़कियाँ प्रातःकाल उठकर मकान की भित्ति पर गोवर से एक खींचती हैं तथा घर के प्रधान दरवाजे पर सर्प की गोवर की दो मूर्तियां बन हैं। शहरों में जहाँ गोबर का अभाव रहता है कागज पर बने नाग के चित्रों स्त्रियाँ दरवाजे पर चिपका देतीं हैं। नाग की मूर्ति बनाने के पश्चात् उन यथाविधि पूजा की जाती है। एक कटोरे में दूध और धान की खील-आ भरकर एकान्त स्थान में रख दिया जाता है। लोगों का विश्वास है कि जो इस नाग की पूजा करते हैं उन्हें सर्प काटने का भय नहीं रहता। यदि काटे भी उसका कुछ असर नहीं होता। इस तिथि को 'नाग पचैयाँ' भी कहते हैं 'नाग पंचमी' का अपभ्रंश रूप है।

नाग पंचमी के गीत अधिक उपलब्ध नहीं होते। इस दिन मदारी जी सर्पों को दिखलाते हैं और भिक्षा माँगते हैं। नीचे के गीत में यह वर्णन मिल है कि जो सर्प को भिक्षा देगा उसे पुत्र पैदा होगा, वह सुखी होगा परन्तु भिक्षा नहीं देगा उसे पुत्र रत्न की प्राप्ति नहीं हो सकती।२

"जे मोरा नाग के भिखिया ना दीहैं
दूनो बेकति जरि जइहैं हो, मोरे नाग दुलरुआ।
जे मोरा नाग के भीखि उठि दीहैं
दुनो बेकति सुखी रहिहैं हो मोरे नाग दुलरुआ।"

१. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग १, पृ० २६७।
२. वही—भाग २, पृ० ८५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

३—बहुरा

बहुरा का व्रत भाद्र कृष्ण चतुर्थी को किया जाता है। उसे 'बहुला' भी कहते हैं। इस व्रत की कथा की नायिका बहुला है। इसीलिये इस व्रत का नाम बहुला या बहुरा पड़ गया है। इस दिन कन्यायें तथा युवतियाँ दिन भर व्रत रखती हैं। सायंकाल को नदी या जलाशय में स्नान कर बहुला नामक गाय, उसके बछड़े तथा सिंह की बालू की प्रतिमा बनाकर फल-पुष्प आदि से उनकी विधिवत् पूजन करती हैं। तदनन्तर बहुला की कथा सुनती हैं। स्त्रियाँ जौं का सत्तू तथा गुड़ शाम को खाती हैं। का यह व्रत सन्तान का दाता और ऐश्वर्य को देने वाला माना जाता है।

वर्ण्य विषय—बहुरा स्त्रियों के लिये पुत्र का व्रत माना जाता है। अतः बहुरा के गीतों में माता का पुत्र के प्रति अकृत्रिम स्नेह और सत्य प्रतिज्ञा की महिमा का उल्लेख होना चाहिए। परन्तु बहुरा के जो गीत प्राप्त होते हैं उनमें यह बात नहीं पाई जाती। प्रस्तुत लेखक ने बहुरा के जिन गीतों का संकलन किया है उनमें सास और बहू का शाश्वतिक विरोध, पति पत्नी का प्रेम और सौन्दर्य के कारण किसी व्यक्ति पर मोहित होने का वर्णन ही अधिक पाया जाता है। सास की यह दुष्टता का यह वर्णन देखिये :

"कोरी नदियवे सासु दहिया जमवली,
रचि एक अमरित लावेली जोरनवा ए हरी।
अपने त बेचें सासु गाँव का गोयेड़वा,
हरि हरि हमरा के भेजे जमुना पार ए हरी॥"

रेशमी नामक किसी सुन्दरी के सौन्दर्य को देखकर किसी राजा के मुग्ध होने का यह वर्णन कितना मधुर है।१ इसी प्रकार बहुरा के अन्य गीत भी शृङ्गार रस से ओतप्रोत हैं।

१ डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग २, पृ० ५१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

४. गोधन

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को 'गोधन' नामक व्रत मनाया जाता है। "गोधन" 'गोवर्धन' का अपभ्रंश ज्ञात होता है। प्राचीन काल में गोवर्धन की पूजा उल्लेख पाया जाता है। यही प्राचीन गोवर्धन पूजा 'गोधन' की के रूप में आज भी विद्यमान है। गोबर की बनी हुई मनुष्य की प्रतिमा में इन्द्र की प्रतिकृति है। भगवान् कृष्ण ने इन्द्र के गर्व को चूर्ण किया अतः यह 'गोधन कूटने' की प्रथा इन्द्र के मद को चूर्ण करने का प्रतीक है। इस दिन स्त्रियाँ अपने प्रिय व्यक्तियों को मृत्यु का अभिशाप क्यों देती यह रहस्य सुलझाना एक विषम पहेली है।

इस व्रत का प्रधान उद्देश्य भाई और बहन में प्रेम भावना की है। इसी का वर्णन हम इन गीतों में भी पाते हैं। साथ ही गोधन के व्रत जो विधि बरती जाती है—जैसे प्रियजनों को अभिशाप देना, उसका भी पाया जाता है। भाई के लिए बहिन की यह शुभकामना कितनी सुन्दर है।[1]

"कवन भइया चलले अहेरिया,
कवन बहिन देली असीस हो ना।
जियसु रे मोर ए भइया,
मोरा भऊजी के बाढ़सु सिर सेन्दुर हो ना।

५—पिड़िया

व्युत्पत्ति—पिड़िया का व्रत कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होकर अग शुक्ल प्रतिपदा तक पूरे एक मास रहता है। कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के जो गोधन की गोबर की मूर्ति बनाकर पूजा होती है, उसी गोबर में से सा अंश लेकर कुँवारी लड़कियाँ पिड़िया लगाती हैं। घर की किसी दीवार गोबर की छोटी-छोटी मनुष्य की सैकड़ों आकृतियाँ बनायी जाती हैं। साथ ही उस पर आटे के द्वारा चित्र कर्म भी किया जाता है। इस पूरी प्रक्रि को 'पिड़िया लगाना' कहते हैं। पिड़िया शब्द 'पिंड' शब्द का अपभ्रंश जिसमें लघु अर्थ मे 'इया' प्रत्यय जोड़ा गया है। पिंड का अर्थ बड़ी गोली

१. डा० उपाध्याय भो० लो गी० भाग २ पृ० ८४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

है जैसे मृत्पिड । अतः 'पिड़िया' का अर्थ हुआ गोवर का छोटा गोला। दोवालों पर गोवर की जो आकृति वनाई जाती है वह गोलो-गोली होनी है इसी कारण इस व्रत का नाम पिड़िया है।[1]

वर्ण्य विषय—इन गीतों में भाई वहन का अटूट प्रेम वर्णित है। एक गीत में बहिन अपने भाई से कहती है कि मैं लड्डू ओर चिउड़ा से पिड़िया को पूजूंगी। ए भाई ! यह पिड़िया का व्रत मै तुम्हारे ही उपलक्ष में कर रही हूं।१

"लडुआ चिउरवा से हम पूजवि पिड़िया हो
तोहरी बधइया भइया पिड़िया वरतिया हो।"

पिड़िया के गीतों में कहीं कहीं-कहीं स्त्री पुरुषों के प्रेम का भी वर्णन पाया जाता है परन्तु इन गीतों में प्रधान पुट भाई और वहन के स्वाभाविक प्रेम का ही है। इन गीतों में कहीं-कहीं पिड़िया के व्रत में किये जाने वाले अनेक विधि-विधानों का भी उल्लेख पाया जाता है।२

६—छठो माता के गीत

नाम करण—छठी का व्रत कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि को किया जाता है। यह व्रत केवल स्त्रियों का है परन्तु मिथिला में इसे स्त्री पुरुष दोनों करते हैं। इसे 'षष्ठी व्रत' भी कहते हैं। छठीं शब्द इसी का अपभ्रंश रूप है। इसे 'डाला छठ' के नाम से भी पुकारते हैं। क्योंकि इस दिन सारी पूजा की सामग्री को एक बड़े डाला (वाँस की वनी हुई बड़ी टोकरी) में रखकर नदी या तालाव के किनारे ले जाते हैं और इस डाला को देवता को चढ़ाते हैं। इस व्रत में सूर्य की पूजा प्रधान होने के कारण इसे 'सूर्य षष्ठी व्रत' भी कहते हैं। मिथिला में यह व्रत 'छठ' के नाम से प्रसिद्ध है।

इस व्रत में स्त्रियाँ पंचमी और षष्ठी-इन दोनों दिनों को उपवास रहती हैं तथा सप्तमी को सवेरे वहुत पहिले से उठकर सूर्य नारायण को अर्घ्य देने की तैयारी में संलग्न रहती हैं। कितनी वन्ध्या स्त्रियाँ सूर्योदय से घंटों पहले कमर

१. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग २, पृ० ६५। २. भो० लो० गी० भाग २, पृ० ६१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भर जल में खड़े-खड़े सूर्य के उदय की प्रतीक्षा करती हैं। वे सूर्य के शीघ्र न होने के कारण व्याकुल हो जाती हैं और उनसे बड़ी आतुरता से प्रार्थना करती हैं कि ए भगवन् ! शीघ्र उदय लीजिये। छठीं माता के गीतों में ऐसे गीत हैं जिनमें इस प्रकार की प्रार्थना की गई है। १

"दुधवा, घिउवा लेके गवालिनि बिटिया ठाढ़।
फालावा, फुलवा लेले मालिनि बिटिया ठाढ़।
धूपवा, जलवा रे लेके बाभानवा रे ठाढ़।
आरे हाली हाली उग ए अदितमल, अरघ दिआव।"

कहीं-कहीं वह स्त्री यह प्रार्थना करती है कि ए भगवन् ! खड़े-खड़े मेरे दुखने लगे और कमर में पीड़ा होने लगी है। अतः कृपाकर अब तो उदय लीजिये :—

"खड़े-खड़े गोड़वा दुखाइलि ए अदितमल, डांडवा पिराइल।
हाली देनी ऊग ए अदितमल अरघ दिआउ।"

छठी माता का व्रत विशेष कर के सन्तान प्राप्ति की कामना से किया जाता है। कोई वन्ध्या स्त्री षष्ठी माता से पुत्र की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करती हुई कहती है कि ए माता ! मेरा जीवन निरर्थक सा प्रतीत होता है। मेरी सास 'दुतकारती' हैं, ननद गालियों की बौछार करती है और मेरा 'व्याहता पति' डंडे से मेरी खबर लेता है। मेरा दोष केवल यही है कि मेरी गोद पुत्र के बिना सूनी है। पुत्रहीन स्त्री की दशा का यह वर्णन कितना मार्मिक है ! २

"सासू मारे हुदुका ए दीनानाथ ननदिया पारे गारी।
ए साथे लागल पुरुखवा ए दीनानाथ,
हमरा के डंडा से मारी।
आरे सबके डलियवा ए दीनानाथ लेहलीं उठाई।
आरे बाँझिन के डलियवा ए दीनानाथ, ठहरें तवांई।"

---

१. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग १, पृ० २५२।
२. वही—पृ० २५७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

पुत्र और पति को कुशल पूर्वक रखने के लिए ही छठी माता से इन गीतों में प्रार्थना की गई है। कोई स्त्री कहती है कि ए माता ! मैं आपके मन्दिर की गली में झाड़ू लगाऊँगी। मेरे पुत्र एवं पति को सकुशल रखिये :

"खोरिया रउरी बहारबि, पुतवा भीख दीं,
खोरिया रउरि बहारबि, पुरुखवा भीख दीं।"

(घ) श्रम गीत

श्रम गीत अथवा काम करते समय गाये जाने वाले गीतों का उदाहरण सहित वर्णन यहाँ उपस्थित किया जाता है। ये गीत जंतसार, रोपनी एवं सोहनी हैं जिनकी चर्चा इसी क्रम से की जायेगी।

१—जँतसार

नामकरण—चक्की पीसते समय जो गीत गाये जाते हैं उन्हें 'जाँत के गीत' अथवा 'जंतसार' कहते हैं। जँतसार' शब्द 'यन्त्रशाला' का अपभ्रंश रूप है जिसका अर्थ है वह शाला या घर जहां आटा का यन्त्र रखा गया हो। यही 'यन्त्रशाला' शब्द विगड़ते-बिगड़ते जँतसार के रूप में विद्यमान है।

चक्की, चूल्हा और चरखा देहातों में पहले घर-घर होते थे। चक्की में आटा पीस लिया, चूल्हे पर रोटियाँ पका लीं। यदि इन कामों से अवकाश मिला तो चरखे पर कपड़ों के लिए सूत तैयार कर लिया। बस इन तीन चकारों की बदौलत देहात के लोग बहुत ही सुखी और स्वतंत्र थे। स्त्रियाँ चक्की पीसती थीं। इससे उनका स्वास्थ्य ठीक रहता था और उनके बच्चे हृष्टपुष्ट होते थे। चक्की पीसते समय वे जो गीत गाती थीं, उससे जीवन की धारा शुद्ध होती रहती थी। समय का सदुपयोग होता था, परिश्रम करने की आदत बनी रहती थी और पैसे की बचत भी होती थी। परन्तु अब देहातों में आटा पीसने का काम, चक्की के स्थान पर, मशीनें कर रही हैं। ये मशीनें हमारे आटे को पीसने के साथ ही साथ 'जाँत के गीतों' को भी पीसती चली जा रही हैं। ये गीत हमारे घरों में संच्चरित्रता के रक्षक, स्त्रियों के सदाचार के पोषक और शुद्धता के स्रोत हैं।

Ra Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gian

वर्ण्य विषय—जैसे 'झूमर' श्रृंगार रस का कलश है वैसे ही ... करुण रस की सरिता सिमटी पड़ी दिखाई पड़ती है। करुण रस ... मार्मिक अभिव्यंजना इन जाँत के गीतों में हुई है। इन गीतों में ... दुःखिनी विधवा का करुण क्रन्दन सुनने को मिलता है तो कहीं ... की मनोवेदना लक्षित होती है। कहीं विरहिणी की व्याकुलता का वर्णन ... कहीं सास के द्वारा वधू की नारकीय यन्त्रणा का चित्रण। कहने का ... यह है कि करुण रस के जितने भी मार्मिक प्रसंग हो सकते हैं प्रायः ... की अवतारणा इन गीतों में हुई है।

पति के परदेस जाने पर किसी विरह विधुरा नायिका की निम्न ... उक्ति कितनी मर्मवेधिनी है। उसकी सास कहती है कि तुम्हारा पति तो ... चला गया है अब तुम किसकी कमाई खाओगी ? सास वहू को घर से ... देती है। दुःखिया स्त्री झाड़ू और टोकरी लेकर वन में चली जाती है तथा ... झोंकने के लिए पत्ती बुहारती है। परदेश से लौटा हुआ पति मार्ग में ... दुःखिया स्त्री को न पहचान कर पूछता है कि तुम किसकी स्त्री हो। वह ... देती है कि मैं वह अभागिन स्त्री हूँ जिसका पति परदेश चला गया है : १

"ए राम हरि मोरे गइले बिदेसवा,
सकल दुःखवा देइ गइले हो राम।
ए राम सासु, ननदिया बिरही बोलेलि,
केकर कमइया खइबू हो राम॥
ए राम काँखे जांति लिहली दउरिया,
त हाथे के बढ़निया लिहली हो राम॥
ए राम धई लिहली गोड़िनिया के भेसिया,
त पतई बहारे लगली हो राम॥
ए राम बारहो बरिस पर अइले,
त बगिया में ठाढ़ भइले हो राम॥

१. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग २, पृ० ६६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ए राम कवना अभागवा के तिरिया,
त ! बगिया बहारेलू हो राम ॥
ए राम हरि मोरे गइले विदेसवा,
त बगिया बहारेली हो राम ।

इस उपर्युक्त गीत में करुण रस का सागर हिलोरें मार रहा है। निर्धनता के कारण वियोगिनी स्त्री के द्वारा भाड़ झोंकने का वर्णन कितना मार्मिक है। इस गीत के प्रत्येक अक्षर से करुण रस चुआ पड़ता है।

किसी विधवा की मनोवेदना का यह नीचे लिखा वर्णन कितना मार्मिक है। वह अपने शरीर को अलंकृत देखकर कहती है कि आज मेरी मांग में सिन्दूर के बिना यह सारा श्रृंगार व्यर्थ है। 'तबहु ना देहिया सोहावनि एकली सेनुरवा विनु ए राम' इस एक पंक्ति में कितनी वेदना और कितना क्षोभ भरा पड़ा है। ससुराल में पचीसों आदमी हैं परन्तु पति के विना ससुराल उसे तनिक भी सुहावनी नहीं मालूम पड़ती। १

"ए राम बगिया में पाँच पेड़ आमवा, पचीस गो महुअवा बाटे हो राम।
ए राम तवहु ना बगिया गमक देले, एकली बेइलिया बिनु हो राम॥
ए राम सेर भरि सोनवा पहिरल्लों, पसेरी भरि चनिया हो राम।
ए राम तवहु ना देहिया सोहावनि, एकली सेनुरवा बिनु हो राम॥
ए राम सासु घरे पाँच गो देवरवा, पचीस गो भसुरवा बाटे हो रामा।
ए राम तवहू ना ससुरा सोहावन, एकली कन्हैया बिनु हो राम॥

इसी प्रकार जाँत के गीतों में करुण रस की सरिता अविच्छिन्न रूप से प्रवाहित दिखाई पड़ती है। ग्रामीण कवियों ने इन्हीं जतसारों को लोक हृदय की वेदना को व्यक्त करने का माध्यम बनाया है।

२—रोपनी के गीत

बिहार के शाहाबाद जिले में जहाँ धान की पैदावार अधिक होती है रोपनी के गीतों का बहुत प्रचलन है। पहिले धान का बीज एक खेत में घना बो दिया जाता है। जब वह कुछ बड़ा हो जाता है तब शुभ मुहूर्त से एक

१. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग २, पृ० ११५–११६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दिन उसे उखाड़ कर दूसरे खेतों में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर गाड़ते अथवा हैं। इस समय जो गीत गाये जाते हैं, वे 'रोपनी के गीत' कहे जाते ये गीत प्रायः मुसहरों की स्त्रियाँ गाती हैं क्योंकि रोपनी का काम ही किया करती हैं। इन गीतों का संग्रह बड़ी कठिनाई से ही किया सकता है।१

खेत में पानी लगा है। कभी-कभी ऊपर से जल वृष्टि भी हो रही है। भी जल और ऊपर भी जल। ऐसे समय में मुसहरिनें धान के हरे पौधे लेकर खेत में रोपती जाती हैं और अपने सुन्दर गीतों से श्रोताओं को रस सिक्त बनाती जाती हैं। सोहनी और रोपनी का काम घर के खेतों में करना पड़ता है। संभवतः इसीलिये इन गीतों में पुरुषों के द्वारा को छेड़ने का प्रसंग अनेक बार आया है। पति-वियोग-विधुरा कोई स्त्री खड़ी है। एक पथिक आकर उससे अनुचित प्रस्ताव करता है। तब वह उत्तर देती है कि यदि मेरा पति आ गया तो इस उद्दंडता का उचित पुरस्कार तुम्हें दिलाऊँगी।२

"कबही त लवटीहें मोर बनिजरवा
पनही से तोही के पिटइबों हो राम।"

गृहस्थी का कष्ट भी इन गीतों में प्रतिविम्बित दिखाई पड़ता है। कोई स्त्री के कष्टों को अपने पति से निवेदित करती हुई कहती है कि जब से मैं यहाँ तब से काम करते-करते मेरे शरीर का चमड़ा सूख गया और सुख सपना गया। आज तक मैंने रुपये का मुँह नहीं देखा। अब मैं मायके जाकर पाथ कर जीवन विताऊँगी।३

"जहिया से अइली पिया तोहरी महलिया में
राति दिन कइलीं टहलिया रे पियवा।
घर के करत काम सूखल देही के चाम,
सुखवा सपनवा होई गइले रे पियवा।

---

१. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग २, पृ० ८, (वक्तव्य)।
२. वही. भाग २, पृ० २६४। ३. वही—भाग २, पृ० ३०१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

हरवा जोतत तोर गोड़वा पिरइले,
रुपया के मुँह नाहीं देखनी रे पियवा।
चिपरी के पाथि पाथि दिन हम काटबि,
अब नाहि आइबि तोर दुअरिया रे पियवा ॥"

उपर्युक्त उदाहरण में पत्नी के हृदय की आह गीत बनकर निकली है। देहात के एक वर्ग की करुण आर्थिक दशा का भी पता चलता है।

स्त्रियों का अटूट एवं शुद्ध प्रेम तो बहुत देखने को मिलता है परन्तु पुरुषों शुद्ध स्त्री प्रेम दुर्लभ पदार्थ है। परन्तु रोपनी के एक गीत में यह भाव व्यक्त होता है। कोई पति परदेस गया है। इतने में उसकी मां से रुष्ट होकर उसकी स्त्री मायके चली जाती है। परदेश से लौटने पर जब वह घर में स्त्री को नहीं पाता तो उसको खोजने के लिए मनीहार का रूप धारणकर पड़ता है और अन्त में अपनी पत्नी को पा लेता है।१

'देहु ना आमा हो ढेबुआ रे पइया,
चुरिया बहाने धनि देखबि हो राम।
खोरियन खोरियन फिरेलां चुरिहरवा,
चुरिया रे पहिरबे गहकिनिया हो राम ॥"

३--सोहनी के गीत

आषाढ़ में बोये हुये खेत जब अच्छी तरह जम जाते हैं, तब सावन में उनमें उगी हुई घास और दूसरे व्यर्थ पौधों को खुरपी या हँसिया से काट कर फेंक दिया जाता है। इस कार्य को 'सोहनी' कहते हैं। अतः इस समय जो गीत गाये जाते हैं वे सोहनी के नाम से प्रसिद्ध है। इन गीतों को 'निराई' या 'निरवाही' के गीत कहते हैं। यह काम प्रायः चमार की स्त्रियाँ किया करती हैं। जिस किसान को अपने खेत में 'सोहनी' करानी होती है वह दस पन्द्रह

१ डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग २, पृ० २६५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चमारिनों को बुला लाता है। चमारिनें अपनी खुरपी से खेत सोहती है। चमारिनें अपनी खुरपी से खेत सोहती जाती हैं और साथ ही थकान दूर करने के लिए अपने कलकंठ से गीत भी गाती जाती हैं। सोहनी के इन गीतों को लिखने लिए लेखक को चमारिनों का 'सत्संग' करना पड़ा है और खेतों की मेड़ पर बैठकर इस मौलिक साहित्य को लिपिबद्ध करने का अवसर मिला है।

सोहनी के गीतों की यह विशेषता है कि वे किसी संक्षिप्त कथा को लेकर लिखे गये हैं। इसीलिए ये आकार में अन्य गीतों से बड़े हैं। इनमें मुग़लों के अत्याचार का वर्णन है तो कहीं उनसे लड़कर किसी के उद्धार करने वाले वीर पुरुष की यशोगाथा का उल्लेख है। कहीं सास के द्वारा सताये जाने का विवरण है तो कहीं पति का पत्नी के आचरण पर विश्वास न कर उसकी अग्नि परीक्षा करने का उल्लेख है। किसी-किसी गीत में सौतिया डाह की भी झांकी हमें देखने को मिलती है। कोई पति अपनी नयी व्याही स्त्री के साथ सो रहा है। उसकी दूसरी स्त्री सौतिया डाह के कारण कहती है कि तुम अभी दरवाजा खोलो। नही तो 'टांगे' से इस दरवाजा को काट दूंगी। मैं तुम्हारे सामने के बालों को पकड़ कर खीचूँगी और इस सौत की छाती पर पलथी मार कर आने-जाने की सड़क बनाऊँगी।१

"ओही टांगावा पर सान चढ़इवों,
ओहि से जंजीरिया कटइबो ए बालम।
एक हाथे धरबों में सामी के जुलुफिया,
एक हाथे सवती के झोटवा ए बालम।
सवती के छतिया पर सड़क कुटइवों,
लाख आवेला लाख जाला ए बालम।"

---

१. डा० उपाध्याय-भो० लो० गी० भाग २, पृ० २६८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

वन्दा, कुसुमा और भगवती देवी के सुप्रसिद्ध गाथायें इन्हीं गीतों के अंतर्गत हैं। इन्हीं गीतों में लचिया और जयसिंह के गीत भी विद्यमान हैं। राजा जयसिंह ने लचिया नामक स्त्री से अनुचित प्रस्ताव किया। इस रोष में क्रोधित होकर लचिया ने कटारी निकाल लिया और जयसिंह की हत्या कर उसने अपने सतीत्व की रक्षा की।[१]

"छोड़ु, छोड़ु जयसिंह हमरो अंचरवा हो ना।
जयसिंह तोहरा से सुन्दर मोर रजवा हो ना॥
अइसन बोली जनि बोलु रानी लचिया हो ना।
लाची चली चलु हमरी सेजरिया हो ना॥
अतना बचन लाची सुनही ना पवली हो ना।
लाची काढ़ि कटरिया जिउवा लिहली हो ना॥"

इस प्रकार सोहनी के गीतों में दिव्य सतीत्व का उल्लेख पाया जाता है। विरहिणी का वर्णन भी इनमें कहीं-कहीं उपलब्ध होता है। रूठ कर चले गये हुए भाई को खोजने का वर्णन एक गीत में बड़ा सुन्दर हुआ है। सोहनी के गीतों की लय बड़ी मनमोहक होती है जिसे सुनकर श्रोता का मन बरबस आकर्षित हो जाता है।

(च) विविध गीत

कुछ ऐसे भी गीत हैं जो उपर्युक्त वर्गीकरण के अन्तर्गत नहीं आते। इन गीतों में झूमर, अलचारी, पूरबी, निर्गुन, पाराती और भजन मुख्य हैं। रोते हुए बालकों को प्रसन्न करने के लिए एवं उन्हें पालने पर सुलाते समय स्त्रियां जो गाती हैं जिन्हें पालने के गीत कहते हैं। छोटे-छोटे बालक विभिन्न खेलों जैसे गुल्ली डंडा, कबड्डी को खेलते समय पद्यात्मक वाक्यों को गाते रहते हैं। इन सभी गीतों का संक्षिप्त वर्णन यहाँ किया जाता है।

१. त्रिपाठी—ग्राम गीत पृ० ३६१। डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग २, पृ० २८३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

१—झूमर

झूमर उन गीतों को कहते हैं जो विभिन्न अवसरों पर गाये जाते कभी तो ये यज्ञोपवीत के अवसर पर सुनाई पड़ते हैं, तो कभी विवाह के पर। इसीलिये इसको जनेऊ और विवाह के गीतों से पृथक् कर दिया गया किसी भी विशेष संस्कार के अवसर पर, उस संस्कार सम्बन्धी गीतों के के पश्चात्, झूमर गाया जा सकता है और गाया भी जाता है। इसलिये झूमर गाने के लिये कोई विशेष निर्दिष्ट समय या अवसर नहीं है, बल्कि ये प्रत्येक अवसर पर गेय हैं।

स्त्रियाँ एक साथ मिलकर झूम-झूम कर इस गीत को गाती हैं। इसी इसका नाम 'झूमर' पड़ गया है। जिन्होंने इस गीत को गाये जाते हुए देखा वे सहज ही समझ सकते हैं कि झूमने से झूमर का कितना घनिष्ठ सम्बन्ध झूमर मस्ती का गाना है। अतः इसे गाते समय—विशेष कर झुंड में—स्त्रियों झूमना स्वाभाविक ही है।

झूमर के गीत संभोग श्रृङ्गार से लबालब भरे रहते हैं। इनके प्रत्येक में रस कूट कूट कर भरा है। अतः प्रत्येक झूमर को रस-कलश कहें तो अत्युक्ति न होगी। इनका भाव जैसा सुन्दर एवं सरस है भाषा भी वैसी चलती हुई है। इसके साथ ही गाने की गति सोने में सुगन्ध की उक्ति चरि करती है। झूमर द्रुत गति से गाया जाता है। इसमें शब्दों का उच्चारण शीघ्र किया जाता है, जिससे गाने की विधि में एकरसता सदा बनी रहती है। पद की पुनरावृत्ति प्रायः प्रत्येक पंक्ति के बाद की जाती है। उदाहरण के नीचे का गीत लीजिए :

"ना जानो यार झुलनी मोर काहाँ गिरा।
पनियाँ भरन जाऊँ राजा ना जानो।
यहाँ गिरा ना जानो, वहाँ गिरा ना जानो।
ना जानो यार झुलनी मोर कहाँ गिरा।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

इसके गाने की दूसरी विशेषता यह है कि प्रथम दो शब्दों तथा अन्तिम दो का उच्चारण शीघ्रतर किया जाता है। जैसे—

"बेर बेर बरजों यार निबुआ जनु लगाव रे।

इसमें रेखांकित शब्दों का उच्चारण अधिक शीघ्रता से किया जाता है। तीसरी विशेषता यह है कि यह गीत आकार में छोटा होता है, अर्थात् पंक्तियों से अधिक बड़ा नहीं होता। इसके छन्दविधान और भाव व्यंजना गहरा संबंध है।

'झूमर' के गीतों में कहीं तो प्रेमी पति के द्वारा परदेस से लाई गई नाक झुलनी का, तालाब में गिरने का वर्णन पाया जाता है, तो कहीं प्रेमी और के अटूट प्रेम का चित्रण उपलब्ध होता है। कहीं 'पति-पत्नी के प्रेम' का वर्णन है तो कहीं रूप गर्विता नायिका की गर्वोक्ति। प्रेम करने के कारण बदनाम किसी नायिका की उक्ति कितनी सुन्दर है उसकी प्रेम की निष्ठा कितनी दृढ़।

"तोरे कारन बदनाम रे संवलिया
जैसे कचहरी में कलम चलतु है,
वैसे चलबि तोरा साथ रे संवलिया।
जैसे कुंवन में घड़ा डुबतु है।
वैसे डुबवि तोरे साथ रे संवलिया।"

किसी नायिका के नाक की झुलनी कहीं गिर गई है उसके लिये उसके की परेशानी में बड़ा आनन्द छिपा पड़ा है। नीचे के गीत में यह है:

जानो यार झुलनी मोर कहाँ गिरा। रोटिया पोवन जाऊँ, राजा ना जानो। गिरा ना जानो, वहाँ गिरा ना जानो। ना जानो यार बेलने में लिपट गया। या सोवन जाऊँ, राजा ना जानो। यहाँ गिरा ना जानो, वहाँ गिरा ना जानो।

ना जानो यार सेजिया में लिपट गया।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

२--अलचारी

अलचारी शब्द लाचारी का अपभ्रंश रूप है। लाचारी का अर्थ विवशता जब किसी स्त्री का पति उसका कहना नहीं मानता अथवा वह परदेश जाता है, तो लाचारी अवस्था में वह जो गीत गाती है उन्हें अलचारी कहते वास्तव में पहिले भोजपुरी में 'अलचारी' गीतों का प्रयोग केवल विवशता के भावों का प्रदर्शन के लिये ही होता था। परन्तु अब समय के परिवर्तन के इसका प्रयोग अन्य भावों को व्यक्त करने के लिये भी होने लगा है। कोई अपने हठीले पति को बार-बार मना करती है कि तुम व्यापार करने के उत्तर दिशा में मत जावो क्योंकि वहाँ की बंगालिन स्त्रियाँ तुम्हें अपने जा फँसा लेंगी। १

"बारहि बार तोंहि बरजो मोरे सामी,
से उत्तरी बनिजिया मति जइह भोरे सामी।
उत्तरी बनिजिया के उतरी बंगालिन,
से रहिहें करेजवा लगाइ मोर सामी।"

३—पूरबी

उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों, गाजीपुर, बलिया, गोरखपुर में और बिहार पश्चिमी जिलों आरा, छपरा में इन गीतों का प्रचुर प्रचार है। भोजपुरी के पूर्वी जिलों में गाये जाने के कारण ही इन गीतों का नाम 'पूरबी' पड़ा है। आजकल पूरबी गीतों का इतना अधिक प्रचार है कि उपर्युक्त जि कहीं भी चले जाइये इसकी मधुर ध्वनि आपके कानो में अवश्य सुनाई पड़े पुत्र जन्म में, तिलक में, बारात में, अथवा अन्य किसी मंगलमय उत्स इसका गाना अनिवार्य सा हो गया है। इधर कुछ ही वर्षों में 'पूर्वी गीतों' जितना प्रचार हुआ है उतना 'विदेसिया' को छोड़कर अन्य किसी गीत का

१. दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह : भो लो० गी० पृ० ३४४-३४५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

'पूरबी' या 'पूर्वी' गीतों के रचयिता पं० महेन्द्र मिश्र हैं जो विहार राज्य के छपरा जिले के ग्राम मिश्रवलिया, पोस्ट जलालपुर, के निवासी थे। अभी हाल ही में आपका देहावसान हुआ है। आप एक प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। आपने हजारों 'पूर्वी' गीतों की रचना की है। आपकी कविताओं, तथा गीतों के अनेक संग्रह प्रकाशित हुए हैं जिनमें 'महेन्द्र मंगल' प्रसिद्ध है १। यद्यपि आपने अपने जीवन में धन वहुत पैदा किया परन्तु आपकी कीर्ति इन 'पूर्वी' गीतों के कारण ही अमर रहेगी। आपने अपने रचित गीतों पर अपने नाम की छाप लगा दी है। इसलिए प्रत्येक पूर्वी गीत में 'कहेले महेन्दर मिसिर' यह अवश्य पाया जाता है :

"कहत 'महेन्दर मिसिर' सुनु प्यारी सखिया
से तेरह वरिस वीति गइले हो रामा।"

वर्ण्य विषय—अन्य लोक गीतों की भांति 'पूर्वी' गीतों में भी विप्रलम्भ शृङ्गार का ही वर्णन अधिक पाया जाता है। परदेस में गये हुए पति के पास उसकी विरह विधुरा नायिका के द्वारा, संदेश भेजने का नीचे लिखा वर्णन कितना हृदय द्रावक है। २

"पिया मोरें गइले रामा पुरबी वनिजिया,
कि देके गइले ना, एक सुगना खिलौना।
कि देके गइलं ना।
उड़ल उड़ल सुगा, गइले कलकत्तवा
कि जाइके वइठे ना, ओहि सामी जी के पगिया
कि जाइके वइठे ना।
पगरी उतारि सामी जांघ वइठवले,
कि कहू सुगा ना, मोरें घर के कुसलतिया
कि कहू सुगा ना।

१. दुर्गा शंकर सिंह : भो० लो० गी० क० र० पृ० ४१५।
२. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग २, पृ० ३८८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

माई तोर कूटनी, बहिनि तोर पिसनी,
कि जइया कइली ना, तोर दउरी दोकनिया
कि जइया कइली ना।"

पति के वियोग में धनाभाव के कारण स्त्री की कैसी दुर्दशा हो गई उसका उपर्युक्त वर्णन बड़ा ही मर्मभेदी है। परदेसी पति के आने की प्रतीक्षा करने वाली तथा अटारी पर चढ़ कर उसके मार्ग को देखने वाली स्त्री का चित्रण कितना सुन्दर हुआ है। ग्रामीण कवि ने क्या ही सुन्दर चित्र खींचा है। १

कोठवा ऊपर चढ़ि, झाकेलि बारि धनिया
कि नाही अइले हो, अलगरजी मोर बलमुआ
कि नाही अइल ना।"

विरह की मार्मिक व्यंजना के साथ ही संभोग श्रृंगार का भी उल्लेख इन गीतों में पाया जाता है। परदेस से लौटे हुए पति के द्वारा लाई गई टिकुली को लगाकर श्रृंगार करने वाली रूप–गर्विता नायिका की यह उक्ति कितनी सरस है। २

"सइयाँ मोरे गइले रामा, पुरबी बनिजिया,
से लेइ हो अइले ना, रस बेंदुली टिकुलिया
से लेइ हो अइले ना।
टिकुली मैं साटि रामा, बइठली अटरिया
से चमके लगले ना, मोर बेंदुली टिकुलिया।
से चमके लगले ना।"

पूर्वी के इन गीतों में कहीं पर मायके जाने की उत्कट अभिलाषा दीख पड़ती है तो कहीं राधा-कृष्ण की रासलीला का वर्णन पाया जाता है। ३

'पूर्वी' गीतों के भाव और भाषा दोनों में माधुर्य है। इनके गाने में एक अपूर्व सरसता है। इसलिए ये गीत ग्रामीण जनता के हृदय में अनायास ही स्थान कर लेते हैं। भोजपुरी प्रदेश में इन गीतों का बहुत अधिक प्रचार है।

१. डा० उपाध्याय भो० लो० गी० भाग २, पृ० ३८६।
२. वही पृ० ३९४-९५। ३. वही पृ० ३९७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

४--निर्गुन

भक्ति भावना से ओतप्रोत गीतों को 'निर्गुन' कहते हैं। यद्यपि भजन और निर्गुन का वर्ण्य विषय एक ही है परन्तु इन दोनों की गाने की लय में बहुत अन्तर है। निर्गुन की एक विशेष 'लय' होती है जिसमें यह गीत गाया जाता है। इस लय में बड़ी हृदय-द्रावकता होती है। यह सुनने में बड़ी मधुर होती है और श्रोताओं को आनन्द सागर में डुबो देती है। निर्गुन की दूसरी विशेषता यह है कि इसकी दूसरी पंक्ति प्रायः 'आहो रामा' से प्रारम्भ होती है और इसकी समाप्ति 'हो राम' में पायी जाती है।

"पाँच पचीस कोस बसेंले महाजन हो,
आहो रामा, कवना अवगुनवे हरि मोरे रूसेले हो राम।"

उपर्युक्त गीत की दूसरी पंक्ति 'हो रामा' से प्रारम्भ हुई है और अन्त में 'हो राम' आया है। यही क्रम पूरे गीत में चलता है। कहीं कहीं 'आहो रामा' के स्थान पर 'कि आहो मोरे रामा' भी पाया जाता है।

नामकरण—कबीरदास की वाणी जिसमें निराकार ईश्वर की उपासना का उपदेश दिया गया हैं 'निगु'न' के नाम से प्रसिद्ध है। कबीर ने ईश्वर की निर्गुन सत्ता का प्रतिपादन करते हुए अनेक पद कहे हैं। ये पद भी निर्गुनी तत्व के वर्णन के कारण 'निर्गुन' कहे जाते हैं। कबीर के 'बीजक' में ऐसे पद प्रचुर परिमाण में पाये जाते हैं।

कबीर के 'निरगुनियों' और लोक गीतों के इन पदों में वर्ण्य विषय प्रायः एक ही था। अतः इन लोक गीतों को भी 'निगु'न' के नाम से पुकारा जाने लगा। कबीरदास का नाम निर्गुन गीतों से चिरकाल से संबद्ध है। अतः इन लोकगीतों के रचयिता भी कबीर ही मान लिये गये हैं। परन्तु भोजपुरी 'निर्गुन' के कर्ता कबीर, 'बीजक' के कबीर से नितान्त भिन्न हैं। इन गीतों को महत्त्व

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

प्रदान करने की दृष्टि से ही इनमें महात्मा कबीर का नाम जान-बूझ कर दे दिया गया है, नहीं तो ये वास्तव में किसी ग्रामीण कवि की ही रचनाएं हैं। नीचे के इस 'निर्गुन' में कबीरदास का नाम आया है। १

"गावेले कबीरदास इहे निरगुनवा हो राम।
आहो रामा, जगवा में केहू नाहिं आपन हो राम ॥"

इसी प्रकार एक दूसरे निर्गुन में भी कबीरदास के नाम की छाप पाई जाती है। २

"गावेले कबीरदास इहे निरगुनवा हो।
कि आहो मोरे रामा, गाइ गाइ सखी समुझावेले हो राम।"

'निर्गुन' लिखने की परम्परा कबीरदास से प्रारम्भ होती है। कबीर सम्प्रदाय में प्रायः जितने भी सन्त कवि हुए हैं उन्होंने इस छन्द को अपनी कविता का माध्यम बनाया है।

<u>वर्ण्य विषय</u>—जैसा कि पहिले लिखा जा चुका है इन 'निर्गुन' गीतों में प्रायः भक्ति की भावना का उल्लेख पाया जाता है। अपने जीवन में दान पुण्य न करने वाले किसी भक्त का निम्नलिखित पश्चाताप कितना मार्मिक है :

"नाहि कइली दान–पुनवा, अवरु धरमवा हो।
कि आहो मोरे रामा, पिया अइले गवना करावे हो राम।
माई देली गाहाना, पिता जी देले गइया हो,
कि आहो मोरे रामा, चलहीं के बेरिया सब छूटल हो राम।"

आत्मा को प्रेमिका और ईश्वर को प्रियतम मानना यह निर्गुन सन्तों की प्राचीन परम्परा रही है। इस परम्परा का अनुकरण ऊपर के गीत में हुआ है। इस संसार से नाता तोड़कर, आत्मा के परमात्मा से मिलने को गवना का रूप दिया गया है।

---

१. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग० २ पृ० ३६८।
२. वही. पृ० ३७७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

एक दूसरे निर्गुन' में परमात्मा के बिना निराश्रित आत्मा की तड़पन का बड़ी सुन्दर रीति से चित्रित किया गया है।

"बाला जोगी बाला जोगी कुंइयाँ खोनवले,
कि आहो मोरे रामा,
डोरिया हो बरत दिनवा बीतल हो राम।
टूटि गइले डोरिया, भसि गइले कुंववा,
कि आहो मोरे रामा,
केकरा दुअरिया दिनवा काटबि ए रामा।
हाथ छूंछ, फाड़ छूछ, केहू नाहीं बात पूछे
कि आहो मोरे रामा,
ककरा हो दुअरिया दिनवा काटबि ए राम।'

इस गीत में निराश्रित भक्त की आत्मा पुकार रही है कि मैंने जीवन भर कुछ भी कार्य नहीं किया। केवल कर्म रूपी रस्सी को जीवन भर बँटता रहा। अब मैं ईश्वर की दया बिना कहाँ जाऊँ ?

५---पाराती और भजन

स्त्रियाँ केवल शृंगार और करुण रस के ही गीत नहीं गाती, बल्कि समय-समय पर भक्ति से ओतप्रोत पाराती और भजन भी गाया करती हैं। जहाँ उनका हृदय शृंगार और करुण रस से लबालब भरा रहता है, वहाँ उसमें भक्ति की भी कुछ कम मात्रा नहीं होती। घर के झंझटों से जब उन्हें अवकाश मिलता है, बाल बच्चों के किच-किच से फुरसत मिलती है तब वे भगवान् की स्तुति में दो-चार भजन बड़े प्रेम से गाती हैं। ये भजन या तो रात को सोने के पहिले गाये जाते हैं अथवा प्रातःकाल में। प्रातः गाये जाने के कारण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ही इन्हें 'पाराती' कहते हैं। भजन वे हैं जो सभी समय गाये जाते हैं। पा
और भजन के वर्ण्य विषय में कुछ भी अन्तर नहीं है। केवल दिन के
विशेष भाग—प्रात:काल—में गाये जाने से ही इन्हें यह संज्ञा प्राप्त है।
स्त्रियां किसी तीर्थ यात्रा को अथवा गंगा नहाने जाती हैं तब वे प्राय:
ही गाती हैं। उनके कलकंठ से उनके भजनों को सुनकर भक्ति का जैसा
मनुष्य के मन में होता है उसका वर्णन करना अत्यन्त कठिन है।

ये भजन भक्ति से ओतप्रोत हैं। इनमें भगवान् की स्तुति रहती है। कहीं
किसी तीर्थयात्रा में चलने का वर्णन है तो कहीं इस पापी मन को भक्ति
का उपदेश दिया गया है। इतने दिनों तक प्रभु से विमुख रहने के लिए इसे
गया है। १

"राम नाम मुख बोलु ए भाई। छोड़ु अब जग चतुराई।
ए मनवा पापी भजन कब करबे। जिनगी बितावि भजन कब करबे।"

मनुष्य जीवन की नश्वरता का नीचे लिखा यह वर्णन कितना
उपदेश-पूर्ण एवं यथार्थ है। २

का देखि के मन भइले हो दिवाना, का देखि के।
मानुख देहि देखि जनि भूल, एक दिन माटी होई जाना।
आरे इ देहिया कागद की पुड़िया, बूनि पड़त भिहिलाना।"

नीचे लिखी पंक्तियों में राम के बालरूप का वर्णन भावपूर्ण हैं।
कहता है कि हे भगवन्! आप इसी रूप में मेरे मन—मन्दिर में विराजिये
मैं कभी आप को न भूलूँ। ३

"रउरा रामजी हरी, रउरा नाहीं बिसरीं, घंटा भरी। टेक।
छोटे छोटे बालक साँवर रूप, बड़ी बड़ी अँखिया सुरति अनूप।
बायाँ हाथे धेनुही, दहिना हाथे तिरवा, खेलत खेलत गइलीं सरजू का तिर

१. डा० उपाध्याय—भो० लो० गी० भाग १, पृ० ३५६।
२. वही पृ० ३६०–३६१। ३. वही. पृ० ३६६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कहीं-कहीं इन भजनों में, रहस्यवाद की गंभीर व्यंजना हुई हैं। नीचे के भजन में नैहर से नाता तोड़कर पति के पास जाने का जो वर्णन किया गया है वह रहस्यवाद की परम्परा के ही अन्तर्भुक्त है। यहाँ आत्मा की कल्पना स्त्री रूप में की गई है और परमात्मा को पति माना गया है। यह संसार ही नैहर है और गुरु की कृपा से ईश्वरोन्मुख होने का नाम ही गवना है। गुरु की दया ही वह डोली है जिस पर चढ़ कर यह जीव अपने प्रियतम-परमात्मा-से मिलने जाता है। यह कल्पना कितनी कमनीय है।

"मोर नइहरवा से नातवा छोड़वले जाला पियवा।
कांचे कांचे बांसवा के डोलिया बनवले,
ताहि पर काया के सुतवले जाला पियवा।
चारि कहार मिलि डोलिया उठवले,
आगे आगे रहिया देखवले जाला पियवा।"

(६) पालने के गीत

वृद्धा दादियाँ तथा माताएँ अपने बच्चों को पालने में सुलाकर उन्हें मधुर गीत सुनाती हैं और इस प्रकार निद्रा—देवी का आवाहन करती हैं। इस समय जो गीत गाये जाते हैं उन्हें पालने के गीत कहते हैं। ऐसे गीतों को 'लोरी' की भी संज्ञा दी जाती है। भोजपुरी में पालने के गीत और लोरियों की संख्या बहुत अधिक है। भोजपुरी की निम्नलिखित लोरी बहुत ही लोक—प्रिय है जो बम्बई की एक सुप्रसिद्ध पार्श्वगायिका के द्वारा गाये जाने के कारण अत्यन्त विख्यात तथा प्रचलित हो गई है।

"चाना मामा आरे आवऽ, पारे आवऽ, नदिया किनारे आवऽ,
सोना के कटोरवा में दूध भात ले ले आवऽ।
बबुआ के मुँहवा में घुट्टऽऽऽऽक॥"

—:*:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अध्याय ५

आधुनिक साहित्य

भोजपुरी साहित्य का आधुनिक काल कब से प्रारम्भ होता है, इस संबंध में निर्विवाद रूप से कुछ कहना कठिन है। सन् १८५७ ई में भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम—जिसे सिपाही विद्रोह की संज्ञा दी गई है—छिड़ा, उसमें अनेक जन नायकों ने भाग लिया था। झाँसी की रानी लक्ष्मी वाई और विहार के बाबू कुँअर सिंह ने तो इस युद्ध में अपने प्राणों की वाजी ही लगा दी थी और इसी युद्ध में लड़ते हुए इन दोनों वीरों ने वीर गति को भी प्राप्त किया। इन वीरों की यशोगाथा लोक-गीतों के द्वारा आज भी गायी जाती हैं। पर इन लोक गीतों का निर्माण जिन लोक-कवियों ने किया था आज उनके नाम का पता भी नहीं चलता।

काशी के निवासी बाबू राम कृष्ण वर्मा-जो कविता में अपना उपनाम 'बलबीर' लिखा करते थे—ने सन् १९०० ई० में अपना सुप्रसिद्ध ग्रन्थ "विरहा-नायिका भेद" लिखकर प्रकाशित किया था। इसके पहिले सन् १८९५ ई० में इन्होंने तेग अली 'तेग' का 'वदमाश-दर्पण' १८९५ ई० में अपने भारत-जीवन प्रेस से छापा था। इस प्रकार वर्मा जी ने उन्नीसवीं शताब्दी के चतुर्थ चरण में भोजपुरी साहित्य की प्रचुर सेवा की जिसकी परम्परा उनके वाद चलती रही और आज भी वह अविच्छिन्न गति से प्रवाहित हो रही है। सन् १८५७ ई० के बाद से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

८६५ ई० के पहिले पं० राम् गरीब चौबे ने भोजपुरी के अनेक लोक गीतों
संग्रह तो अवश्य किया था परन्तु इनकी किसी मौलिक काव्य-रचना का
ता नहीं चलता। यह बहुत संभव है कि इस काल में भी भोजपुरी प्रदेश में
नेक लोक कवियों ने जन्म ग्रहण कर इस साहित्य को अपनी कविताओं से
मृद्ध बनाया होगा। परन्तु उन अज्ञात कवियों के नाम तथा उनकी रचनाओं
। पता नहीं है। अतः भोजपुरी साहित्यके आधुनिक काल की कोई निश्चित
तिथि बतलाने में असमर्थता का अनुभव होना अवश्यंभावी है। इसलिए वर्तमान
रिस्थिति में हम इतना ही कह सकते है कि भोजपुरी साहित्य का आधुनिक काल
ा की उन्नीसवीं शताब्दी के चतुर्थ चरण से प्रारम्भ होता है। अनेक कारणों
इस तिथि को सन् १८७५ ई० निर्णीत किया जा सकता है। इस प्रकार
जपुरी का आधुनिक साहित्य सन् १८७५ ई० से प्रारम्भ होकर आज (सन्
१९७२ ई० तक) अविच्छिन्न तथा अबाध गति से चला आ रहा है। अतः
जपुरी का आधुनिक साहित्य विगत एक सौ वर्षों के साहित्य का इतिहास है।
ल-विभाजन गत सौ वर्षों के इस काल को, वर्णन की सुविधा के लिए तीन भागों
विभक्त किया जा सकता है।

१. प्रारम्भिक काल—सन् १८७५ ई० से १९२० ई० तक।

२, विकास काल—सन् १९२० ई० से १९४७ ई० तक।

३. उत्कर्ष काल—सन् १९४७ ई० से लेकर आजतक (१९७२ ई०)।

भोजपुरी साहित्य के प्रारम्भिक काल में विशेष रचनाएँ उपलब्ध नहीं है।
ते अली 'तेग' बाबू रामकृष्ण वर्मा, बिसराम तथा पं० दूधनाथ उपाध्याय ने अवश्य
स काल को अपनी सरस रचनाओं से सुशोभित किया, परन्तु इन कवियों ने
भवतः यह कभी नहीं सोचा था कि वे किसी एक विशिष्ट भाषा के साहित्य
की श्री-वृद्धि में यगोदान कर रहे हैं। स्वयं पं० दूधनाय उपाध्याय ने अपनी
प्रसिद्ध पुस्तिका "भरती के गीत" के मुख पृष्ठ पर लिखा है कि "बलिया जिले
की बोली में रचित गीत"। कहने का आशय केवल इतना ही है कि इन कवियों
की रचनायें भोजपुरी साहित्य की वृद्धि के लिए प्रयास पूर्वक नहीं लिखी गई हैं
बल्कि इन कवियों ने अपने हृदय के उद्गार की अभिव्यक्ति के लिए स्थानीय
बोली (भोजपुरी) को अपना माध्यम बनाया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भोजपुरी के विकास काल (सन् १९२० ई० से १९४७ ई० तक) जो रचनायें या कवितायें प्रकाशित हुई उन पर राष्ट्रीयता की छाप लगी है। महात्मा गाँधी ने सन् १९२० ई० में अपना सुप्रसिद्ध असहयोग आन्दोलन छेड़ा था। गाँधी की इस आँधी में बड़े बड़े विशाल वृक्ष उखड़ गये। ब्रिटिश सरकार चक्कर में पड़ गयी कि ऐसी प्रचण्ड आँधी अचानक कहाँ से आगई ? महात्मा गाँधी के इस देश व्यापी आन्दोलन का प्रभाव भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी पर विशेष रूप से पड़ा। भोजपुरी भाषा भी इस व्यापक प्रभाव से अछूती नहीं रह सकी। इस काल में भोजपुरी के अनेक कवियों की मौन वाणी मुखरित हो उठी और वे राष्ट्रीयता, देश-भक्ति, अंग्रेजों के अनाचार और अत्याचार के गीत गाने लगे। इस काल में जितनी भी रचनाये हुई उनमें राष्ट्रीयता तथा देशभक्ति की अमिट छाप दृष्टिगोचर होती हैं। विहार के रघुवीर शरण की 'बटोहिया' और प्रिन्सिपल मनोरंजन प्रसाद की 'फिरंगिया' नामक कवितायें इसी काल की रचनायें हैं। इसके अतिरिक्त 'बकीलवा,' 'मुअकिला' शीर्षक अनेक कवितायें इस काल में प्रकाशित हुई थी जिनमें ब्रिटिश सरकार से असहयोग करने के लिए जनता को आह्वान किया गया था। सन् १९३० ई० में महात्मा गाँधी ने सविनय अवज्ञा तथा सत्याग्रह का आन्दोलन छेड़ा था जिसमें प्रधान प्रोग्राम सरकारी आज्ञा का उल्लंघन करके नमक वनाना था। इस काल में भी नमक-कानून तोड़ने तथा गाँधी जी की दाँड़ी यात्रा के संबंध में अनेक भोजपुरी गीतों की सृष्टि हुई। सन् १९४२ ई० का 'भारत छोड़ो' आन्दोलन गाँधी जी का अन्तिम आन्दोलन था। चूँकि इस आन्दोलन में जनता ने हिंसा का आश्रय लिया था अतएव अंग्रेजी सरकार की ओर से भी वड़े ही निर्मम तथा अमानुषिक अत्याचार किये गये। भोजपुरी कवि का सदय हृदय इस अत्याचार को सहन नहीं कर सका और भोजपुरी के सुप्रसिद्ध कवि प्रसिद्ध नारायण सिंह की अमर वाणी में वह चीख उठा। इन्होंने "स्वागत सेनापति वार वार" शीर्षक कविता में जो वलिया में अंग्रेजी शासन के द्वारा ढ़ाहे गये जुल्म और सितम का जो चित्रण किया है वह भारत के भावी राष्ट्रीय इतिहास-लेखकों के लिए अमूल्य सामग्री होगी। इस प्रकार भोजपुरी साहित्य के विकास काल की रचनायें राष्ट्रीयता और देश भक्ति से ओतप्रोत पायी जाती हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

भोजपुरी के आधुनिक काल का उत्कर्ष काल सन् १६४७ ई० से प्रारम्भ होता है जिसकी परम्परा आज तक निर्बाध गति से चली आरही है। सन् ४७ ई० में देश स्वतंत्र हो गया। अंग्रेजी शासन अतीत की एक कहानी बन गया। देश के स्वाधीन होते ही स्वतंत्र साहित्य का निर्माण होने लगा। कविकी वाणी—जो विदेशी शासन के शिकंजों में पड़ी रहने के कारण दबी हुई थी—उच्चस्वर से मुखरायमान हो उठी और कविगण स्वतंत्रता और सुख के गीत गाने लगे। हिन्दी की उन्नति के साथ ही भोजपुरी भाषा और साहित्य की सेवा तथा इसके मौखिक साहित्य के संरक्षण की ओर भी विद्वानों का ध्यान आकृष्ट हुआ। कवियों और लेखकों ने भोजपुरी साहित्य की श्री वृद्धि में योगदान करना प्रारंभ किया। इस काल में भोजपुरी साहित्य के संकलन, सम्पादन के लिए तथा इसके प्रचार एवं प्रसार के लिए, अनेक संस्थायें भी स्थापित हुईं जिनमें वाराणसी की 'भोजपुरी संसद, जमशेदपुर' (बिहार) का 'भोजपुरी साहित्य परिषद्' और पटना का 'भोजपुरी परिवार' आदि मुख्य हैं। इन संस्थाओं का यथास्थान विशेष वर्णन प्रस्तुत किया जायेगा परन्तु यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इन संस्थाओंने भोजपुरी साहित्य की वृद्धि में बड़ा योगदान किया है।

इस उत्कर्ष काल में पद्य के अतिरिक्त गद्य की भी प्रचुर उन्नति हुई। पद्य में अनेक महाकाव्य, खण्ड-काव्य और अनेक गीति काव्य भी लिखे गये। भोजपुरी कवियों ने भोजपुरी प्रदेश के दो राष्ट्रीय वीर बाबू कुँवर सिंह और मंगल पाण्डेय को अपने काव्य का विषय बनाया और उनकी वीर गाथा को तार स्वर से गाया। इस काल में खण्ड काव्य और गीति काव्यों की भी रचना की गई। इतना ही नहीं, आज कल भोजपुरी के तरुण तथा नये कवियों ने "नयी कविता" का भी श्री गणेश कर दिया है। पत्र पत्रिकाओं में भोजपुरी में रचित नयी कविता प्रति दिन छपती रहती है जो भोजपुरी कवियोंकी प्रगतिशीलता का द्योतक है।

इस आलोचित काल में गद्य साहित्य की सर्वाङ्गीण समुन्नति हो रही है। गद्य की जितनी भी विधायें हैं—जैसे—निबन्ध, नाटक, उपन्यास, कहानी, लघुकथा, संस्मरण, यात्रा, रेखाचित्र और रिपोर्ताज आदि—इन सभी विधाओं की रचनाओं को प्रस्तुत करने में लेखक और आलोचक बद्ध परिकर दृष्टि-गोचर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

हो रहे हैं। 'भोजपुरी कहानियां' नामक पत्रिका में प्रतिमास अनेक कहानियाँ प्रकाशित हो रही हैं। भिखारी ठाकुर की 'विदेसिया' और काशी के 'लोहासिंह' की प्रसिद्धि से प्रेरित होकर इधर नाटकों की रचना भी मात्रा में हो रही है। 'चतुरी चाचा' ने तो अपनी 'चटपटी चिट्ठियाँ' भोजपुरी गद्य को केवल सँवारा ही नहीं है बल्कि उसमें निरवार भी ला दिया।

इस आलोच्य काल में भोजपुरी साहित्य की श्री—वृद्धि होने के अतिरिक्त इसका प्रचार और प्रसार भी समधिक रूप में हो रहा है। भोजपुरी में प्रकाशित दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक पत्र एवं पत्रिकायें आज इस भाषा के प्रचार में संलग्न हैं। इस प्रकार इस काल में इस भाषा और साहित्य की सर्वांगीण समुन्नति हो रही है जो अत्यन्त सन्तोष का विषय है।

(क) भोजपुरी-काव्य-धारा

संसार के सभी सभ्यदेशों के साहित्य में काव्य की धारा सर्व प्रथम प्रवाहित होती है। भोजपुरी साहित्य के संबंध में भी यही बात समझनी चाहिए। भोजपुरी में काव्य की रचना सबसे पहिले प्रारम्भ हुई, परन्तु इसके गद्य का प्रादुर्भाव बहुत पीछे हुआ। जैसा कि पहिले लिखा जा चुका है, भोजपुरी साहित्य के आधुनिक काल का प्रारम्भ सन् १८७५ ई० से माना जा सकता है। बाबू रामकृष्ण वर्मा आधुनिक काल के कवियों की श्रेणी में सर्व प्रथम स्थान के अधिकारी हैं। कालक्रम से सर्व प्रथम होने के अतिरिक्त अपने काव्य की उत्कृष्टता तथा सरसता के कारण भी ये कवियों की पंक्ति में उच्चासन पर प्रतिष्ठित करने के योग्य हैं।

परन्तु इन भोजपुरी कवियों की श्रेणी में लेखक ने बुलाकी दास को प्रथम स्थान दिया है। इसका कारण यह है कि बुलाकीदास ही ऐसे लोक—कवि हैं जिन्होंने अपनी कविता को अपने नाम से अंकित करने का सुन्दर प्रयास किया है। लोक साहित्य का रचयिता अज्ञातनामा होता है। परन्तु बुलाकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

लोक-कवि हैं जिनका नाम सौभाग्य वश हमें ज्ञात हैं। दूसरी बात यह है बुलाकीदासजी सन्त की अपेक्षा लोक-कवि ही अधिक थे। अतः सन्तों की अथवा साधुओं की जमात में इन्हें न बिठला कर लोक-कवि की श्रेणी में ही उनको उच्च स्थान प्रदान करना अधिक समीचीन ज्ञात होता है। दुःख केवल इतना ही है कि सन् १७०० ई० में बुलाकीदासजी ने 'चैता' या घाटो के निर्माण करने की जो परम्परा प्रवर्तित की वह अविच्छिन्नरूप से प्रवाहित नहीं हो सकी। फिर भी बुलाकीदासजी का महत्त्व लोक-कवि के रूप में कुछ कम नहीं हो सकता। अतः कालक्रम के अनुसार बुलाकीदासजी का वर्णन लोक-कवि के रूप में यहां प्रस्तुत किया जाता है।

१—बाबा बुलाकीदास

बाबा बुलाकीदास का जन्म सम्वत् १७८० वि० (सन् १७१३ ई०) के आस-पास बलिया जिले के सुल्तानपुर नामक गाँव में हुआ था। आपके पिता गरीब सेंगरवंशी राजपूत थे। बुलाकी दास की माता पढ़ी लिखी महिला और संभवतः कविता भी करती थी। आपका विवाह चालीस वर्ष की आयु में आपके गुरु की आज्ञानुसार बलिया जिले के रतनपुरा के निकट एक गाँव में किसी चौहानवंशी राजपूत कन्या से हुआ था। परन्तु गृहस्थी में इनका मन नहीं लगता था। विवाह के पश्चात् आप अपने जन्म स्थान से कुछ दूर उत्तर अभनपुर गाँव में एक कुटिया बनाकर रहने लगे थे। आजकल आपकी कुटी बुलाकीदास की मठिया के नाम से पुकारी जाती है।

बुलाकीदास एक सिद्ध महात्मा थे। ये भीखा साहब के समकालीन थे और प्रायः उनके दर्शन के लिए जाया करते थे। आप एक अच्छे संगीतज्ञ भी थे और मृदंग बजाने में अत्यन्त सिद्धहस्त थे। इनके मृदङ्ग का नाम मेघनाद था जो अपनी धीर और गंभीर ध्वनि के लिए प्रसिद्ध था। बुलाकीदास की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सिद्धियों तथा करामातों के संबंध में अनेक किम्वदतिन्याँ प्रसिद्ध हैं जो इन्हें पहुचाँ हुआ महात्मा सिद्ध करती हैं। टेकारी के राजा के दरवार में बड़ा सम्मान था। राजा ने इन्हें सैकड़ों बीघा जमीन माफी (निः दी थी। परन्तु ये इतने गतस्पृह, वीतराग और निर्लोभी थे कि अपनी सम्पत्ति को साधु-सन्तों में वितरित कर दिया।१

बुलाकीदास और बुल्ला साहब की भिन्नता

सन्त-साहित्य-मर्मज्ञ आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने अपने ग्रन्थ में बुला और बुल्ला साहब में अभिन्नता स्थापित की है और लिखा है कि बुल्ला साहब मूल नाम बुलाकीराम था। ये ही सन्त हो जाने पर बुल्ला साहब के से प्रसिद्ध हुए २। परन्तु लेखक की विनम्र सम्मति में यह सिद्धान्त सम नहीं ज्ञात होता। इसका कारण यह है कि ये दोनों व्यक्ति विभिन्न का उत्पन्न हुए थे। बुल्ला साहब का जन्म सम्वत् १६८६ वि० में हुआ जब कि बुलाकीदास का जन्म सम्वत् १७८० वि० में माना जाता है। चतु जी के अनुसार बुलाकीराम जाति के कुनवी या कुर्मी थे परन्तु बुलाकी सेंगरवंशी श्रेष्ठ राजपूत–क्षत्रिय–कुल में जन्म धारण किया था। बुल्ला (बुलाकीराम) गाजीपुर जिले के भुरकुडा गाँव के निवासी थे परन्तु बुला जी वलिया जिले के सुल्तानपुर नामक गाँव में पैदा हुए थे। आविर्भावकाल, जन्मभूमि और जाति की भिन्नता के कारण बुल्लासाहब बुलाकीदास की अभिन्नता स्वीकार करना समुचित नहीं है। यह वहुत है कि वुलाकीराम नाम का कोई व्यक्ति पैदा हुआ हो जिसने बाद बुल्ला साहव के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त किया हो। इस विवेचन से यह

१. ठाकुर प्रसिद्ध नारायण सिंह—वलिया के कवि और लेखक पृ० १५
(हिन्दी प्रचारिणी सभा, वलिया सं० १६=६ वि०)

२. उत्तरी भारत की सन्त परम्परा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

होता है कि बुलाकीराम (बुल्ला साहब) और बुलाकीदास दो बिल्कुल भिन्न व्यक्ति थे। अतः कुछ विद्वानों की इन दोनों सन्तों की अभिन्नता के सम्बन्ध में जो धारणा है वह भ्रमात्मक ही समझनी चाहिए।[१]

बुलाकीदास की कविता—भोजपुरी लोक साहित्य के सन्दर्भ में बाबा बुलाकीदास की महत्ता तथा विशेषता एक सिद्ध-सन्त की अपेक्षा लोक-कवि और लोक-गायक के रूप में ही अधिक है। बुलाकीदास जो को सच्चे अर्थ में लोक-कवि कहा जा सकता है। इन्होंने लोक साहित्य की एक विधा—चैता या चैती—को अपनाकर इसे अपनी काव्य-प्रतिभा का प्रसाद प्रदान किया है। यों भोजपुरी प्रदेश में हजारों की संख्या में 'चैता' के गीत उपलब्ध होते हैं परन्तु बुलाकीदास के गीतों में जो रमणीयता, सरसता, कोमलता और मधुरता है वह अन्यत्र कहाँ? इस कवि की शब्द-योजना बड़ी मधुर है। पद-शय्या बड़ी सुन्दर और कोमल है। उदाहरण—

"पिया पिया मति करु पिया के सोहिंगिनि हो रामा।
तोर पिया, लोभेले बारिनि, तमोलिया हो रामा॥

इस प्रकार से इस लोक कवि ने शब्दों के द्वारा पाठकों के सन्मुख सजीव चित्र उपस्थित करने में अपूर्व सफलता प्राप्त की है। सिर पर दही का मटका लेकर गोकुल नगर में गोरस बेंचने के लिए जाने वाली ग्वालिन का यह वर्णन कितना सुन्दर और सजीव है।

(१)

छोटि मुटि ग्वालिनि सिर ले मटुकिया हो रामा चली भइली,
गोकुला सहर दहिया बेचन हो रामा, चलि भइली॥
एक बने गइली, दूसर बनें गइली, रामा तीसर बनें,
कान्हा मोर धरेला अँचरवा हो रामा, तीसर बनें॥

---

[१] इन दोनों की अभिन्नता के लिए देखिए—दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह—भोजपुरी के कवि और काव्य पृ० ९०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gian

छोड़ु छोड़ु कान्हा रे हमरो अचरवा हो रामा पड़ि जइहें,
दहि के छिटकवा हो रामा, पड़ि जइहें ॥
तोरि लेबे ग्वालिनि दही के छिटकवा हो रामा मोरा लेखे,
अगर, चनन देव वरिसे हो रामा, मोरा लेखे ॥
दास 'बुलाकी' चइत घाँटो गावे हो रामा, गाइ गाइ,
विरहिन सखि समुझावे हो रामा, गाइ गाइ ॥१॥

संस्कृत तथा हिन्दी साहित्य में विरहिणी स्त्रियों का वड़ा ही सुन्दर [illegible] किया गया परन्तु इस लोक कवि के द्वारा प्रस्तुत यह विरह वर्णन कु[illegible] रमणीय और हृदय-द्रावक नहीं हैं। कोई स्त्री कहती है कि मैं अपनी [illegible] निकाल कर अपने प्राणों का अन्त कर लेती जिससे विरह का दुःख [illegible] सताता। ननद के आँगन में चन्दन के पेड़ पर चढ़कर कौवे का सुलच्छ[illegible] वोलना, मैथिलकोकिल विद्यापति की निम्नांकित पंक्तियों की याद दिला[illegible]

"मोरे रे आँगनवा चनन केरी गछिया ताहि चढ़ि कुरुरे काग रे॥"[illegible]

भोजपुरी के इस विद्यापति ने इसी प्रकार का जो चित्र हमारे [illegible] चित्रित किया है वह भी कुछ कम मनोमोहक नहीं है।

बुलाकीदास ने अपनी कविता को 'घाटो' कहा है जो चैता के [illegible] ही एक रूप है। इन्होंने इन गीतों में अपनी स्त्री 'कुन्द-कुँवरि' का भी ना[illegible] किया है जो संभवतः इनके काव्य की प्रेरणा स्वरूपा थी। बुलाकी[illegible] 'घाँटो' की थोड़ी मधुर चाशनी पाठकों के संमुख प्रस्तुत की जाती है।[1]

(२)

ननदी का अँगनवा चननवा हो रामा, ताही चढ़ि,
कगवा बोलेला सुलक्षन हो रामा ताही चढ़ि॥

---

१. इन गीतों के और अधिक उदाहरण के लिए इसी पुस्तक का पृ० [illegible] देखिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तोके देबो कगवा हो दूध भात खोरवा हो रामा, तनी एक,
सइयाँ कुसल बतलइबे हो रामा, तनि एक ॥
पिया पिया मति कह पिया के सोहागिनि हो रामा, तोर पिया,
लोभले वारी तमोल्लिनि हो रामा, तोर पिया ॥
कढ़ितों मैं आपन कटरिया से मरितों जियरवा होरामा, मोरा आगे,
उढ़री के कइली बखनवा हो रामा, मोरा आगे ॥
'दास बुलाकी' चइत घांटो गावे हो रामा, गाइ गाइ,
'कुन्द कुंवरि' समुझावे हो रामा, गाइ गाइ ॥

२, बाबू रामकृष्ण वर्मा

भोजपुरी साहित्य के इतिहास में वावू रामकृष्ण वर्मा का एक विशिष्ट स्थान है। ये काशी के निवासी थे। इन्होंने गत शताब्दी के अन्तिम दशक में भोजपुरी साहित्य की वड़ी सेवा की। आप वड़े ही साहित्यिक जीव थे। आप भारत-जीवन प्रेस के स्वामी थे। इस प्रेस द्वारा आपने साहित्य की श्री–वृद्धि में अत्यधिक योगदान दिया है। आप काशी से प्रकाशित 'भारत जीवन' नामक साप्ताहिक पत्र के सम्पादक भी थे। इस प्रकार सम्पादन तथा लेखन द्वारा आपने भारती का भाण्डार भरा हैं।

वावू रामकृष्ण वर्मा कविता में अपना उपनाम 'वलवीर' लिखा करते थे। इसका प्रयोग इन्होंने अनेक विरहों में किया है। जैसे—

भरली गगरिया उठवले जइसे गोइयाँ,
तइसे बिछलल गोड़वा हमार।
जो पै 'बलवीरवा' ना वहियाँ धरत
तो पै बहितीं जमुनवा के धार ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भोजपुरी में आपने में 'विरहा नायिका-भेद' नामक पुस्तक लिखी है जिसमें विरहा छन्द में विभिन्न नायिकाओं का वर्णन किया गया है। इस पुस्तक में कुल २६ पृष्ठ हैं तथा विरहों की समस्त संख्या ५९ है। इन्हीं विरहों के माध्यम से इन्होंने नायिका-भेद का बड़ा ही सुन्दर तथा सरस वर्णन किया है १।

इस पुस्तक में पहले विभिन्न नायिकाओं के लक्षण गद्य में दिए गये पश्चात् उनका पद्यात्मक उदाहरण इन विरहों के द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इस 'नायिका भेद' में गद्य की भाषा खड़ी बोली है परन्तु विरहों की भाषा भोजपुरी है जिसमें संस्कृत का गहरा पुट पाया जाता है। इन विरहों की भाषा के संबन्ध में इतना और कह देना आवश्यक प्रतीत होता है कि इनकी भाषा भोजपुरी होने पर भी ठेठ भोजपुरी नहीं है बल्कि उसमें संस्कृत के तत्सम शब्द भी यत्र-तत्र मिलते हैं। जिस प्रकार तुलसीदास जी ने अपने रामचरित-मानस में संस्कृत मिश्रित साहित्यिक अवधी का प्रयोग किया हैं, उसी प्रकार वर्मा जी ने भी संस्कृत मिश्रित साहित्यिक भोजपुरी को इन विरहों का माध्यम बनाया है। यही कारण है कि इनमें मिठास है, माधुरी है। कहीं-कहीं इन विरहों में भोजपुरी भाषा में अप्रयुक्त क्रिया पद भी पाये जाते हैं जैसे रिसावें और पड़िल्यूं। २ फिरभी इनकी भाषा संयत और शिष्ट है। 'मध्या' नायिका का यह वर्णन देखिये:—३

"लजिया की बतिया मैं कइसे कहूँ ए भउजी,
जे मोरे बूते कहलो ना जाय।
पर के फगुनवां की सियली चोलियवा में,
असों न जोवनवां अमाय ॥"

नव यौवन के आगमन का कितना सुन्दर तथा संयत वर्णन उपर्युक्त विरहे में किया गया है। नीचे के पद्य में प्रवत्स्यत्पतिका का कितना सुन्दर चित्रण है। ४

---

१. विरहा नायिका भेद: विरहा संख्या २८ पृ० १३

२. वही, ,, २९ पृ० १३। ३. वही. ४. वही. ,, पृ० २३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

दुःखवा के बतिया नगीचवो न आवै, गुइयां हंसी खुसी रहेला हमेस।
बजुआ सरकि कर कंगना भइल, सुनि प्यारे का गवनवां विदेस॥

कोई स्त्री—जिसका पति परदेश जाने वाला है—कहती है कि दुःख है कि पति हमारे पास कभी आता ही नहीं है। आज उसके विदेश जाने का समाचार सुनकर मैं इतनी कृश हो गई हूँ कि बांह में लगाने का आभूषण (वाजू) आज मेरी कृशता के कारण हाथ का कंगन बन गया है। हिन्दी के कवियों ने पति के वियोग में वर्षों तक घुल-घुलकर मरने वाली नायिका के 'कर की मुंदरी' को उसका 'कंगन' बनाया है। परन्तु इस विरहे में पति के भावी वियोग की चिन्ता मात्र से ही पत्नी का इतना कृश हो जाना साहित्य जगत् में अपना सानी नहीं रखता। खंडिता नायिका का यह वर्णन कितना सटीक हुआ है, यह कितना भावपूर्ण है। १

ओठवा के छोरवा कजरवा कपोलवा पै; पिकवा के परली लकीर।
तोरी करनी समुझ के करेजवा फटत, दरपनवां निहारो 'बलबीर'॥

अपने पति का यह कुकृत्य देखकर किसी साध्वी स्त्री की छाती का फटना नितान्त स्वाभाविक है। कवि ने इसी मनोवैज्ञानिक तथ्य को बड़ी सुन्दर रीति से निरूपण किया है। 'व' का अनुप्रास अपनी शोभा अलग दिखला रहा है।

ज्ञातयौवना का चित्रण देखिये:—२

हाय गोड़वा क ललिया निरख कै छबिलिया, मगन होली मनवा मझार।
हेरी हेरी जोबना निहारे दरपनवा में, बेरी बेरी अँचरा उघार॥

कुलटा ३ और अनुशयाना ४ के दो उदाहरण लीजिये:—

आधी जग भुंइयां, आधी नदी, नाल कुंइयां; आधा मरद से बुढ़वा बेराम।
ससुर भसुर छोड़ बचेले केतने, मोहें नाहकै करैले बदनाम॥

---

१. विरहा नायिका भेद पृ० १६ बिरहा ४२। २. वहीं. पृ० ६ ,विरहा १०
३. वही. पृ० १५, बिरहा ३२। ४. वही. पृ० ५५, विरहा ३३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सनहू उजारे गोइयां, उखियों उपारैं, इन किसनवन के तनियों न हेत।
कवनों पुरनवां न बेदवा बखाने, अरहरिया के काटो जनि खेत॥

'वलवीर' की कविता की विशेषता है माधुर्य गुण की योजना तथा कमनीय पद-शय्या। सुकुमार तथा कोमल भावों की संघटना के साथ ही साथ इस कवि ने तदनुरूप मधुर भाषा का प्रयोग करने में बड़ी कुशलता प्राप्त की है। किसी रूपगर्विता नायिका का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि :—

"रूपवा के भारवा त गोरी के पयरवा,
रे सोझवा धरल नाहीं जाय।
लचि लचि जाला दइया गोरी की कमरिया,
जोवनवाँ के बोझवा दवाय॥"

यौवन के भार से लदी हुई नायिका का पैर सीधा नहीं पड़ रहा है और इस भार को सहने में असमर्थ उसकी कमर बार बार झुक जाती है। वास्तव में यह सुकुमारता की पराकाष्ठा है।

वर्माजी ने साहित्यिक विरहा लिखने में कमाल हासिल किया है। सचमुच इतना सरस और मधुर विरहा अन्यत्र उपलब्ध नहीं। कृष्ण की जाति (अहीर) पर कितनी सुन्दरता से इस विरहे में व्यङ्ग्य किया गया है। इस के साथ ही 'रजवा' शब्द में यमक की छटा भी दर्शनीय है।

"रजवा करत मोर 'रजवा' मथुरवा में,
हम सब भइली फकीर।
हमरी पिरितिया निवाहे कइसे ऊधो,
'बलबिरवा' की जतिया अहीर॥"

—:*:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

३—श्री तेग अली 'तेग'

श्री तेग अली 'तेग' बनारस के रहने वाले मुसलमान थे। ये संभवतः तेलिया नाला मुहल्ले के निवासी थे। ये बड़े ही मस्त जीव थे और काशी के गवैयों के अखाड़े के आप सरदार थे। होली के दिनों में आप अपना दल बना कर घूमते थे और आशु कविता करके लोगों का मनोरंजन किया करते थे। आपकी रसाई बनारस के सभी समाजों में थी। इसीलिए आप बनारसी-जीवन के चित्रण में इतना सफल हुए हैं। श्री तेग अली 'तेग' का आविर्भाव काल गत शताब्दी का अन्तिम चरण था।

आपने 'बदमाश-दर्पण' नामक काव्य-ग्रन्थ की रचना की है जिसका प्रकाशन सन् १८९५ ई० में लहरी प्रेस, वाराणसी से हुआ था। इस पुस्तक का दूसरा संस्करण पं० शिव प्रसाद मिश्र रुद्र 'काशिकेय' के सम्पादकत्व में भाजपुरी संसद, वाराणसी से सन् १९६४ ई० में 'तेग अली और काशिका' के नाम से प्रकाशित हुआ है। विद्वान् सम्पादक ने तेग अली की कविता की बड़ी सुन्दर व्याख्या इस ग्रन्थ में की है। कठिन शब्दों के अर्थ देने के साथ ही, अनेक आवश्यक टिप्पणियां भी प्रस्तुत की गई हैं। परन्तु दुःख है कि सम्पादक ने बनारसी गुरु होते हुए भी तेग अली के जीवन-चरित पर प्रकाश डालने का तनिक भी प्रयास नहीं किया है।

तेग अली की एक मात्र रचना 'बदमाश-दर्पण' है जिसमें बनारसी जीवन की बांकी झाँकी पाठकों के सामने प्रस्तुत की गई है। चूँकि यह कवि स्वयं भी उसी समाज का एक सदस्य था जिसका उसने वर्णन किया है, इसीलिए इसके विवरण में इतनी संजीदगी, इतनी सजीवता और इतनी अनुभूति भरी पड़ी है। बनारसी लोगों का सन्ध्या समय 'बहरी तरफ जाना', वहीं निबटना और वहीं पर मस्ती के साथ भाँग बूटी छान कर लौटने का बड़ा ही सजीव वर्णन इस पुस्तक में पाया जाता है। आँखों में सुरमा लगाने के कारण की सफाई सुनिए—

"हम उनसे पुछली, आँखि में सुरमा काहे बदे लगाइला
ऊ हँस के कहलन, छुरी पत्थर से चटाइला॥"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

उपर्युक्त पद्य में कटाक्ष की उपमा छूरी से और सुरमा की पत्थर से उपमा दी गई है। तेग अली की भाषा सजीव, चुस्त, मुहावरेदार और चहकती हुई है। इनकी कविता के कुछ और उदाहरण लीजिए।

"हम खर् मिटाव कइली हा रहिला चवाय के।
भेंवल धरल बा दूध में खाजा तोरे बदे। १।"
अत्तर तू रोज मल कर, नहायल कर रजा।
बोसन भरल धयल बा करावा तोरे बदे। २।
जानीला आजकल में झनाझन चली रजा।
लाठी, लोहांगी, खंजर'औ बिछुआ तोरे बदे। ३।
कासी, पराग, द्वारिका मथुरा औ वृन्दावन।
धावल करैलें 'तेग' कन्हैया तोरे बदे। ४।

४– बाबू अम्बिका प्रसाद

बाबू अम्बिका प्रसाद बिहार राज्य के आरा जिले की कलक्टरी कचहरी में वकालत (मुख्तारी) का पेशा करते थे। आप एक अच्छे कवि थे। आपकी कविताओं के कुछ उदाहरण भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपनी 'हिन्दी भाषा' नामक पुस्तक में दिये हैं। आपके परिचय के संबंध में उस ग्रन्थ में केवल इतना ही उल्लेख मिलता है कि "मुन्शी अम्बिका प्रसाद, मुख्तार, फौजदारी और कलक्टरी, जिला शाहाबाद (बिहार); मालिक हिस्सेदार मौजा अपहर, परगना गोआ, जिला-सारनकृत ·भजनावली से ।१" इससे पता चलता कि यद्यपि आप शाहाबाद जिले के निवासी थे परन्तु आपकी जमींदारी सारन (बिहार) जिले में थी। बाबू हरिश्चन्द्र के समकालीन होने के कारण आपका आविर्भाव काल १९ वीं शताब्दी का अन्तिम चरण समझना चाहिए।

१. दुर्गा शंकर सिंह—भोजपुरी के कवि और काव्य पृ० १५४-५५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

वाबू अम्बिका प्रसाद 'की 'भजनावली' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई जिसमें शान्तरस के गीतों का संकलन पाया जाता है। इनकी कविता में रहस्यवाद की भी झलक देखने को मिलती है। आपकी शान्तरसमयी कविता का एक उदाहरण लीजिए।

देखली मैं सखिया एक कल के खेलवना
पाँच पचीस कलवा लागल रे को।
तीन सौ साठि तामें लगली लकड़िया रामा,
नव सन जोड़वा बाँधल रे की।
दुइ रे सहेलिया मिलि खेलेली खेलवना रामा,
तीनो रे खेलकवा तेही संगवा धावेला रे की।
नव रे महीनवा में वनेला खेलवना रामा
खेलवा मेटत देर ना लागेला रे की।
'अम्बिका' कहत वाड़े समुझि खेल गोरिया रामा,
खेलावा के भेदवा गुरु से पावला रे की।

मानव का यह जीवन ही खेलवना है जिसको वनाने में तो नव महीना लगता है परन्तु जिसके नाश के लिये एक क्षण भी अधिक है। मनुष्य का शरीर ही वह यन्त्र है जिसमें पचीस ही क्यों अगणित पुर्जे लगे हुए प्रतिदिन काम कर रहे हैं।

इस कवि ने सोहर तथा झूमर के कुछ गीतों को भी लिखा है। परन्तु इनका वर्ण्य विषय भी निर्गुन ब्रह्म की उपासना है। सोहर के निम्नांकित गीत में रहस्यवद की वाँकी झाँकी हमे देखने को मिलती है।

पहिले गँवननाँ पिया माँगे, पलँगिया चढ़ि बोलावेले हो।
ललना पिया बान्हे टेढ़ीं रे पगरिया, त मोरा नहीं भावे रे॥
एक तो मैं अँगवा के पातर, दूसरे गरभ सेई रे।
ललना तीसरे बावा के दुलरुई, बेदनिया कइसे अंगइबि रे॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सासु मोरा सूतेली ओसरवा, ननद गजओवरि रे।
ललना सइयाँ मोरे सुतेले अटारि, त कइसे के जगाइवि रे॥
पान फेंकि मरलों सजन के, से अवरू लँवग फेंकि रे।
ललना सभ अभरन फेंकि मरलों, तबहु नाहिं जागेले रे॥
सासु मोरी आवेली गाइवत, ननदी वजावइत रे।
ललना सँइया मोरे हरखित होखेले, मोहर लुटावेले रे॥
"अम्बिका प्रसाद" सोहर गावेले, गाइके सुनावेले रे।
ललना दिन-दिन बाढ़सु नन्दलाल, सोहरवा मोंहि भावेले रे॥

विहार प्रान्त की कचहरियों में जब उर्दू लिपि के स्थान पर नागरी लिपि प्रयोग करने की घोषणा हुई उस समय जनता से नागरी लिपिका प्रयोग की अपील करता हुआ कवि कहता है कि रानी विक्टोरिया का राज्य धन्य जिसमें ऐसी शुभ घोषणा हुई है।

हुकुम भल सरकारी, रे नर सीख नागरिया। जामिनि लिपि जी से देहु दुराई।
ले पोथि नित पाठ करऽ अर्व, जामिनि पुस्थ देहु पैसरिया।
जवले नागरि आवत नाहीं कैथी अक्षर लिख कचहरिया।
धन मंत्री, परजा हितकारी 'अम्बिका' मनावत राज विक्टोरिया।

वावू अम्बिका प्रसाद ने अनेक सरस तथा मनोरम झूमर के गीतों की रचना की है। शब्दों की कोमलता के साथ ही भावों की सुकुमारता से झूमर इतना सुन्दर वन पढ़ा है कि इसको पढ़कर मन झूमने लगता है।

मोरा पिछुअरवा लीला रंग खेतवा, बलमु हो, लील रँग चुनरी रँगा
चुनरी पहिरइ तऽ जाड़ा मोरे लगले, बलमु हो, सलवा दोसालेवा ओढ़ा
सालवा-दोसलवा से गरमी छिटकली, बलमु हो, रसे-रसे बेंनिया डोला
बेंनिया डुलवइत वँहिया मुरुकली, बलमु हो, पटना के बैदा बोला
वैदा जे माँगेला साठि रुपइया; बलमु हो, तनि एका मोहरा भँजा
मोहरा भँजवइत जियरा निकलले, बलमु हो, मेहरी भइली जियरा के का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

५—बिसराम

भोजपुरी के वर्तमान कवियों में बिसराम का महत्वपूर्ण स्थान है।१ पुरी के इस जन कवि ने अनपढ़ होने पर भी सरस तथा भावपूर्ण पद्य लिखे जो किसी भी सभ्य देश के साहित्य में गौरव का स्थान प्राप्त कर सकते हैं। राम का जन्म आजमगढ़ नगर से कुछ दूर सिरामपुर नामक गांव में एक परिवार में हुआ था। यह गाँव टोन्स नदी के किनारे बसा हुआ है का प्राचीन नाम तमसा था। बिसराम के माता पिता ने इसे स्कूल में पढ़ाने बड़ा प्रयत्न किया परन्तु बिसराम का मन देहात की पाठशाला में न लगा। प्रकृति की पाठशाला में पढ़ने लगा। युवा होने पर कवि का विवाह हुआ तु वह पारिवारिक सुख अधिक दिनों तक न भोग सका। कुछ ही दिनों के बाद उसकी प्रियतमा ने पंचत्व को प्राप्त किया। अपनी प्राण प्रिया के अकाल कलवित होने से कवि के भावुक हृदय पर बड़ा आघात पहुँचा और का आन्तरिक शोक श्लोक-के रूप में प्रकट हुआ। शोकःश्लोकत्वमागतः।

बिसराम ने अपनी विरह वेदना को विरहों के माध्यम से व्यक्त किया है। हा भोजपुरी के कवियों का छन्द है। बिसराम के कुछ थोड़े से विरहों का तक पता चला है। परन्तु केवल ये ही विरहे इस कवि की प्रतिभा, काव्य कता, प्रकृति निरीक्षण और भाव-चित्रण के अनुपम नमूने हैं। इनकी रचना कोरी शाब्दिक कलाबाजी न होकर हृदय की वेदना की तीव्र अनुभूति है।

पत्नी का शव श्मशान जाते देखकर कवि की जो मनोदशा हुई थी उसका न इन शब्दों में कितना सुन्दर हुआ है २:—

"आजु मोरी घरनी निकलली मोरे घर से,
मोरा फाटि गयल आल्हर करेज।

१. यह प्रतिभाशाली कवि अज्ञात दशा में पड़ा हुआ था। इसकी कीर्ति को प्रकाश में लाने का श्रेय बाबू परमेश्वरी दयाल गुप्त को है।

२. परमेस्वरी दयालु गुप्त—भोजपुरी का जनकवि बिसराम—'समाज' ३ जून १९४८ पृ० ११

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gian

'राम नाम सत' ही सुनि मैं गइलों बउराई,
कवन रछसवा गइलें रानी के हो खाई।
सुखि गइले आँसू नाहीं खुलेले जबनियाँ,
कहस के निकारों मैं त दुःखिया वचनियाँ।"

कवि कहता है कि मेरी पत्नी आज घर से निकल गई। उसके मेरा हृदय विदीर्ण हो रहा है। कौन सा राक्षस मेरी प्रियतमा को गया है। प्रिया के वियोग में आज मेरे मुंह से शब्द नहीं निकल रहे हैं आंसू सूख गये हैं और जवान बन्द हैं। अतः हृदय के भाव कैसे व्यक्त अपनी प्राणप्यारी वस्तु के खो जाने पर मनुष्य की कैसी दशा होती है कितना सुन्दर चित्रण किया गया है।

पत्नी के वियोग से संतप्त बिसराम को देखकर घरवालों ने उससे विवाह करने के लिये कहा परन्तु अपनी प्रियतमा के प्रेम में तल्लीन के लिये यह बात असह्य हो गई और वह पुकार उठा :—

"तूं हैं हवे काम, तिलक में लेवे दाम,
हमरी दूसरी नियतिया हुई तात।
जनम गंवउबे उनके नऊंवां हम रटि-रटि,
दावा नाहि हम करबे दूसरी के बात॥"

इस गीत की तीसरी पंक्ति में कितनी वेदना भरी पड़ी है। प्रेम का अखंड है, अविभाज्य है, इस तथ्य का निरूपण कवि ने उपर्युक्त किया है।

कवि को रात दिन अपनी प्रियतमा की चिन्ता बनी रहती है। उसे में भी सर्वत्र उदासीनता दिखाई पड़ती है। एक समय रात में एक कौवे अकेला बैठा देखकर, कवि उसे समानधर्मा समझ कर कह उठता है कि—

तोरे जोड़वा के कौवनों मरले चिबिल्ला कउवा,
मोरे जोड़वाँ के मरले राम।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

उनके मनवा छन भँरवा वहलले कउवा,
हमनी के तड़पे नित प्रान ॥

...राम क्षणभर के लिये भी अपनी प्रियतमा को नहीं भुला सकता। क्या ...र क्या रात, क्या गर्मी और क्या जाड़ा, सभी काल और सभी ऋतुओं ...ी प्राणप्यारी की स्मृति उसके मन में जागती रहती हैं। माघ के ...शीत का उल्लेख करता हुआ कवि कहता है कि :—

हथवा के साथे मोरे मनवा ठिठुरले,
हम होइ गइलीं है उकठल काठ।

...र्थात् जाड़े के कारण हाथ के साथ मेरा मन भी ठिठुर गया है। मेरे मन ...स नहीं है और मैं ठूंठ—पत्रहीन—वृक्ष की तरह हो गया हूँ। अर्थात् ...कार स्थाणु का कुछ महत्त्व नहीं होता उसी प्रकार प्रिया से विरहित ...न का कुछ भी मूल्य नहीं है। इन शब्दों में कितनी मानसिक वेदना छिपी ...। यह उद्गार कितना कारुणिक है। कवि को सदा अपनी स्त्री की ...ाती रहती है। वह श्मशान में पड़ी एक खोपड़ी देखकर पूछ ...है कि—

"विना अँखिया के तू त हऊ मोरी रानी,
जोहबू कइसे के विछुड़लवा के बाट।"

...र शब्दों में कितनी वेदना भरी है। प्रियतमा से मिलने की उसे कितनी ...है। पपीहे को 'पी' 'पी' कहता सुनकर कवि उसे समझाते हुए कहता है ...पीहा, अब पी के मिलने की आशा छोड़ो। वियोगी का जीवन विरह की ...में जलने के लिये ही होता है। विरह के बाद मिलन की आशा कहाँ ?

"रोअल धोअल अब छोड़ऊ हो पपीहा,
तनि सुनि लेव मोरिउ बात।
विरहिन के सुख नाहि मिलत मोर भइया,
उनके जरत वितेलें दिन-रात ॥"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अन्त में कवि अपनी प्रियतमा से जीवित न सही, मरकर भी मिलने की आशा से प्रेरित होकर, अपनी प्यारी नदी तमसा से याचना करता है—हे माता, मरने के बाद मेरी हड्डियों को वहीं बहाकर ले जाना जहाँ मेरी प्यारी की हड्डियों की चूर पड़ी हो :—

"मोरी हड़ियन के माता उहवाँ ले जइह,
जहाँ उनकी हड़ियन के रहे चूर।"

यह अन्तिम अभिलाषा कितनी मर्मस्पर्शी है। बिसराम ने जो कुछ कहा है वह उसकी अपनी अनुभूति है। उसके बिरहे उत्कृष्ट काव्य के नमूने हैं जो किसी भी साहित्य के लिये गौरव की वस्तु हैं [1]।

६—पं० दूधनाथ उपाध्याय

जीवन वृत्त—परिडत दूधनाथ उपाध्याय का जन्म बलिया जिले के छपरा नामक गाँव में संवत् १९२० वि० में हुआ था। आपके पिता का नाम पं० शिवरतन उपाध्याय था जो राम-चरित मानस के बड़े भक्त थे। पं० उपाध्याय चार भाई थे। सबसे बड़े तथा जेठे भाई पं० पशुपति ... गाँव पर रहते थे और खेती गृहस्थी के काम की देख भाल करते थे। ... भ्राता स्वयं उपाध्याय जी ही थे। इनके तीसरे भाई पं० बलदेव ... डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मिडिल स्कूल के हेड मास्टर थे। सबसे छोटे भाई पं० जगदेव उपाध्याय था जो अनेक वर्षों तक बलिया डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के ... रहें। इस पद पर रहते हुए इनकी इतनी प्रसिद्धि हुई कि ये बलि...

---

१. बिसराम के बिरहो का संकलन तथा सम्पादन करके श्री बुधराम ... इसका बड़ा सुन्दर संस्करण निकाला है जो 'भोजपुरी संसद' ... इसी नाम से प्रकाशित हुआ है। बिसराम के बिरहो के विशेष ... लिए इस ग्रन्थ को देखना चाहिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

टरी साहब' के नाम से अभिहित किये जाने लगे। इन्हीं के सुयोग्य पुत्र म सुन्दर उपाध्याय हैं जिनके विषय में अँग्रेजी की यह कहावत 'योग्य योग्य पुत्र,' निश्चित रूप से चरितार्थ होती है। आप ने भी अपने पिता को अनेक वर्षों तक सुशोभित किया और आप भी अपने पूज्य पिताजी बलिया जिले में 'सेक्रेटरी साहब' के नाम से ही प्रसिद्ध हैं। पण्डित न्दर उपाध्याय ने सज्जनता, सहृदयता, उदारता और साधुता को अपने ताजी से विरासत के रूप में प्राप्त किया है।

दूधनाथ उपाध्याय का जन्म जिस समय हुआ था उस समय आपके की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। इसीलिए उपाध्याय जी की धिक न हो सकी और अपने परिवार के पालन पोषण के लिए बलिया मिडिल स्कूल में इन्हें अध्यापन का कार्य करना पड़ा। आपने अपने बुद्धि-चातुर्य, शासन-कुशलता तथा सामाजिक चतुरता के कारण पक के पद को शीघ्र ही प्राप्त कर लिया। इन्होंनें द्वाबा के बैरिया स्कूल में अनेक वर्षों तक बड़ी सफलता के साथ हेडमास्टरी की। सामाजिक था शासन में पटु होने के कारण आप जहाँ भी जाते ये वहाँ अपना जमा लेते थे। इस प्रकार समाज—सेवक, शासन पटु प्रधानाध्यापक, व्यवहार में कुशल व्यक्ति होने के कारण आपने बड़ी कीर्ति उपार्जित की।

दूधनाथ उपाध्याय का नाम भोजपुरी साहित्य में चिरकाल तक जीवित आधुनिक कवियों में दो तीन व्यक्तियों को छोड़कर संभवतः सर्वप्रथम में कविता करने के लिये आपने ही लेखनी उठाई थी। वर्तमान के प्रारम्भ से ही जब जनपदीय बोलियों या भाषाओं के उद्धार की नहीं थी और जब इन बोलियों में कविता लिखना गवाँरूपन समझा , आपने भोजपुरी में कविता करनी शुरू की थी। जनता ने आपकी का बड़ा ही स्वागत किया तथा ये कविताएँ बड़ी लोकप्रिय हुईं। थम महायुद्ध के अवसर पर सन् १९१४ ई० में स्थानीय जिला रियों ने युद्ध के प्रचार के लिये तथा लड़ाई में सैनिकों की अधिक में भरती कराने लिये, आप से भोजपुरी में कविता लिखने का अनुरोध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

किया था। उस समय आपने ठेठ भोजपुरी में कविता लिखकर जो प्रकाशित की थी उसका नाम 'भरती के गीत' है। इस छोटी सी पु जर्मनी के तत्कालीन शासक सम्राट् कैसर को पछाड़ने के लिये आपने भार सेना में भरती होने के लिये आह्वान किया गया है। इसके फड़कती हुई भाषा में भारतीयों को अपने देश की रक्षा के लिये ललकारा नीचे का यह पद्य देखिये१:—

हमनी का सब केहू बाम्हन छतिरि होके,
रन में चलबि नाहि तनिकों डेराइबि।
अबले चूकलीं बड़ बाउर कइलिहांजा,
अब पुरुखनि के ना नइयां हँसाइबि॥
जरमन दुहुट के नहट कईला बिना,
अब ना मानबि बलु मरि मिटि जाइबि।
सगरे मुलुक ललकारि के चलबि अब,
"दूधनाथ" रन से ना पयर हटाइबि॥

इस पद्य में कवि ने भारतीयों को युद्ध में लड़ने के लिये लल यह कवि भारतीय जनता से तन, मन, धन देकर ब्रिटिश सरकार की करने की अपील करता है। साथ ही जर्मनी को रण में पराजित संकल्प कितना दृढ़ है।२

हमनी का सब जीव जान से मदति करि,
दुहुट जरमनी के नहट कराइबि।
जीव देइ, जान देइ, धन देइ, अन्न देइ,
देह देइ, गेह देइ, मदति पठाइबि॥

---

१. भरती के गीत, पृ० ६। २. वही, पृ० १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

भरती होखे के मिलि जुलि अब फउजो में,
कुल खानदान सब घर के सिखाइबि ।
"दूधनाथ" हमनी का सब केहु जाई अब,
जरमन फउजि के माटी में मिलाइबि ॥

जर्मन युद्ध के अवसर पर कैसर के द्वारा किये गये घोर अत्याचारों का ... करते हुये कवि कहता है कि ए कैसर ! तुमने बेलजियम देश पर चढ़ाई ... असंख्य बाल-वृद्धों को मार डाला । कितने निरपराधी मनुष्यों का नाश कर ..., गिरजा घरों को तोड़ डाला । फिर भी तुम वीर बनने का दावा ... हो १:—

बेलजियम देश के उजार कर अब हाय,
बालक, बिरिध मारि मारि के सतावतारे ।
अबर, दुबर से सताईं डांड़ लेत बाड़े,
उजुर करे त घरे आगि ते लगावतारे ॥
केतना गरीब, बेकसूर के ते मारतारे
नाहके मुआवतारे गोला बरसावतारे ।
गिरिजा, मंदिर, मसजिद तोरि डारतारे,
"दूधनाथ" अपना के वीर तैं लगावतारे ॥

अन्त में कवि अपनी मनोरम वाणी में जर्मनी की हार और ब्रिटिश ...र की जीत के लिये ईश्वर से प्राथंना करता हुआ कहता है कि२ :—

...ं भगवान् राजा राम जी चरन परि, हाथ जोरि जोरि सब केहु कहतानीजा ।
...नी के बुधि दिहीं, बल, बउसाव दिही, लड़े के सकती दिहीं, वर माँगतानीजा ॥
...न दुहुट के नहट कराइ दिहीं, पंचम 'जारज' जी के जीति चाहतानीजा ।
...धनाथ" अपना चरन में परेम दिहीं, कीरिपा बनल रहे हाथ जोरतानी जा ॥

१. भरती के गीत पृ० ७ । २. भरती के गीत, पृ० ११

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

उपाध्याय जी की दूसरी रचना "भूकम्प पचीसी" है२ जिसमें १५ ... सन् १९३४ के प्रलयंकारी भूकम्प का बड़ा ही सजीव चित्रण किया ... भूकम्प का यह रोमांचकारी वर्णन सुनिये १:—

"केहू के त सब परिवार दबि मरतबा, केहु के त बेटा नाती देखि ना ...
केहू मेहरारू बिना, पूत परिवार बिना, छाती पीटि पीटि धाई धाई के गिर...
केहू धन बिना, अन्न बिना, पानी बिना हाई, तड़पि-तड़पि छपिटाई के मर...
केहू होई पागल बेहाल होई घूमताटे, "दूधनाथ" हाय बिना अगिये मरत...

भूचाल का यह दृश्य कितना दर्दनाक है। भूकम्प पीड़ितों की सहाय... लिये जनता से अपील करता हुआ कवि कहता है २ कि :—

"अन, धन, कपड़ा, ओढ़ना, लोटा, थारी, सब, जेकरा के जतना संपरेसे जुटा...
बिना परिवार, बिना घर के मरत बाटे, ओकरा के दान देइ धरम बढ़ाईं ...
गइला से बने त जल्दी वहाँ चलि जाईं, नाहीं त पारसल करके पठाईं ...
जेकरा जवने संपरे उहे देइ दिहीं, "दूधनाथ" एमें अब देर ना लगाईं ..."

उपाध्याय जी की तीसरी पुस्तक "गोविलाप छन्दावली" है जिसमें ... के महत्त्व का विशद वर्णन है। उपाध्याय जी ने सामयिक कवितायें भी ... सी लिखी हैं। आप अपने समय के प्रतिनिधि कवि थे। अतः कोई भी ... सामाजिक एवं राजनैतिक घटना आपकी लेखनी के वर्ण्य विषय बनने से ... नहीं रही है। आपकी भाषा सरल और ठेठ भोजपुरी है। भोजपुरी ... निखालिस मिठास हमें इनकी कविता में मिलती है। उपाध्याय जी ... कवियों के अग्रणी हैं। ये ही रचनायें इनकी कविता के सौंदर्य का परिचय ... लिये पर्याप्त हैं।

—:*:—

१. भूकम्प पचीसी, पृ० १।   २. वही पृ० २, ३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

७—बाबू रघुवीर नारायण

जीवन वृत्त—आप भोजपुरी के लोक प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि थे जो अपनी कविता 'बटोहिया' के कारण सदा अमर रहेंगे। श्री दुर्गा प्रसाद सिंह ने इनके जीवन वृत्त के संबंध में लिखा है कि "आप सारन जिले के 'नयागाँव' नामक ग्राम के निवासी हैं। उसी जिले के छपरा-नगर में आपका जन्म सन् १८८४ ई० ३० अक्टूबर को हुआ था। जिस समय आप छपरा-जिला स्कूल में पढ़ते थे, उस समय वहाँ साहित्य-महारथी पं० अम्बिकादत्त व्यास अध्यापक थे। उनसे आपकी कवि-प्रतिभा को बड़ा प्रोत्साहन मिला। बिहार के भारत-प्रसिद्ध विद्वान् पण्डित रामावतार शर्मा से भी आपने उसी स्कूल में शिक्षा पाई थी। स्कूल में आप हिन्दी, अँगरेजी तथा भोजपुरी में कविता करने लगे थे। पटना कालेज में पढ़ते समय आप अँगरजी में बहुत अच्छी कविता करने लगे थे। अँगरेज प्रोफेसरों ने आपकी अँगरेजी-कविता को बहुत सराहा था। बी० ए० पास करने के बाद आप पूर्णियाँ जिले के "वनैली" नरेश राजा कीर्त्यानन्द सिंह के प्राइवेट सेक्रेटरी हुए। बिहार के प्रसिद्ध महात्मा श्री सीतारामशरण भगवानप्रसाद जी 'रूपकला' की प्रेरणा से आप हिन्दी में भी कविता करने लगे। आरा-निवासी बाबू शिवनन्दन सहाय से आपने व्रजभाषा में कविता करना सीखा था; किन्तु अँगरेजी और हिन्दी की कविताओं से आपकी भोजपुरी कविताएँ अधिक प्रसिद्ध हैं। आपका सबसे प्रसिद्ध भोजपुरी गीत 'बटोहिया' है, जो २० वीं सदी के प्रारम्भ में दक्षिण-अफ्रिका, मॉरिशस और ट्रिनीडाड तक के प्रवासी भारतवासियों में लोकप्रिय हो गया था। सन् १९५२–५३ ई० में बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् से आपको डेढ़ हजार रुपये का वयोवृद्ध साहित्यसेवी सम्मान पुरस्कार मिला था। आपके सुपुत्र श्री हरेन्द्रदेव नारायण, बी० ए० ने—जो हिन्दी के भी प्रतिभाशाली कवि हैं—'कुँअर सिंह' नामक काव्य भोजपुरी में लिखा है। आपकी मृत्यु सन् १९५५ ई० में हुई।" १

१. भोजपुरी के कवि और काव्य पृ० २१६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

बाबू रघुवीर नारायण—भोजपुरी के एक प्रख्यात कवि थे जिनकी "बटोहिया" नामक कविता भोजपुरी प्रदेश में अत्यन्त लोकप्रिय और प्रसिद्ध है। इस प्रकार सुभद्रा कुमारी चौहान की झाँसी की रानी" शीर्षक कविता ने ख्याति प्राप्त किया है उसी प्रकार रघुवीर नारायणजी की बटोहिया भी भोजपुरी के कण्ठ का हार बन गयी है।

'बटोहिया' का अर्थ पथिक होता है। इस कविता में कवि ने भारत का जो सुन्दर चित्रण किया है वह अद्वितीय है। कवि कहता है ए बटोही (पथिक)! तुम जावो और हमारे देश-भारतवर्ष—को देखो जहाँ पर कोयल कुहुक कुहुक कर बोलती हैं। अपनी 'केका' से श्रोताओं के कुहरों में अमृत की वर्षा करती है। जहाँ का पवन शीतल, मन्द और सुगन्धित जहाँ की राष्ट्र प्रेमी स्त्रियाँ देश की स्वतन्त्रता के अभाव में विरह गीत अलापती है :—

"जाहु जाहु भइया रे बटोही ! हिन्द देखि आऊ
जहवां कुहुकि कोइलि बोले रे बटोहिया।
पवन, सुगन्ध, मन्द, अगर—चननवा से
कामिनी बिरह राग गावे रे बटोहिया ॥"

इतना ही नहीं, कवि को अपने देश के पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, नदी-नाले, तल्लैयों, पहाड़ और पर्वतों से भी घनिष्ठ प्रेम हैं और वह बटोही से प्रार्थना करता है कि तुम हमारे देश के इन सभी प्राकृतिक दृश्यों को देखो, इनसे प्रेरणा प्राप्त करो। वास्तव में वही व्यक्ति सच्चा देश-भक्त हैं, वही वास्तविक राष्ट्र प्रेमी है जिसे अपने देश की मिट्टी और उसके परमाणुओं से प्रेम हो। किसी संस्था का—चाहे वह संस्था कितनी ही पुरानी और बड़ी क्यों न हो—वर्षों मेम्बर बन जाने से ही कोई व्यक्ति देश-भक्त (पेट्रियाट) कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता। इस दृष्टि से हमारा कवि सच्चे अर्थों में देश-भक्त राष्ट्र-प्रेमी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भारत की प्राकृतिक सुन्दरता का वर्णन करने के पश्चात् रघुवीर नारायण इस देश के अतीत गौरव की ओर हमारी दृष्टि को आकृष्ट किया है और …द, वाल्मीकि, गौतम, कपिल और कणाद का नामकीर्तन कर हमारे हृदय के …आत्म-गौरव को जगाने की चेष्टा की है। इतना ही नहीं, वह हमारे …ट्रीय नेताओं (नेशनल हीरोज़) और इतिहास प्रसिद्ध सम्राटों-जैसे विक्रमादित्य, …शोक, पृथ्वीराज और शिवाजी आदि-का नामोल्लेख कर हमारे राष्ट्रीय गौरव …प्रोत्साहन प्रदान करता हैं। राम, कृष्ण, शंकराचार्य, रामानुज, रामानन्द …दि की चर्चा हमारे हृदय में आदर्श चरित्रों तथा दार्शनिक विचारों की प्रतिष्ठा …ने के लिए पर्याप्त है।

कहने का सारांश यह है कि रघुवीर नारायण जी की 'बटोहिया' हमारे …ए देश-भक्ति की गीता है, राष्ट्रप्रेम की वह पुस्तिका हैं जिसका पारायण …र कोई अपने देश से प्रेम करने की शिक्षा प्राप्त कर सकता है। संस्कृत के …कवि अमरुक के विषय में कहा गया है कि उनकी केवल एक गाथा सैकड़ों …काव्यों के समान है।

"अमरुककवेः एकः श्लोकोपि, प्रबन्धशतायते।"

यदि गुस्ताखी माफ हो, तो दबी जबान से मैं भी यही अर्ज करना …ता हूं कि 'बटोहिया' का एक एक पद्य—इसकी एक एक पंक्ति—सैकड़ों राष्ट्रीय …काव्यों से कहीं बढ़कर है, उनसे कहीं अधिक विशेषता रखती है। यहाँ इस …सिद्ध राष्ट्रीय गीत को पूर्णतया उद्धृत करने का लोभ संवरण नहीं किया …सकता।

—:*:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

बटोहिया

सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से,
मोर प्रान बसे हिम-खोह रे बटोहिया ॥१॥
एक द्वार घेरे राम हिम-कोतवालवा से,
तीन द्वार सिंधु घहरावे रे बटोहिया ॥२॥
जाहु-जाहु भैया रे बटोही हिन्द देखि आउ,
जहवाँ कुहुँकि कोइलि बोले रे बटोहिया ॥३॥
पवन सुगन्ध, मन्द अगर चननवाँ से
कामिनी बिरह-राग गावे रे बटोहिया ॥४॥
विपिन अगम, घन सघन बगन बीच;
चम्पक कुसुम रंग देवे रे बटोहिया ॥५॥
द्रुम बट, पीपल, कदम्ब, निम्ब, आम वृक्ष;
केतकी, गुलाब फूल फूले रे बटोहिया ॥६॥
तोता, तूती बोले रामा बोले भेंगरजवा से,
पपिहा के पी-पी जिया साले रे बटोहिया ॥७॥
सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से,
मोरे प्रान बसे गंगा धार रे बटोहिया ॥८॥
गंगा रे जमुनवाँ के झगमग पनियाँ से;
सरजू झमकि लहरावे रे बटोहिया ॥९॥
ब्रह्मपुत्र, पंचनद, घहरत निसि-दिन;
सोनभद्र मीठे स्वर गावे रे बटोहिया ॥१०॥
अपर अनेक नदी उमड़ि-घुमड़ि नाचे,
जुगन के जदुआ जगावे रे बटोहिया ॥११॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

आगरा, प्रयाग, काशी, दिल्ली, कलकतवा से;
मोरे प्रान बसे सरजू तीर रे बटोहिया ॥१२॥

जाउ-जाउ भैया रे बटोही ! हिन्द देखि आऊ,
जहाँ ऋषि चारो बेद गावे रे बटोहिया ॥१३॥

सीता के बिमल जस, राम-जस कृष्ण-जस;
मोरे बाप-दादा के कहानी रे बटोहिया ॥१४॥

व्यास, बाल्मीक, ऋषि, गौतम, कपिल देव,
सूतल अमर के जगावे रे बटोहिया ॥१५॥

रामानुज, रामानन्द, न्यारी प्यारी 'रूपकला;'
ब्रह्म-सुख-वन के भँवर रे बटोहिया ॥१६॥

नानक, कबीर, गौर, संकर, श्रीराम, कृष्ण;
अलख के गतिया बतावे रे बटोहिया ॥१७॥

विद्यापति, कालिदास, सूर, जयदेव कवि;
तुलसी के सरल कहानी रे बटोहिया ॥१८॥

जाउ-जाउ भैया रे बटोही हिन्द देखि आऊ,
जहाँ सुख झूले धान खेत रे बटोहिया ॥१९॥

बुद्धदेव, पृथु, बिक्रमार्जुन, सिवाजी के,
फिरि-फिरि हिय सुधि आवे रे बटोहिया ॥२०॥

अपर प्रदेस देस, सुभग सुघर बेस,
मोरे हिन्द जग के निचोड़ रे बटोहिया ॥२१॥

सुन्दर सुभूमि भैया भारत के भूमि जेहि,
जन 'रघुबीर' सिर नावे रे बटोहिया ॥२२॥

—:*:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

८—पं० महेन्द्र मिश्र

पं० महेन्द्र मिश्र का जन्म बिहार राज्य के छपरा जिला में हुआ था। की शिक्षा-दीक्षा विशेष नहीं हुई थी परन्तु आप प्रतिभा के धनी थे। आपने नामक लोक-गीतों की रचना की है जो उत्तर-प्रदेश के पूर्वी जिलों तथा राज्य के पश्चिमी जिलों में अत्यन्त लोक-प्रिय है १। आप बड़े ही रसिक के प्रेमी जीव थे। अतः आपका संबंध समाज के सभी स्तर के व्यक्तियों से सन् १९२० ई० के आस पास आपकी कविताएँ शाहाबाद, छपरा, मोतिहारी और बलिया आदि जिलों में बड़े प्रेम से गायी जाती थीं। द्वारा रचित पूर्वी गीतों की धुन इतनी लोक-प्रिय और प्रसिद्ध हुई कि पर रचे गये गीतों की धुनों का नाम ही 'पूर्वी धुन' पड़ गया। आपकी निम्नांकित तीन रचनाओं का पता चलता है—(१) मेघनाद-वध (२) मंजरी और (३) कजरी संग्रह। आपने रामायण का भोजपुरी में अनुवाद किया था जो संभवतः अभी तक अप्रकाशित है।२

पं० महेन्द्र मिश्र जी ने प्रचुर धन का उपार्जन किया और इसके साथ यश भी कमाया। परन्तु इनकी कीर्ति इनकी भोजपुरी-सेवा के कारण ही अमर रहेगी। कभी जमाना था जब इनके पूर्वी-गीतों की धूम मची और मंगलामुखी, वार-वनितायें विवाह तथा अन्य मांगलिक अवसरों पर गीतों को गा गा कर इनका प्रचार करती थीं। इसमें सन्देह नहीं कि गीतों में जो सरसता, कोमलता और हृदय—द्रावकता है वह अन्यत्र नहीं हैं।

पूर्वी के अतिरिक्त मिश्रजीने लोक-गीतों की एक अन्य विधा—झूमर- रचना की। इनके झूमर बड़े ही सुन्दर तथा सरस हैं। केवल दो ही उदाहरण यहाँ पर्याप्त हैं।

१. पं० महेन्द्र मिश्र और उनके पूर्वी गीतों का विवरण इसी ग्रन्थ में दिया गया है। अतः विशेष के लिए देखिए पृ० १९२—९४

२. दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह भो० क० का० पृ० २१७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(१)

नेहवा लगाके दुखवा दे गइले रे परदेसी सईयाँ ॥टेक॥
अपने त गइले पापी, लिखियो ना भेजे पाती,
अइसे निठुर स्याम हो गइले रे परदेसी सइयाँ ॥
विरहा जलावे छाती, निंदियो ना आवे राती,
कठिन कठोर जियरा हो गइले रे परदेसी सइयाँ ॥
कहत 'महेन्दर' प्यारे सुनऽहो परदेसी सइयाँ,
उड़ि-उड़ि भँवरा रसवा ले गइले हो परदेसी सइयाँ ॥

(२)

अवध नगरिया से अइली बरियतिया सुनु एरे सजनी,
जनक नगरिया भइले सोर सुनु एरे सजनी ॥
चलु-चलु सखिया देखि आईं बरियतिया, सुनु एरे सजनी,
पहिरऽ न लहरा-पटोर सुनू एरे सजनी ॥
राजा दसरथ जी के प्रान के अधरवा सुनु एरे सजनी,
कोसिला के अधिक पिआरए सुनु एरे सजनी ॥
कहत 'महेन्दर' भरि देखिले नयनवा, सुनु एरे सजनी,
फेर नाहीं जुटी संजोग, सुनु एरे सजनी ॥

—:*:—

९—भिखारी ठाकुर

भिखारी ठाकुर भोजपुरी के एक प्रतिभा शाली कवि थे। यद्यपि ये विशेष लिखे नहीं थे परन्तु भगवान् ने इन्हें काव्य की प्रतिभा प्रदान की थी। इस कवि ने अपनी सरस रचनाओं के द्वारा भोजपुरी साहित्य के प्रचार और प्रसार में जितना योगदान दिया है उतना संभवतः अन्य किसी ने नहीं। बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न व्यक्ति थे। क्या कविता की रचना करना और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

क्या नाटकों का लिखना, क्या नाट्यों का अभिनय और क्या नाचना—इन कार्यों में इनकी प्रतिभा समान रूप से पायी जाती है। नाटकों के अन्तर्गत इनके विदेसिया नाटक का विशेष वर्णन किया जायेगा। चूँकि यह व्यक्ति साथ ही कवि, नाटककार, अभिनेता और नर्तक था, अतः इनके कार्यों का वर्णन उचित स्थान में पृथक् पृथक् किया जायेगा। यहाँ केवल भिखारी ठाकुर के कविरूप के संबंध में कुछ लिखना उचित समझा जाता है।

इन्होंने अपना परिचय देते हुए स्वयं लिखा कि :—

"जाति के हजाम मोर कुतुबपुर ह मोकाम,
छपरा से तीन मील दियरा में बाबूजी।
पुरुब के कोना पर गंगा के किनारे पर,
जाति पेसा बाटे, विद्या नाहीं बाटे बाबूजी॥

जैसा कि इस आत्म-परिचय से विदित होता है, भिखारी ठाकुर—जो में भिखरिया के नाम से ही अधिक प्रसिद्ध हैं—कुछ पढ़े-लिखे व्यक्ति नहीं थे पर वे प्रतिभावान् पुरुष अवश्य थे। देहाती विषयों को लेकर जोरदार कविता करना भिखारी का काम है। इनकी कविता का जादू लोक-हृदय पर पड़े बिना नहीं रहता। 'विदेसिया नाटक' आपकी सर्वश्रेष्ठ रचना है जिसमें आपने परदेसी पति के वियोग में उसकी स्त्री की विरह वेदना की तीव्र व्यंजना की है। नीचे लिखा गीत उसी से उद्धृत है।

"दिनवा त बीते रामा तोरीं इन्तजरिया में
रतिया नयनवा ना नींद रे विदेसिया।
घरी राति गइलों राम, पिछली पहरवा से,
लहरे करेजवा हमार रे विदेसिया।
आमवा मोजरि गइले लगले टिकोरवा से,
दिन पर दिन पियराला रे विदेसिया।
एक दिन वहि जइहे जुलुमी बयरिया से,
डार पात जइहें भहराई रे विदेसिया।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

विरह का यह उपर्युक्त वर्णन कितना मार्मिक हुआ है। भिखारी ने 'प्यारी सुन्दरी वियोग' नामक एक पुस्तक लिखी है जिसका वर्ण्य विषय वही परदेसिया है। यहाँ गीत के अन्तिम चरणों में विदेसिया की जगह परदेसिया लिखा गया है।

"रंग महल बइठल सोचे प्यारी धनिया से,
बिरह सतावे जिया बीच परदेसिया।
चढ़ली जवनियाँ वइरिनि भइली हमरी से
मदन सतावै जिय माँहि परदेसिया।"

भिखारी ने सामाजिक बुराइयों का बड़ा सुन्दर चित्रण अपनी कविता में किया है। वृद्ध विवाह का यह वर्णन सुनिये जिसमें पुत्री अपने पिता से कहती है कि:—

"आँखि से सूझत कम, हर दम घींचत दम,
मथवा के वारवा चंवरवा हटे बाबूजी।
मुंहवा में दाँत नाहीं, गाले मुंह लार चुए,
बोलले पर भीतर सड़ल बदबू बाबूजी।
पति कर देखि गति, पागल भइल मति,
रोइ रोइ करीला विहान मोर बाबूजी।"

इसी प्रकार इन्होंने 'बेटी वियोग' और 'भिखारी बहार' में समाज की आलोचना की है। भिखारी ठाकुर वास्तविक अर्थ में हमारे जन-कवि हैं। भोजपुरी जनता की आत्मा ने इनकी कविता में अपना प्रकाशन प्राप्त किया है। ये जनता के सुख-दुख को, उनकी बुराई-भलाई को प्रकाश में लाते हैं। इसीलिए ये इतने जन-प्रिय कवि, सफल नाटककर्त्ता एवं प्रसिद्ध गायक हो गये हैं। इसका उल्लेख इन्होंने स्वयं किया है।

नाम भिखारी, काम 'भिखारी, रूप भिखारी मोर।
ठाट, पलानि, मकान, भिखारी, चहुँदिसि भइल सोर॥

वर्ण्य विषय :—भिखारी ठाकुर की कविता का वर्ण्य विषय भोजपुरी समाज है। इस समाज में आजकल जो बुराइयाँ प्रचलित हैं इनके ऊपर भिखारी ने अपनी लौह लेखनी चलाई है और सामाजिक कुरीतियों पर बड़ी ही गहरी चोट की है। वाल-विवाह, वृद्ध विवाह, तिलक-दहेज की प्रथा, पर्दा प्रथा आदि कुप्रथाओं का जैसा नग्न चित्र भिखारी ने अपनी कविता में किया है वैसा अन्यत्र उपलब्ध नहीं है। एक वृद्ध, वदसूरत, बकलोल, बेवकूफ, वदचलन और बुड़िवक वर का वर्णन कितना सुन्दर और सटीक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चलनी के चालल दुलहा, सूप के झटकारल हे।
दिअका के लागल बर, दुआरे बाजा बाजल हे॥
आँवा के पाकल दुलहा, झाँवा कें झारल हे।
कलछुल के दागल दुलहा, बकलोलपुर से भागल हे॥
सासु के, अँखिया में, अन्हवट बा छावल हे॥
आइ के देख बरवा के, पान चभुलावल हे॥
आम लेखा पाकल दुलहा, गाँव के निकालल हे।
अइसन बकलोल बर, चटकदेवा के भावल हे॥
मउरी लगावल दुलहा, जामा पहिरावल हे।
कहत 'भिखारी' हउवन, राम के बनावल हे॥

इसी प्रकार भिखारी ने सुप्रसिद्ध 'वनवारी हो' शीर्षक गीत में किसी बे विवाह का बड़ा ही सजीव वर्णन किया है। इस विवाहिता स्त्री का इतना छोटा तथा नादान है कि रात को जब वह गीदड़ (सियार) आवाज़ सुनता है तब उसे भेड़िया या सिंह की आवाज़ समझकर चिल्लाकर लगता है और बहुत समझाने पर भी डरके मारे नहीं सोता। इस बालक की अपने कर्मों को कोसती तथा अपने भाग्य की निन्दा करती हुई भोलानाथ-शिव—को उलाहना देती हुई कहती है कि भोले बाबा! आप तो सब अन्न, धन-धान्य और सम्पत्ति देते हैं। परन्तु मैं ने आपका क्या बिगाड़ा था आपने इस नन्हें, दुधमुँहे बच्चे को मेरे गले मढ़ दिया। जब मैं इसके सोती हूँ, तब मेरा सारा शरीर एड़ी से पैर तक आक्रोश तथा दुःख के जल उठता है। इस कारुणिक गीत की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है।

"बनवारी हो, हमरा के लरिका भतार —टेक
लरिका भतार लेके सूतली ओसरवा,
बनवारी हो, जरि गइले एड़ी से कपार ॥१
खेतवा में सुने जब सियरा के बोलिया,
बनवारी हो, रोवे लागल लरिका भतार ॥२
चुप होखु, चुप होखु, ननदी के भइया;
बनवारी हो, रहरी में बोलेला हुँडार॥३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

यह गीत क्या है हिन्दू समाज की विषम बुराइयों से प्रपीड़िता एक अबला के का कारुणिक प्रलाप है। यह करुण रस की स्रोतस्विनी है जिसमें पाठकों मन प्रवाहित होता चला जाता है। इसी प्रकार से 'मेला घूमनी; 'गंगा नी' और 'चउरा पूजनी' आदि कविताओं को लिखकर भिखारी ठाकुर ने 'बेलवा मेहरारु' का चित्रण किया है जो पारिवारिक कर्तव्यों का समुचित पालन न कर केवल धर्म के नाम पर मनमाना आचरण करता ती हैं। इस प्रकार भिखारी ठाकुर ने भोजपुरी समाज की बुराइयों को पहिचान उन पर गहरी चोट की है जिससे काश ! हम अपनी बुराई को छोड़ सके।

भोजपुरी प्रदेश में मक्का—जिसे लोक भाषा में मकई या जनेरा कहा ता है—अत्यधिक मात्रा में उत्पन्न होता है। सच बात तो यह है कि रवी फसल के पैदा होने के पहले यही भोजपुरियों का प्रधान भोज्य पदार्थ है। ऐसे प्रधान भोज्य वस्तु का वर्णन करना स्वाभाविक ही है। भिखारी कुर ने मकई के पैदा होने से लेकर इसके पकाने तथा खाने के समस्त क्रिया पों का बड़े विस्तार के साथ विवरण प्रस्तुत किया है। इस गीत की कुछ तियाँ इस प्रकार हैं।

कइया हो ! तोर गुन गूँथवि माला ॥ टेक ॥
से तरत भव, लावत गरीब लव, पूरा-पूरा पानी दिआला ॥
भरि झोरी-झारी, जहँ तहँ खोरी-खारी, खात बाड़न बाल गोपाला ॥
अनहरा ढाठा खाले लगहर नाठा, लेंढ़ा घोनसारी में झोंकाला ॥
मरचाई-नून, खइला से सूखेला खून, साधू लेखा रूप बनी जाला ॥
, गूर, दही; सन, कृष्ण कृष्ण कही-कही, मुँहवाँ में माजा बुझाला ॥
भगवान् से बिमान खास आई जात, मन बैकुण्ठे चलि जाला ॥
त 'भिखारी' खेला, सूरदास जइहन मेला, गंगा तोरे बहुत बोआला ॥
मकइया हो ! तोर गुन गूथँवि माला ॥

परन्तु इस लोक कवि की सबसे प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय कविता विदेसिया हैं सकी चर्चा गतपृष्ठों में की जा चुकी है। भोजपुरी प्रदेश का शायद ही ऐसा ई व्यक्ति हो जो इस गीत से परिचित न हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

विदेसिया

'विदेसिया' के नाम से जो लोक-गीत भोजपुरी-प्रदेश में अत्यन्त लोक... हैं वह पूरा गीत इस प्रकार है। इसमें प्रोषित-पतिका नायिका की विरह... का वर्णन बड़े मर्मस्पर्शी शब्दों में किया गया है :

"मचिया बइठल धनी मने-मने समुझे से,
भुइयाँ लोटेला लामी केस रे विदेसिया ॥१॥

गवना कराई सइयाँ घर बइठवले से,
अपने चलेलें परदेस रे विदेसिया ॥२॥

चढ़ली जवनियाँ वइ्ररिन भइली, हमरी से,
के मोर हरि हें कलेस रे विदेशिया ॥३॥

केकरा ले लिखिके मैं पतियाँ पठइवों से,
केकरा से पठवों सनेस रे विदेसिया ।४॥

तोहरे कारन सइयाँ भभूती रमइवों से,
धरवों जोगनियाँ के भेस रे विदेसिया ॥५॥

कवलों ले फिरिहे दइब निरमोहिया से,
मोरा विरहिनियाँ के भाग रे विदेसिया ॥६॥

हमरो सुरति सइयाँ तुहु विसरवले से,
रहले सवति-रस पागि रे विदेसिया ॥७॥

दिनवा वितेला सइयाँ बटिया जोहत तोर,
रतिया वितेला जागि-जागि रे विदेसियां ॥८॥

घरी राति गइले पहर रात गइलें से,
धधके करेजवा में आगि रे बिदेसिया ॥९॥

आमवा मोजरि गइले लगले टिकोरवा से,
दिन पर दिन पियराला रे विदेसिया ॥१०॥

एक दिन बहि जइहें जुलुमी बयरिया से,
डारि पात जइहें भहराइ रे विदेसिया ॥११॥

झमकि के चढ़ली मैं अपनी अटरिया से,
चारु ओर चितवों चिहाइ रे विदेसिया ॥१२॥

कतहूँ ना देखों रामा सइयाँ के सुरतिया से,
जियरा त गइले मुरझाई रे विदेसिया ॥१३॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

१०—मनोरंजन प्रसाद सिनहा

भोजपुरी के कवियों में मनोरंजन प्रसाद सिनहा का एक विशेष स्थान है। अंग्रेजी के विद्वान् होते हुए भी आपने भोजपुरी में काव्य-रचना की जिससे आपके मातृभाषा प्रेम का पता चलता है। अंग्रेजी के प्राध्यापक तथा प्रिन्सिपल होते हुए भी आपने भोजपुरी को अपनाया, यह हमारे लिये गर्व और गौरव का विषय है।

मनोरंजन प्रसाद जी का जन्म १० अक्टूबर सन् १६०० ई० में बिहार राज्य के शाहाबाद जिले में स्थित सूर्यपुरा नामक स्थान में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री राजेश्वर प्रसाद सिनहा था जो अंग्रेजी शासन काल में सब-जज के पद पर प्रतिष्ठित थे। कुछ वर्षों के पश्चात् मनोरंजन बाबू का परिवार सूर्यपुरा छोड़कर शाहाबाद जिलेके ही डुँमराँव नामक स्थान में आकर बस गया। सन् १६२० ई० में महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन में आपने भाग लिया था और देश-प्रेम के कारण कारावास की भी यातना इन्हें सहनी पड़ी थी। इन्हीं दिनों में आपने फिरंगिया नामक कविता की रचना की थी जिसने बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की।

अनेक वर्षों तक आप हिन्दू विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में प्राध्यापक थे। इसके पश्चात् आपकी नियुक्ति राजेन्द्र कालेज, छपरा (बिहार) में प्रिन्सिपल के पद पर हुई। यहाँ आपने बीसियों वर्षों तक प्राचार्य के महनीय पद का कार्य सुचारू रूप से सँभाला। यहाँ से अवकाश प्राप्त करने पर आपने हिन्दी विद्यापीठ, देवघर (वैद्यनाथ धाम) में कुलपति के पद को सुशोभित किया। जीवन के अन्तिम दिनों में आप संसार से विरक्त होकर भगवान् श्रीकृष्ण की क्रीड़ास्थली वृन्दावन में रहने लगे थे। आपका देहावसान गत वर्ष—नवम्बर सन् १६७१ ई० में—राँची में हुआ।

मनोरंजन प्रसाद सिनहा—जो प्रिन्सिपल मनोरंजन के नाम से ही अधिक प्रसिद्ध थे—का स्वभाव बड़ा ही सरल और सीधा था। १६५८ ई० में अखिल भारतीय लोक-संस्कृति सम्मेलन के अवसर पर आयाजित कवि—सम्मेलन के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अध्यक्ष पद को सुशोभित करने के लिए इस लेखक ने इन्हें निमंत्रित किया। इस आमंत्रण को नम्रता के साथ अस्वीकार करते हुए आपने जो पद्यमय उत्तर दिया था, वह निम्नांकित है।

"आइल वुढ़ापा थाकल देहिया,
अब नाहीं रहल जवानी।
अब यह देहिया से सहलो ना जाला
आताना अधिक परेसानी॥
अरज करत बानी, हमार कहल मानी।

प्रिन्सिपल मनोरंजन हिन्दी और भोजपुरी में समान रूप से कविता करते हैं परन्तु आपकी ख्याति आपकी भोजपुरी कविताओं पर ही आश्रित है। 'उत्तराखण्ड के पथ पर' नामक आपकी पुस्तक में यात्रा के प्रसंग में आपकी भोजपुरी बोली की कुछ सुन्दर कवितायें भी पायी जाती हैं। आपकी भोजपुरी कविताओं का कोई संग्रह संभवतः अभी तक प्रकाश में नहीं आया है। आपने आज से तीस-पैंतीस वर्ष पूर्व हंस नामक पत्रिका के "काशीअंक" में प्रकाशित काशी नगरी का वर्णन बहुत सुन्दर तथा सरस भोजपुरी में किया था। परन्तु आपकी सबसे लोकप्रिय तथा प्रसिद्ध कविता "फिरंगिया" है जो असहयोग आन्दोलन के दिनों में जनता के गले का हार बन गयी थी। जैसा कि इस राष्ट्रीय गीत के लेखक ने लिखा है, इस कविता (फिरंगिया) की रचना श्री रघुवीर नारायण की "वटोहिया" गीत के अनुकरण पर की गई थी १। 'वटोहिया' में यदि हमारे अतीत के गौरव का चित्रण किया गया है तो "फिरंगिया" में अंग्रेजी शासन के अत्याचारों और अनाचारों का नग्न चित्र हमारे सामने प्रस्तुत करने का सफल प्रयास हुआ है।

---

१. 'भोजपुरी' पत्रिका (सम्पादक—महेन्द्र शास्त्री) वर्ष १, अंक १ पृष्ठ-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

यद्यपि प्रिन्सिपल मनोरंजन—आप इसी नाम से विख्यात हैं—अंग्रेजी के विद्वान् थे परन्तु आपकी प्रतिभा ने हिन्दी का माध्यम लेकर विकास को प्राप्त किया है। आप खड़ी बोली और भोजपुरी में समान रूप से कविता करते हैं। आपका हृदय जितना सरल है, कविता भी उतनी ही मधुर है। आप हिन्दी के गद्य लेखक भी हैं। 'उत्तराखंड के पथ पर' नामक आपकी प्रसिद्ध पुस्तक है जिसमें बद्रीनाथ की यात्रा का रोचक वर्णन किया गया है। इसमें बीच-बीच में सरस कविताएँ भी दी गई हैं। मनोरंजन जी के अनेक लेख और कवितायें पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। परन्तु यहाँ हमारा संबंध आपकी 'फिरंगिआ' नामक कविता से ही है।

'फिरंगिआ' की रचना सन् १९२१ ई० के तूफानी दिनों में हुई थी। इसका उद्देश्य देहाती लोगों में राष्ट्रीय जागृति फैलाना था। अतः इसकी रचना खड़ी बोली में न कर, कवि ने लोकभाषा भोजपुरी में की है। उन दिनों 'फिरंगिआ' का कितना प्रचार था वह केवल इसी बात से समझा जा सकता है कि इस कविता को ब्रिटिश सरकार ने जब्त कर लिया था, फिर इसकी प्रतियाँ छापकर भारत के बाहर सुदूर फीजी तथा मारिशस द्वीपों भेजी गईं और वहाँ के भारतीय, विशेषतः भोजपुरी लोग, बड़े प्रेम से उसे गाते थे। इस गीत की रचना का कारण, इसकी जनप्रियता तथा प्रसिद्धि की कथा स्वयं प्रिन्सिपल मनोरंजन जी ने बड़े विस्तार के साथ लिखी है।

इस गीत की रचना रघुवीर बाबू की 'बटोहिया' नामक सुप्रसिद्ध कविता के आधार पर की गई है। इस 'बटोहिया' गीत की पहिली पंक्ति "सुन्दर भूमि भैया भारत के देसवा से, मोर प्राण बसे हिम खोह रे बटोहिया" है। इसी पंक्ति को सामने रखकर मनोरंजन जी ने अपनी फिरंगिआ की पहली पंक्ति की रचना इस प्रकार की है—

सुन्दर सुघर भूमि भारत के रहे रामा,
आज उहे भइल मसान रे फिरंगिया।

फिर कवि भारत में व्यापक गरीबी तथा अन्न कष्ट को लक्षित कर लिखता है:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अन्न, धन, जन, बल, बुद्धि सब नास भइल,
कौनों के ना रहल निशान रे फिरंगिआ।
जहवां थोड़े ही दिन पहिले ही होत रहे;
लाखों मन गल्ला और धान रे फिरंगिया।
उहवे पर आज रामा मथवा पर हाथ धइके,
बिलखी के रोवेला, किसान रे फिरंगिया।

कवि की वाक् वैखरी स्खलित होती है और वह आततायी ब्रिटिश को सावधान करते हुये चेतावनी देता है कि—

चेत जाउ चेत जाउ भैया रे फिरंगिया तें,
छोड़ दे अधरम के पन्थ रे फिरंगिया।
छोड़ के कुनीतिया सुनीतिया के राह गहु,
भला तोर करसु भगवान् रे फिरंगिया।
एको जो रोउवां निरदोसिया के कलपी त,
तोर नास हो जाई सनु रे फिरंगिया।
दुखिया के आह तोर देहिया के भसम क दी,
जरि भूनि जइबै छार होइबे रे फिरंगिया।

उस समय कौन यह जानता था कि 'क्रान्तदर्शी' इस कवि की भविष्य इतनी शीघ्र सत्य होगी। अंग्रेजी राज्य के कारण भारतीयों का जो पतन हुआ है उसकी ओर संकेत करते हुए कवि कहता है कि—

मरदानापन अब तनिको रहल नाहीं,
ठकुर सुहाती बोले बात रे फिरंगिया।
रात दिन करेले खुसामद सहेबवा के,
सहेले विदेसिया के लात रे फिरंगिया॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

वास्तव में हमारा नैतिक पतन कितना अधिक है इसका वर्णन नहीं किया सकता। पंजाब के निर्मम हत्याकाण्ड का कवि ने जिन दुखःद शब्दों में किया है उसे पढ़ कर किस पाषाण का हृदय न पसीज उठेगा।

आजु पंजाबवा के करि के सुरतिया से,
फाटला करेजवा हमार रे फिरंगिया।
भारत के छाती पर भारत के बच्चन के,
बहल रकतवा के धार रे फिरंगिया॥
दुधमुंहा लाल सम, बालक मदन सम,
तड़पि तड़पि देले जान रे फिरंगिया।

इस प्रकार प्रिन्सिपल मनोरंजन ने अपनी इस 'फिरंगिया' कविता द्वारा राष्ट्रीय चेतना के उद्बोधन में बड़ी सहायता की है। फिरंगिया का गीत यहाँ प्रस्तुत किया जाता है—

फिरंगिया

सुन्दर सुघर भूमि भारत के रहे रामा,
आज इहे भइलऽ मसान रे फिरंगिया।१।
अन्न, धन, जन, बल, बुद्धि, सब नाश भइल,
कौनो के ना रहल निसान ,, ,, ।२।
जहँवां थोड़े ही दिन पहिले ही होत रहे,
लाखो मन गल्ला और धान ,, ,, ।३।
उहें आज हाय रामा ! मथवा पर हाथ धरि,
बिलखि के रोवेला किसान रे फिरंगिया।४।

१६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

हाय दैव ! हाय ! हाय !! कौना पाप भइल बाटे,
हमनी के आज अइसन हाल रे गिरंगिया ।५।
सात सौ लाख लोग दू-दू साँझ भूखे रहे,
हरदम पड़ेला अकाल ,, ,, ।६।
जेहु कुछ बाँचेला त ओकरो के लादि-लादि,
ले जाला समुन्दर के पार ,, ,, ।७।
घरे लोग भूखे मरे, गेहुँआ बिदेस जाय,
कइसन बाटे जग के व्यवहार ,, ,, ।८।
जहँवाँ के लोग सब खात ना अघात रहे,
रुपया से रहे मालामाल ,, ,, ।९।
उहें आज जेने-जेने अँखिया घुमाके देखु,
तेने-तेने देखबे कंगाल ,, ,, ।१०।
बनिज-बेपार सब एकौ रहल नाहीं,
सब कर होइ गयल नास ,, ,, ।११।
तनि-तनि बात लागि हमनी का हाय रामा,
जोहिले बिदेसिया के आस ,, ,, ।१२।
कपड़ो जो आवेला बिदेश से तो हमनी का,
पेन्ह के रखिला निज लाज ,, ,, ।१३।
आज जो बिदेसवा से आवेना कपड़वा तऽ,
लंगटे ही करब जा निवास ,, ,, ।१४।
हमनी से ससता में रुई लेके ओकरे से,
कपड़ा बना-बना के बेचें ,, ,, ।१५।
अइसहीं अइसहीं दीन भारत के धनवाँ के,
लूटि-लुटि ले जाला बिदेसे रे फिरंगिया ।१६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

रुपया चालिस कोटि भारत के साले-साल,
चल जाला दूसरा के पास रे फिरंगिया ।१७।
अइसन जो हाल आउर कुछ दिन रही रामा,
होइ जाइ भारत के नास ,, ,, ।१८।
स्वाभिमान लोगन में नामों के रहल नाहीं,
ठकुरसुहाती बोले बात ,, ,, ।१९।
दिन रात करे ले खुसामद सहेबवा के,
चाटेले बिदेसिया के लात ,, ,, ।२०।
जहँवाँ भइल रहे राजा परताप सिंह,
और सुरतान अइसन वीर ,, ,, ।२१।
जिनकर टेक रहे, जान चाहे चलि जाय,
तवहू नवाइब ना सिर ,, ,, ।२२।
उहँवे के लोग आजु अइसन ऊधम भइले,
चाटेले बिदेसिया के लात ,, ,, ।२३।
सहेवा के सुखी लागी करेलन सबहीन,
अपनो भइअवा के घात ,, ,, ।२४।
जहँवाँ भइल रहे अरजुन, भीम, द्रोण,
भीषम, करन सम सूर ,, ,, ।२५।
उन्हें आज झुंड-झुंड कायर के बास बाटे,
साहस वीरत्व भइल दूर ,, ,, ।२६।
केकरा करनिया कारन हाय भइल बाटे,
हमनी के अइसन हवाल ,, ,, ।२७।
धन गइल, बल गइल, बुद्धि गइल, विद्या गइल,
हो गइलीं जा निपटे कंगाल रे फिरंगिया ।२८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सब विधि भइल कंगाल देस तेहू पर,
टीकस के भार तें बढ़ौले रे फिरंगिया ।२९।
नून पर टिकसवा, कूली पर टिकसवा,
सब पर टिकसवा लगौले ,, ,, ।३०।
स्वाधीनता हमनी के नामों के रहल नाहीं,
अइसन कानून के बरे जाल ,, ,, ।३१।
प्रेस ऐक्ट, आर्म्स ऐक्ट, इंडिया डिफेंस ऐक्ट,
सब मिलि कइलस ई हाल ,, ,, ।३२।
प्रेस ऐक्ट लिखे के स्वाधीनता के छीनलस,
आर्म्स ऐक्ट लेलस हथियार ,, ,, ।३३।
इंडिया डिफेंस ऐक्ट रच्छक के नाम लेके,
भच्छक के भइल अवतार ,, ,, ।३४।
हाय ! हाय ! केतना जुवक भइले भारत के,
ए जाल में फँसि नजरबंद ,, ,, ।३५।
केतना सपूत पूत एकरे करनवा से,
पड़ले पुलिसवा के फंद ,, ,, ।३६।
आजो पंजबवा के करिके सुरतिया से,
फाटेला करेजवा हमार ,, ,, ।३७।
भारते के छाती पर भारते के बचवन के,
बहल रकतवा के धार ,, ,, ।३८।
छोटे-छोटे लाल सब बालक मदन सब,
तड़पि-तड़पि देले जान ,, ,, ।३९।
छटपट करि-करि बूढ़ सब मरि गइले,
मरि गइले सुघर जवान ,, ,, ।४०।
बुढ़िया महतारी के लकुटिया छिनाइ गइल,
जे रहे बुढ़ापा के सहारा ,, ,, ।४१।
जुबती सती से प्राणपति हा विलग भइले,
रहे जे जीवन के आधार रे फिरंगिया ।४२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

साधुओ के देहवा पर चूनवा के पोति-पोति,
रंडि आगे लँगटा करौले रे फिरंगिया,, ।४३।
हमनो के पसु से भी हालत खराब कइले,
पेटवा के बल रेंगवले ,, ,, ।४४।
हाय ! हाय ! खाय सबे रोवत विकल होके,
पीटि-पीटि आपन कपार ,, ,, ।४५।
जिनकर हाल देखि फाटेला करजेवा से,
अँसुआ बहेला चहुँधार ,, ,, ।४६।
भारत बेहाल भइल लोग के ई हाल भइल,
चारों ओर मचल हाय हाय ,, ,, ।४७।
तेहू पर अपना कसाई अफसरवा के,
देले नाहीं कवनो सजाय ,, ,, ।४८।
चेति जाउ चेति जाउ भैया रे फिरंगिया से,
छोड़ि दे अधरम के पंथ ,, ,, ।४९।
छोड़ि दे कुनीतिया सुनीतिया के बांह गहु,
भला तोर करो भगवन्त ,, ,, ।५०।
दुखिआ के आह तोर देहिआ भसम करी,
जरि-भूनि होइ जइबे छार ,, ,, ।५१।
ऐहीसे त कहतानी भैया रे फिरंगी तोहे,
धरम से करु तें बिचार ,, ,, ।५१।
जुलुमी कानून ओ टिकसवा के रद क दे,
भारत के दे दे तें स्वराज ,, ,, ।५२।
नाहीं तऽई सांचे-सांचे तोरा से कहत बानी,
चौपट हो जाइ तोर राज ,, ,, ।५३।
तैंतिस करोड़ लोग अँसुआ बहाई ओमें,
बहि जाइ तोर समराज ,, ,, ।५४।
अन्न-धन-जन-बल सकल बिलाय जाई,
डूब जाई राष्ट्र के जहाज रे फिरंगिया ।५५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

११—महाराज खड्गबहादुर मल्ल

महाराज खड्गबहादुर मल्ल गोरखपुर जनपद के भूतपूर्व मझौली राज्य के राजा थे। आप बड़े मधुर प्रकृति के व्यक्ति थे। आपका उपनाम कवि 'लाल' था। आप भोजपुरी और हिन्दी में समान रूप से सुन्दर कविता करते थे। भोजपुरी में रचित आपकी कजलियों का संग्रह आपकी 'सूधाबूंद' नामक पुस्तक में पाया जाता है। कजली के ये गीत बड़े ही रसोत्पादक हैं। डा० ग्रियर्सन ने लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया में भोजपुरी भाषा के साहित्य के प्रसंग में खड्गबहादुर मल्ल की उपर्युक्त पुस्तक का उल्लेख किया है। "सूधाबूंद" खड्गविलास प्रेस पटना से सन् १८८२ ई० में प्रकाशित हुई थी। कालक्रम की दृष्टि से इनका स्थान बाबू रामकृष्ण वर्मा से भी पहिले होना चाहिए। इनका देहान्त वर्तमान शताब्दी के प्रथम दशक के अन्त (सन् १९१...) में हुआ था। यद्यपि आपका पार्थिव शरीर अब इस संसार में नहीं है। पर आपका यशः—शरीर आज भी हमारे लिए 'सुधाबूँद' के रूप में सुरक्षित है।

महाराज खड्गबहादुर की कजलियाँ बहुत सरस तथा सुन्दर बन पड़ी हैं। परदेसी की प्रीति कितनी अस्थायी और चंचल होती है, इसको लक्ष्य कर कवि कहता है कि—

> परदेसिया के प्रीति जइसे बदरा के छाँह।
> प्रीति लगाके निरबाह करत नहिं नाहक पकरे बाँहि।
> 'लाल' चारि दिन नेह लगाके, दाग देत जिय मांहि॥

निर्मोही पति कभी घर नही आता। अतः उसके वियोग में उसकी स्त्री को मूर्छा आरही है। यह कजली कितनी सरल है। प्रोषित-पतिका नायिका का यह चित्रण कितना मर्मस्पर्शी है जिससे पाठकों का हृदय भी बरबस उसकी ओर आकृष्ट हो जाता है। श्री मल्ल की सरस कजलियों का यह सुन्दर संग्रह अब उपलब्ध नहीं है। इसके पुनर्मुद्रण की बहुत बड़ी आवश्यकता है। आशा है कोई शोधी विद्वान् इसका सम्पादन कर इसे यथाशीघ्र प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे। इनकी कजलियों के दो उदाहरण लीजिए—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

(१)

पिया निरमोहिया नाहीं आवे रे भवनवाँ रामा,
रहि रहि आवेला झवनवाँ रे हरी !
काहे मोरे अँचरा से तें जोरले रे दमनवाँ रामा,
केहि कारन ले अइले गवनवाँ रे हरी !
चढ़लि जवनियाँ दूजे वहेला पवनवाँ रामा,
तीजे जियरा मारेला सवनवाँ रे हरी !

(२)

कड़कै विजुलिया धड़कै छतिया मोर जनिया
तापर रिम-झिम वरसेला सवनवाँ रे हरी !
भावे ना भवनवाँ पिय विन आवेला झवनवाँ रामा
सखि कब होइहैं मोरा गवनवाँ रे हरी !
केहू ना सुनावे टोपीवलवा के अवनवाँ रामा
जियरा मारे पूरुवा पवननाँ रे हरी !

—०—

१२—बाबू दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह

भोजपुरी साहित्य के इतिहास में बाबू दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह का एक [...]नीय स्थान है। ये भोजपुरी साहित्य के उन्नायक, सेवक और साहित्यकार [...]। आप प्रतिभा के धनी थे। अतः एक साथ ही आप भोजपुरी के कवि, [...]कार, नाटककार, उपन्यासकार, कहानीकार और आलोचक भी थे। [...]पने साहित्य की सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई हैं और इस कार्य में [...]पको बहुत कुछ सफलता भी प्राप्त हुई है। बाबू दुर्गाशंकर प्रसाद ने जो साहित्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पैदा किया है उसकी उत्तमता के सम्बन्ध में भले ही विद्वानों में मतभेद हो सकता है, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि भोजपुरी-भारती की आपने एकाग्रचित्त आराधना की है। आपने भोजपुरी में महाकाव्य लिखा, गीतकाव्य की रचना की, नाटक और उपन्यासों की रचना की, निबन्ध की ओर लेखनी चलायी, आलोचना के क्षेत्र में भी कुछ योग-दान दिया। इस प्रकार आपकी बहुमुखी प्रतिभा ने भोजपुरी के किसी भी क्षेत्र को अछूता नहीं छोड़ा है।

अपने जीवन की गोधूलि में आप सांसारिक झंझटों से ऊब गये और अपने गाँव से थोड़ी दूर पर "रैन बसेरा" बनाकर वहीं भोजपुरी का अलख जगाया करते थे। आपने अखिल भारतीय लोक संस्कृति सम्मेलन के इलाहाबाद (१९५८) तथा उज्जैन (१९६१ ई०) के अधिवेशनों में पधारने की कृपा की थी और भोजपुरी साहित्य के संबंध में अपना लेख भी पढ़ा था। हाल ही में आपकी असामयिक तथा दुःख-दायी मृत्यु हुई है। इनके देहान्त से भोजपुरी साहित्य ने अपना एक महान् सेवक खो दिया। दुर्गाशंकरजी इतिहास-प्रसिद्ध बाबू कुँवर सिंह के वंश में पैदा हुए थे। अतः वे अपने को 'महाराजकुमार' लिखा करते थे। कविता में इनका उपनाम 'नाथ' था। अब दुर्गा शंकर जी की कहानी, उन्हीं की जबानी सुनिये।

"आपका जन्म बिहार राज्य के शाहाबाद जिले के दिलीपपुर ग्राम में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री विश्वनाथ प्रसाद सिंह था। आपका जन्म संवत् १९५३ वि० में मार्गशीर्ष कृष्ण (वदी) एकादशी, सोमवार के दिन हुआ था। आपने सन् १९२१ ई० में मैट्रिक की परीक्षा पास की। सन् १९२२ में आपने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश किया। तबसे आप हिन्दी तथा भोजपुरी की सेवा बराबर करते आ रहे हैं। हिन्दी में आपकी १० पुस्तकें प्रकाशित और २० पुस्तकें अप्रकाशित हैं।"[1] भोजपुरी साहित्य के संबंध में आपकी निम्नांकित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं :—

१. भोजपुरी के कवि और काव्य पृ० २७८–७९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

(१) भोजपुरी लोक-गीतों में करुण-रस (२) भोजपुरी के कवि और काव्य (३) साहित्य रामायन (४) गुनावन (५) ऐटम के युग में (६) बाबू कुँवर सिंह (नाटक) (७) भोज, भोजपुर और भोजपुरी प्रदेश (८) कुँवर सिंह—एक अध्ययन (९) भोजपुरी-एक समीक्षा।

साहित्य रामायन—यह भोजपुरी का सर्व प्रथम महाकाव्य है। भगवान् राम के जीवन चरित को लेकर इस कवि ने उसे भोजपुरी में लिखा है। इस महाकाव्य का जो अंश अब तक प्रकाश में आया है उसमें केवल किष्किन्धा और सुन्दरकाण्ड की कथा का ही समावेश हुआ है। शेष अंश को भी आप बहुत शीघ्र ही छपवाने वाले थे परन्तु इनकी जीवितावस्था में यह ग्रन्थ पूर्णतया प्रकाशित नहीं हो सका।

दुर्गाशंकर जी की कवित्व:शक्ति प्रधानतया वर्णनात्मक है। अतः भोजपुरी भाषा में रामकथा को लिखने में इन्हें सफलता प्राप्त हुई है। परन्तु इस महाकाव्य में कितना काव्यत्व है यह कहना कठिन है। कहीं कहीं यतिभंग के कारण छन्दो भंग भी पाया जाता है। एक दो उदाहरण यहाँ पर्याप्त है।

(१)

पाप पुन्नि त धरम क व्याखा। सास्त्र, पुरान, वेद क लेखा ॥
सुख दुख, असुभ, सुभ, कर तांतां ! राज, मोह, छोह, रिपु, भ्राता ॥
सकल भुवन अस जोरल नाता ! मुअत चिता पर साथ जराता ॥
पंच तत्त पिंजरा बिच बँधल ! की ई प्रान की हवा सँजोगल ॥
जे क बिघटन साँस क बिछुरन ! अनु से अनु के साथ क अलगन ॥
इहे सँयोग कि जीव अवरू ? प्रकृति, पुरुस के का अन ठवरू ॥१

१ साहित्य रामायन—किस्किन्धाकाण्ड पृ० १०७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

(२)

हिय से हिय सटि मेलत निसंग । धइ धइ दाबि क बाँधत अंक ॥
गोल-कठोर कुच उर से सटल । रहि रहि उसकत उनमदि दवल ॥
जीमि झूमी पोअत मुदि नयन । आँनद मद-रस भइल विलयन ॥
सुरति विरति रमि दुनु रस लेत । देखत मुखि चुमि चूमा देत ॥
अस रति अति जब लेति उसास । दृग अँध झँपल, सलज मुख हाँसि ॥
सुधि नाहिं तन कि छिपल उधार । जनु रति मदन, मारल सिकार ॥[1]

यद्यपि काव्यत्व की दृष्टि से इस 'साहित्य रामायन' का विशेष महत्व ... है । फिर भी "निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते" इस सूक्ति के ... हमें इस महाकाव्य का सन्मान तथा समादर करना चाहिए । भोजपुरी में ... महाकाव्य लिखने का श्रेय दुर्गाशंकर जी को प्राप्त है ।

गुनावन—यह इस कवि की अध्यात्म परक कविताओं का संकलन ... इस ग्रन्थ में दुर्गाशंकर जी ने अपनी कविताओं का हिन्दी तथा अंग्रेजी-दोनों भाषा... अनुवाद किया है जिससे सभी लोग इसका आनन्द ले सकें । चूँकि कवि की ... वृद्धावस्था की रचना है । अतः उसने अपने अध्यात्म ज्ञान के भण्डार ... इसमें भर दिया है । सृष्टि के निर्माण का कारण कितनी सरल भाषा में ... ढंग से कहा गया है ।

लगाईला जब बाग हम, सुख देखि के जित पाईला
दुनिया बनावे के उनुकर, कारन कवो इहे रहल ।
जग के जे ई खेल बाटे, कइसन सुख सुन्दर आटे,
खेले खातिर खेल ईहो, उनके नू बनावन रहल ॥

संसार की छलना, अकृतज्ञता से कवि ऊब गया है । अतः उसके ... संसार से वैराग्य उत्पन्न हो गया है । परन्तु वह इसकी शिकायत किसी से ... नहीं करता, आप ही आप सोचता है और अपने मन को स्वयं समझा... सन्तोष का अनुभव करता है ।

---

1. साहित्य रामायन सुन्दर-काण्ड—पृ० १३५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

जग के खूब सेवा कइलीं, पूजो भी कम ना कइलीं।
तबो दुनिया रङ्ग करिये, आपन नू दिखाके रंहल॥
भाई, गृह, मीत, सुत हित, मरि-पचि हम कतना कइलीं।
ले लूआठी हाथ में से ही, घर से हँसि खेदत बाटें॥
तबो खूलति आँखि नइखे, मोह-ममता छूटति नइखे।
बाट घर क भूलत नइखें, मन से आसा सटल बाटे॥

दुर्गाशंकर जी की अन्य रचनाओं—नाटक और कहानियों का—यथा स्थान ...न किया जायेगा। इनकी "भोजपुरी लोक गीतों में करुण रस" नामक पुस्तक ...जपुरी के सैकड़ों सरस लोक गीतों का संग्रह किया गया है। 'भोजपुरी के ... और काव्य' नामक ग्रन्थ में इन्होंने ऐसे अनेक कवियों को खोजने का परिश्रम ...या है जिनकी कीर्ति अज्ञान के अन्धकार में छिपी पड़ी थी। ये इनके दो ...न ग्रन्थ समझने चाहिए।

उत्कर्ष—काल

गत पृष्ठों में जिन कवियों का वर्णन पाठकों के सामने प्रस्तुत किया गया है ...ने अपनी ऐहिक लीला समाप्त कर दिव्यधाम को सुशोभित किया है। अब ऐसे ...पुरी के कवियों को कविता का आस्वादन पाठकों को कराया जाता है ...को कविता कवि के श्री मुख से सुनने को मिलती है या मिल सकती है। ...कल भोजपुरी में ऐसे बहुत से कवि पाये जाते हैं जो विशेष रूप से कवि-...मेलनों में कविता सुनाने के लिए ही काव्य की रचना करते हैं। बहुत से ...भी कवि हैं जिनकी फुटकल कवितायें पत्र-पत्रिकाओं में छिट फुट रूप से ...तो गई हैं परन्तु जिनकी रचनाओं का संकलन अभी तक पुस्तक रूप में ...काशित नहीं हुआ है। वर्तमान लेखक की यह बहुत इच्छा है कि भोजपुरी ...कविता करने वाले सभी कवियों का विवरण इस ग्रन्थ में प्रस्तुत किया जाय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

क्योंकि इससे नवयुवक कवियों को बड़ा प्रोत्साहन मिलेगा। परन्तु स्था
के कारण वह ऐसा करने में नितान्त असमर्थ है। अतः यहाँ ऐसे ही
का वर्णन किया जायेगा जिनकी कविताओं का संग्रह प्रकाशित हो चुका
दिवंगत कवियों की प्रायः चर्चा कालक्रम से की गई है परन्तु जीवित कवि
विषय में इस नियम का पालन करना अत्यन्त कठिन है क्योंकि बहुत से
की जन्म तिथि और जन्मस्थान का कुछ पता नहीं चल सका। अतएव
वर्तमान कवि इस माला की मनिका बनने से वंचित रह गये हों, वे
प्रदान करेंगें।

१३—बाबू प्रसिद्धनारायण सिंह

श्री प्रसिद्ध नारायण सिंह उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के चितबड़ा
नामक स्थान के निवासी हैं। आपका जन्म सं० १९६० वि० हुआ था। आ
पिता नाम बाबू जगमोहन सिंह था। विद्यार्थी जीवन से ही आपको
करने से अनुराग था। अतः साहित्य-सेवा और देश प्रेम की भावना
हृदय में प्रारम्भ से ही वर्तमान है।

आजकल आप बलिया के प्रमुख कांग्रेसी लीडरों में हैं। पहिले आप
मेस्टन हाई स्कूल—वर्तमान सतीशचन्द्र डिग्री कालेज—में कर्मचारी
साहित्यिक प्रवृत्ति होने के कारण आपका मन स्कूल के काम
लग सका और आपने वहाँ से पदत्याग कर मुख्तारी करना शुरू
दिया। इन्हीं दिनों में आपने "बलिया जिले के कवि और लेखक" ना
पुस्तक लिखी जिसमें आपने अपने जिले के कवियों और लेखकों की कृतियों
परिचय बड़ी सुन्दर रीति से दिया है। मुख्तारी करते समय प्रसिद्ध नारा
जी राजनीति में भी भाग लेने लगे थे और सन् १९३० ई० के सत्या
आन्दोलन में कारागार की प्राचीरों ने आपको अनेक बार अपना अ
बनाया था। पश्चात् आपने मुख्तारी को भी छोड़ दिया और आजकल
मन, धन से देश की सेवा कर रहे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता के अतिरिक्त प्रसिद्धनारायण जी कवि भी हैं। यदि राष्ट्र सेवा के कार्यं में अपना जीवन न खपा देते तो आज हम उन्हें प्रसिद्ध कवि के रूप में देखते। प्रसिद्धनारायण जी ने स्फुट कवितायें की जो पुस्तक रूप में भी प्रकाशित हो चुकी हैं। आपकी कविता में भाव और का मंजुल सामंजस्य होता है। राष्ट्रीय विषयों पर लिखी होने के कारण की कविता में ओज की मात्रा प्रचुर रूप में पाई जाती है। यहाँ हम आपकी कविता को उद्धृत करते हैं जो 'जवाहर स्वागत' के नाम से प्रसिद्ध है। जवाहर लाल नेहरू सन् १९४५ ई० में बलिया गये थे। उसी समय उनके त में यह कविता पढ़ी गई थी। सन् १९४२ के आन्दोलन में बलिया के सियों ने ब्रिटिश साम्राज्य की सत्ता को मिटाकर जो स्वतन्त्रता प्राप्त की था जिसके फलस्वरूप बाद में उन पर जो अत्याचार किये गए उसी का र्णन कवि ने अपनी इस कविता में किया है।

भारतीय जनता के हृदय-सम्राट् पं० जवाहरलाल नेहरू का स्वागत गाते हुए कवि बलिया जिले की विशेषता एवं महत्ता को प्रतिपादित ते हुए कहता है कि:—

दुःखिया बलिया के वीरभूमि, तोहरा चरनन के चूमि चूमि।
मनाति वा आपन अहो भागि, गावत नर नारी झूमि झूमि॥
हमके दुरलभ दरसन तोहार।
निरबल, निरधन, निरगुन, गँवार, अलगा आपन बोली, विचार।
कन, कन में जेकरा क्रान्ति बीज, अइसन भोजपुर तप्पा हमार॥
इतिहास कहत पन्ना पसार।

राष्ट्रीय आन्दोलन में बलिया सदा अग्रणी रहा है इस बात की ओर संकेत ते हुए कवि लिखता है कि:—

जब जब बापू कइलन पुकार, रन में बाजल बिगुल तोहार।
सिर बांधि बांधि कफनी आपन, हम छोड़ि दउड़नी घर दुआर॥
हरदम हमार अगिली कतार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कवि की वाक्-धारा और आगे बढ़ती है और वह सन् ४२ ई० में बलिया के बहादुरों द्वारा किये गये वीरतापूर्ण कार्यों को ओज भरे स्वर में गाता है।

आइल अगस्त के आन्दोलन, फरके लागल सबके तन, मन।
बिजुली दौड़ल जागल बलिया, चलले मुसिलम, हिन्दू, हरिजन॥
मचि गइल लड़ाई बस जुझार।
थाना, डाकखाना, रेल, तार, सब पुलिस अदालत अहलकार।
हाकिम, हुकाम, गोली, गोला, पड़ि गइल ठप्प सब कारवार॥
बजि गइल विजय डंका हमार।
सड़कन डालिन से पाटि, पाटि, पूलन के दिहली काटि काटि।
तहसील-खजाना लूट, फूंकि, अगवढ़ि दिहली तनखाह बाटि॥
पर उठल कहाँ थप्पर हमार।

बलिया ने सन् ४२ ई० के आन्दोलन में ब्रिटिश राज्य को हटाकर स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली थी जिसके फलस्वरूप उसे बड़ा कष्ट भुगतना पड़ा। अंग्रेज अधिकारियों ने यहाँ क्या क्या अत्याचार किया इसका रोमांचकारी वर्णन नीचे के पदों में सुनिये:—

बेपीर, पुलिस, बेरहम फौज, डाका डललनि बेखौफ रोज।
गुंडाशाही के रहल राज, रिसवत पर कइले सभे मौज॥
उफ, जुलुम बढ़ल जइसे पहार।
गांवन पर दगलनि गन–मशीन, बेंतन सन मरलन बीन, बीन।
बैठाई डाल पर नीचे से, जालिम भोकलन खच खच संगीन॥
बहि चलल खून के तेज धार।
घर घर से निकलालि आहि आहि, कोना कोना से त्राहि त्राहि।
गांवन गांवन में लूट फूंक, मारल, काटल, भागल, पराहि॥
फिर कवन सुने केकर गुहार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कवि ने ऊपर की पंक्तियों में वलिया के निवासियों के ऊपर किये गये अत्याचारों का जो वर्णन् किया है वह कितना सजीव है। यह पाठकों आँखों के सामने सन् ४२ ई० के अत्याचारों का चित्र उपस्थित कर देता है। ने अपनी प्रतिभा से कविता मे ओज तथा बल डाल दिया है।

परन्तु स्वतन्त्रता की प्राप्ति के पश्चात् अब इस कवि की वाणी मौन है। उसकी कविता में वह ओज और जोश नहीं पाया जाता जो स्वराज्य की के पहिले था। संभवतः भारत के स्वतंत्र हो जाने पर उसे जो आशायें वह पूरी नहीं हो सकी। अतः अब वह वर्तमान शासन का कट्टर आलोचक गया है। अपनीं 'दोरूप' शीर्षक कविता में प्रसिद्ध नारायण सिंह जी ने शासन बड़ी कटु आलोचना की है। इनकी कविता में ओज तथा प्रसाद गुण प्रचुर में पाया जाता है। प्रसिद्धनारायण जी ने अपनी रचनाओं द्वारा यह णित कर दिया है कि भोजपुरी में विभिन्न रसों में भी काव्य की रचना जा सकती हे। इस कवि ने 'वलिदानी बलिया' नामक काव्य-ग्रन्थ लिखा है जिसमें इस जनपद की तपस्या और त्याग का विशद वर्णन है।

प्रसिद्ध नारायण सिंह के नवीन काव्य में ओज-गुणकी मात्रा विशेष रूप से जाती है। सन् १८५७ ई० के विद्रोह का इन्होंने बड़ा ही जीता जागता न किया है। इसकी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :—

जब सन्तावनि के रारि भइल,
बीरन के वीर पुकार भइल।
वलिया का मंगल पांडे के,
वलि—वेदी से ललकार भइल॥
'मंगल' मस्ती में चूर चलल,
पहिला बागी मशहूर चलल।
गोरन का पलटन का आगे,
वलिया के बाँका शूर चलल॥

—:*:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gian

१४–डा० राम विचार पाण्डेय

डा० राम विचार पाण्डेय का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में है। आपकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई। फिर आप हिन्दू विद्यालय, काशी में विद्याध्ययन के लिये गये। यहाँ से आपने बी० ए० परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके साथ ही आपने आयुर्वेद का भी अध्ययन कि आपने हिन्दी में एम० ए० की परीक्षा पास की। आप बलिया नगर में वर्षों से आयुर्वेद की चिकित्सा कर रहे हैं और वहाँ आप एक सफल वैद्य में प्रसिद्ध हैं। आप बड़े ही विद्याव्यसनी है। आपके विद्या के व्यसन अनुमान केवल इसी बात से किया जा सकता है कि लगभग साठ वर्ष की में आपने एम० बी० बी० एस० की परीक्षा उत्तीर्ण की है और अब आप होमियोपैथी और एलोपैथी में समान रूप से चिकित्सा कर रहे हैं। यद्यपि व्यवसाय से आपने नाम और दाम दोनों कमाया है परन्तु आपकी कीर्ति आधार आपकी भोजपुरी काव्य–रचना है।

आपने अनेक काव्य–ग्रथों की रचना की है जिनमें 'विनिया-विछिया', 'जीवन-गीत' आदि प्रसिद्ध हैं। पाण्डेयजी की कविता में ओज और प्रसाद की प्रधानता पायी जाती है। वीर रस का पल्ला पकड़ कर इस कवि ने सुन्दर काव्य की रचना की है। इनकी कविता में व्यङ्ग्य और हास्य भी विशेष रूप में पाया जाता है। आपकी एक कविता का शीर्षक है "पंच वर्षीय योजना" है जिसमें आपने वर्तमान सरकार की 'परिवार–नियोजन' की को धता बताकर अनेक विवाहों को करके प्रचुर सन्तानों को उत्पन्न करने स्कीम बनायी है। तुलसीदास जी के संबंध में आपने जो कविता की है उसमें भी व्यङ्ग्य का पुट कुछ कम नहीं है। इस गीतकी कुछ कड़िया इस प्रकार हैं

"तुलसी सोचे अपने मनवा मे आधिरतिया।टेक।
चम-चम, चम-चम, बिजली चमके,
रिम झिम बरसे पानी।
भादों की अँधिअरिया में, जागल तुलसी के सूतल जवानी।
तुलसी सोचे अपने मनवा में आधिरतिया"।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ग्रामीण प्रकृति के निरीक्षण में भी कवि ने अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। न्त ऋतु का यह वर्णन कितना सुन्दर तथा सजीव है:—

अइली बसन्त रितु महुआ का कोंचवा में,
झांकि झांकि हंसि हंसि आँखि मलकावेली।
सरिसो का फूलवा की पिअर चदरिया में,
तीसीया का फूल के बतीसी चमकावेलो।
आम का मोजरिया पर छम छम नाचेली,
आ गम गम फूला के गमक गमकावेली।
पछिवा जे सीहीकि सीहीकि के अहेला ओसे,
चूमि चूमि जग का जवानी के जागावेली।

पाण्डेय जी की काव्य–भाषा बड़ी प्रांजल है। आपने अपनी प्रतिभा के बल भोजपुरी को जीवन प्रदान किया है और दिखलाया है कि यदि प्रतिभा सम्पन्न इसको अपनी कविता का माध्यम बनावें तो यह किसी भी भाषा से टक्कर सकती है। आपकी 'अंजोरिया' नामक कविता अत्यन्त प्रसिद्ध है जिसमें सवैया में आपने भोजपुरी को ढालने का प्रशंसनीय प्रयत्न किया है। यह पद्य है—

"टिसुना जागलि सिरि किसुना. के देखे के त,
आधी रतिये खा उठि चललि गुजरिया।
चान का नियर मुंह चमकेला रधिका के,
चम चम चमकेले जरी के चुनरिया।
चकमक चकमक लहरि उठावे ओमें,
मधुर मधुर डोले कान के मुनरिया।
गोखुला के लोग ई त देखि चीहइले कि,
राति में अमावसा का ऊगलि अंजोरिया॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

इस पद्य में श्रीकृष्ण से मिलने के लिये जाने वाली राधिका के अभिसार का वर्णन है। राधिका सुन्दर जरीदार साड़ी पहनकर कृष्ण से मिलने अमावस्या की अंधेरी रात्रि में चली जा रही हैं परन्तु उसके शरीर की कान्ति इतनी अधिक है कि यह मालूम होता है कि अमावस्या के दिन चन्द्रोदय हो गया है। इस पद्य का भाव कितना सुन्दर है, साथ ही शब्दों का चुनाव भी देखते बनता है। एक दूसरा पद्य लीजिये:—

'फूल का सेजरिया पर सूतल कन्हैया जी,
सापाना देखेले कि जरत दूपहरिया।
ओकरे में हमरा के रधिका खोजत वाड़ी,
पेड़ नइखे, रुख नाहीं, जल वा कगरिया।
कहताड़ी, धाव कृष्ण, धाव कृष्ण, आव राजा,
हमके देखाद तनि गोखुला नगरिया।
अइली राधे, अइली राधे, कहि के जे उठले त,
एने फूलले कमल ओने चढ़ली अंजोरिया।"

सूर्य को देखकर कमल विकसित होता है और चन्द्रमा को देखकर कुमुदिनी, यह एक प्राचीन कवि परम्परा है। परन्तु उपर्युक्त पद्य में पाण्डेय जी ने चन्द्रमा को देखकर कमल का खिलना लिखा है। राधिका चन्द्रमा के समान स्वरूपवती और कृष्ण का मुख कमल के समान सुन्दर है। जब वे राधिका को स्वप्न में देखते हैं तो वे प्रसन्न हो जाते हैं। इसी को कवि ने 'अँजोरिया' को देखकर कमल का खिलना लिखा है। इस कविता में इन दो विरोधी वस्तुओं का निर्वाह कवि ने बड़ी चातुरी से किया है। यह तीसरा पद्य लीजिये—

"हमके बोलालीतू अइलू हा कइसे हो,
बड़ी भाकासावनी भइलि वा अन्हरिया।
कसबा के राकस घूमत बढ़वार बाड़े,
गोखुला में कवे कवे होत बाड़े चोरिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सभ के ठगेल कृष्ण हम के भोराव जनि,
हाथ हम ज़ोरि के करी ले गोड़धरिया।
हिरदया में जेकरा त तूंही बइसल बाड़ऽ
ओकारा खातिर ई अन्हिरयो अंजोरिया।"

इस पद्य में कवि ने भोजपुरी के ठेठ मुहावरों का प्रयोग बड़ी सुन्दर रीति किया है। 'गोड़धरिया करना' भोजपुरी मुहावरा है जिसका अर्थ विनती या ...ना करना है। कवि ने रात्रि में अभिसार करने का जो उत्तर राधिका के ...से दिलवाया है वह बड़ा ही मधुर और सुन्दर हैं। राधिका के पास स्वयं ...आने में कृष्ण का प्रेम परिलक्षित होता है। इस प्रकार पाण्डेय जी की ...ता बड़ी सरस तथा मनोहर है १।

पाण्डेय जी को 'अँजोरियां कविता को यदि "क्लासिकल पोइट्री" की ...मा दी जाय तो कुछ अनुचित न होगा। संभवतः यह कविता उनकी सभी ...ताओं सर्व प्रथम स्थान की अधिकारिणी है। डा० पाण्डेय जी की कविताओं में ...पुरी भाषा की निखालिस मिठास चखने को मिलती है। इसके साथ ही ...ीण प्रकृति का चित्रण भी इन्होंने वड़ा सजीव किया है।

बीति गइले वाराखा निखरी गइले पलिहर,
हर जोते वालामाँ चुवेला देहीं पनियां।
पड़रू कें एक मुट्ठी लेहाना बिरावे कें आ,
दीहली मथुरही कें एक नाद सनियाँ।
उन्हुका के तिआना आ लिटी लेके पानी लेके,
झटकल चलली सांवरि एक धनियाँ।
लूगरी से तोपि तोपि ठमकि ठमकि चले,
छलकि छलकि ऊठे चढ़ली जवनियाँ।

---

१. इन कविताओं के लिये देखिये 'विनिया' विछिया। प्रकाशक—भोजपुरी—पुस्तक भवन वलियां,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

१५—आचार्य महेन्द्र शास्त्री

आचार्य महेद्र शास्त्री भोजपुरी के उन उन्नायकों में से हैं जिन्होंने भोजपुरी साहित्य की सेवा में अपना तन, मन और धन सभी कुछ अर्पित कर दिया है। इन्होंने जीवन भर भोजपुरी की सेवा की है और आज भी दिन रात इसी की उन्नति में लगे रहते हैं। शास्त्री जी ने अपनी सशक्त लेखनी के द्वारा भोजपुरी के भाण्डार की श्री वृद्धि तो की ही है, इसके अतिरिक्त भोजपुरी भाषा के साहित्य के प्रचार, प्रसार तथा समुन्नति में भी इन्होंने प्रचुर योग दान दिया है। आपने विहार राज्य के सारन जिले में 'भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' की स्थापना की और अनेक वर्षों तक आप इसके प्राण तथा प्रधान—मन्त्री थे। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इन सम्मेलनों के द्वारा भोजपुरी का प्रचुर प्रचार हुआ है। आचार्य जी को ही सर्व प्रथम 'भोजपुरी' नामक पत्रिका प्रकाशित करने का श्रेय प्राप्त है[१]। कुछ वर्षों के पश्चात् श्री रघुवंश नारायण सिंह ने आरा से इसी नाम की पत्रिका के प्रकाशन की प्रेरणा आप ही से प्राप्त की। शास्त्री जी ने भोजपुरी के अनेक नव-युवक कवियों को प्रोत्साहन तथा प्रेरणा प्रदान की हैं। आपका व्यक्तित्व तरुण पीढ़ी के लिए आदर्श है।

शास्त्री जी का जन्म छपरा जिले में हुआ था। बाल्यावस्था में हिन्दी की शिक्षा प्राप्त कर, आपने संस्कृत साहित्य का अध्ययन प्रारम्भ किया और कुछ ही वर्षों में प्रकाण्ड पाण्डित्य प्राप्त कर लिया। आप अनेक वर्षों तक सं... (सारन) के एक हाई स्कूल में संस्कृत के अध्यापक थे। कुछ साल तक आ... पटना में एक आदर्श संस्कृत विद्यालय का भी संचालन किया था। अब जीवन की गोधूली में आप गाँव पर ही रहते हैं और साहित्य-सर्जना के कार्य में संलग्न हैं।

संस्कृत के विद्वान् सामान्यतया हिन्दी 'भाखा' के प्रेमी तथा पक्षपाती नहीं हुआ करते, परन्तु शास्त्री जी के महान् व्यक्तित्व में इन दोनों तथाकथित विरोधी धर्मों का एकत्र निवास पाया जाता है। आप स्वभाव से सज्जन, वचन से मृदुभाषी, मन से पूत और कर्म से भगीरथ हैं। आपके इन्हीं गुणों ...

१. कदम कुँआ, पटना से प्रकाशित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

साहित्य सेवाओं पर मुग्ध होकर आपके मित्रों, परिचितों तथा प्रशंसकों ने आपको गत वर्ष एक "अभिनन्दन ग्रन्थ" भी समर्पित किया था जिसमें आपके व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर प्रचुर प्रकाश डाला गया है। इस प्रकार शास्त्री जी का जीवन साधना, त्याग, तपस्या और सेवा का ज्वलन्त उदाहरण है।

आचार्य महेन्द्र शास्त्री की भोजपुरी कविताओं के अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके है जिनमें 'आजकी आवाज़' और 'चोखा' प्रसिद्ध है। किसी भी समाज के दो पक्ष हुआ करते हैं (१) सुन्दर और (२) असुन्दर। शास्त्रीजी ने भोजपुरी समाज के सुन्दर पक्ष के साथ ही इसके असुन्दर पक्षको भी देखने की विशेष रूप से चेष्टा की है। 'आज की आवाज़' में आपने गरीबों को दुर्दशा का जो चित्रण किया है वह वड़ा ही सजीव है।

कमैया हमार चाट जाता, इहे बाबू-भैया।
जेकरा आंगा जोंको फीका, ऐसन ई कसैया॥
दूहल जाता खूनो जेकर ऐसन हमनी गैया।
अंडा-बच्चा, भरद-नेहर दिन-दिन भर खटैया॥
तेहू पर ना पेट भरे चूस लेला चैया।
एकरा बाटे गद्दा-गद्दी हमनी का चटैया॥
एकरा बाटे कोठा कोठी, हमनी का मड़ैया।
जाड़ो ऊनी एकरा खाहूँ के भलैया॥
हमनी का रात भर खेलाइले जड़ैया।

रेलगाड़ी के तृतीय श्रेणी में यात्रा करना कितना कठिन काम है। इस श्रेणी के डिब्बों में कितनी गंदगी रहती है इसका उल्लेख कवि ने वड़ी ही सुन्दर रीति से किया है। इस कविता का शीर्षक है "सोनपुर से सीवन तक"।

'चोखा' में आपकी व्यङ्ग्य कविताओं का संग्रह है। आपने समाज की कुरीतियों की जो खिल्ली उड़ाई है, उस पर जो गहरी चोट की है वह वास्तव में अप्रिय होते हुए भी कठोर सत्य है।

—:*:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

१६—श्याम बिहारी तिवारी 'देहाती'

आप बिहार प्रान्त के बेतिया जिले के रहनें वाले हैं। आप भोजपुरी सुन्दर तथा सरल कविता करते हैं। आपकी 'देहातों दुलकी' भाग १, २, नामक पुस्तकें प्रकाशित हुई है१। आप का उपनाम 'देहाती' है और आप नाम से प्रसिद्ध हैं। 'देहाती दुलकी' भाग १ में आपकी चौदह चुनी हुई कविता का संग्रह है जिनमें देहाती विषयों को लेकर कविता की गई है। 'उठल मधुआइल' शीर्षक कविता में वसन्त ऋतु में प्रकृति के परिवर्तन का बड़ा चित्रण किया है। पलाश के फूलने का यह वर्णन देखिये। २

'देखि ह हो परास के 'फूलल, झूठहुँ में भंवरा के भूलल।
जान त देबे पर बा तूलल, भन भूनात लरिआइल॥
उठल मास मधुआइल।

कवि ने पलाश के लाल होने तथा भंवरा के उस पर जान देने की उपमा दी है वह हिन्दी के कवियों की परम्परा के अन्तर्भुक्त है। पति का भंवरे से रूपक बाँधकर उसका कितना सुन्दर उपालम्भ नोचे के पद में किया गया है। ३

"कइसे मानीं उनकर बतिया, सुखले सूखल बीतल रतिया।
कहाँ जुड़ाइब आपन छतिया, छतवा तुरले जाय॥
भंवरा रसवा चुसले जाय।"

ऊपर के पद्य में स्त्री की गम्भीर विरह वेदना का कितनी सुन्दर रीति से चित्रण किया गया है। 'सुखले सूखल बीतल रतिया' में कितनी कसक भरी हुई है। विरह का दूसरा वर्णन देखये ४—

१. देहाती दुनिया, सागर प्रेस, बसवरिया, जिला बेतिया, बिहार।
२. देहाती दुलकी पृ० ११
३. वही० पृ० ६   ४. देहाती दुलकी भाग १ पृ० १०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

"अबहीं से हम कांपतानीं, पलकन पानी ढांपतानीं।
आग लगा के तापतानीं, तेलावा डलले जाय।
भंवरा रसवा चुसले जाय।

यह पद्य वड़ा ही सुन्दर और सरस वन पड़ा है। नायिका कहती है कि नायक मेरे विरह रूपी आग में तेल रूपी व्यथा को डालता चला जाता है। मैं कितना भी चाहती हूँ कि अपने अश्रुरूपी जल से इसे बुझा दूं परन्तु विरह की धधकती आग शान्त ही नहीं होती। विरह का वह कितना मार्मिक चित्रण है।

किसी देहाती स्त्री की मनोभिलाषा का वर्णन देखिये १ :—

मनवां अइसन मोर करत वा, हमहूँ नाची कजरी गाईं।
अपना सामसुनर का आगे, उनका के मन भर ललचाईं।
जे रोगिया का भावे सइयां, काहे ना बैदा फुरमावे।
नाच गुजरिया कजरी गावे।

जाड़े के दिनों में देहाती, गरीब किसान की दशा का यह चित्रण कितना सजीव है। उसे जाड़े में कितना कष्ट उठाना पड़ता है इसे भुक्तभोगी ही जान सकता है। २

गरमी त भरसक कटि जाला, जाड़ हमनिए पर बउराला।
देह उघारे सिसकत पाला कवन कहीं हम बात भइया।
सूख गइल बरसात भइया।

हास्य रस का यह सुन्दर उदाहरण लीजिये जिसमें शृंगार का पुट भी कुछ कम नहीं है।

सावन मास बहे पुरुआ, जनि केहु के छूटे मिलावल जोड़ी।
का कहीं दोसर के वा इहां, अब जे इ सुतार में बांगर कोड़ी॥
जाइब आजु जरूर मुनेसर, भाई के मांग के हींछल घोड़ी।
बोच हईं हमहूँ त पुरान नू, के ससुरार में मेहरि छोड़ी॥

१. देहाती दुलकी भाग १ पृ० २१ २. वही० पृ० २६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

होली का यह देहाती वर्णन कितना सुन्दर बन पड़ा है। इस पद्य में खेलते समय कीचड़ उछालने की निन्दनीय प्रथा की ओर संकेत किया गया है।

जगह जगह पर रंग पड़ल बा, गगरा गगरा रंग घोरल बा।
लाल पियर सब रंग परत बा, साफ करा ल मोरी हो।
उठल फाग बा होरी हो।

इस प्रकार 'देहाती' जी की कविताएँ ग्रामीण होते हुए भी ग्राम्य नहीं। इनमें भोजपुरी भाषा की मधुरता पाई जाती है।

'देहाती' जी शृंगार रस के अतिरिक्त हास्य रस के भी कवि हैं। संभवतः उन्होंने भोजपुरी में हास्यरस संबंधी कविताओं के लिखने का बीड़ा लिया है। एक बार बनैली राज्य के अधिकारियों ने आपको चाय-पार्टी दी। उस पार्टी में आपने क्या क्या देखा उसका वर्णन आपने अपनी 'का का देखनी' शीर्षक कविता में बड़ी सुन्दर रीति से किया है। कुछ पद्य सुनिए:—

का कहीं केतना देखनी, का का देखनी।
भीतरी ना देखनो, बाहर के लिफाफा देखनी।१।
अरे भाई अइसन सत्कार कतहूं ना मिलल।
देहातियो के साथे खाये के तकाजा देखनी।२।
आगे टेबुल आइल बूझनी, यहीं पर नूध के पढवि।
आहि बाप, ई का, सामने छुरी अउरी कांटा देखनी।३।
जे जे आइल धइली गइले गोलक में।
पानी मिलबे ना कइल, इहे एगो घाटा देखनी।४।
मन में आइल के खाईं, कांटा से देरी होई।
एक संसिये मार दिहनी, ना आगा देखनी, ना पाछा देखनी।

उपर्युक्त पदों में एक 'देहाती' द्वारा चाय पार्टी का रोचक तथा हास्यपूर्ण वर्णन हुआ है। अन्तिम दो पंक्तियाँ विशुद्ध भोजपुरी स्वभाव की परिचायिका हैं।

१. देहाती दुलकी पृ० ३८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

१७—कविवर 'चंचरीक'

कविवर 'चंचरीकजी' भोजपुरी के लब्ध प्रतिष्ठ कवियों में हैं। आप रखपुर जिले के निवासी हैं। आप मौजी जीव हैं तथा स्वच्छन्द प्रकृति के क्ति हैं। साहित्य सेवा ही आपके जीवन का उद्देश्य है और आप उसी धुन में होकर विचरते रहते हैं। आपकी सर्वश्रेष्ठ रचना 'ग्राम गीतांजलि' है जो रखपुर से प्रकाशित हुई है१। भोजपुरी जनता में यह पुस्तक कितनी लोक-य हो गई है उसका पता केवल इसी बात से लगाया है कि कुछ ही वर्षों के तर इस पुस्तक के चार संस्करण हो गये हैं।

इस पुस्तक में कुल २४० पृष्ठ हैं जिनमें, चंचरीक जी ने राष्ट्रीय तथा माजिक विषयों को लेकर अपनी काव्य रचना की है। यह पुस्तक दो भागों में क्त है। १. राष्ट्रीय सोपान, २. सामाजिक सोपान। राष्ट्रीय सोपान में चरीक जी ने राष्ट्रीय तथा देश भक्ति के विषयों को लेकर सोहर, विवाह गीत, ा, निरौनी, हिंडौला, जनेऊ, कहरवा आदि के गीत लिखे हैं। सामाजिक पान में आदर्श गारी, शिक्षाप्रद गीत, वेदी की विदाई के समय के गीत लिखे हैं। देहातों में जो कहीं कहीं अशिष्ट गीतों का प्रचार है उनको दूर कर जनता सामने नवीन, देशभक्ति से परिपूर्ण गीतों को रखना ही चंचरीक जी का ाल उद्देश्य है और वे इस उद्देश्य में सफल भी हुए हैं।

ग्राम गीतांजलि की भाषा बड़ी सरल, सरस और मधुर है। भोजपुरी बोली इन गीतों को लिखकर चंचरीक जी ने यह प्रत्यक्ष प्रमाणित कर दिया है कि जपुरी में भी कितनी सुन्दर कविता की जा सकती है। शब्दावली इतनी ल है कि अर्थबोध में कहीं क्लिष्टता नहीं होती। पं० मोतीलाल नेहरू की ामयिक मृत्यु पर कवि कहता है कि २ :—

१. प्रकाशक: ठाकुर महातम राव, बुकसेलर, रेती, चौक, गोरखपुर (चतुर्थ-संस्करण) मूल्य ३ रुपया.

२. ग्रामगीतांजलि: परिचय पृ० १८७.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भारत के नइया के डारि मझधरवा में, असमय चलि गइले मोतीलाल ने
कइसे के पार होईहैं देसवा के नइया रे, पतवार रहले रे मोतीलाल नेहरू

यह उपर्युक्त कथन कितना सत्य और समीचीन है। आगे कवि आगे में आकर लखनऊ शहर से पूछता है कि तू ने हमारी अमूल्य निधि कहां तो

हम तोसे पूछीला लखनऊ भइया रे, कहंवां गंववले रे मोतीलाल ने
लिखले के जोग नाहीं बाटे विपतिया रे, भुलिहैं भुलवले न मोतीलाल ने

चंचरीक जी ने ग्राम गीतों में देशसेवा की भावनाओं को लाकर राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत किया है। गांधी जी के राष्ट्रीय आन्दोलन में के लिये किसी स्त्री का अपने पति को यह उपदेश देना कितना उत्साहवर्धक है:

"जाहु, जाहु, जाहु, पिया देश के लड़इया हो, छोड़ि देहु अब क़दरइया।"
हां सियाराम से बनी

होके मरद मरदुमी अब देखलाऊ, देसवा में होइहैं लड़इया। सियार
लागे सरम लाजि घर में बइठि जाहु, मरद से बनिके लुगइया! सियार
पहिरि केसरिया सारी हम चलि जइबै हो राखि लेवें तुहरो पगड़िया। सियार

नारी की यह उत्तेजना मुर्दों में भी जान डालने में समर्थ है। कवि ने भावों को नवीन जामा पहनाया है और वह उसमें वह सफल भी हुआ यह नवीन जतसार देखिये [३] :—

झुरझर बहति बयरिया ननदिया हो, फर फर डोले मोर चरखवा हो
सुनु सुनु हमरो बचनिया भउजिया हो, हमहू सथवा कतवै चरखवा हो

—:*:—

१. वही. पृ० १८५.   २. ग्रामगीतांजलि पृ० ५३.
३. ग्रामगीताञ्जलि पृ० १११.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

१८—अर्जुन कुमार सिंह "अशान्त"

आप सारन जिले के आमी ग्राम (प्राचीन नाम अम्बिका स्थान) के निवासी हैं। आपने खड़ी बोली और भोजपुरी में समान रूप से काव्य रचना की है। परन्तु लोकप्रियता तथा प्रसिद्धि का कारण आपकी भोजपुरी रचनायें ही है। 'अशान्त' जी बड़े शान्त स्वभाव के हैं, फिर भी कविता में अपना उपनाम 'अशान्त' रखते हैं। आपके भोजपुरी गीत अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छप चुके हैं। आपकी कविताओं का संग्रह 'अमरलत्ती,' के नाम से प्रकाशित हुआ है१। आप भोजपुरी में "वुद्धायन" नामक सरस काव्य-ग्रन्थ लिख रहे हैं२।

ग्रामीण प्रकृति का आपने वड़ा ही सुन्दर चित्रण किया है। आपकी "ऋतु ...." शीर्षक कविता वड़ी रमणीय है जिसे वसन्त, वर्षा और शरद ऋतुओं का वर्णन एक साथ ही सुन्दर वन पड़ा है।

कुहुकि-कुहुकि कुहुकावै कोइलिया, कुहुकि-कुहुकि कुहुकावे।
...ड़ आइल, उजड़ल वगियाँ मधु ऋतु में टुसिआइल फुनुगिया॥
... हरियर-हरियर पलइन में, सुतल सनेहिया जगावे कोइलिया।
...सकल मधु-ऋतु उठल वजरिया चुवल कोंच, भर गइल मोंजरिया॥
...या झरकि चले, तलफे भुभुरिया, देहिया में अगिया लगावे कोइलिया।
...सि गइल दिन, अउँसी से रतिया वरसे फुहार रिमझिम वरसतिया॥
...रिया वदरवा के सजल करेजवा में, चमकि विजुरिया डेरावे कोइलिया।

"अशान्त" जी की कविता सरल होती है। भाषा प्राञ्जंल है और भाव उच्चकोटि के हैं। आपकी 'मसानवाँ' नामक कविता 'भोजपुरी' में प्रकाशित हुई है जो वड़ी सुन्दर है।१ कवि के हृदय में श्मशान का दृश्य देख कर अनेक

१. अशोक प्रेस, पटना ६ (विहार) २. दुर्गाशंकर—सिंह, भो० क० का० पृ० २६७.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

प्रकार की भावनायें उत्पन्न हो रही हैं। कवि कहता है कि श्मशान ... अमर कहानी को गाता है। जलती लाश से जो धुंआ निकलता है, वह ... में छा जाता है। धूम्राच्छादित आकाश मानों मुंह फेर कर यह ... श्मशान शव के व्याज से अपने भाग्य को जला रहा हो।

हहरी जमुनियां के झगमग के पनियाँ, अमर जिनिगिया के गावेला ...
कहेला धुंआइल मुंह फेरि आसमानवां, अपने करमवा जलावेला मसान...

नीचे के पद्य में कवि ने सूर्य की उपमा लाल पगड़ी से दी है जो ... सटीक है। सूर्यास्त होते ही समस्त संसार में अन्धकार छा जाता है ... झोपड़ी सूनी पड़ जाती है :—

"काहे दोनी दिनवाँ के लालकी पगड़िया, धीरे-धीरे झुकि गईल पछिम ...
रसे-रसे पसर आइल अन्हरिया, सून भइल सब टुटही झोपड़ि...

श्मशान में कितने वीर पुरुषों की लाशें जलती हैं जिन्होंने सं... अलौकिक कार्य किये थे। कितनों ने यमराज के आसन को भी हिला दि... परन्तु आज वे भी 'मसान' में जल रहे हैं।

"जववे जिनिगिया के सँसरी पवनवां, दिहले हिलाई यमराज के आस...
ओहिजा भइले करवटिया जमइनवाँ, अमर परानवां जलावेला मसानवां

१९—महादेव प्रसाद सिंह 'घनश्याम'

श्री महादेव प्रसाद सिंह की कवित्व शक्ति वर्णनात्मक (नरेटिव) ... आपकी सबसे बड़ी विशेषता यह हैं कि आप बड़े बड़े से कथानक को लेकर ... पद्यात्मक रूप दे सकते हैं। भोजपुरी की अनेक लम्बी लम्बी लोक गाथाओं ... कथावस्तु को ग्रहण कर आपने उन गाथाओं को पद्य रूप में हमारे सामने ... किया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

श्री महादेव प्रसाद सिंह विहार राज्य के शाहावाद जिले के नचाप ग्राम निवासी हैं। आप भोजपुरी के अच्छे कवि है। भोजपुरी की अनेक लोक गाथायें अपने मूल रूप में आज उपलब्ध नहीं हैं। महादेव प्रसाद जी ने इन्हें काव्य भाषा में लिखकर इनके कथानक को हमें उपलब्ध करा दिया है। लोरिकायन, कुँवर विजय मल, सोरठी वृजाभार, शोभनायक वनजारा, घुघुलिया का गीत आदि अनेक काव्य-ग्रन्थों की रचना की है१। इन गाथाओं की कथावस्तु तो वहुत पुरानी है परन्तु भाषा इनकी अपनी हैं। इनकी रचनाओं में सोरठी वृजाभार ३२ भागों में लिखा गया है जो २८६ पृष्ठों में समाप्त है। यह संभवतः इनकी सवसे वड़ी रचना हैं। इसके अतिरिक्त इन्होंने 'भाई-बहिन' और 'जालिम सिंह' नाटक भी लिखा है जिनमें भोजपुरी गद्य और पद्य का प्रयोग हुआ है। आपने वावू कुँवर सिंह के संवन्ध में भी एक छोटा काव्य लिखा है जिसमें ऐतिहासिक तथ्यों का उद्घाटन सरस शैली में किया है। भोजपुरी प्रदेश में आपकी कविताओं का वड़ा प्रचार है। आपकी रचना के कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है। २

"जव वृजाभार रामा अइले फुलरिया हो।
त्रिया के निन्दिया उहवाँ टूटल रे की॥
चकित चिहाई त्रिया उठली पलंग से हो।
स्वामी के ना देखी घवड़ाइलि रे की॥
सातो देवढ़िया रामा देखें वन्द केवड़िया हो।
घरवा में खोजे त्रिया लागलि रे की॥
कोनवां में खोजे रामा खोजेले डेहरिया हो।
पलंग निचवा त्रिया खोजे ले रे की॥

१ ये सभी पुस्तकें वावू ठाकुर प्रसाद गुप्त, वुकसेलर, राजादरवाजा, व्राञ्च-कचौड़ी गली, वाराणसी से प्रकाशित हुईं हैं।
२ सोरठी वृजाभार पृ०. ९७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चारू ओरा खोजि घरवा भइली हैरनियाँ हो।
तब मनवाँ करेली बिचार नूरे कौ॥

'कुँवर घुघुलिया' नामक पुस्तक को यह कविता कितनी सरल सुन्दर है। १

रामा, सुमिरि के गाइले पवाँरवा हो ना।
रामा, सुनों चितरमन के बेयानवां हो ना॥
रामा, जब भइल मनवाँ में होसवा हो ना।
रामा देखि, बल भइले चकितवा हो ना॥
रामा, मने मन करेले बिचारवा हो ना।
रामा, कौन देवी जाइके जवाबवा हो ना॥
रामा, बड़ा यह शरम के बतिया हो ना।
रामा जीति गइल बनियां के जतिया हो ना॥

२०—श्री रामेश्वर सिंह 'काश्यप'

रामेश्वर सिंह जी का जन्म आरा जिले के सासाराम के पास स्थित ... नामक गाँव में १६ अगस्त सन् १९२६ ई० को हुआ था। आपने १९४४ ई० में मुंगेर जिला स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा पास की। १९४८ ई० तथा १९५० ई० में पटना विश्वविद्यालय से आपने क्रमशः बी० ए० तथा एम. ए. की उपाधि को प्राप्त किया। आप अनेक वर्षों तक पटना बी. एन. कालेज में हिन्दी के प्राध्यापक थे। आजकल आप सासाराम (आरा) के एक महाविद्यालय में प्राचार्य (प्रिन्सिपल) के पद को सुशोभित कर रहे हैं।

आपका साहित्यिक जीवन सन् १९४२ ई० से प्रारम्भ होता है। ...

---

१ वीर कुँवर घुघुलिया पृ. १४९,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कवितायें प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी है। आप कवि के रिक्त एक लोकप्रिय नाटक-कार तथा सफल अभिनेता भी है। आपकी कीर्ति प्रधान कारण आपका लोकप्रिय 'लोहासिंह' नामक भोजपुरी नाटक है की चर्चा अन्यत्र विस्तार के साथ की जायेगी। रामेश्वर सिंह जी ने जो रूप' जी के नाम से ही अधिक प्रसिद्ध हैं—भोजपुरी में मुक्त छन्द का प्रयोग सफलता के साथ किया है वह अन्यत्र दुर्लभ है। प्रभात का निम्नलिखित बड़ा ही सजीव तथा सुन्दर बन पड़ा है।

(१)

गोरकी बिटियवा टिकुली लगा के पूरुबे किनारे तलैया नहा के,
चितवन से अपना जादू चला के, ललकी चुनरिया के अँचरा उड़ा के
का लजा, तब विहँसि, खिलखिला के, नूपु र बजावत किरिनियाँ के निकलल
ा अटारी के खोललस खिरिकिया, फैलल फजिर के अँजोर।

(२)

क्को बुढ़िया के डँटलस धिरवलस, बुढ़िया सहम के मोटरी उठवलस
के गहना समेटलस बेचारी, चिमगादुर, उरुआ, अन्हरिया के संगे
भागल ऊ खँड़हर के ओर।

(३)

उतपाती ई चंचल बिटियवा, भारी कुलच्छन भइल ई धियवा,
के पुड़िया, बहेंगवा के टाटी, मारे सहक के हो गइल ई माटी।
इन के खोंता में जा के उड़वलस, सूतल मुरुगवन के कसके डेरवलस
कूँ कूँ कइलन बेचारे चिहा के, पगहा तुड़वलन सुन के, डेरा के,
की-गुलाबी बदरियन के बछरू, भगले असमनवाँ के ओर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

२१—श्री विश्वनाथ प्रसाद "शैदा"

विश्वनाथ प्रसाद "शैदा" भोजपुरी के बड़े ही सरस कवि हैं। आप जन्म शाहाबाद जिले के डुँमराव नामक नगर में हुआ था। आपने पन्द्रह वर्ष आयु में ही एन्ट्रेन्स परीक्षा पास कर ली तथा सरकारी नौकरी करने कुछ वर्षों तक आप डुँमराव के ट्रेनिंग स्कूल में अध्यापक का भी काम करते

विश्वनाथ प्रसादजी—जो कविता में अपना उपनाम 'शैदा' लिखते हैं बड़े ही मस्त जीव हैं। उनकी यह मस्ती उनकी कविताओं में भी झलकती आपकी कविता की विशेषता यह है कि उसमें उर्दू की शब्दावली का पुट पाया जाता है। परन्तु जहाँ इनकी कविता विदेशी शब्दों के प्रयोग से है, वहाँ बड़ी सरस तथा मधुर बन पड़ी है१। आपकी यह कजली बड़ी मधुर

रहलीं करत दूध के कुल्ला, छिल के खात रहीं रसगुल्ला,
सखी हम त खुल्लम-खुल्ला, झूला झूलत रहीं बुनिया फुहार में,
सावन के बहार में ना।

हम त रहलीं टह-टह गोरँ, करत रहलीं हम अँजोर,
मोरा अँखिया के कोर, धार कहाँ अइसन तेग बा, कटार में,
चाहे तलवार में ना।

हँसलीं चमकल मोरा दाँत, कइलस बिजुली के मात
रहे अइसन जनात, दाना काहाँ अइसन काबुली अनार में
सुघर कतार में ना।

जब से आइल सवतिया मोर, सुखवा लेलसि हम से छोर,
झरे अखियाँ से लोर, भइया मोर परल बा 'शैदा' माहा धार में,
सुखवा जरल भार में ना।

---

१. दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह—भो० क० का० पृ० २६४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

२२—श्री राम नाथ पाठक 'प्रणयी'

श्री रामनाथ पाठक 'प्रणयी' बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न व्यक्ति है। आप भोजपुरी, हिन्दी और संस्कृत में समान रूप से सुन्दर काव्य की रचना करते है। संस्कृत में कविता करना, हिन्दी की तरह, कोई हँसी खेल नहीं है। क्योंकि इसमें छन्दविधान और वर्ण्य वस्तु के सामंजस्य की ओर भी ध्यान रखना पड़ता है। प्रणयी जी ने संस्कृत काव्य–रचना में भी पटुता प्राप्त की है यह विशेष वात है। प्रणयी जी, भोजपुरी के दो–तीन कवियों के अपवाद को छोड़कर, भोजपुरी के श्रेष्ठ कवि एवं गीतकार है। इनकी कविता में जो मनोरमता पायी जाती वह अन्यत्र उपलब्ध नहीं होती। जिस प्रकार से हिन्दी में गोपालशरण सिंह ने अपनी कविताओं द्वारा खड़ी बोली की कर्कशता और खड़खड़ाहट को दूर कर उसमें सरसता का संचार किया है, उसी प्रकार से 'प्रणयी' ने प्रणय के गीत गा कर भोजपुरी को सरलता, मनोरमता और मधुरता प्रदान की है। ठाकुर प्रसिद्ध नारायण सिंह और डा० रामविचार पाण्डेय ने भोजपुरी में वीर-रस की रचना करके इसे एक सशक्त तथा ओजगुण–सम्पन्न भाषा वनाया है अपनी प्रसादगुणमयी, सरस कविताओं के द्वारा प्रणयी को भोजपुरी को सरलता और मधुरता प्रदान कर करने का श्रेय प्राप्त है। इस प्रकार से यह भोजपुरी साहित्य में एक विशिष्ट स्थान का अधिकारी है।

श्री रामनाथ पाठक 'प्रणयी' का जन्म विहार राज्य के शाहावाद जिले 'धनछूँहा' नामक गाँव में सन् १९२१ ई० में हुआ था। आप संस्कृत के साहित्याचार्य और व्याकरणाचार्य आदि उपाधियो से युक्त हैं। काशी से प्रकाशित होने वाली 'भारत—श्री, और आरा से छपने वाली 'ग्राम-पंचायत पत्रिका' के सम्पादक भी थे। आप अनेक वर्षों तक राजकीय वेसिक शिक्षण-संस्थाओं में अध्यापक रह चुके हैं। आज कल आप जैन डिग्री कालेज, आरा में हिन्दी के प्राध्यापक के पद को सुशोभित कर रहे हैं।

इसके अतिरिक्त प्रणयी जी वड़े ही कर्मठ व्यक्ति हैं। आप कुछ वर्षो पहिले आरा से भोजपुरी की एक मासिक पत्रिका भी प्रकाशित कर रहे थे जिनके कुछ अंको

१८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

को देखने का अवसर इन पंक्तियों के लेखक को भी मिला था। प्रणयी स्वभाव से नम्र तथा वाणी से मृदुभाषी हैं। 'विद्या ददाति विनयम्' इस के आप साक्षात् मूर्तिमान स्वरूप हैं। आपके कविता-पाठ का ढंग बड़ा आकर्षक है जिससे आपकी रचना की सरसता और भी बढ़ जाती है।

ग्रन्थ—श्री रामनाथ पाठक प्रणयी ने संस्कृत, हिन्दी, और भोजपुरी में अनेक ग्रन्थों की रचना की है जिनके नाम निम्नांकित हैं।

(१) राष्ट्रवाणी (२) श्रद्धांजलि (संस्कृत में), (३) साथी (४) बरसात (५) तीर्थंकर (६) किरण बाँसुरी (७) बाल गीताञ्जलि (८) बाल-गान (हिन्दी में)। इनके हिन्दी निबन्धों का संग्रह (९) चिन्तन और (१०) 'आवत होइहें सावलिआँ' में पाया जाता है। इन्होंने भोजपुरी में गीति काव्यों की रचना की है—(१) कोइलिया (२) सितार (३) पुरइन के फूल (४) कचनार और (५) सोना अइसन भोर। (६) बरदान में प्रणयी की छः संगीतिकाओं का संकलन उपलब्ध होता है जो लेखक के कथनानुसार स्वान्तः सुखाय तथा परान्तः सुखाय दोनों दृष्टियों से लिखी गई है। भोजपुरी में लिखी गई प्रणयी की सभी पुस्तकों में इनके गीतों और संगीतिकाओं का संग्रह हुआ है।

वर्ण्य विषय—प्रणयी के गीतों का वर्ण्य विषय ग्रामीण जन-जीवन का चित्रण तथा प्रकृति के भव्य रूप का पाठकों के सामने प्रस्तुतीकरण है। इन्होंने किसान के जीवन से संबंधित बधार, खलिहान, खेत की जुताई, कटाई, हरियर पात, कियारी, तेली के नाटा, धोबी-धोबिन, आदि विषयों का वर्णन तो किया ही है, इसके अतिरिक्त विभिन्न ऋतुओं की झाँकी भी इनके काव्य में पाठकों को मिलती है। कहीं शरत् का वर्णन है तो कहीं वसन्त का, कहीं वर्षा ऋतु के कष्टों को दिखलाया गया है तो कहीं शिशिर की ठंड का उल्लेख हुआ है। कहने का आशय यह है कि देहाती दुनियाँ से संबंधित जितने भी विषय है वे इस कवि की लेखनी से अछूते नहीं बचे हैं।

'पुरइन के फूल' में प्रणयी की कुछ कविताओं का संग्रह पाया जाता है। डा० रामविचार पाण्डेय की 'अँजोरिया' शीर्षक कविता का पहिले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जा चुका है। अब प्रणयी की 'अन्हरिया' पर दृष्टिपात कीजिये जिसमें की गरीबी का सजीव चित्रण है :—

"आइल रात अन्हरिया ।।टेक।।
ठेहुन पर ले घूघ काढ़ि के, निकसल कवन गुजरिया ।।
भरल तरे गन से वा ऊपर, आसमान के छाती।
बाकिर हाय कहूँ ना नीचे, घर में दीया वाती ।।
झींगुर के झनकार साँझ से, सजा रहल बँसवारी।
घर के भीतर चोर घुसल बा, टूटल परल किवारी ।।
खून बहल कतना के, कतना लाशे भइल नपाता।
रोज रोज के जुलुम मचल बा, कहले हाय ! कहाता ।।
आवो नींन भला आँखी में कइसे एको घरिया।
आइल रात अन्हरिया ।।"

'वरदान' में प्रणयी की संगीतिकाओं का संकलन है। इसमें भोजपुरी र खड़ी—बोली दोनों का प्रयोग किया गया है। विहार में जो अनेक त प्लाण्ट' का निर्माण हुआ है उसका उल्लेख करता हुआ कवि ता है कि—

"आसमान से उतरल गोरिया घर घर में छाइल अँजोरिया।
'वोकारो' के अँगनाई में नाच रहल बा चान रे ।।
ई केकर वरदान रे।

'प्रणयी' ने प्रणय के गीत वड़े ही मधुर स्वर में गाया है। परन्तु इसके रिक्त आपकी कविता को सबसे वड़ी विशेषता है--ग्रामीण प्रकृति का सजीव ण। आपने ग्रामीण दृश्यों का जो चित्र प्रस्तुत किया है वह सरस तथा -स्पर्शी है। देहाती वातावरण को अपनी कविता में उपस्थित करने में हें पूर्ण सफलता प्राप्त की है। 'बधार' शीर्षक इनकी कविता में किसान के न का यह चित्रण कितना सजीव है।

"धनवाँ प चढ़ल धनि ! सोनवा के पनियाँ।
छबियो प रसे रसे अँइठे जवनियाँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ठिठुरल देहिया डँडेरे प किसनवां।
भोरही देखाई देला हुलसल मनवाँ।
देखिके बरेला मन कतहूँ कटनियां।
कतहू लोभाला मन देखि खरिहनियां।
कहुँ पँजिआवल, बान्हल रे, वोझवा बहरवां।
गह गह रे आजु लागेला बधरवां॥

प्रणयी की कविता में पदशय्या की योजना बड़ी ही सुन्दर हुई है। तथा कोमल पदावली का प्रयोग कर इन्होंने ऐसा भाव-चित्र प्रस्तुत किया जो देखते ही बनता है। जैसे—

"धरत धान के थान अंगुरिया ठिठुरि ठिठुरि बल खात।
आइल पूस महीना अगहन, लवटि गइल मुसुकात॥

जाड़े के दिनों में किस प्रकार गरीब, ग्रामीण स्त्रियाँ, जाड़े के ठिठुरते हुए अपने बच्चों को लुगरी पर सुला देती है, इसका वर्णन मर्मस्पर्शी है। 'पूस' नामक अपनी कविता में कवि ने चने के सूख जाने पर जो झनझन की आवाज निकलती है उसकी उपमा पैजनियाँ (घुघुरूँ) से दी है वड़ी स्वाभाविक है। खेसारी (लेतरी) के हरे पौधे की साड़ी को पहिन धरती रूपी 'साँवर गोरिया' रूप-गर्विता नायिका के समान दिखाई पड़ती है। कवि की यह कविता प्रकृति चित्रण का मनोरम काव्य है। अनेक दृष्टियों से यह रचना सुन्दर बन पड़ी है और उत्कृष्ट काव्यों की श्रेणी में रखी जा सकती है।

आइल पूस महीना, अगहन लवटि गइल मुसुकात॥टेक॥
थर-थर काँपत हाथ पैर जाड़ा-पाला के पहरा।
निकल चलल घर से बनिहारिन ले हँसुआ भिनसहरा॥१॥
धरत धान के थान अँगुरिया ठिठुरि-ठिठुरि बल खात।
आइल पूस महीना, अगहन लवटि गइल मुसुकात॥२॥
ढोवत बोझा हिलत बाल के बाज रहल पैजनियाँ।
खेतन के लछिमी खेतन से उठि चलली खरिहनियाँ॥३॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पड़ल पथारी पर लुगरी में लरिका बा छेरियात।
आइल पूस महीना, अगहन लवटि गइल मुसुकात ॥४॥
राह-बाट में निहुरि-निहुरि नित करे गरीबिन बिनियाँ।
हाय ! पेट के आग चुरा ले भागल सुख के निनियाँ ॥५॥
पलक गिरत उड़ि जात फूस दिन हिम-पहाड़ बड़ रात।
आइल पूस महीना, अगहन लवटि गइल मुसुकात ॥६॥
लहस उठल जब गहुम-बूँट रे, लहसल मटर-मसुरिया।
बाज रहल तीसी-तोरी पर, छवि के मीठ बँसुरिया ॥७॥
पहिरि खेंसारी के सारी साँवर—गोरिया अँठिलात।
आइल पूस महीना, अगहन लवटि गइल मुसुकात ॥८॥

इसी प्रकार से प्रणयी जी के द्वारा किया गया चैत मास का वर्णन भी ...णीय है। इसमें मानवीकरण की भावना प्रधान रूप से वर्णित है। वसन्त ...स चित्रण में कहीं कोयल अपनी मधुर वाणी से रसिकों के मन में अमृत ... रही है तो पपिहरा 'पी' 'पी' की रट लगाने में मस्त है। चैत के मादक ...के इस वर्णन को पढ़कर मन मस्त हो जाता है।

आइल चैत महीना, फागुन रंग उड़ा के भागल ॥टेक॥
गह-गह रात भइल कुछ रहके टह-टह उगल अँजोरिया।
सुन-सुन के गुन-गुन भँवरा के मातल साँवर—गोरिया ॥१॥
कसमस चोली कसल, चुनरिया राँगल, झमकल छागल।
आइल चैत महीना, फागुन रंग उड़ा के भागल ॥२॥
खिलल रात के रानी बेली, चम्पा बिहँसल बगिया।
भरल फूल से झूल रहल महुआ के लाल फुनुगिया ॥३॥
भिनसहरा के पहरा पी-पी रटे पपिहरा लागल।
आइल चैत महीना, फागुन रंग उड़ा के भागल ॥४॥
घर के भीतर चिता सेज के सजा रहल बिरहिनियाँ।
आँगन में गिर परल पियासे आन्हर भइल हरिनियाँ ॥५॥
पछुआ के ललकार पिछूती बँसवारी में जागल।
आइल चैत महीना, फागुन रंग उड़ा के भागल ॥६॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सिहर-सिहर रोआँ रह जाता हहर-हहर के हियरा।
हाय ! लहर पर लहर उठत बा जरल जवानी दियरा। ॥७॥
गली-गली में चैता गावत लोग भइल बा पागल।
आइल चैत महीना, फागुन रंग उड़ा के भागल ॥८॥

प्रणयी की काव्य-प्रतिभा प्रधानतया गीतात्मक (लिरिकल) है। इसी ये भोजपुरी में इतने सुन्दर, सरस तथा मनोरम गीत लिखने में सफल हो सके हैं।

२३—श्री मोती बी० ए०

श्री मोती बी० ए०—जो एम० ए० की उपाधि से विभूषित होने पर भी अपने को बी० ए० ही लिखते हैं—भोजपुरी के सुप्रसिद्ध गीतकार हैं। बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न व्यक्ति हैं। इन्होंने भोजपुरी तथा खड़ी बोली दोनों में काव्य की रचना की है। परन्तु आपका नाम भोजपुरी कविता के कारण ही प्रसिद्ध है। आपने गीत लिखा है, शेक्सपियर के सानेटों का पद्य में अनुवाद किया है, अब्राहिम लिंकन नाटक का भोजपुरी रूपान्तर प्रस्तुत किया है पर इनकी ख्याति गीतकार रूप में ही अधिक है।

श्री मोती बी० ए० का जन्म पहली अगस्त सन् १६१६ ई० को उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के बरेजी नामक गाँव में हुआ था। आपकी शिक्षा एम० ए० तक हुई है। आपने बी० टी० तथा साहित्यरत्न को परीक्षायें भी उत्तीर्ण की है। सन् १६३६ ई० से ४३ ई० तक आप 'अग्रगामी', 'आज', 'संसार' और 'आर्यावर्त' आदि पत्रों के सम्पादकीय विभाग में कार्य कर चुके हैं। सन् १६४४ ई० से ५२ ई० तक आप पंचोली आर्ट पिक्चर्स, लाहौर, प्रभात पिक्चर्स, बम्बई और फिल्मिस्तान लिमिटेड, बम्बई में गीतकार के पद पर कार्य करते रहे। यहाँ रहते समय आपने अनेक सरस गीतों की रचना की जो फिल्मी दुनिया में बहुत प्रसिद्ध हैं। इन्ही में 'नदिया के पार' ने विशेष लोकप्रियता प्राप्त की है। आपको अपनी राष्ट्रीयता के कारण सन् १६४२ ई० में वाराणसी के सेन्ट्रल जेल में कारावास की यातना भी भुगतनी पड़ी है। इस समय आप सन् १६५२ ई० से श्रीकृष्ण इराटर कालेज, बरहज, जिला देवरिया में तर्कशास्त्र तथा अंग्रेजी के प्रवक्ता के पद पर काम कर रहे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

ग्रन्थ-रचना—श्री मोती बी० ए० ने अनेक ग्रन्थों की रचना की है जिनमें ...कित प्रधान हैं। (१) मोती के मुक्तक (२) सेमर के फूल (३) वन वन बोलेले ...लिया (४) महुआ बारी (५) कवि-मानव-साधना (६) अब्राहम लिंकन (भोजपुरी ...) (७) शेक्सपियर के सानेट्स का अनुवाद (८) एक शायर (९) रवी... ...जरा।

इन ग्रन्थों की संक्षेप में यहाँ चर्चा की जाती है। 'मोती के मुक्तक' में ...पुरी, हिन्दी और उर्दू में लिखे गये मुक्तको का संग्रह है जिनमें प्रारम्भ के ... पृष्ठो में भोजपुरी की कवितायें दी गई हैं। इनकी दूसरी रचना 'सेमर ...फूल' है जिसमें इस कवि की २२ कविताओं का संग्रह है। इस संकलन ... 'महुवा बारी में' शीर्षक कविता विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस गीत ... मोती बी० ए० ने ग्रामीण प्रकृति का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया ... महुआ किस प्रकार से फूलता और फलता है इसका वर्णन अत्यन्त रमणीय ... पड़ा है।

'अइसन नसा झोंकलसि कि गदाये लागल पुलुई,
पोरे पोरे मधू से भराये लागलि कुरूई।
महुवा एइसन ले रँगरइले
जरीं पुलुई ले कोंचइले।
लागल डाढ़ी डाढ़ी डोलिया, कहाँर सजनी,
असो आइल महुवा .वारी मे बहार सजनी ॥"

...ग्रामीण स्त्री महुआ के फूल से 'महुअरि' नामक पक्वान्न पकाकर खेतों ... गर्मी के दिनों में, आकाश के नीचे काम करने वाले अपने पति के पास ...ती है। निर्धनता से पीड़ित ग्रामीण जनता-जनार्दन के लिए यही अनार ... और यही किसमिस है। अपनी गरीबी के कारण उन्हें असली किसमिस के ... लेने का भला कहाँ सौभाग्य प्राप्त हो सकता है ? इसी विषय का वर्णन ... ने किस मर्मिकता के साथ किया है।

सइयाँ खातिर वारी धनियाँ महुअरि पकावेली,
केहू बनिहारे खातिर तावा पर ततावेली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

महुआ बैल प्रेम से खावें गाड़ी खींचे, जोत बनावें
ई गरीबवन के किसमिस अनार, सजनी ! असों आइल...

श्री मोती बी० ए० ने ग्रामीण प्रकृति के चित्रण में सिद्धहस्तता प्राप्त है। 'कटिया के सुतार' में कृषक जीवन का सजीव चित्रण प्रस्तुत किसान के लिए वर्षा कब उपयोगी होती है तथा किस नक्षत्र में विभिन्न को सम्पन्नता प्राप्त होती है इस संबंध में कवि कहता है कि—

उखिया के रसवा, जोन्हरिया के लउवा।
जियलनि मघवटे बिटिउवा बेटउवा ॥
फागुन की चढ़ते गदाइल, मोटाइल।
चितरा के गोहूँ, सेवाती के जउवा ॥
बिटिया न रहिहें कुँआर, हो सजनी! कटिया के आइल सुतार!

यों सेमर के फूल में गन्ध तथा सरसता का नितान्त अभाव पाया जाता है—निर्गन्धाः इव किंशुकाः—परन्तु इन "सेमर के फूलों" में सरसता, रमणीयता और मनोरमता उपलब्ध होती है।

श्री मोती बी० ए० की तीसरी काव्य रचना "वन वन बोलेले कोइलिया" है जिसमें आठ 'लोक-संगीतिका' का संग्रह उपलब्ध होता है। इस संबंध में कवि कहता है कि—"भोजपुरी लोकमंच के अन्तर्गत जोगीड़ा, कठपुतरी नाच, नौटंकी, धोबियों और कहारों के नाच का विशिष्ट स्थान है। संगीतिका अथवा लोक—संगीतिका उपर्युक्त मंच के लिए सर्वथा नवीन है। विदेशों में 'बैले' मंच पर खेले जाते हैं। संगीतिका उसी का परिवर्धित रूप है। इसमें सन्देह नहीं कि ये लोक संगीतिकायें भाषा और शैली की दृष्टि से भोजपुरी में एक नवीन प्रयोग हैं। इन संगीतिकाओं को अनेक बार मंच पर सफलता के साथ खेला भी जा चुका है। इनमें 'रासलीला' और 'चलो खेत की ओर' बहुत सुन्दर हैं। गोपियों का यह विलाप सुनिये १।

"हरि लिहले मनवाँ, छोड़वले जहनवाँ।
हाय हाय रे कान्हा, रोय रोय ढूढू मधुवनवा।

१. वन वन बोलेले कोइलिया—पाथेय पृ० १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

काहाँ हम चुकली, कवन पाप कइलीं।
छोड़ेले कवने करनवा, हाय हाय रे कान्हा ॥"

"चलो खेत की ओर" में बच्चों के इस खेल का वर्णन कितना स्वाभाविक है।

"छिछिली गड़हिया, छिछिल भरि पानी।
ओही में से निकलेली, ललकी भवानी॥
चित्ती कउड़ी पानी में, बटइल मेरा।
सीसो घाट, जनक पुर ड़ेरा॥"

"शेक्सपियर के सानेट्स का हिन्दी पद्यानुवाद" में मोती बी० ए० ने अंग्रेजी के इस महाकवि के १०६ कविताओं (सानेट्स) का अनुवाद खड़ी बोली हिन्दी में प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार से 'रबी बेन एजरा' में रावर्ट ब्राउनिंग की सुप्रसिद्ध कविता का भावानुवाद किया गया है। यह अच्छा होता यदि मोती जी अपनी कविता रूपी मोती के प्रकाश से भोजपुरी को ही प्रकाशित करने का प्रयास करते। इस दिशा में उन्हें अधिक सफलता और लोक प्रियता प्राप्त हो सकती है।

२४—डा० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध'

डा० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' से भोजपुरी के पाठक चिर परिचित हैं। 'चतुरी चाचा' के नाम से ही अधिक प्रसिद्ध हैं। श्री मुक्तेश्वर तिवारी—कविता में अपना उपनाम 'बेसुध' लिखते हैं—का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के आसापुर नामक गाँव में वैसाख शुल्क १३ संवत् १९८४ वि० (१९२७ ई०) में हुआ था। आपके पिता का नाम यदुनन्दन तिवारी था। आपने एम० ए० तथा एम० काम० की उपाधि प्राप्त की है। इसके अतिरिक्त आप एल० टी० तथा 'साहित्य रत्न' भी हैं। आपको काशी विद्यापीठ के द्वारा 'वैष्णव अध्यात्म दर्शन का मध्यकालीन हिन्दी सन्त-साहित्य पर प्रभाव' शीर्षक शोध प्रबन्ध के लिए पी० एच०—डी० की उपाधि प्रदान की गई है। उत्तर-प्रदेश की सरकार के द्वारा आप इस वर्ष उपर्युक्त पुस्तक के लिए पुरस्कृत भी किये गये हैं। इस समय आप मरचेन्ट्स इण्टर कालेज, चिट बड़ागाँव,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जिला बलिया में हिन्दी के प्राध्यापक हैं। इनकी कविताओं और नाटकों का प्रसारण आकाशवाणी, इलाहाबाद से कई बार हो चुका है।

आपने गद्य तथा पद्य में अनेक पुस्तकें लिखी हैं जिनके नाम निम्नांकित हैं। (१) चतुरी चाचा की चटपटी चिट्ठियाँ भाग १ तथा २, (२) ... (३) मेघमाला (४) हिमालय ना झुकी कबहूँ (५) भोजपुरी लोकोक्तियाँ और मुहावरे। इनमें से हमारा संबंध यहाँ केवल 'हिमालय ना झुकी ...' से ही है। इनकी अन्य पुस्तकों का वर्णन यथा स्थान किया जायेगा।

इस पुस्तक में 'वेसुध' जी की चीन विरोधी कविताओं का संकलन है। चीन ने भारत पर जो आक्रमण किया था उसी युद्ध की प्रतिक्रिया के ... इस पुस्तिका की रचना की गई है। 'ललकार' शीर्षक कविता में इस ... के समय इस देश के वासियों के हृदय के उमंग तथा उत्साह की प्रशंसा ... हुआ यह कवि कहता है कि—

बीतल आलस, सब जागी गइल, कायरपन सभकर भागि गइल।
सब टूटि परल जूझे खातिर, जब रिपु से लोहा लागि गइल ॥१॥
जब जागल जोश जवानी में, पौरुष पहुँचल बलिदानी में।
देखो दुनिया अब आगि लगत, कइसे बर्फीला पानी में ॥२॥
जागल जौहर, जरि आग गइल, बैरिन खातिर बनि नाग गइल।
छन भर में छार करी दुश्मन, आगी बनी सती सुहाग गइल ॥३॥

भारतवासियों ने इस अवसर पर चीन को जो चुनौती दी थी उसका वर्णन ... ओज़पूर्ण शब्दों में किया गया है—

जब हमरा वीर सिपाहिन पर, अचके में दुश्मन टूटि परल।
तब प्रान हथेली पर धइके, झट वीर बाँकुरा जूझि परल ॥१॥
सन सन गोली बन्दूक चलल, तोपन से गोला छूट चलल।
कतहीं जो गोली चूकि गइल, खाली हाथन से लूझि परल ॥२॥
बैरिन के घंटई दाबि दाबि, धड़-धड़ के टँगरी चीरि चलल।
दुश्मन के छाती काँपि उठल, केतना पानी बा नापि उठल ॥३॥
मचि गइल सभत्तर त्राहि त्राहि, बैरी वापस गम्भीर चलल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'हिमालय ना झुकी कबहूँ' इस प्रकार एक ओज-प्रधान काव्य है जिसमें ने अपने देश वासियों का, चीन से जूझ मरने के लिए, आह्वान किया है। डा० मुक्तेश्वर तिवारी की दूसरी पुस्तक 'मेघमाला' है जिसमें अनेक ताओं का संग्रह है। इस कवि ने जहाँ युद्ध अथवा संघर्ष का वर्णन नहीं है वहाँ इसकी भाषा सरस तथा सुन्दर बन पड़ी है। 'पूस की रात' की पंक्तियाँ लीजिए—

पहिन सूगा पंखी सारी, भइली धरती सुकुमारी।
बइठो अँचरा पसारी, जोहे राह पिया के॥
बहे पछुआ बतास, रोवे, राति भर अकास।
बाड़ी धनिया उदास, सूनी सेजिया के॥
धनि गरीबन के भागि, तापे कुउड़ा के आगि।
देलन भुखिया के दागि, साग—भजिया से॥
राति मोती लहरावे, साँझि सोना बरसावे।
लुगरी से धनि बचावे, अपना लजिया के॥

परन्तु कवि की अपेक्षा 'बेसुध' जी गद्य-लेखक के रूप में ही अधिक प्रसिद्ध इनकी विशेषता यह है कि ये पद्य-रचना के अतिरिक्त गद्य-रचना भी करते इसके साथ ही आलोचनात्मक ग्रन्थों के निर्माण में भी आप सक्षम हैं। प्रकार से त्रिविध रचना-शक्ति की सम्पदा आपके व्यक्तित्व में एकत्र होती है जो सामान्यतया अन्यत्र नहीं पायी जाती।

२५—श्री 'राहगीर'

श्री 'राहगीर' जी वास्तविक रूप में कवि है। सिर पर लम्बे लम्बे बाल, र में ढीला-ढ़ाला लम्बा कुरता, खद्दर की धोती और पैरों में चप्पल आपकी वेश-भूषा है। बनारस में अनेक वर्षों तक निवास करने के कारण रसी-पान' भी आपका चिरसंगी बन गया है। इनके स्वरूप को देखते ही यह में देर नहीं लगती यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं है। राहगीर के न में मस्ती है, आनन्द है और उल्लास है जो संक्रमित होकर उनकी कविता में व्याप्त हो गया है। ये भोजपुरी के गीतकार के रूप में अधिक प्रसिद्ध हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

श्री राहगीर जी का जन्म देवरिया जिले के मधुरिया, फाजिल नगर संवत् १९७९ वि० में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा के बाद आपने राजनीति में सक्रिय भाग लेना प्रारम्भ किया और अनेक वर्षों तक इस कार्य को सुचारु रूप से करते रहे। परन्तु सन् १९५२ ई० से आप राजनीति से बिल्कुल अलग हो गये हैं। आजकल आप विगत बीस वर्षों से का सामाजिक तथा साहित्यिक कार्यों में संलग्न हैं। भोजपुरी साहित्य की मन, धन से सेवा करना ही आपके जीवन का उद्देश्य है और इसकी में आप सदा प्रयत्नशील रहते हैं।

श्री 'राहगीर' ने अनेक ग्रन्थों की रचना की है जिसमें निम्नांकित ग्र हैं—(१) आधुनिक भोजपुरी गीत और गीतकार (२) भोजपुरी के गीत और गीतकार (३) राहगीर के गीत (४) गाँव की लोक (५) गाँव की कहानियाँ (६) तीन भाई—तीन रास्ते (७) अने भाग्य। इनमें पहिली पुस्तक में भोजपुरी के ४१ कवियों का संक्षिप्त परि उनकी कविताओं के उदाहरण के साथ दिया गया है। दूसरी पुस्तक भोजपुरी के नये तथा तरुण ४२ कवियों की कविता का संकलन है। इ प्रकार से ये दोनों पुस्तकें भोजपुरी के नवीन कवियों का परिचय प्राप्त में अत्यन्त सहायक हैं। इस कवि ने अपने संकलन में तरुण कवियों को सम्मिलित कर उन्हें बड़ा प्रोत्साहन प्रदान किया है। परन्तु 'राहगीर' निजी कविताओं का संग्रह "राहगीर के गीत" नामक पुस्तक में पाया जा है।[1] इसमें वसन्त, वर्षा, शरत् आदि ऋतुओं के वर्णन के साथ ही कुछ वि गीत भी दिये गये हैं। इसके अतिरिक्त कुछ श्रद्धांजलियाँ और हास्यव्यं संबंधी गीत भी उपलब्ध होते हैं।

श्री राहगीर जी भोजपुरी के उन कवियों में से हैं जिनके जीवन औ काव्य दोनों में मस्ती पायी जाती है। इन्होंने कवि का हृदय प्राप्त किया है अतः इनकी कवितायें अत्यन्त सरस और रमणीय है। वसन्त ऋतु के संबं

१. राहगीर–प्रकाशन, वाराणसी से सं० २०२२ वि० में प्रकाशित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

आपकी रचनायें बड़ी मधुर हैं जिनमें ग्रामीण प्रकृति का सजीव चित्रण गया है। राहगीर जी ने प्रकृति को बधू के रूप में देखा है और उसका ण कवि की पैनी दृष्टि से किया है। कुछ पंक्तियाँ लीजिए—

आइल बसंत, बसंत रितु आइल,
अँगना में मोर पिया चाँन मुसुकाइल।
कलि कलि चिटकलि महकलि बगिया,
कसमस देहियाँ, मसकलि मोरि अँगिया॥
दिन दिन मोर रँगवा पियराइल,
आइल बसंत, बसंत रितु आइल।

इस कवि ने विकास के भी गीत गाये हैं। सरकार की विकास योजनाओं रण गाँवों में सुख का साम्राज्य स्थापित हो रहा है इसको लक्षित कर कवि कहता है कि—

हमरे देशवा में देख ना विकास होत वा।टेक।
कतहूँ बन्हाइल बाँध, कतहूँ घेराइल बाँध।
देखि देखि जियरा हुलास होत वा।
हमरे देशवा में देख ना विकास होत वा॥
नहर के जाल बिछल, कूँआ के पाँत बिछल।
उसर धरती के नाश होत वा।
हमरे देशवा में देख ना विकास होत वा॥
भाखड़ा, दामोदर घाटी, सोने के भयलं माँटी।
धरती पर सरग के भास होत वा।
हमरे देसवा में देख ना विकास होत वा॥

महामना मालवीय जी को विनीत श्रद्धाञ्जलि प्रदान करता हुआ कवि त स्वर से निवेदन करता है कि—

गंगा लहरिया जब रोष से उबलि गइल,
बाबा हँसे गंगा के गुस्सा पिघलि गइल।
माँ के ममता कैसे पूत के बदे बदल गइल,
काशी के धाम मालवी के नाम लिखि गइल॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

काशी के धाम एक भगत के नाम लिखि गइल।
नाम मदन मोहन, काम देश के पहरिया,
रूप बेश जैसे गंगा तोरी लहरिया।
माँगी माँगी जोरी जोरी गाँव और बजरिया,
शारदा के मंदिर बनल, ज्ञान के नगरिया ॥
धरम-धुजा सरस्वती के अँचरा फहरिया।

राहगीर जी के कविता-पाठ का ढंग बड़ा सुन्दर तथा मधुर है। सम्मेलनों में आप अपनी कविता सुनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। इस प्रकार मधुर वाणी तथा मधुर काव्य के कारण राहगीर जी भोजपुरी के कवियों में अत्यन्त प्रसिद्ध हैं तथा लोकप्रिय हैं।

२६—श्री भोलानाथ 'गहमरी'

श्री भोलानाथ 'गहमरी' का जन्म गाजीपुर जिले के सुप्रसिद्ध गाँव 'गहमर' में १७ दिसम्बर सन् १६२३ ई० में हुआ था। आपकी शिक्षा-दीक्षा इण्टर तक हुई है। अनेक कारणों से आपका अध्ययन-क्रम आगे न बढ़ सका। आजकल आप राजकीय विद्युत कम्पनी, प्रयाग में एक उच्च अधिकारी के पद पर प्रतिष्ठित हैं।

'गहमरी' जी भोजपुरी के सुप्रसिद्ध गीतकार हैं। परन्तु इनके गीतों को स्वर देने का श्रेय झंकार पार्टी के संचालक श्री खलील को प्राप्त है जिन्होंने अपनी गायक पार्टी के सदस्यों के साथ गहमरी जी के इन गीतों को बड़े ही मधुर स्वर में गाया है। जब इन पंक्तियों के लेखक को सन् १९६६ ई० में विजिटिंग प्रोफेसर होकर यूरोप और अमेरिका जाने का अवसर मिला था तब वह गहमरी जी के कुछ गीतों को टेप रेकार्ड करा कर अपने साथ ले गया था। वहाँ इन मधुर गीतों को सुनकर अनेक विश्वविद्यालयों में इन गीतों का पुनः टेप रेकार्ड किया गया। इस प्रकार गहमरी जी के अनेक गीतों को यूरोप और अमेरिका के विभिन्न विश्वविद्यालयों के अभिलेखागारों (आरकाइव्ज) में सुरक्षित होने का गौरव प्राप्त है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

in Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

गहमरी जी गीतकार होने के अतिरिक्त बड़े ही कर्मठ व्यक्ति हैं। इन्होंने १६६६ ई० में काशी के भोजपुरी सांस्कृतिक सम्मेलन का अधिवेशन में, और अगले वर्ष इसी सम्मेलन का आयोजन अपने गाँव (गहमर) बड़ी सफलता के साथ किया था। गहमरी जी के गीतों का संकलन "वहार ना" के नाम से प्रकाशित हुआ है१। आपने ग्रामीण प्रकृति के सरस ण के साथ ही देश-भक्ति के भी गीत गाये हैं। 'वसन्ती वयार' का वर्णन सुनिए।

मातलि रस से गुलबवा कि कलिया,
मोरहीं जगावे भँवरवा कि बोलिया,
सुधि-बुधि बिसरे निहार। बसन्ती बयार
हँसत खेलत हरिअइली धरतिया,
गेहुँवाँ के पोरे - पोरे लहरे पिरितिया,
जलवा में लहरे सेवार। बसन्ती वयार
भरि उठे रसवा से रसे - रसे बगिया,
वनवाँ में फुलवा फुले हो जइसे अगिया,
फुलि गइलें सेमरा अँगार। बसन्ती बयार

इनके देश-भक्ति के गीतों में "मोर सिपाही हो" शीर्षक कविता बड़ी सुन्दर तथा सरस है। युद्ध-क्षेत्र में शत्रुओं की सेना से मोर्चा लेने वाले ों को प्रशंसा करता हुआ कवि कहता है कि ए मेरे देश के जवानों! जब भारत माता पर विपत्ति आई है तब तब तुम्हीं ने माता के लाज की रक्षा है। इस सुप्रसिद्ध गीत की कुछ कड़िया इस प्रकार हैं—

जब-जब देसवा पर परली रे बिपतिया।
मोर सिपाही हो-ऽ, लजिया के तूँ ही रखवार ॥ मोर०
बाप महतारी तेजल-ऽ, तेजलऽ-तिरियवा।
मोर सिपाही हो-ऽ, तेजल-ऽ तूँ घरवा-दुआर ॥ मोर०

१ भारतीय प्रकाशन, ६२ / १३६ स्वामी विवेकानन्द मार्ग, इलाहाबाद। १९६४ ई०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

छोड़ि सुख-निंदिया भइली तपसी जिनिगिया।
मोर सिपाही हो-ऽ, चूमेले माटी लिलार॥ मोर०
मनवाँ गंगा जल लागे, गीता तोरी बोलिया।
मोर सिपाही हो-ऽ करतव अटल पहार॥ मोर०

'कहीं भीजे न कजरा' शीर्षक आपकी कविता में बड़ी हृदय द्रावक... इसीलिए संभवतः यह इतनी लोकप्रिय हो गई है। कुछ पंक्तियाँ लीजिए—

भींजे जो अँचरा त भींजे हो, कहीं भीजे न कजरा। भींजे०
फुलवा चुनिय सखि, हार बनवलीं,
रचि-रचि मेंहवीं से हाथ रचवलीं,
सूखे मेंहदिया त सूखे हो, कहीं सूखे न गजरा। भींजे०
ठाढ़ी दुअरिया केहू त समुझावे,
कौने कारन पिया आजो न आवे,
रूठे जो सुधिया त रूठे हो, कहीं रूठे न जियरा। भींजे०
केसे कहीं सखि मनवाँ क बतिया,
बैरिन भइलि बिसवासिल रतिया,
घेरे अन्हरिया त घेरे हो, कहीं घेरे न बदरा। भींजे०

२७—श्री चन्द्रशेखर मिश्र

श्री चन्द्रशेखर मिश्र का जन्म ७ जुलाई सन् १९३१ ई० को मिर्ज़ापुर जिले के मिश्रधाम, तिलठी नामक गाँव में हुआ था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई। इसके पश्चात् भदोही (जिला-वाराणसी) से आपने हाईस्कूल की परीक्षा पास की। 'साहित्यरत्न' की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् दो वर्षों तक, आपने एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में हिन्दी अध्यापक का कार्य किया। इसके पश्चात् आप काशी आये और 'सन्मार्ग' नामक दैनिक पत्र के सम्पादकीय विभाग में अनेक वर्षों तक काम करते रहे। इस समय काशी नागरी प्रचारिणी सभा में नौकरी कर रहे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चन्द्रशेखर मिश्र जी ने मिर्जापुर जनपद के गाँवों में घूम घूम कर हज़ारों गीतों का संकलन किया है जिससे इनकी काव्य–रुचि का पता चलता है। आपके अनेक गीत रेडियों स्टेशनों से प्रसारित हो चुके हैं। आपकी "झुलनी" नामक नाट्य-गीति का रेकार्ड भी तैयार हो चुका है। भोजपुरी साहित्य में वीररस का अलख जगाने वाले आप एक मात्र कवि हैं। आपने "कुँवरसिंह" नामक एक महाकाव्य की रचना की है जिसके नायक सुप्रसिद्ध बाबू कुँवरसिंह है। इन्होंने सन् १८५७ ई० में अंग्रेजी सरकार से लोहा लिया था। हिन्दी के आधुनिक कवियों में जो स्थान 'हल्दी–घाटी' के रचयिता श्री श्यामनारायण पाण्डेय को प्राप्त है, भोजपुरी के कवियों में चन्द्रशेखर मिश्र भी उसी पद के अधिकारी हैं। श्रृङ्गार रस के इस युग में, वीररस का पल्ला पकड़कर, काव्य की रचना करने वाले मिश्र जी, अपने क्षेत्र में अद्वितीय है। आपका 'कुँअरसिंह' नामक काव्य–ग्रन्थ महाकाव्य के लक्षणों की कसौटी पर खरा उतरता है या नहीं यह विवाद का विषय है क्योंकि इसमें महाकाव्य के प्रधान लक्षणों का नितान्त अभाव है। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि आपकी कविता में वीर रस प्रचुर परिमाण में पाया जाता है।

मिश्र जी भावावेश में आकर, कवि-सम्मेलनों में इस काव्य की कविताओं को उच्च तार स्वर से पाठ करने लगते हैं तब सम्मेलन में एक समाँ बँध जाता है और श्रोतागण मंत्र मुग्ध होकर आपकी ओजपूर्ण वाणी को सुनने में निमग्न हो जाते हैं। "चुरिहारिन गाँव में आवत नाहीं" आपकी सुप्रसिद्ध वीररसमयी कविता है जिसे आप किसी भी सम्मेलन में सुनाने में नहीं चूकते। "कुँवरसिंह" काव्य पर आपको उत्तरप्रदेश सरकार के द्वारा दो हजार रुपयों का पुरस्कार भी प्राप्त हो चुका है। यह मिश्र जी के लिए और भोजपुरी के लिये गौरव का विषय है। इस महाकाव्य की ओजगुणमयी दो कवितायें अंकित हैं१—

१. चन्द्रशेखर मिश्र–कुँअर सिंह पृ० १०२, १०७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

(१)

नेवता बलि बेदी-क छोड़ि के, औरन कऽ कबहूँ यहँ आवत नाहीं।
मारू–जुझारू बजइँ बजना, केउ दूसर राग बजावत नाहीं॥
छोड़ि के बीर भरी कविता, रस दूसर में केहु गावत नाहीं।
छूरि–कटारि बिकइँ सगरउँ, चुरिहारिन गाँव में आवत नाहीं॥

(२)

बीर चढ़े रन खेत में अन्तिम-साँस ले पालल्हि गइ परिपाटी।
मूड़ इहाँ जेतना कटलैं, पटले ओतना पटि जाइत घाटी॥
बोलि उठीं तिरिया घर में, हम कोखि अउ माँग चढ़ावत बाटी।
कइसे तहाँ बइरी बसिहें, सेन्हुरउ-क सोहाग भई जहँ माटी॥

२८--श्री जगदीश ओझा 'सुन्दर'

श्री जगदीश ओझा 'सुन्दर' का जन्म बलिया जिले के मिश्रवलिया (डोह) गाँव में ३१ दिसम्बर सन् १९१३ ई० को हुआ था। हाईस्कूल से आपने काव्य-रचना प्रारम्भ कर दी थी। खड़ी बोली और भोजपुरी पर आप समान रूप से अधिकार है। आप एक प्रमुख गीतकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। आपने अनेक वर्षों तक बलिया नगर-पालिका के शिक्षा-विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य किया। आजकल आप गाजीपुर की नगर-पालिका में इसी पद पर प्रतिष्ठित हैं। सुन्दर जी ने अनेक पुस्तकों की रचना की है जिनमें (१) स्व… (२) विद्रोही बलिया (३) क्रान्ति के बीज (४) भिखारिन तथा (५) द… आदि प्रमुख है। जगदीश ओझा ने बलिया की ग्रामीण प्रकृति का पर्यवे… खुली आँखों से किया है। अतः इनकी कविता में जन जीवन का सजीव चित्र… हुआ है। 'सोहनी के गीत' में खेत की रखियाली का यह वर्णन रमणीय है[१]।

रहि रहि के खेतवा में झनकेली चुरिया, सोहनी के अइली बहार!
सगरे सरेहिया में उगली हरियरी, रहि रहि सनेहिया में सींचेली बदरी,

१. राहगीर—ग्रा० भो० गी० गी० पृ० ३६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

बँनिया डोलावेली पुरुवा बयरिया, रसवा के छोड़े फुहार। सोहनी ... !
नन्हीं नन्हीं खुरुपी के लंबी लंबी बेंटवा, ननदी भउजियो निरावेली खेतवा।
बइ रे उमरिया लुगरिये में ढांकल, बतिया से छलके दुलार। सोहनी..!
ऊपर बदरिया वा तनले चननिया, धरती बिछवले वा धानी चदरिया।
बिचवा में माया के लागलि बजरिया, थाके ना नयना निहार। सोहनी..!

२९—श्री श्यामसुन्दर ओझा 'मंजुल'

श्री श्यामसुन्दर ओझा 'मंजुल' का जन्म बलिया जिले के 'मिश्रवलिया' गाँव में सन् १९११ ई० को हुआ था। आपने एम० ए० तथा साहित्य-की उपाधि प्राप्त की है। अनेक वर्षों तक आप राजकीय विद्यालय, में प्राध्यापक थे। इसके पश्चात् आपको स्थानान्तरण राजकीय इण्टर ज, रामनगर, वाराणसी में हुआ था।

मंजुल जी कवि, कहानीकार तथा नाटककार भी हैं। आप भोजपुरी तथा बोली में समान रूप से काव्य की रचना करते हैं। आपकी खड़ी बोली कविताओं का संग्रह 'अरुणिमा' के नाम से प्रकाशित हो चुका है। आपकी ...न' शीर्षक कविता में प्रभात का वर्णन सजीव हो उठा है १।

पुरुब का देसावा से झाँके बिहनवाँ, चहके चिरइन के गोल।
...रे ला, धरती के धानी चदरिया, जागलि किरिनियाँ, लुकाइल अन्हरिया।
...अये के तालावा में सूतल कमलावा, ताके नयनवाँ के खोल ॥
...री में काली बदरिया रँगाइल, अइले गगन में सुरुज अगराइल।
...निया का अँखिया से ढरकल लोरवा, मोती बनल अनमोल ॥

३०—श्री राधा मोहन 'राधेश'

श्री राधा—मोहन 'राधेश'जी का जन्म विहार राज्य के सारन जिले हुआ था। आपके पूज्य पिता का नाम शिव वचन सिंह था जिनके ...पर आपने शिववचन सिंह पुरस्कार की योजना की है। राधेश जी ने

१. ...राहगीर—आधुनिक भोजपुरी गीत और गीतकार पृ० २१-२५

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अपने समस्त जीवन को भोजपुरी की सेवा में लगा दिया है और आज तन-मन-धन से भोजपुरी साहित्य के प्रसार तथा प्रचार में संलग्न हैं। कार्यों का विशेष वर्णन यथा स्थान किया जायेगा।

आपके भोजपुरी के उन्नायक ही नहीं प्रत्युत कवि भी हैं। आपकी कवि सदा पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। आपकी शब्द— सुन्दर होती है और पदावली में सरसता पायी जाती है। आपकी कवि उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जाता हैं।

आपकी "माटी की लाज" शीर्षक कविता प्रसिद्ध है जिस में आपने भाषा और साहित्य की रक्षा के लिए युवकों को उद्बोधित किया है। से निश्चय ही बड़ी प्रेरणा मिलती है।

बात बनावे के बारी न बाटे—कि माटी के बोली बचावे के बारी।
जागि के देख मसाल जराई के, बा उठकेरल तलफत आगी।
चेतल लो सभ माटी के बेटन, पाँच किरोड़ चुपाइल काहे।
देस-बिदेस ले बा छपले, ओकरे बेटवा मेहराइल काहे।
केनिया, युगांडा के नांव गिनाईं का ? गाइना ले ई बोली मसतानी।
फिजी-मरीशस ले छपले, उहे भोजपुरी काहे ना मुसकानी।
बा इतिहास के पन्ना रंगाइल, अइसन केकर बा बलिदानी।
जाग लगाई के जोर तनी, तु बचावना माई के लाज वो पानी,
मांग ना राज के, राज के नीति ना, भासा के भाव सभे में समानी।
भोजपुरी के जिए के ह मांग, कि दोसर ना कुछु झूठ बखानी।
अस्सी के हड्डी जवानीमें मातल, पानीमें आग लगाई के मानी।
वोही के पूत 'राधेश' जे चाहत, माटी के आज बचाव त जानीं।

३१—श्री सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश'

श्री सतीश्वर सहाय वर्मा का जन्म विहार राज्य में हुआ आप भोजपुरी के कवि और नाटककार के रूप में प्रसिद्ध हैं। आप कविताओं का प्रकाशन अनेक पत्र-पत्रिकाओं में हुआ है। आपके एक सामाजि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

-माटो के दीआ घीव के बाना—का प्रकाशन अभी हाल में (मार्च सन् ७२ ई०) आ है। आपकी कविताओं का संग्रह, 'कठयुतरी' के नाम से प्रकाशित हो चुका 'ीश' जी भोजपुरी के प्रतिभाशाली कवि हैं। इनकी कविता में सरसता तथा ता का सुन्दर सामंजस्य पाया जाता है। भोजपुरी प्रकृति के चित्रण शेषता इनकी कविता में पायी जाती है। 'वदरिया घेरि आइल घनघोर' की क्तियां उदाहरण रूप में प्रस्तुत की जाती हैं।

भींगल नयनवाँ के कोर हो, वदरिया घेरि अइले घनघोर !
तातल पनिया से धुआँ उठि अइले छाई गइले अँखिया के बीच,
जेठवा से भंभुरल करेजवा के रहिया, पर छिलबिल करि गइले कीच,
पहिले असढ़वा में छाड़ि दिहले घरवा में,
तुरि के सनेहिया के डोर हो !
आधी-आधी रतिया के पिहके पपिहरा, पिहके परेउआ, के परान,
अँधिया में टूटि उधिअइले सपनवाँ खोतवा में बिलखे जहान।
छतिया जे दरकेला बँहिया जे फरकेला,
अँचरा के भीरे बहे लोर हो।

३२—श्री विवेकी राय

आपका जन्म गाजीपुर जिले के सोनवाती गाँव में २५ जुलाई सन् १९२७ ई० आ था। आपकी शिक्षा एम० ए० तक हुई है। आप गद्य के सिद्ध हस्त हैं। आपका नाम कवि की अपेक्षा गद्य-लेखक के रूप में ही अधिक है। वाराणसी के दैनिक "आज" में 'मन बोधन मास्टर की डायरी' म से आपके लेख प्रायः प्रकाशित होते रहते हैं। आपने अनेक पुस्तकों की की है जिनमें निम्नांकित प्रकाशित हो चुकी हैं। :—

(१) अर्गला (काव्य), (२) जीवन परिधि (कहानी), (३) किसानों का (निबन्ध) (४) गाँवों की दुनिया (निबन्ध), (५) त्रिधारा (निबन्ध)। आपने 'ात' और 'प्यास' नामक दो अन्य काव्यों की भी रचना की है जो संभवतः प्रकाश में नहीं आये हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

इनकी 'शरद्' नामक कविता की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं :—

झूमि उठल मद भीनल बदरा, खंजन नयन निहार रे!
आइल शरद बहार रे, आइल शरद वहार।
पहरा बीति गइल पावस के, लोग भइल खुशहाल,
ताल–ताल पर कलरव उतरल, धरती भइलि निहाल।
झलकलि पूरब ओर भोर की गोरिया दमकल भाल,
चमकलि पाँव पखारलि मोती, गमकल मलल गुलाल!
हंसा चलल बिदेसे, अइली ढेंकी बान्हि कतार रे।
आइल शरद वहार॥

२३--श्री राम वृक्ष राय 'विधुर'

श्री 'विधुर'जी का जन्म गाजीपुर जिले के खड़िया नामक गाँव में सद सन् १९३७ ई० को हुआ था। आपकी शिक्षा माध्यमिक कक्षाओं तक हु पश्चात् आप स्वतंत्र रूप से अध्ययन करने लगे। आप भोजपुरी और बोली में समान रूपसे कविता करते हैं। 'गरिमा' नामक आपका गीत सं प्रकाशित हुआ है। आपकी भोजपुरी कविताओं का संकलन "झुरुकि वहे इस नाम से अभी थोड़े दिन हुए प्रकाश में आया है इस पुस्तक में आ सुन्दर तथा सरस कवितायें उपलब्ध होती हैं।१ आपने भोजपुरी कहानियों भी संकलन किया है। आपकी 'वरखा गीत' शीर्षक कविता यहां प्रस्तु जाती है।

वरिसेला पनियाँ पावस के वदरवा, झुरुकि वहे ना
पुरवइया बयरिया।
नाचेला मोरवा, बोलेली कोइलरिया, फँफाई गइली ना
सखि! तलवा-तलइया।

---

१. अन्तर ग्रामीण सुहृद साहित्य गोष्ठी, गाजीपुर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

in Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

हरियर लहँगा पहिरि हँसे भूँइयाँ, लहर मारे ना
सूगा पँखिया अँचरवा।
पिआ - पिआ रटे रामा पापी पपीहरा, दरद उठे ना
मोर आल्हर करेजवा।

३४--श्री हरिराम द्विवेदी

आपका जन्म मिर्जापुर जिले के शेरवा नामक गाँव में १२ मार्च सन् १६३६ हुआ था। आपकी शिक्षा-दीक्षा बी० ए० तक हुई है। आजकल आप [वा]राणसी के रेडियो स्टेशन में पंचायतघर प्रोग्राम में कार्य करते हैं। [आ]प भी भोजपुरी और हिन्दी में समान रूप से काव्य-रचना करते हैं। [']गंगा मइया' शीर्षक इनकी कविता की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं।

हे गंगा मइया, तोहरी दोहइया
लाग सहइया हमार मोरी बलइयन टार
सधिया हमारी जइसे कुँवारी धीया क कारवर माँग।
कोरवन लाल बिना लागे सून सोहागिन केरि सवाँग
वइसँ लागे उदास लागे जइसे फुलदा पत्तिया बिन डार।

आप की दूसरी कविता 'एहि अंगना' सरस तथा सुन्दर है। इसकी कुछ [पंक्ति]याँ लीजिए—

झुरर झुरर डोलै बयार एही अँगना, बान्हल अँचरवा फहरि परै।
डार-डार ज़िनिगी कै डोलै सपनवाँ, पात-पात विरसैला मुरहा परनवाँ।

३५--श्री पाण्डेय कपिल

श्री पाण्डेय कपिल का जन्म कविकिंकर-कुटीर, शीतलपुर, पो० बरजा [जि]ला सारन (विहार) में २४ सितम्बर सन् १६३० ई० में हुआ था। [आप]ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से इण्टर तथा बी० ए० की परिक्षायें तथा [बि]हार विश्वविद्यालय से सन् १६५४ ई० में आपने हिन्दी में एम० ए० की [प]रीक्षा उत्तीर्ण की। आप भोजपुरी के एक अच्छे कवि हैं। पाण्डेय कपिल ने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

"आचार्य महेन्द्र शास्त्री व्यक्तित्व व कृतित्व" नामक अभिनन्दन ग्रन्थ का सम्पा बड़ी योग्यता से किया है१ । आप भोजपुरी और हिन्दी—दोनों—में कविता कहानी लिखते हैं। आपके हिन्दी गीतों का एक संग्रह "आभास" सन् १९५६ में प्रकाशित हुआ था। आपने ऋग्वेद के अनेक सूक्तों का भोजपुरी में अनु किया है। कृष्ण की बाँसुरी के संबंध में इनकी कविता की कुछ पंक्तियाँ प्रकार हैं :—

काहे फूँकेलऽ बँसुरिया हम त आवते रहनी हैं।
तोहरा बँसुरी के बोल पर भुलाई जाला मान॥
तोहरा लपके लहरिया पर लोटाई जाला प्रान।
वाकिर काहे खातिर अइसन बिरहा के तान॥

३६—श्री तारकेश्वर उपाध्याय

श्री तारकेश्वर उपाध्याय का जन्म बलिया जिले के नरही गाँव में सं १९७३ ई० वि० में हुआ था। आप ने एम० ए०, बी० टी० की उपाधि प्र की है। अनेक वर्षों तक आपने जनता जनार्दन इण्टर कालेज, गाँधी नग गाजीपुर में प्राचार्य के पद को सुशोभित किया। आपकी निम्नांकित पुस्त प्रकाशित हो चुकी है:—(१) पथपर (महाकाव्य), (२) युगकिरन (३ कामेश्वर धाम और (४) वन्दिता। "शरद चलि आइल" शीर्षक आप कविता बड़ी सरस है : उदाहरण—

भागलि हँसति बयारि डगर मुसुकाइल,
बादरि लिहलसि चैन शरद चलि आइल।
गावे लागल ताल तलैया नाचलि,
कोई कइके सिंगार नचावै लागलि॥

१. सारन जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन छपरा (सारन) से प्रकाशित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

३७—श्री प्रभुनाथ मिश्र

श्री प्रभुनाथ मिश्र का जन्म बलिया जिले के छपियां गाँव में सन् १९२१ ई० हुआ था। आप लेखक, कवि, पत्रकार तथा राजनैतिक कार्यकर्ता भी हैं। अनेक पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक रह चुके हैं। बलिया से अनेक वर्षों आप "विहान" नामक साप्ताहिक पत्र का सम्पादन करते थे। आपकी पुरी रचनायें दैनिक "आज" में प्रायः प्रकाशित होती रहती है। 'हरियर र होत में' नामक पुस्तक में आपकी भोजपुरी कविताओं का संकलन पाया है। आपने भोजपुरी गीतों में नये प्रयोग किये हैं। किसान के जीवन वर्णन विशेष रूप से आपकी कविताओं में उपलब्ध होता है। "हरवहिया बेरा" शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियाँ निम्नांकित हैः—

हरवहिया के बेरा आइल, बिहँसे लगल बिहान।

सिहरत देहि, बयार दखिनही सन् सन् डोलत बाय,
बँसवरिया में गड़ही तीरे मुरुगा बोलत बाय।
लाल रंग असमान पुरुब पँजरी सें घोलत बाय,
जगल नीनि से कवल मँदाइल अँखिया खोलत बाय॥
उतरि सूरुज के किरिनि ताल में लगल करे असनान।
हरवहिया के बेरा आइल, बिहँसे लगल बिहान॥

३८—डा० कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र'

डा० कमलाप्रसाद मिश्र का जन्म शाहाबाद (विहार) जिले के ग्राम—नवरसा, (पोस्ट—उपाध्यापाण्डेपुर) में हुआ था। आप वाराणसी से प्रकाशित होने वाले 'अग्रदूत' नामक पत्र के सम्पादक भी रह चुके हैं। कविता में आप अपना उपनाम 'विप्र' लिखते हैं। आपकी भोजपुरी कविताओं का संकलन "मधुवन" नामक से सन् १९५५ ई० में प्रकाशित हो चुका हैं। कवि के हृदय में अतीत के प्रति अखण्ड अनुराग, वर्तमान के प्रति प्रहरी जैसी जागरूक दृष्टि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

इस पुस्तक के पायी जाती है। 'खेतिहर पुकार,' 'रेट' और 'भूदान' आदि कवितायें कवि की दूर दृष्टि के नमूने हैं। यह कवि जेठ की दुपहरी और सावन भादों की रोपनी में भी जीवन का यथार्थवादी दृश्य देखता है और कहता है—

"करसी अस सुनुगे धरती, तन तलफि रह जाता।"

इसी प्रकार से "टिसुना" (तृष्णा), पयान आदि कविताओं में जहाँ रहस्यवादी अभिव्यक्ति है, वहाँ 'भ्रष्टाचार,' 'गरजन' आदि में संवेदनशील अभिव्यञ्जना पायी जाती है। आपका दूसरा काव्य ग्रन्थ "वीर बावू कुंवरसिंह" है जिसमें सन् १८५७ ई० के सुप्रसिद्ध राष्ट्रनायक बावू कुँवर सिंह के वीरता का वर्णन किया गया है।१ इस लोक कवि ने अंग्रेजों के साथ कुँवर सिंह के युद्ध का वर्णन बड़े ही ओजपूर्ण शब्दों में किया है। लड़ाई का यह चित्र कितना सजीव है।२

"लाठी भाला लेइके बनूक, बरछा कटार फरसा तेगा।
उर उमंग ललकारि ललकि के, समर बीच भीड़लन धेगा॥
कच कच भाला, बरछा खच खच,
आ दनन दनन गोली दनकलि।
छप छप कटार, फरसा तेगा,
आ ठनन ठनन लाठी ठनकलि॥

अंग्रेजों के साथ युद्ध में जूझ मरने का यह दृश्य वहुत सुन्दर है। कुंवरसिंह का नाम अंग्रेजों के लिए भय की वस्तु बन गई थी।३

"सुनत नाम ओह वीर कुँवर के, साहेब मेम लुकात रहन।
लरिका फरिका आ जनमतुआ, धइला पर नाम भयात रहन॥"

विप्र जी की भाषा बड़ी सजीव है। ओजपूर्ण इस काव्य में बड़ी शक्ति है जो मुर्दों में भी जान फूँकने की क्षमता रखता है। आशा है 'विप्र' जी इसी प्रकार भोजपुरी-भारती का भण्डार भरते रहेंगे।

---

१. प्रकाशक—भोजपुरी—साहित्य-मण्डल वक्सर, शाहाबाद सन् १९५७ ई०
२. वही—पृ० १७। ३. वही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

३९—श्री भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव "भानु"

भुवनेश्वर प्रसाद जी का जन्म शाहाबाद जिले के चन्दा अखौरी गाँव में सन् १९१४ ई० में हुआ था। आपने तुलसी साहित्य विद्यालय, कलकत्ता अध्ययन किया। आप पटना, कलकत्ता और आरा में कई साप्ताहिक पत्रों सहायक सम्पादक रह चुके हैं। आपने "कुँवर सिंह" नामक महाकाव्य की रचना की है तथा कालिदास के रघुवंश का भोजपुरी में अनुवाद प्रस्तुत किया। 'चइत मधुमातल' शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं:—

अइले चईत मधुमातल हो, झुकि झुंमे बिरिछिया ॥
अमवाँ के बिहँसल मोजर मउराइल,
लागल सिरसई टिकोढ़ा हो, सरमाइलि डेहुँगिया ॥ अ० ॥

४०—कविवर 'पुण्डरीक'

कविवर 'पुण्डरीक' का जीवनवृत्त कुछ विशेष ज्ञात नहीं है। संभवतः गोपालपुर पटना के निवासी हैं और संसार से विरक्त होकर भगवद् भजन में अपना समय विताते हैं। इन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की है जिनमें कुछ के नाम इस प्रकार हैं। (१) पुण्डरीक-प्रेम प्रवाह (२) पुण्डरीक पंचरत्न (३) गीता-गीत (सोहर) (४) गीता—गीत-विरहा, प्रथम चार अध्याय (५) गीता-सोहर) प्रथम अध्याय। (३) पुण्डरीक रत्न मालिका (७) मेघदूत (८) गीता (हिन्दी पद्यानुवाद), (९) पुण्डरीक सुधाविन्दु, (१०) भारत-नाटक।

इन ग्रन्थों की सूची को देखने से पता चलता है पुण्डरीकजी ने गीता का अनुवाद भोजपुरी भाषा में विरहा और सोहर छन्दों में किया है। यह अनुवाद बहुत ही सुन्दर है तथा इसमें मूल श्लोक के भावों की बड़ी ही सूक्ष्मता से रक्षा की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

गई है। गीता के द्वितीय अध्याय के अन्त में श्री कृष्ण ने अर्जुन को स्थितप्रज्ञ के लक्षण समझाया है। इन श्लोको के अन्त में "तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता" की आवृत्ति बार बार हुई है।

श्री कृष्ण कहते हैं कि—

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ! मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते॥

मनवाँ में रहे जब कामना न भोगवा विलसवा के है।
ललना! हिरदा में हरदम आनन्दवां त होवे बुधिया अहथिर है॥

गीता के तृतीय अध्याय में भगवान् ने आत्मा की अमरता का वर्णन करते हुए इसे अछेद्य, अक्लेद्य, और अदाह्य कहा है। पुण्डरीक जी ने इन पदों का बहुत ही सुन्दर अनुवाद विरहा में किया है।

फटली लुगरिया फेंकि नयका हो कपड़वा, लोगवा जइसे पेन्हें हरपाय।
देहिया पुरनकी तज के नयका हो शरीरवा में, जिउआ बस ओइसही समाय॥
एकरा न काटे भइया! कोई रे हथियरवा, अगिया न सकई जराय।
पनियाँ न एकरा भिजावे भइया अरजुन! हउआ नहिं सकई सुखाय॥
छोड़ला से दुनियां न छूटे भईया अरजुन! मनवाँ उहई रहे लपटाय।
जबे रे पुरुषवा परमातमा के देखई, दुनियाँ से मनमां हटि जाय॥

४१—हरेन्द्रदेव नारायण

आप भोजपुरी के स्वनामधन्य सुकवि स्वर्गीय श्रीरघुवीरनारायण जी के सुपुत्र हैं। आपका जन्म सारन जिले के 'नया गाँव' नामक ग्राम में सन् १९१७ ई० में हुआ था। आपने सन् १९३७ ई० में वी० ए० पास किया था। आप हिन्दी के एक प्रतिभाशाली कवि और आलोचक हैं। सन् १९३३ ई० में आपकी पहली कविता 'बाँसुरी' पटना से प्रकाशित साप्ताहिक 'विजली' में छपी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

और उस समय उसकी काफी प्रसिद्धि हुई थी। तबसे आप निरन्तर हिन्दी साहित्य की सेवा करते आ रहे हैं। आपकी पत्नी श्रीमती प्रकाशवती नारायण हिन्दी की कवयित्री और कहानी लेखिका हैं। आपने सन् १९५७ ई० में पहले-पहल भोजपुरी में 'कुँवरसिंह' नामक महाकाव्य लिखा है, जो आरा नगर के एक प्रकाशक द्वारा प्रकाशित किया गया है। उसी के द्वितीय सर्ग का एक अंश यहाँ उद्धृत है—

बैठकखाना कुँवरसिंह के बाहर खूब जमल बा,
झालर लागल बा नफीस, चंदोवा एक टँगल बा।
दियाधार के दीपन से, मृदु-मन्द जोत आवत बा,
एक गुनी बैठल बा, सारंगी पर कुछ गावत बा॥
अइलन बाबू 'कुँवरसिंह', सहसा भीतर से बाहर,
कोलाहल कुछ भइल बिपिन में, बाहर आइल नाहर॥
हड्डी ठोस, पेसानी दमकत, पुष्ट वृषभ-कंधा बा,
अस्सी के बा उमर भइल, का कहे बूढ़ ? अन्धा बा॥
सिंह चलन, रवि जलत नयन, जुग सुगठित चंड भुजा बा,
अइसन डोलेला जइसे, डोलेला बिजय-पताका।

—:*:—

Raj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

४२--श्री रविशंकर उपाध्याय "रवीश"

श्री रविशंकर उपाध्याय का जन्म प्रयाग में सन् १९५५ ई० में हुआ था। आपके पिता का नाम कृष्णदेव उपाध्याय और माता का नाम श्रीमती राजेश्वरी देवी है। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा राजकीय आदर्श विद्यालय ज्ञानपुर (वाराणसी) तथा माध्यमिक शिक्षा सनातन धर्म इण्टर कालेज, वाराणसी में हुई। आजकल आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे हैं।

लोक-साहित्य तथा भोजपुरी काव्य में आपकी विशेष रुचि है। आप भोजपुरी के उदीयमान तथा तरुण कवि हैं। आपकी रचनायें अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहती हैं। आपकी "आइल बसन्ती बहार" नामक कविता प्रसिद्ध हैं जिसमें ग्रामीण प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया गया है। यह कविता निम्नांकित है:—

पात-पात बोलेली कोइलिया, आइल बसन्ती बहार।टेक।
नान्ह नान्ह अमवा त लिहले टिकोरवा।
पी पी पुकारेला पपीहा बड़े भोरवा॥
मीठी मीठी बहेली बयार, आइल बसन्ती बहार।
फुलवन के ढोढ़वा पर उड़ेली तितिलिया।
फुलल कदमवा अरु फरली इमिलिया॥
भँवरा करेलां गुंजार, आइल बसन्ती बहार।
रतिया अँजोरिया त लागेली जुड़ावनि।
सँझिया सुहावन, सवेरवा सिहरावनि॥
सुखी भइल सारा संसार, आइल बसन्तो बहार।
केशिया सँवारे मँगिया भरेली सेन्दुरवा।
सुखिया सोहागिन करेली सब सिंगरवा॥
गावेली मङ्गलाचार, आइल बसन्ती बहार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

in Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

रविशंकर जो—जो कविता में अपना उपनाम 'रवीश' लिखा करते हैं—वर्तमान समाज पर तीखा व्यङ्ग्य किया है। 'दुनिया फैसन में आइके भुलानी जी' शीर्षक आपकी कविता में आधुनिक फैशन की कटु आलोचना पाई जाती है। इसकी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :—

"दुनियाँ फैसन में आइके भुलानी जो ।टेक।
अखियाँ अछत उ लगावे ढकना।
ओकर मुँहवा रूमाल से पोछानी जी ।। दुनिया०
मुड़िया पर अपना रखावे झोटवाँ।
ओकर आधी आधी मोछिया मुड़ानी जो ।। दुनिया०
पैण्टवा के फन्द में लगावे गोड़वा।
लघुसंका के वहावे ठाढ़े पानी जी।
दुनिया फैसन में आइके भुलानी जी ।।"

'रवीश' जी की कविताओं का संग्रह शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है।

—:*:—

नयी कविता

भोजपुरी में अब नयी कविता के भी दर्शन होने लगे हैं। इस प्रकार अब भोजपुरी कवि दूसरी भाषाओं के कवियों से भी होड़ लेने लगा है। भोजपुरी में नयी कविता का आगमन शुभ लक्षण है अथवा अशुभ यह कहना कठिन है किन्तु यदि भोजपुरी के कवि अभी महाकाव्य, खण्ड काव्य और गीति काव्य की ही रचना करते तो अच्छा होता। जब कविता की प्राचीन परम्परा का अवलम्बन कर काव्य रचना के लिए प्रचुर क्षेत्र विद्यमान है तब अभी नये क्षेत्र में पदार्पण करने की उतावली नहीं करनी चाहिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

४३--डा० स्वर्ण किरण

भोजपुरी में नयी कविता लिखने वालों में डा० स्वर्ण किरण का विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। आपकी शब्द योजना सुन्दर होती है। प्रकृति चित्रण आपकी विशेषता है। 'लुकार' नामक पत्र में प्रकाशित आपकी 'रागिनी' कविता बड़ी रमणीय है जिसमें शरद ऋतु को आपने नारी के रूप चित्रित किया है। इस नयी कविता की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है।

वकुला अइसन उजर-उजर साड़ी पेन्हल ई सरद-रागिनी
तलमलात, कुछ-कुछ हांफत;
एगो छोटहन पुरजा ले-ले कुछ बुदबुदात।
लागल बाटे, ई बहुत दिनन से खटिया सेवत रहे,
वार अझुराइल, कवनो तेल पड़लना
हर सिंगार के गंध भरल जूड़ा कइसन
कादो पानी जे कइल हाथ साफ बाटे जरूर।

४४--बच्चन पाठक 'सलिल'

'सलिल' भी नयी कविता लिखने में सिद्ध हस्त हैं। आपकी "हे हमार नीलम परी" शीर्षक कविता सुन्दर वन पडी है जिसकी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है

हे हमार नीलम परी
जब तू मिलेलू,
हाथ जोर, चाँदनी छिटकाइके
पूछेलू समाचार,
वार वार,
'रउरा कइसन बानी' ?
का का लिखली एने
गीतन में का देव, अब
क्रान्ति के धार कि प्यार ?

—:*:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अध्याय ६

(ख) भोजपुरी–गद्य--प्रवाह

संसार के प्रायः सभी साहित्यों में गद्य का आविर्भाव पद्य के अनन्तर हुआ संस्कृत साहित्य को ही लीजिए। इसमें काव्य रचना का उदय उसी समय माना जाता है जब आदि कवि वाल्मीकि का शोक श्लोक के रूप में परिणत था। परन्तु गद्य की रचना संस्कृत साहित्य में स्वतन्त्र रूप से बहुत पीछे हुई। हिन्दी साहित्य की भी यही दशा है। इसका प्रारम्भ पृथ्वीराज की रचना से माना जाता है परन्तु अनेक शताब्दियों तक इसमें गद्य का नितान्त अभाव दीखता है। ठीक यही दशा भोजपुरी साहित्य की है। लोक गीतों के रूप में भोजपुरी कविता तो प्रचुर मात्रा में पाई जाती जिसके कुछ संग्रह प्रकाशित भी हो चुके हैं, परन्तु इसमें गद्य रचना का अभाव-सा ही था। आजकल भोजपुरी भाषा के जो कवि हैं वे भी पद्य में ही अपनी प्रतिभा का प्रसाद हमें दे रहे हैं। गद्य लिखने की उनका ध्यान अभी आकृष्ट नहीं हुआ है। इस प्रकार भोजपुरी गद्य, पद्य अपेक्षा अभी प्रायः अविकसित दशा में पड़ा हुआ है।

Ra Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

यह प्रसन्नता का विषय है कि विगत दो दशकों से भोजपुरी गद्य निर्माण बड़ी द्रुत गति से हो रहा है। इसका श्रेय प्रधानतया श्री रघुवंश नारायण सिंह के द्वारा सम्पादित 'भोजपुरी' और भोजपुरी संसद, वाराणसी से प्रकाशित 'भोजपुरी कहानियाँ' नामक मासिक पत्रिकाओं को प्राप्त है। इधर अनेक लेखकों ने नाटक, उपन्यास, कहानी आदि की रचना कर भोजपुरी के भाण्डार को भरने का सफल प्रयास किया है। अब तो संभवत: भोजपुरी गद्य-साहित्य की कोई भी विधा ऐसी नहीं है जो इन कलाकारों की लेखनी से अछूती बच गई हो। अत: अब भोजपुरी के गद्य साहित्य में अभाव का अनुभाव नहीं होता। आशा है कुछ ही वर्षों में यह साहित्य भी पद्य की ही भाँति समृद्ध बन जायेगा।

भोजपुरी गद्य में रचित कोई प्राचीन साहित्यिक पुस्तक अभी तक उपलब्ध नहीं है। फिर भी भोजपुरी भाषा के बोलने वाले अपने दैनिक जीवन में, लिखा पढ़ी के कामों में, भोजपुरी गद्य को ही शताब्दियों से माध्यम बनाते और इसे व्यवहृत करते चले जा रहे हैं। बड़े बड़े राज्यों के कागज-पत्र, दस्तावेज, चिट्ठी-पत्री, पंचायतनामा, व्यवसाय के बीजक, आदि जितनी मानव जीवन के व्यवहार की चीजे है, वे सब भोजपुरी गद्य में लिखी हुई हैं।

भोजपुरी गद्य में लिखी गई किसी प्राचीन पुस्तक की पाण्डुलिपि के अभाव में यह कहना कठिन है कि इसका प्राचीन रूप क्या था? यह भाषा किस रूप में प्रयुक्त की जाती थी और इसका व्याकरण संबंधी स्वरूप किस प्रकार का था? जहाँ तक इन पंक्तियों के लेखक को ज्ञात है भोजपुरी-गद्य का सर्व प्रथम उदाहरण उक्ति-व्यक्ति प्रकरण नामक पुस्तक में पाया जाता है[1]। इस ग्रन्थ के रचयिता पण्डित दामोदर है जो सुप्रसिद्ध गहड़वालवंशी नरेश गोविन्द चन्द्र (१११० ई० से ११५५ ई०) के सभा पण्डित थे। इन्होंने राजकुमारों को

१. यह ग्रन्थ भारतीय विद्या-भवन, बम्बई से डा० सुनीति कुमार चटर्जी के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुआ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

...दीक्षा के लिए इस ग्रन्थ की रचना की थी।° चूँकि इस पुस्तक का ...ण काशी में हुआ था अतः पश्चिमी भोजपुरी (काशिका) के क्रियापदों ... संज्ञा-शब्दों का इसमें मिलना स्वाभाविक ही है। राजकुमारों की शिक्षा ...उद्देश्य था—

"वेद पढ़व, स्मृति अभ्यासिव, पुराण देखवि, धर्म करव"।

...इसमें पढ़व, अभ्यासिव, देखवि, करव आदि क्रियायें भोजपुरी भाषा की ... इसी प्रकार से एक स्थान पर 'अघान्ति' क्रिया का प्रयोग किया गया है ...का उस प्रयोग के अनुसार अर्थ है भोजन करके अघा जाना अर्थात् खाकर ...या सन्तुष्ट हो जाना। यद्यपि कुछ विद्वानों ने 'उक्ति व्यक्ति प्रकरणम्' ...षा को अवधी नाम से अभिहित किया है परन्तु वास्तव में इसमें व्यवहृत ... भोजपुरी ही हैं। इस प्रकार ११ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में लिखे गये ...न्थ में भोजपुरी गद्य की झाँकी पाठकों को देखने के लिए मिलती है ...१३१० ई० के लगभग रचित 'प्राकृत पैंगलम्' नामक ग्रन्थ में पुच्छल ...ना), उवरल (शेष वचना), पावल (पाना), उज्जर आदि शब्द ...ध होते हैं। इसी प्रकार १४०७ ई० के आस-पास नयचन्द्र सूरि ...रम्भामंजरी' नाटक की रचना की। इसमें भी भइल, जैसे, तरे आदि ...री के शब्द मिलते है। परन्तु इन उल्लेखों से यह निष्कर्ष निकालना ...त गलत होगा कि भोजपुरी गद्य का प्रारम्भ ११ वीं शताब्दी में हो गया ...सच तो यह है कि इस गद्य-धारा के प्रवर्तित होने का सौभाग्य अनेक ...ब्दियों के पश्चात् प्राप्त हुआ।

(१) पुराने कागज-पत्रों में प्रयुक्त भोजपुरी गद्य

...'उक्ति युक्ति प्रकरण' में भोजपुरी के जो क्रिया पद उपलब्ध होते उन्हें ...पुरी गद्य का केवल नमूना ही समझना चाहिए। वास्तव में इस भाषा ...द्य का स्वरूप दस्तावेजों, निमंत्रण पत्रों और सुलह-नामों में सुरक्षित हैं। ...पुरी गद्य का विवरण प्रस्तुत करने के लिये हम इसके गद्य को साधारणतया ...भागों में विभक्त कर सकते हैं :—१. कागज पत्रों में सुरक्षित-प्राचीन गद्य। ...नाटक, उपन्यास आदि में प्रयुक्त आधुनिक गद्य।

Ra Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

१–प्राचीन कागज पत्रों में गद्य का रूप—चूँकि भोजपुरी गद्य की कोई प्राचीन पुस्तक अभी तक उपलब्ध नहीं हुई है। अतः इसके प्राचीन रूप के दर्शन राजघरानों, रईसों एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों के यहाँ सुरक्षित कागज पत्रों में देखने को मिलता है। भोजपुरी प्रदेश में जो सुलहनामे, दस्तावेज, बीजक आदि लिखे जाते थे, वे प्रायः भोजपुरी गद्य ही में होते थे। परन्तु इन कागज-पत्रों का कोई संग्रह अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है जिससे इनका सम्यक् स्वरूप जाना जा सके। ये कागज आज भी राजे, रजवाड़ों की सन्दूकों में वेठनो में बँधे पड़े हैं। हाँ, डाक्टर उदयनारायण तिवारी और बाबू दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह के उद्योग से इन दो चार कागजों का प्रकाशन अवश्य हुआ है।

नीचे एक दानपत्र की प्रतिलिपि दी जाती है जो सम्वत् १७३५ की है अर्थात् इसकी रचना आज से लगभग ३०० वर्ष पहले हुई थी। इस दानपत्र से प्राचीन भोजपुरी के स्वरूप को जाना जा सकता है २।

"गंगा जी के तीर वह्निप्रीति शोश्ती श्री चक्रनारायणत्यादि विविध बिरदावली विराजमान मानोन्त श्री महाराज कुमार बाबू क्ननकशीप्रदेवानां ... शमरविजैना पित्रिदत्त श्री बुधीराम पण्डे के दिहल मौजे चतर शिवार के ... धापमारी नाम बुधीरामपुर-शलंलशकठ शपथचतुर शीवा अवछिनके ... शक्लप श्री..................कुशहस्त दिहल शंवत १७३५ शमे फा... बदी १ वार शुभवासरे मोजन मैरवा। दशखत हरीनन्दन दाश"

१. सम्मेलन पत्रिका, राष्ट्रभाषा अंक, भाग ३५ संख्या १०-११। श्रावण आश्विन २००५ वि०, पृ० ३१७।

२. यह दानपत्र डा० उदयनारायण तिवारी के पास आज भी बहुत जीर्ण अवस्था में सुरक्षित है। उसे कीड़ों ने कई स्थान पर नष्ट भी कर दिया है जिससे उसके पढ़ने में बड़ी कठि-नाई होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

यह दानपत्र अनेक दृष्टियों से बड़ा महत्वपूर्ण है परन्तु यहाँ हमारा उद्देश्य भाषा से है। इस दानपत्र के अनुशीलन से स्पष्ट ही पता चल जाता है इसकी भाषा प्रचुर रूप में संस्कृत मिश्रित है। साथ ही इसमें समस्त पदों का भी बहुल प्रयोग किया गया है। 'विविध विरुदावली विराजमान मानोन्त' पद से हमारे कथन की पुष्टि पूर्णतया होती है। इसके संस्कृत गर्भित होने का कारण यह जान पड़ता है कि भोजपुरी प्रान्त पर काशी मंडल का प्रचुर प्रभाव रहा है। काशी सदा से संस्कृत विद्या का केन्द्र रहा है। अतः इन दानपत्रों में संस्कृत भाषा का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।

उपर्युक्त उद्धरण में विभक्तियों के चिह्न और क्रियापदों से इसके भोजपुरी होने का प्रमाण मिलता है। भोजपुरी 'दिहल' (दिया) क्रिया-पद का प्रयोग इस दानपत्र में भिन्न भिन्न स्थानों पर चार वार किया गया है। मुगलों के समय में तथा अंग्रेजों के समय में भी फारसी तथा उर्दू के कचहरी की भाषा होने पर भी, इस दानपत्र की भाषा संस्कृत मिश्रित भोजपुरी है। केवल एक ही 'दशखत' शब्द ऐसा है जो फारसी भाषा का है। इस दान पत्र में 'स' को 'श' लिखने की प्रवृत्ति जान पड़ती है। इसीलिये 'स्वस्ति' शब्द को 'शोस्ती' तथा 'सदासमर विजैना' को 'शदा शमरविजैना' लिखा गया है। 'कुशहस्त' को कुशहस्त का रूप दिया है। आज भी देहात के लोग स तथा श के प्रयोग में विशेष अन्तर नहीं करते।

एक दूसरी सनद लीजिए जो सम्वत् १७९६ की है। यह सनद उदवन्त सिंह की है जो विहार के शाहाबाद जिले के अन्तर्गत जगदीशपुर राज्य के बड़े प्रतापी राजा हो गये हैं। इनका बसाया हुआ आरा के पास एक बहुत बड़ा गांव है जो 'उदवन्त नगर' के नाम से प्रसिद्ध है। इन्हीं के प्रपौत्र बाबू कुँवर सिंह ने सन् १८५७ में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया था। यह सनद इस प्रकार है[१]—

"स्वस्ति श्री रिपुराज दैत्य नारायणत्यादि विवध वीरुदावली विराजमान मानोन्नति श्री महराज कुमार श्री बाबू.........जिउ देवदेवानां सदासमर-विजयीनां कै सुवंस पांडे ब्राह्मण साकिन्त प्रयाग बदस्तूर पाछिल पुरोहिताई रजन्हि

१. दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह—भो० लो० गी० क० र० पृ० ३३ भूमिका।

Raj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कै दिहल इन्हका के रहल है ते ही बमौजिब हमहूँ दिहल। जे प्रयाग जाय इन्हहीं माने। ता० २९ माह रवि बिसाख सन् ११३७ साल मुकाम जगदे प्रगने विहिया सम्वत् १७१६ अगहन बदी अमावस गोत्र सवनुक मूल उज्जै जाति पवार।"

उपर्युक्त उद्धरण में प्रयाग निवासी सुवंश पांडेय को पुरोहिताई प्रदान का वर्णन है। इस सनद की भाषा भी पूर्व दानपत्र की ही भाँति संस्कृत-बहुल है। समसित पदावली का प्रयोग अधिक किया गया है। 'विविध वीरदा विराजमान मानोन्नति', 'देवदेवानां सदा समर विजयीनां' इत्यादि पद इसी की सूचना देते हैं। इस सनद की पदावली को पढ़कर गुप्त शिलालेखों का स्मरण हो जाता है जो अपनी समासवहुला संस्कृत भाषा के लिये प्रसिद्ध हैं।

इस सनद में 'दिहल' और 'रहल' भूतकालिक क्रिया पदों की उपलब्धि होती है जो २०० वर्षों के बाद भी आज इसी रूप में पाये जाते हैं। सम्बन्ध वाचक विशेषण 'जे' 'से' तथा विभक्तियों के चिन्ह 'कै' या 'के' पाया जाता है। सम्वन्ध कारक की विभक्ति का चिन्ह आजकल 'के' है। परन्तु आज से दो शताब्दि पूर्व इसका रूप 'कै' था जैसा कि इस सनद में मिलता है। इसमें केवल दो शब्द फारसी भाषा के आये हैं जिनमें पहला 'साकिन' है और दूसरा 'वमोजिव' है। ये शब्द भी ऐसे हैं जो भोजपुरी प्रदेश में ग्राम जनता द्वारा व्यवहार में लाये जाते हैं।

तीसरा कागज सम्वत् १८२३ का है। यह वलिया जिले के वैरिया गांव में मिला है। यह इस प्रकार है२:—

"श्री परमेश्वर प्रमेशर प्रम भटारके त्याधी राजा वलीविक्रमा शाके शालीवाहन गत १६८८ शंभलपुर पाती शाही श्री शाही गवहरजीन तखत जलुसभोगरन पाचत्यश मंडले जमुदीपै भारतखण्डे वीहारनगरे त्यत्र अतरगोत अजीमावाद नवाव धीरज नारायन वो शीताव राय शहर हाजीपुर शराय अमल फिरंग करनैल शाहव देवदेवानाम शादा शमर वीजइनाम राजा विक्रमादित्य की लौ........."

२. डा० उदय नारायण तिवारी—सम्मेलन पत्रिका भाग ३५, सं० १०-११ पृ० ३१८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

इस अवतरण में भी संस्कृत शब्दों की बहुलता है। इसमें संस्कृत शब्दों का तो हुआ है परन्तु वह विकृत रूप में ही है—जैसे परमेश्वर को 'प्रमेशर' 'परम' को 'प्रम' लिखा गया है। संस्कृत का पुट इसमें इतना अधिक है कि शब्दों में भी संस्कृत के विभक्ति चिन्ह लगे हैं, जैसे 'नगर में' न लिखकर ' लिखा है।

(२) आधुनिक भोजपुरी गद्य

विगत बीस वर्षों में भोजपुरी गद्य की उन्नति द्रुतगति से हुई है। काल में नाटक, उपन्यास, निबन्ध, और कहानी आदि का प्रणयन कर ों ने इसके भाण्डार को भरने का प्रयास किया है। संभवतः आज गद्य कोई भी विधा ऐसी नहीं है जो इन लेखकों की लेखनी से अछूती बची हो। संबंध में इतना निवेदन करना आवश्यक समझा जाता है कि भोजपुरी तीन नाटकों को छोड़कर इन सभी विधाओं का प्रादुर्भाव तथा विकास त्रता—प्राप्ति (सन् १९४७ ई०) के बाद ही हुआ है। अतः भोजपुरी जो गद्य-साहित्य उपलब्ध होता है उसकी उत्पत्ति तथा विकास स्वतन्त्र रण में हुआ है।

द्य साहित्य के इतिहास को प्रस्तुत करने लिए, वर्णन की सुविधा के लिए, निम्नांकित विधाओं में विभक्त किया जा सकता है—

(१) नाटक (२) उपन्यास (३) कहानी (४) निबन्ध (५) एकाङ्की यात्रा (७) रेखाचित्र (८) जीवनी (९) संस्मरण (१०) रिपोर्ताज पत्र इत्यादि। यहाँ पर क्रमशः इन विधाओं का संक्षिप्त रूप में विवरण किया जाता है।

—:*:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

१—नाटक

(१) पं० रविदत्त शुक्ल

भोजपुरी के सर्व प्रथम नाटककार पं० रविदत्त शुक्ल हैं और इनके रचित "देवाक्षर-चरित' भोजपुरी का सर्व प्रथम नाटक है १। इस नाटक की रचना सन् १८८४ ई० में अर्थात् आज से ८० वर्ष पूर्व हुई थी। भोजपुरी गद्य की विधाओं में नाटकों का प्रादुर्भाव सबसे पहिले हुआ और उन नाटकों में पं० रविदत्त शुक्ल का यह नाटक प्रथम स्थान का अधिकारी है। इस प्रकार भोजपुरी साहित्य में नाटक की उत्पत्ति का श्रेय विगत शताब्दी के चरण को प्राप्त है।

डाक्टर सर ग्रियर्सन ने इस पुस्तक का संकेत अपनी 'लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इंडिया' नामक पुस्तक में किया है। परन्तु उनके उल्लेख से होता है कि संभवतः उन्हें यह पुस्तक देखने को नहीं मिली थी। इसकी शीर्ण प्रति नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के 'आर्य भाषा पुस्तकालय' में संग्रहीत है। उसी के आधार पर इस पुस्तक का परिचय उपस्थित किया जाता है।

रचना का अवसर—सन् १८८४ ई० में बलिया में डी० टी० राबर्ट्स नामक बड़े ही मिलनसार और जनप्रिय कलक्टर आये थे जिन्हें भारतीय संस्कृति से बड़ा प्रेम था। इनके नाम से बलिया में एक पुस्तकालय आज भी विद्यमान है जो 'राबर्ट्स लाइब्रेरी' के नाम से प्रसिद्ध है। कलक्टर साहब के प्रोत्साहन से, बलिया में प्रति वर्ष रामलीला हुआ करती तथा नाटक खेले जाते थे। सन् १८८४ ई० में बाबू चतुर्भुज लाल डि...

---

१. यह नाटक आर्य देशोपकारिणी सभा, बलिया की अनुमति और सहायता द्वारा प्रकाशित तथा लाइट प्रेस, काशी में सन् १८८४ ई० में, गोपीनाथ पाठक द्वारा मुद्रित हुआ था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

...टर के आग्रह तथा प्रेरणा से पं० रविदत्त जी ने इस नाटक को इसी ...लीला के अवसर पर खेलने के लिये बनाया था। 'इस नाटक से जनता का ...रंजन भी हो और कुछ शिक्षा भी मिले इन दोनों बातों का ध्यान इस रचना ...खा गया था।

बलिया उन्हीं दिनों में नया जिला बना था। इसके पहिले यह गाजीपुर ...का एक भाग था। अतः जनता में काफी उत्साह था। इस नाटक को ...ने के लिये, रंगमंच का प्रवन्ध करने के लिये, दूर-दूर से लोग बुलाये गये थे। ...यह नाटक रामलीला के अवसर पर खेला गया तब इसे देखने के लिये ...र के गण्य मान्य रइसों और प्रतिष्ठित जनता के अतिरिक्त स्वयम् भोजपुरी ...कृति के प्रेमी राबर्ट्स साहब भी उपस्थित थे। यह नाटक बड़ी सफलता से ...ला गया था जिसकी प्रशंसा सभी लोगों ने मुक्त कंठ से की थी[१]।

नाटक का नामकरण—इस नाटक का नाम 'देवाक्षर चरित' है जो संस्कृत ...दो अक्षर से मिलकर बना हुआ है। इसमें पहला शब्द 'देव' है जिसका अर्थ है ...ता और दूसरा 'अक्षर' है जिसका तात्पर्य लिपि से है। अतः इसका पूर्ण ...ं देवताओं की लिपि या 'देव नागरी' हुआ। इसी 'देवनागरी' लिपि का ...न चरित इस नाटक में वर्णित है। किस प्रकार देवनागरी लिपि ...कृत लिपि से उत्पन्न हुई है, इसका महत्त्व क्या है और आजकल इसकी ...स प्रकार उपेक्षा हो रही है, इन्हीं विषयों का प्रतिपादन बड़ी सुन्दर रीति से ...नाटक में हुआ हैं। देवाक्षर जो इस नाटक का नेता है अपना परिचय देते ...र कहता है :—

"संस्कृत देवन सुअन हम, देवाक्षर मम नाम।
बंग देश आदिक रमत, आइ गए एहि ठाम॥
श्रवण सुन्यौ या नगर कौ, हाकिम परम उदार।
जौ पहुंचावहु तासु ढ़िग, मनिहौं बड़ उपकार॥

१. देवाक्षर चरित भूमिका भाग—

Raj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

रचना का उद्देश्य—इस नाटक की रचना का प्रधान उद्देश्य नागरी लिपि के महत्व का प्रतिपादन करना तथा उसका प्रचार करना है। जिस समय यह नाटक लिखा गया था उस समय कचहरियों में उर्दू भाषा तथा फ़ारसी लिपि का बोलवाला था। हिन्दी भाषा एवं नागरी लिपि घृणा की दृष्टि से देखी जाती थी। अतः कचहरियों में नागरी को भी स्थान देने की अपील नाटक में की गई हैं। जनता में शिक्षा का प्रचार तभी होगा जब उनकी लिपि में शिक्षा दी जाय। लेखक कहता हैं कि:—

"इब्तदाई तालीम कभी कामयाब नहीं हो सकती जब तक नागरी अक्षर कचहरियों में न जारी किये जायँ!" १

फ़ारसी लिपि से क्या नुकसान है इसकी ओर संकेत करता हुआ नाटककार अपने एक पात्र के मुख से कहलवाता है कि :—

"दोहाई साहब के, सरकार हमनी के हाकिम और माँ बाप के बराबर हईं ... जो सरकार किहाँ से निआव ना होई तो उजड़ जाव! देखीं जबन ई फारसी ... खाना पूरी होत बाय एमे बड़ा उपद्रव मचो। हमरा सीर के सरहमेयून लिख ... गइल वा।"२

इस प्रकार इस पुस्तक की रचना का उद्देश्य फ़ारसी लिपि की बुराइयों को दिखलाकर नागरी लिपि को कचहरी में स्थान दिलाना है।

वर्ण्य विषय—यह नाटक छः अंकों में लिखा गया है जिसमें कुल ४७ पृष्ठ हैं। यह पुस्तक प्रहसन है परन्तु जन-मनोरंजन के साथ ही इसमें तत्कालीन सरकारी विभागों में की जाने वाली बुराइयों को दिखला कर जनता को शिक्षित बनाना भी है। जब यह प्रहसन लिखा गया था उस समय बलिया जिले में सर्वे का काम हो रहा था। सरकारी कर्मचारी मनमाना घूस लेते थे तथा एक

१. देवाक्षर चरित पृ० ४। २. वही अंक ४, पृ० २१-२२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

की जमीन दूसरे के नाम लिख देते थे। इस नाटक के पूर्वार्द्ध में इसी तथा सरकारी कर्मचारियों की बेईमानी का वर्णन है। एक सर्वेयर सस्ते दाम पर अन्न न लाने के कारण एक तहसीलदार को नौकरी से कर देते हैं। पुस्तक के उत्तरार्ध में देवनागरी को कचहरियों में स्थान की अपील की गई है। १

शैली एवं उदाहरण---यह नाटक खड़ी बोली में लिखा गया है परन्तु इसके और चौथे दृश्य या अंक भोजपुरी में निबद्ध हैं। इसकी भाषा सरल और है। भोजपुरी के शब्दों का प्रयोग इसमें प्रचुर मात्रा में किया गया है। बीच में भोजपुरी कविताओं का प्रयोग अँगूठी में नगीना का काम कर रहा एक देहाती की यह उक्ति सुनिये २ :----

"रउवाँ रुपया वाला बाटीं अदालत लड़ब, पे हमन पाँच के तो एक जुन र खहू के ठिकाना नाहीं बाय, अदालत कहाँ से लड़ब। पहिले 'एक भीतर, तब देवता और पित्तर'। एक ओर भगवानों के कोप हमरन पर बा ई साल से सूखै पड़ल जात बाय, उ कहावत ठीक जान परेला कि लन के दइवौ सतावे ले।"

उपर्युक्त उद्धरण में दो भोजपुरी कहावतों का प्रयोग बड़ा ही सटीक और त हुआ है। एक दूसरा उदाहरण लीजिये ३ :–

"घबड़ो मत सुनली है कि आजकल एह जिला के हाकिम बड़ा दयावान और क्टर आइल बाटे। रइयत कै गोहार सुनतै निआव कै के, 'दूध के दूध और के पानी' कय देलें, से हम तो आजु हुअई से सपर के चलल बाटी।"

देवाचर चरित अंक ५, पृ० ६। २. वही. अंक ३, पृ० १६।
देवाचर चरित पृ० १६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ऊपर के उदाहरण में ठेठ भोजपुरी के शब्दों के अतिरिक्त दो उर्दू के शब्द आये हैं परन्तु भोजपुरी ने उन्हें पचाकर आत्मसात् कर लिया सर्वे के समय सहकारी नौकरों के अत्याचारों से परेशान होकर एक कहता हैं कि १ :—

"का कहीं बाबू, आजकल हमरन के मौत हो। जब से एह जिला बनोबस्त जारी भइल है तब से हमन पांच अइसन जहुआइल बाटीं कि अकिलै काम नाहीं करत।"

भोजपुरी प्रदेश के लोग किस प्रकार अपना सब कुछ बेच कर भी मुक लड़ने के लिये तैयार रहते हैं इसका वर्णन नीचे के अवतरण में देखिये २:—

"हाइकोरट, विलायत, जहाँ तक होई घर, दुआर बेचिकै, सतुआ खाइकै, मुकदमा लड़ल जाई।"

कचहरियों में किस प्रकार घूस का बाजार गर्म है, उसकी ओर संकेत हुआ। नाटककार लिखता है कि ३ :—

"कहो बुद्धन सिंह, हमरा के ना चीन्हत बाटऽ न। हम उहै हईं जे के सोमार के दिन कोठिया पर एक रुपया इनाम देहले रहलीं। भाई होय के रउवां के ऐसन बेमुरौवती ना चाही। खातिर जमा रखी, हमार सिद्ध होय जाय तो फिर रौआं के खुस कर देव।"

ऊपर लिखे अवतरणों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि लेखक की शैली सादी, सरल और सुबोध है। जहां तहाँ मुहावरों तथा कहावतों का सुन्दर प्र हुआ है। उर्दू और अंग्रेजी भाषा के शब्द भी व्यवहृत हैं परन्तु उनके भोज में प्रचलित रूप का ही प्रयोग किया गया है।

१. देवाक्षर चरित अंक ४, पृ० २१। २. वही० पृ० २०। ३. वही० पृ० १६-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

नाटक का महत्व----अनेक दृष्टियों से इस अल्पकाय नाटक का बड़ा महत्व है। पहले तो यह भोजपुरी भाषा का सर्वप्रथम नाटक है, दूसरे इसमें तत्कालीन भोजपुरी समाज का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया गया है। परन्तु इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि आज से ६० वर्ष पूर्व इस नाटक के रचयिता ने नागरी का कचहरियों में प्रयोग तथा इसके प्रचार का प्रयास किया था।

२–राम गरीब चौबे

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पं० राम गरीब चौबे ने विलियम क्रुक के लिए अनेक लोक गीतों का संग्रह किया था। चौबेजी किसी प्राइमरी स्कूल के अध्यापक थे। परन्तु लोक-साहित्य के प्रति आपके हृदय में विशेष अनुराग था। अतः आपने अपने जीवन का अधिकांश भाग इस साहित्य की सेवा में ही लगाया। पं० राम गरीब चौबे ने लोक-गीतों के संकलन के अतिरिक्त "जंगल मंगल" नाम से एक नाटक भी लिखा था। डा० ग्रियर्सन ने अपनी भाषा सर्वे की रिपोर्ट में, भोजपुरी साहित्य के सन्दर्भ में, चौबेजी की उक्त पुस्तक का उल्लेख किया है। इनका दूसरा नाटक "नागरी-विलाप" है जो शुद्ध भोजपुरी भाषा में लिखा गया है। विगत शताब्दी के उत्तरार्ध में कचहरियों की भाषा उर्दू होने के कारण नागरी की कितनी उपेक्षा की जाती थी, इसी विषय का वर्णन इस नाटक में किया गया है। "नागरी विलाप" जैसा कि इसके शीर्षक से विदित होता है, इस नाटक में नागरी लिपि विलाप करती हुई अपनी दुर्दशा पर आंसू बहा रही है। इस नाटक में हिन्दी की घोर उपेक्षा तथा नागरी लिपि की दुर्दशा का बड़ी ही सुन्दर चित्रण किया गया है।

—:*:—

Ra Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

३–भिखारी ठाकुर

भोजपुरी नाटक-साहित्य के इतिहास में भिखारी ठाकुर का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इन्होंने भोजपुरी नाटकों को लोक-प्रिय बनाने में जितना अधिक योगदान दिया है उतना अन्य किसी व्यक्ति ने नहीं। इनका लिखा हुआ 'विदेसिया' नाटक अत्यन्त प्रसिद्ध है। भोजपुरी प्रदेश का कदाचित् ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो इस नाटक से परिचित न हो। एक समय था जब इस प्रदेश के पूर्वांचल में विदेसिया नाटक की धूम मची हुई थी और "भिखरिया के नाच" को देखने के लिए हजारों की संख्या में ग्रामीण जनता की भीड़ उमड़ी पड़ती थी। इस नाटक के अभिनय के आनन्द को लेने के लिए देहात के लोग अनेक मीलों की पैदल यात्रा करते थे और इस नाटक को देखकर अपने को कृतकृत्य मानते थे। इस नाटक की इतनी प्रसिद्धि हुई कि भिखारी ठाकुर के जीवन काल में ही "विदेसिया" नामक फिल्म का भी निर्माण हुआ, जिसमें इस नाटक के लेखक ने भी भाग लिया था। भिखारी ठाकुर ने इस नाटक की रचना तथा अभिनय से बहुत नाम और दाम कमाया। इसमें जनमन के अनुरंजन की अपूर्व शक्ति उपलब्ध होती है और ग्रामीण-जनता के हृदय को आकृष्ट करने की अद्भुत अपील पायी जाती है।

भिखारी ठाकुर ने किसी विद्यालय में शिक्षा नहीं प्राप्त की थी। परन्तु इन्हें ऐसी दैवी प्रतिभा अवश्य प्राप्त थी जिसके द्वारा इन्होंने अशिक्षित होते हुए भी भोजपुरी में इतनी साहित्य-सृष्टि की। भिखारी ठाकुर—जो भोजपुरी प्रदेश में 'भिखरिया' के नाम से सुप्रसिद्ध हैं—की प्रवृत्ति लड़कपन से ही गाने-बजाने की ओर अधिक थी। इन्हें रामलीला देखने का बड़ा शौक था और वे उसमें भाग भी लिया करते थे। कुछ बड़े होने पर इन्होंने अपने कुछ साथियों को इकट्ठा करके राम-कथा का अभिनय करना प्रारम्भ कर दिया। इसमें सफलता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

पर इन्होंने 'विदेसिया' नाटक की रचना की और उसे भिन्न-भिन्न स्थानों अभिनीत करके प्रदर्शित किया। भिखारी ठाकुर एक कुशल नाटककार भी थे और सफल अभिनेता भी। भगवान् ने इन्हें गला भी अच्छा दिया था। नाटकीय कला, अभिनय और संगीत, स्वर-साधना की इस त्रिवेणी के द्वारा नाम अत्यन्त प्रसिद्ध हो गया। कुछ ही दिनों में 'विदेसिया' नाटक लोकप्रिय गया और उसे देखने के लिए जनता की अपार भीड़ इकट्ठी होने लगी। बारात में विदेसिया नाटक दिखलाया जाता था वहाँ जन-समुद्र लहराने था। भोजपुरी प्रदेश में आज 'विदेसिया' नाटक का जितना प्रचार है अन्य किसी नाटक का नहीं।

ग्रन्थ रचना—भिखारी ठाकुर ने अनेक ग्रन्थों की रचना की है। परन्तु तीन नाटक ही अधिक प्रसिद्ध हैं। (१) विदेसिया (२) बेटी बेचवा भाई विरोध। विदेसिया की चर्चा आगे की जायेगी। 'बेटी बेचवा' नाटक भिखारी ने उन कन्याओं के कष्टों तथा मार्मिक व्यथाओं का वर्णन है जिनके पिता आर्थिक लोभ के कारण उन्हें दूसरों के हाथों सदा के लिए बेंच देते इन लड़कियों को खरीदने वाले इनके साथ स्त्रीजनोचित व्यवहार न इन्हें पशु तुल्य समझते हैं। इन्हें तरह तरह के कष्ट तथा घोर यंत्रणा देते हृदय की इसी वेदना का वर्णन इस नाटक में किया गया है। इस नाटक कर पाषाण तथा कठोर व्यक्ति का भी हृदय विदीर्ण हो जाता है! यह हमारे समाज की दुर्दशा का सुन्दर चित्र प्रस्तुत करता है।

'भाई-विरोध' नाटक में दो भाइयों के पारस्परिक झगड़ा तथा पारिवारिक का वर्णन किया गया गया है। किस प्रकार से भाइयों के आपसी झगड़े कारण सारा परिवार दुःखी तथा संकट-ग्रस्त हो जाता है इसका बड़ा ही मार्मिक वर्णन पाया जाता है। इस प्रकार से इन दोनों नाटकों में भिखारी ने पुरी समाज का यथार्थवादी चित्रण किया है।

Ra Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

विदेसिया नाटक की कथा-वस्तु---भोजपुरी प्रदेश के लोग जीविकोपार्जन के लिए प्रायः कलकत्ता और रंगून जाया करते हैं। ऐसा ही कोई व्यक्ति कलकत्ता जाकर पुलिस में भर्ती हो गया है। छुट्टी न मिलने के कारण वह अनेक वर्षों तक घर नहीं लौटता। कलकत्ता में वह किसी बंगालिन युवती से प्रेम करने लगता है और उसके प्रेम-जाल में फँसकर घर पर रहने वाली अपनी व्याहता स्त्री की खोज-खबर तक नहीं लेता। न तो वह उसके पास कोई पत्र भेजता है, और न खाने-पीने के लिए रुपया ही। वह सती स्त्री अनेक वर्षों तक पति का समाचार न मिलने से उसके विरह में बेचैन हो जाती है। एक दिन रास्ते में जाता हुआ कोई बटोही उसे मिलता है। वह उसे अपनी दुःखगाथा सुनाती है और उससे प्रार्थना करती है कि, ए बटोही भइया! तुम हमारा संदेश मेरे पति के पास ले जाओ! इस पर वह बटोही उत्तर देता है कि मैं तुम्हारे पति को नहीं पहचानता। अतएव मैं तुम्हारा सन्देश कैसे पहुँचा सकता हूँ? इस पर वह स्त्री अपने पति की हुलिया बतलाती हुई कहती है कि मेरे पति की आँखें बड़ी बड़ी हैं, उनकी नाक तोते की नाक की तरह 'चोख' है, उनके होंठ पान के पत्ते की तरह पतले हैं, दाँत बिजली के सभान सफेद और चमकने वाले हैं, उनकी मूँछें काली-काली हैं। ऐसा मालूम होता है कि उन पर भौंरे मँडरा रहे हों। उनके सिर पर लाल पगड़ी और ललाट पर लाल तिलक शोभायमान है। पति की यह हुलिया कितनी सजीव तथा रमणीय है।

"हमरा बलमुजी के बड़ी-बड़ी अँखिया से,
चोखे चोखे बाड़े नैना कीर रे बटोहिया।
ओठवा त बाड़े जैसे कतरल पनवाँ से,
नकिया सुगनवाँ के ठोर रे बटोहिया।
दाँतवा तो सोभे जैसे चमके बिजुलिया से,
मोछियन भँवरा गुंजारे रे बटोहिया।
मथवा में सोभे रामा लाली लाली पगड़ी से,
रोरी बुना सोहेला लिलार रे बटोहिया॥"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

वह परोपकारी बटोही पूरब देश को जाता है और बड़ी कठिनाई से उस के पति का पता लगाता है। बटोही उस परदेशी पति से उसकी प्रियतमा दुःख-गाथा सुनाता है और कहता है कि तुम्हारी स्त्री (तुम्हारे) वियोग सूखकर काँटा हो गई है। यह सुनते ही वह परदेसी मूर्छित हो जाता है। में आने पर वह उदासीन रहने लगता है और घर लौट जाने की चिन्ता है। उसे उदासीन देखकर उसकी रखिता स्त्री इसका कारण पूछती है यह जानने पर कि वह घर लौटने के लिए व्याकुल है उसे घर न जाने के प्रार्थना करती है। रखिता अपना प्रेम-जाल फैलाती है, उसे तरह-तरह का न देती है। परन्तु वह परदेसी सिपाही अपनी ब्याहता स्त्री के प्रेम से खित होकर उस रखिता की बात न मानकर, अपनी नौकरी छोड़कर घर आता है। वह रात में अपने घर पहुँचता है और अँधेरे में अपने घर रवाजा खटखटाता है। उसकी स्त्री उसे चोर समझकर डर जाती है और हुई कहती है कि आज मेरे सिपाही पति घर पर होते तो इस चोर को मार । स्त्री के यह पूछने पर कि तुम कौन हो वह उत्तर देता है कि मैं तुम्हारा ा पति हूं। तब वह स्त्री डरते-डरते दरवाजा खोलती है और अनेक वर्षों द आये हुए अपने परदेसी पति को सामने खड़ा देखकर अत्यन्त प्रसन्नता रण मूर्छित हो जाती है। पति उसे उठाकर अपने हृदय से लगा लेता है। में 'विदेसिया' नाटक की यही कथा है।

'विदेसिया का अभिनय तथा नृत्य'—'विदेसिया' नाटक का अभिनय प्रायः यों बारातों तथा अन्य विशेष अवसरों पर हुआ करता है। इसे देखने के दर्शकों की इतनी अधिक भीड़ हुआ करती है कि इसे किसी घिरे हुए —जैसे हाल, शामियाना आदि—में करना असम्भव है। इसलिए इसका नय खुले हुए रंग-मंच (ओपेन थियेटर) पर हुआ करता है। नाटक करने खुले मैदान में दो-चार चौकियों (काठ के तख्तों) को रखकर रंगमंच र कर लेते हैं। चौकियों के पास कोई कपड़ा तानकर 'आड़' कर लेते हैं। मंच पर किसी परदे या यवनिका का प्रबन्ध नहीं रहता। यहाँ नेपथ्य का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भी अभाव रहता है। विभिन्न पात्र किसी पेड़ की आड़ में खड़े होकर अपनी वे
भूषा बदलकर तैयार होते हैं और रंगमंच पर आकर अपना अभिनय करते
अभिनय समाप्त होने के पश्चात् वे चले जाते हैं और फिर दूसरा पात्र
प्रकार आकर अपना अभिनय दिखलाता है। 'विदेसिया' नाटक में स्त्री पात्र
काम भी पुरुष ही किया करते हैं। भोजपुरी-प्रदेश में पर्दे की प्रथा बहुत
अतएव देहातों में रंगमंच पर किसी स्त्री का आकर अभिनय दिख
सम्भव नहीं है। इस नाटक में विभिन्न पात्रों का कार्य भिन्न-भिन्न व्यक्ति
हैं परन्तु अभिनेताओं की कमी के कारण कभी-कभी एक ही व्यक्ति अनेक
का अभिनय करता है। नौजवान छोकरे, जिन्हें भोजपुरी में लौंडा कहते
स्त्री-पात्र का अभिनय करने के लिए विशेष उपयुक्त समझे जाते हैं। वे
वेश-भूषा तथा प्रसाधन द्वारा स्त्री-पात्र का इतना सजीव अभिनय करते हैं
यह जानना कठिन हो जाता है कि अभिनय करने वाला पात्र स्त्री है या
पुरुष।

अभिनय करने वाले पात्र प्रसंगानुसार एक या दो-तीन की संख्या में
मंच पर आते हैं और विदेसिया के कथानक को लेकर अभिनय करते सम
बीच-बीच में नाचते भी जाते हैं। नाचने के समय ढोल, सरंगी (सारंगी)
हारमोनियम भी बजती रहती है। इन नर्तकों को शास्त्रीय नृत्य की वि
ट्रेनिंग नहीं दी जाती। अतएव वे संगीत के ताल पर नृत्य न करके स्व
रूप से नाचते हैं। इस नृत्य में उछल-कूद बहुत होती है। नृत्य करने वाला क
यहाँ दिखाई देता है और कभी वहाँ। कमर में घाँघरा और पैरों में नूपुर
कर वह काफी तेजी से नृत्य करता है। इस नृत्य में पैरों का संचालन
तीव्र गति से किया जाता है। जो नर्तक जितनी तेजी से यह कार्य कर सक
है वह उतना ही सफल समझा जाता है। कमर पर अपने हाथों को रख
अपनी पतली कमर को लचकाता हुआ तथा द्रुत गति से पैरों का विक्षेप क
हुआ भोजपुरी नर्तक, बारात के शामियाने में समाँ बाँध देता है। उसे देख
दर्शकों के मुँह से अनायास 'वाह-वाह' निकलने लगता है। कुछ गुण
उसकी नृत्य-कला पर मुग्ध होकर अपनी गुण-ग्राहकता को प्रकट करने के लि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

पास चवन्नी, अठन्नी और रुपया तक फेंकने लगते हैं। यह नृत्य अधिक नहीं चलता। यह थोड़ी ही देर में समाप्त हो जाता है और नाटकीय अभिनय का क्रम फिर प्रारम्भ हो जाता है। नृत्य तथा अभिनय के पर प्रायः बाजा बजता रहता है। विशेष कथोपकथन के अवसर पर बन्द कर दिया जाता है जिससे श्रोता अच्छी तरह से वार्तालाप को सुन। इस तरह विदेसिया नाटक संगीत, अभिनय और नृत्य इन तीनों की है; जिसमें अवगाहन कर दर्शकगण परम आनन्द को प्राप्त करते हैं।

विदेसिया सम्प्रदाय—भिखारी ठाकुर एक अच्छे गवैया और सफल ता थे अतएव जिस 'विदेसिया' नाटक के अभिनय में वे स्वयं भाग उसमें दर्शकों की भीड़ का कुछ ठिकाना नहीं रहता। अपनी युवावस्था खारी ठाकुर विवाह के अवसर पर बारातों में जाकर स्वयं अपने नाटक अभिनय किया करते थे। भिखारी के शिष्यों ने, जो उनके साथ मण्डली में नाचते तथा अभिनय किया करते थे—अपनी अलग-मण्डलियाँ बना ली हैं और वे अपने को भिखारी का असली शिष्य बतला-नाटक खेलने का व्यवसाय करते हैं। भिखारी के असली तथा साक्षात् शिष्य के कारण जनता इनकी मण्डली को नाटक करने के लिए बुलाती है। कुछ जो भिखारी ठाकुर के शिष्य नहीं हैं, वे झूठे ही अपने को उनका शिष्य ते हैं और अभिनय के लिए एक 'गिरोह' (मण्डली) बनाकर नाटक किया हैं। भिखारी का शिष्य कहने में ये अपने को गौरवान्वित समझते हैं और भी इन मण्डलियों का आदर करती है। ऐसी नाटकीय मण्डलियाँ बलिया, पुर, छपरा तथा आरा जिले में दर्जनों की संख्या में पाई जाती हैं।

इन उपर्युक्त जिलों में 'विदेसिया' नामक नृत्य तथा नाट्य का एक सम्प्रदाय सिया स्कूल आफ डांस एण्ड ड्रामा) ही चल पड़ा है। इस प्रकार भिखारी र को केवल 'विदेसिया' नाटक को लिखने तथा अभिनय करने का ही श्रेय प्राप्त है, बल्कि नृत्य और नाट्य के एक नये सम्प्रदाय को प्रवर्तित करने का गौरव प्राप्त है। इनकी 'विदेसिया' नाटक-मण्डली की नकल पर आज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अनेक मण्डलियाँ स्थापित हैं जो 'विदेसिया' नाटक का अभिनय करके जीविका का उपार्जन किया करती हैं। आज 'विदेसिया' केवल एक नाटक ही नहीं, प्रत्युत वह तो एक नाटकीय सम्प्रदाय का प्रतीक है।

'विदेसिया' नाटक का नामकरण उस घटना के आधार पर किया गया जिसमें विदेश में गये हुए किसी व्यक्ति की कथा का वर्णन है। प्रारम्भ में 'विदेसिया' के नाम से जो नाटक खेले जाते थे उनका कथानक ऐसा हुआ करता था। परन्तु आजकल बहुत-से ऐसे छोटे-मोटे नाटक लिखे गये "जिनमें भोजपुरी समाज—जैसे सास-पतोहू का झगड़ा, पिता-पुत्र में वैमनस्य, भाई-भाई में वैर, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, बेटी बेचना तथा दान-दहेज प्रथा का चित्रण किया गया है। यद्यपि इन नाटकों का कथानक विदेश गये हुए व्यक्ति की कथा नहीं है फिर भी इनको विदेसिया नाटक का नाम दिया गया है। इसका प्रधान कारण मूल विदेसिया नाटक की लोकप्रियता तथा प्रसिद्धि ही मानी जा सकती है। 'विदेसिया' की नकल पर एक परदेसी गीत तथा नाटक भी प्रकाशित हुआ है, परन्तु वह विशेष प्रसिद्ध नहीं हो सका है।

४. राहुल सांकृत्यायन

महापंडित, त्रिपिटकाचार्य राहुल सांकृत्यायन का नाम कौन नहीं जानता? आप उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के निवासी थे। आपका जीवन बड़ा रहस्यमय था। पहले आप महन्त दामोदरदास के नाम से प्रसिद्ध थे परन्तु बौद्ध धर्म में दीक्षित हो जाने पर राहुल सांकृत्यायन के नाम से प्रसिद्ध हुए। आप पाली भाषा के प्रकाण्ड विद्वान् थे। बौद्ध धर्म तथा दर्शन पर आपने अनेक पुस्तकें लिखी हैं। आप प्रतिभावान् पुरुष थे। आपकी लेखनी अविराम गति से विभिन्न विषयों, विज्ञान, धर्म, दर्शन, इतिहास, यात्रा, कहानी, नाटक तथा पुरातत्व आदि पर चला करती थी और फलस्वरूप आपने पचासों ग्रन्थों की रचना की है। आप बम्बई में होने वाले हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के अध्यक्ष पति भी थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भोजपुरी भाषा से आपको विशेष प्रेम था। आपकी मातृभाषा भोजपुरी और आपस की बातचीत में इसका प्रयोग करना आप गौरव समझते थे। भोजपुरी साहित्य सम्मेलन छपरा, विहार के सभापति भी थे। आपने पुरी में आठ नाटकों को रचना की है, जिनके नाम हैं:—१. नइको ..., २. ढुनमुन नेता, ३. मेहरारुन के दुरदसा, ४. जोंक, ५. ई हमार ... ६. देस रच्छक, ७. जपनिया राछछ, ८. जरमनवा के हार निहचय।

१. नइकी दुनियाँ१— जैसा कि इस ग्रन्थ के नाम से विदित होता है इसमें ...काल में जो नया संसार दिखाई पड़ रहा है उसी का उल्लेख है। ...जी ने इस नाटक में भोजपुरी समाज का अच्छा चित्रण किया है। ...प्रकार बूढ़ी सास नयी बधू को गाली देती है और तंग करती है इसका ...बड़ा सुन्दर हुआ है। समय के परिवर्तन के साथ ही परिस्थिति में ...परिवर्तन हो जाता है इसकी भी झाँकी हमें इसमें देखने को मिलती है। ...समय में अन्न-वस्त्र का कितना कष्ट था और स्वराज्य हो जाने पर ...नाटक भारत के स्वतंत्र होने के पहले लिखा गया था) कितना सुख ...इसका वर्णन करते हुए नाटक का एक पात्र बटुक कहता है कि२ :— ...हमरा सुराज में भुइली में एको घर गरीब ना रहे पाई। केहू क ...भूखा नंगा न रहे पइहैं। केहू मसनद पर बैठल बैठल घिउ मलीदा खा ...टाके भइसा न होखे पाई, आ ना केहू काम करत करत सिटुकि के ...होवे पाई।" लेखक ने देहातों में विजली, सड़क; नहर, खेती के उत्तम ...के होने से गाँवों की सुख-समृद्धि का जो वर्णन किया है वह सुन्दर है। ...गाँव का नाम बदल कर 'लेनिनपुर' रखना तथा ऊँच-नीच सबको साथी, ...कहकर पुकारने से ज्ञात होता है कि लेखक साम्यवाद का प्रचारक है। ...नाटक की भाषा ठेठ तथा मुहावरेदार भोजपुरी है। भोजपुरी कहावतों का ...बड़ा सुन्दर हुआ है।

१. किताब महल, जीरोरोड, इलाहाबाद से प्रकाशित। २. नइकी दुनिया, पृष्ठ २२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

२. मेहरारुन के दुरदसा—इस नाटक के भी लेखक राहुलजी हैं। जैसा कि इस पुस्तक के शीर्षक से ज्ञात होता है। इसमें स्त्रियों की दुर्दशा का वर्णन है। भोजपुरी समाज में स्त्रियों की जैसी दशा है उसका सजीव चित्रण राहुलजी ने इस नाटक में किया है। लेखक ने साम्यवादी दृष्टिकोण से स्त्री एवं पुरुषों के समान अधिकार पर विचार किया है। युग युग से पुरुष जाति ने स्त्रियों पर कितना भयंकर अत्याचार कर उन्हें घर में बन्दी बना कर रखा है, अधिकार से वंचित किया है, इसका सुन्दर वर्णन उपस्थित किया गया है। पुत्र-जन्म के अवसर पर आनन्द मनाया जाता है परन्तु बेटी का जन्म शोक का कारण होता है। जब दोनों एक ही माता के उदर से पैदा होते हैं तो दोनों में यह भेद क्यों ?

"एकै माई बपवा से एकही उदरवा में
दूनो के जनमवां भइल, रे पुरुखवा।
पूत के जनमवा में नाच आ सोहर होला,
बेटि के जनम परे सोग, रे पुरुखवा।"

पुरुष किस प्रकार घर में वेश्याओं को रखकर अपनी स्त्री को मार पीटते हैं इसका भी चित्रण कितना सुन्दर है—

"अँखिये के देखते पतुरिया रखले बा,
मारे गाली देला दिन रात, रे पुरुखवा।
ओहि रे कसुरवा मरदवा के किछु नाहीं।
तिरिया के भकसी झोकावें रे पुरुखवा।"

इस नाटक की नायिका लक्ष्मी है जो अन्य स्त्रियों को पुरुषों के अत्याचार का वर्णन सुनाती है और उन्हें संगठित होकर अपने अधिकार प्राप्त करने का प्रयत्न करने की सम्मति देती है। पुत्री होने पर किस प्रकार लोग उसका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दिया करते थे इसके विषय में वह कहती है कि—"अ बहिनी केतना जाति लड़किन के जनमते मुवा दिहेल जाला, हाँ आगि में झोंकारि के ना। मरदा के हाथ में रहित त उहै करित"१। इस पुस्तक में सती प्रथा की घोर की गई है। परदा प्रथा के कारण किस प्रकार स्त्रियों को घर में नज-रखा जाता है, नव विवाहिता वधू किस प्रकार अपने पति को भी नहीं जानती और रास्ते में ही खो जाती है। इसका बड़ा सच्चा चित्र उपस्थित गया है। कोई स्त्री गाती है कि—

"बारे से परदा घूँघटवा कढ़ौले
घरवै भइल हमनी के जेहलवा।"

लेखक ने कहीं-कहीं पर अनवसर मूर्तिपूजा की निन्दा की है।२ पुस्तक में स्वच्छन्दता के लिए, जायदाद में उनके समान अधिकार के लिए वकालत की है और इस विषय में रूस का उदाहरण दिया गया है। स्त्री और पुरुषों में भाव की भावना की ओर लक्षित करती हुई सीता (एकपात्र) कहती है कि:—

"आ मेहरारू के नीच नीच कहल जाला, जे
मेहरारू नीच होइत ओही से जनमल मरद
ऊँच कइसे हो जाला।३"

सारी पुस्तक में स्त्रियों की आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक दुर्दशा का सुन्दर चित्रण है। भाषा सरल एवं शैली मुहावरेदार है।

३. जोंक—इस नाटक को राहुलजी ने हजारीबाग जेल में जुलाई १९४२ ई० में लिखा था। इसमें साम्यवादी सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। इस नाटक में समाज के जितने शोषण करने वाले लोग हैं, जैसे जमींदार, साहूकार, राजा, महाराजा, उनकी पोल खोली गई है और गरीब किसानों की नग्न दशा का चित्रण किया गया है। धनहीन कृषक की यह दयनीय दशा देखिये४ :—

१. मेहरारुन की दुरदसा पृष्ठ ७। २. वही पृष्ठ २२-२३। ३. वही, पृष्ठ २७।
४ जोंक पृ० ३।

Ra Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

"सांझ बिहान कै खरचो नइखैं, मेहरी मारे तान।
अन्न बिना मोरा लड़का रोवे का करीं हे भगवान्।
करजा काढ़ि-काढ़ि खेती कइली, खेतवे सूखल धान।
बैल बेंचि जिमदरवा कै देलीं, सहुआ कहै बेइमान।"

देहाती किसान साहूकार एवं मिल-मालिकों के चक्कर में पड़ कर कि प्रकार पीसा जाता है इसका सजीव चित्रण इस पद्य में किया गया है[1]—

"हाइ हो देहिया लगली जोंक।
रात दिना हम कमवा में खटलीं, कपरा लेहली ठोंक।
डेढ़ा सवाई अहुआ कइले, देले करेजवा भोंक।
खोलि दुकनिया सेठवा लूटे, दैवौ कें नाहीं रोक।
मिल में बइठि मजुरवा रोवे, भकसी देहले झोंक।"

४. जपनिया राछछ—यह नाटक भी सन् १९४२ में ही लिखा गया था इसमें जापानियों की निर्दयता एवं दुष्टता का वर्णन किया गया है। एक जापानी दलाल जापान की प्रशंसा करता है और किसान उसकी दलीलों का खंडन करता है। जापानियों ने कोरिया में जो अत्याचार किया था उसका भी वर्णन यहाँ किया गया है। जापान में वेश्या-वृत्ति की जो प्रथा है उसके व्यापक प्रभाव से बचने के लिए जुम्मन कहता है कि[2] "हाई, छपरा, आरा, मोतिहारी हाई कुलि शहर दिहात सजग हो जा भइया। भगवाने बजार नां, कुलि छपरा के रंडीखाना बना दी। अपना तीर तरुआरिन पर सान ना धर ब।"

जापानियों ने चीन पर आक्रमण कर वहाँ जो अत्याचार किया है उसका उल्लेख इस पद्य में पाया जाता है[3] :—

"अगिया लगौले लेले हाथ में लुकरिया
मोरा फूशन गांव।

१. जोंक पृ० १४। २. जपनिया राछछ पृ० १९। ३. वही. पृ० १३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

पट पट जरे घर लपटि अकसवा,
धुंवा उठे चारो ठांव ।"

इसी अत्याचार के कारण जापानियों को 'राछछ' कहा गया है। चीन में सेना और राष्ट्रीय सरकार में जो लड़ाई उस समय हो रही थी उसकी भी इसमें संकेत किया गया है।

५. जरमनवा के हार निहिचय—यह नाटक सन् १९४२ ई० में लिखा गया विद्वान् लेखक ने जर्मनी के परास्त होने की भविष्यवाणी उस समय की जो अन्त में सत्य निकली। इस नाटक में प्रधान दो पात्र हैं। एक भसुंडी और घरभरन। भसुंडी जर्मनी की प्रशंसा करता है और घरभरन उसके अत्याचारों का वर्णन। भसुंडी कहता है कि "हिटलर का आवते जरमनी में भूखा केहू ना रहि गइल।' रामसुभग भी घरभरन के विचारों का पोषक है। जर्मनों के अत्याचारों को बतलाता हुआ कहता है कि 'मास्को का नगीचा पोलियाना गाँव में पनरह से साठ बरिस तक के कुलि मरद मेहरारुन के पूस का जाड़ा पाला में एगो घर में ठूंसि के ताला बन्द कर देहले,। जर्मनी इन्हीं अत्याचारों के कारण राम सुभग आदि गाते हैं कि :१

"जितिया त होई हमार, रछछवा ना बचिहैं।
पांच पांच बरिस से लुड़िया पटकलसु।
हिटलर बजवलसि गाल, जरमनवा ना बचिहैं।
लाली फउजिया रछछवन के मारत
दिहले बिताय एक साल, रछछवा ना बचिहैं।"

अन्त में इस लड़ाई से किसान मजदूरों को कितना कष्ट हो रहा है उसका वर्णन कर नाटक समाप्त हो जाता है।

६. देश रच्छक—इस नाटक में देश की रक्षा करने वाले सिपाहियों का उल्लेख है। जापानियों की बम-वर्षा के कारण कुछ लोग बर्मा से भाग रहे हैं। लोग आपस में जापान के द्वारा चीन, शंघाई और हांगकांग में किये गये

१. जरमनवा के हार निहिचय पृ० ३१।

Raj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अत्याचारों का वर्णन करते हैं। वर्मा से भागने में उन दिनों में लोगों को क्या क्या कष्ट उठाने पड़े इसका भी विवरण पाया जाता है। मुसीवत के दिनों में एक व्यक्ति दूसरों की सहायता भी करता है और अपनी कठिनाइयों का ख्याल न कर दूसरों को सुख पहुँचाने का प्रयत्न करता है।

वर्मा में हिन्दुस्तानी सिपाहियों ने जो बहादुरी का काम किया था उसका उल्लेख मिलता है। सोहनलाल जो सेना का आफिसर है, कहता है कि "जमदार सुखलाल सिंह से बढ़कर हमार बहादुरी नइखे वहिन। ऊ आपन परान देके हमरा पलटन के जिऊ बचौले।"१ शान्ता सोहन लाल की प्रशंसा करती हुई कहती है:—"सुनतानीं तीनों हजार पलटन में वड़का अफसर कुल्ही धराय मराय गइले, आ अपने ही कमान अपना हाथ में ले के समुच्चा पलटन के छिन्दविन के एह पार निकालि ले अइनी।"२ शान्ता आगे जापानी आततायियों की निन्दा करती है। कप्तान शान्ता से कहता है कि जहाँ देश की रक्षा का प्रश्न आयेगा वहाँ हमी सिपाही आगे दिखाई देंगे। जापानियों से हम लोगों ने वर्मा में मुकावला किया। यदि इस देश में आयेंगे तो यहाँ भी उनसे लड़ेंगे।

७. ढुनमुन नेता—इस नाटक में एक ऐसे कांग्रेसी नेता का चरित्र-चित्रण किया गया है, जिसका कोई सिद्धान्त नहीं है और जो कभी कांग्रेस के पक्ष में व्याख्यान देता है और जमींदारों की सहायता के लिए तैयार हो जाता है। संभवतः इसीलिए इसका नाम 'ढुनमुन नेता' पड़ गया है। वह जमींदारों की निन्दा कर किसानों को कांग्रेस को वोट देने के लिए सलाह देता है। परन्तु जब जमींदारी प्रथा के उन्मूलन का प्रश्न आता है तो स्वयं जमींदार होने के कारण इस प्रथा के समर्थन में व्याख्यान देता है। सियार नारायण कहता है कि "हमरो जिमदारी में सौ बिगहा पर आंखि गड़ौले रहलन, मुदा कवनों

१. देश रच्छक पृ० २०। २. वही. पृ० २०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

से गरह टरल ।"१ ढुनमुन सिंह, जो अपने को नेता मानते हैं, महात्मा की सदा दुहाई देते रहते हैं। हरपाल उनका प्रतिद्वन्दी है और उनकी सदा ओचना करता रहता है।२ हरपाल गांधीजी के गांव पर जो गांधी आश्रम हरिजन आश्रम खुल रहे हैं उनकी पोल खोलता है। हरपाल साम्यवाद में वास रखता है। वह कहता है कि : "जौना दिन रूस से ललका झंडा र जाई, किसान मजदूर राज वहाँ से बरबाद हो जाई, ओही दिन दुनियाँ के किसान मजदूरन के गले तांत लगि जाई।"३ अन्त में ढुनमुन का त्र-चित्रण कर नाटक समाप्त हो जाता है।४

"एन कर ढुनमुन ह नाव, ई नेता हवे बड़ भारी।
कबहु चरखवा, खदरवा के गीत गांवे, मिलबो कबहु मंहतारी।
कबहु मजुरवा किसनवा कै रजवा, सेठन के कबहुँ पुछारी।
छिप छिप के गावे जपनवो के गीतिया, एनकर इहै हुसियारी।"

८. ई हमार लड़ाई—इस नाटक में द्वितीय महासमर की चर्चा की गई है। म्यवादियों का इस लड़ाई के विषय में यह कहना था कि यह महासमर ता की लड़ाई थी और इसीलिए उन्होंने जनता को इसमें भाग लेने को त्साहित किया था। इस नाटक में संक्षिप्त रूप में यह दिखलाने का प्रयत्न या गया है कि यह लड़ाई जनता का युद्ध 'पीपुल्स वार' है। अतः इसमें लोगों को भाग लेना चाहिए। इसी दृष्टिकोण को सामने रखकर यह टक लिखा गया है। इस प्रकार कुल मिलाकर राहुलजी ने आठ नाटक खे हैं जिनका संक्षिप्त वर्णन गत पृष्ठों में उपस्थित किया गया है।५

---

१. ढुनमुन नेता पृ० ११। २. वही. पृ० १५। ३. ढुनमुन नेता पृ० २३। ४. वही. पृ० ४४। ५. नाटकों में से नइकी दुनिया, जोंक, इ हमार लड़ाई ये तीन नाटक किताब महल, जीरो रोड, इलाहाबाद, सन् १९४२ ई० और शेष नाटक नइकी दुनिया, छपरा (बिहार) से सन् १९४२ ई० में प्रकाशित हुए हैं।

Raj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

इन नाटकों की भाषा बड़ी, सरल, सीधीसादी और मुहावरेदार है जैसा कि ऊपर के उद्धरणों से विदित होता है। राहुलजी ठेठ भोजपुरी लिखने में सिद्धहस्त थे। उन्होंने अंग्रेजी भाषा के जिन शब्दों का प्रयोग किया है उन्हें बिल्कुल भोजपुरी बना लिया है। जैसे बलिहटर (बैरिस्टर), मजिस्टर (मजिस्ट्रेट)। आपका भोजपुरी गद्य नितान्त प्रांजल, प्रवाहपूर्ण एवं प्रसन्न है।

५. गोरखनाथ चौबे

उल्टा जमाना—'उल्टा जमाना' नामक नाटक के लेखक पं० गोरखनाथ चौबे हैं। आप गोरखपुर जिले के निवासी हैं। कुछ दिनों तक आप हिन्दी-साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के रजिस्ट्रार भी थे। आपने नागरिकशास्त्र पर अनेक पुस्तकें लिखी हैं जो बड़ी लोकप्रिय हैं।

आपने इस छोटे से नाटक में आजकल के समाज का सुन्दर चित्रण किया है। सुधार के नाम पर किस प्रकार उत्साही सुधारक-गण अन्धेर मचाते हैं इसका उल्लेख इसमें किया गया है। किस प्रकार आधुनिक पढ़ी लिखी स्त्रियाँ घर, गृहस्थी का काम ताक पर रख कर सभा-सोसाइटी में अपना समय बरबाद करती हैं और घर की शान्ति को नष्ट कर देती हैं इसका सुन्दर चित्रण किया गया है। नाटक का एक पात्र स्त्रियों की परतन्त्रता की शिकायत करता है तो दूसरा उसका समर्थन करता है। कोई स्त्री कहतो है कि "गरीबी जवन चाहे तवन करावे, नाहीं त हमरी देस के मरद मेहरारू के सोना अइसन जोगवे ले। बेटी बहिन खातिर तर के धरती उप्पर क देले।"१ आजकल समाज में उच्छृंखलता दिखाई पड़ती है लड़का पिता का कहना नहीं मानता, पतोहू सास की आज्ञा का उल्लंघन करती है और पत्नी पति का निरादर करती है, आदि बातों का मार्मिक चित्रण किया गया है। आजकल की शिक्षा की आलोचना करती हुई बुद्धका (एक पात्र) कहती है कि "का आजुये काल्हि क पढ़ाई पढ़ाइं कहल जाला, जे मेहरारू मरदे से बाजे, पतोहू सासू से लड़े आ घर दुआर छोड़ि के दुनियाँ में सभा करे। ई पढ़ाई क दिन चली बुधिया।"२ यह उक्ति

१. उल्टा जमाना पृ० २८। २. वही पृ० २३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

बड़ी सटीक है। आजकल समाज में जो अनाचार फैला हुआ है उसकी बड़ी सुन्दर आलोचना निम्नांकित पंक्तियों में हुई है।

"जमाना बड़ा खराब वा। दूसरे के बहिन, बेटी के आजु काल्हि क दुनियाँ आपन बहिन बेटी नइखे जानत..........अब त दिन ही आँखी में चोरी क के पंच दूसरे के लूटि लेवे चाहता।"१

इस पुस्तक की भाषा बड़ी सरल और मुहावरेदार है। विद्वान् लेखक ने मुहावरों और कहावतों का पद-पद पर प्रयोग किया है। उदाहरण "एकर नतीजा ई है मिलत कि 'धोबी क कुक्कुर न घर क न घाट क'।२ उर्दी क भाव पूछे छ गेरी बनउर।३ सज्जी कुक्कुर गंगे नहइहैं त हाँड़ी के ढूंढ़ी। सज्जी बात के बतकका" आदि आदि। मुहावरों का प्रयोग भी बड़ा सुन्दर हुआ है। यथा :—

१. "लइकनिओं के बनहा सुग्गा बना देत बाड़ी,
२. तोहूं माहचे की तरे गुलरी क किरौने बड़ी,
३. अइसन जहिया होई तहिया बदरे में फूल लागि जाई।
४. सासु, ससुर सब उनके हाथे हाथे ले ले बा"

—:०:—

१. उल्टा जमाना पृ. २०। २. वही. पृ० ४। ३. वही. पृ० ५।

Ra Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

६—रामेश्वर सिंह 'काश्यप'

रामेश्वर सिंह 'काश्यप' का लोहा सिंह नाटक अत्यन्त प्रसिद्ध है। भिखारी ठाकुर के 'विदेसिया' नाटक के बाद यदि किसी नाटक ने भोजपुरी प्रदेश में लोकप्रियता को प्राप्त किया है तो वह 'लोहासिंह' है। विशाल जन समूह को आकृष्ट करने की जो शक्ति इसमें पायी जाती है वैसी अन्यत्र उपलब्ध नहीं है। इस नाटक का अभिनय देखने के लिए जनता की बड़ी भीड़ एकत्रित हो जाती है जिसे नियंत्रित करना कठिन होता है। 'काश्यप'जी की विशेषता यह है कि वह एक सफल नाटककार ही नहीं हैं बल्कि कुशल अभिनेता भी हैं। इस नाटक को रंगमंच पर खेलते समय 'काश्यप'जी स्वयं लोहासिंह का पार्ट करते हैं और अपने सफल अभिनय से श्रोताओं को आश्चर्य में डाल देते हैं। इसका अभिनय अनेक स्थानों में कई बार हो चुका है, इसी से इसकी लोकप्रियता का कुछ अनुमान किया जा सकता है।

'लोहा सिंह' आल इण्डिया रेडियो के विभिन्न स्टेशनों से अनेकों बार प्रसारित हो चुका है जिसे श्रोतागण बड़े ध्यान पूर्वक चाव तथा उत्सुकता से सुनते हैं।

आकाशवाणी के क्षेत्र में भी यह नाटक इतना जन-मन का अनुरंजक सिद्ध हुआ कि इसका टेप रेकार्ड कर लिया गया है और रेडियो के विभिन्न स्टेशनों से यह यदा कदा प्रसारित किया जाता है। इस 'लोहासिंह' नाटक को केन्द्रीय सरकार के द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्रदान किया गया है। इस प्रकार इसकी ख्याति दिल्ली तक पहुँच गयी है। इस नाटक की जन प्रियता से प्रोत्साहित होकर काश्यपजी ने इसका दूसरा भाग 'लोहा सिंह—मुरब्बे और अन्य करतूतें' नाम से लिखा है।[२] ये दोनों भाग एक दूसरे के पूरक समझने चाहिए।

---

१. ग्रन्थ माला कार्यालय बाँकीपुर, पटना सन् १९५५ ई०

२. राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल, मछुआ टोली, पटना। सन् १९६३ ई०। पृ०सं० १[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

इस नाटक की कथावस्तु भोजपुरी-प्रदेश के जन-जीवन से ली गई है। गाँव कोई व्यक्ति लड़ाई में लड़ने के लिए सेना में भर्ती हो जाता है। वह सेना में कई वर्षों तक काम करता है और बड़ी वीरता का प्रदर्शन करता है। उसका स्वभाव कठोर और व्यवहार रुक्ष हो जाता है। इन्हीं कारणों से उसे 'लोहा-सिंह' की संज्ञा प्रदान की गई है। वास्तव में 'लोहासिंह' उस व्यक्ति का प्रतीक जो जीवन में कर्मठ, वचन में परुष, व्यवहार में कठोर और वार्तालाप में है। वह सेना में अधिक वर्षों तक रहने के कारण अपनी गँवई की बोली मातृभाषा को भूल जाता है और ऐसी बोली बोलने का अभ्यस्त हो जाता है जिसमें अंग्रेजी, खड़ी बोली हिन्दी और भोजपुरी का मिश्रण पाया जाता है। लोहासिंह कुछ वर्षों के पश्चात् सेना से लौट कर घर आता है। वह अपनी पत्नी, बाल-बच्चों तथा गाँव के लोगों के साथ बातचीत करते समय ऐसी मिश्रित भाषा का प्रयोग करता है जिसमें टूटे-फूटे कुछ अँग्रेजी के शब्द, खड़ी बोली-हिन्दी, और ग्रामीण बोली की खिचड़ी पकाई गई है। ऐसी बोली को सुनकर किसी भी श्रोता को हँसी आये बिना नहीं रह सकती है। यह नाटक खड़ी बोली और भोजपुरी दोनों भाषाओं में लिखा गया है। पात्रों के अनुसार भाषा में परिवर्तन होता गया है। इस प्रकार इस नाटक की भाषा टिपिकल ...ाहियाना है। उदाहरणस्वरूप यहाँ कुछ अंश उद्धृत किया जाता है :—

आजकल लोग अपने लड़कों को परीक्षा में नकल करवा कर पास करवाना चाहते हैं। इस पर लोहा सिंह का विचार सुनिये। वे अपनी स्त्री से कहते हैं कि :—

"तुम्हारा अकिल का डिस्टिक बोर्ड बगद गइल बा। तुम्हारा दिमाग का रेल का इंजिन पटरी से उतरि गई है। एही से तुम एह माफिक देहाती का ...फाना बात बोल के हमारा हाई तरक्की का पोजीसन के बैण्डेज के ऊपर ...ल चलावती रहती है। जिस प्रकार काबुल का मोर्चे पर कर्नेल को गोली ...लाकर दवाई किया, उसी माफिक तुम हमारे साथ करप्शन अउर बादरेशन अउर गलतफइमी करती हो।"

Raj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

आगे लोहासिंह कहते हैं कि जो लड़का विद्या पढ़कर ज्ञान नहीं प्राप्त करेगा यदि वह डाक्टर और इंजिनियर हो भी जाय तो वह खतरनाक ही होगा।

"जिसका जड़े मजबूत नहीं होगा उसका पुलुई कइसे ऊपर जाई जवन लड़िका विद्या पढ़ले नइखे आ चोरी कके पास कइलेवा, वह डाक्टर होगा तो रोगी के खोखी होने पर हैजा के सूई लगा कर मुआ डालेगा, इंजिनियर होगा तो अइसन पुल बनायेगा जे साले भर में टूटि जाई। अफसर होगा त घूस लेगा। मलेटरी का कप्तान बनेगा त अपने फौज पर गोली चला देगा। बिजनेस करेगा त ब्लेक मार्केट का करप्शन चालू करेगा। राजनीति में करेगा तो जनता आ देस के जहन्नुम में भेज के आपाना पाकेट गरम करेगा"।

आजकल के नकलची लड़कों के बारे में लोहासिंह का स्पष्ट विचार यह है कि ऐसे लड़कों को "जरूर फेल करो, जरूर फेल करो। अगर वह साल भर सिनेमा देखा है, अवर हीरो बन के बाजार में परेड किया है, एक दम पढ़ा लिखा नहीं है तो उसको फेल तो करना ही चाहिए।"

पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में 'लोहासिंह' नाटक इतना प्रसिद्ध हो गया है कि लोहासिंह और काश्यपजी एक दूसरे के पर्यायवाची शब्द हो गये हैं। अब 'काश्यप'जी को लोग 'लोहासिंह' के नाम से पुकारने लगे हैं और वे इसी नाम से विख्यात भी हैं।

प्रोफेसर रामेश्वरसिंह 'काश्यप' अनेक वर्षों तक बी० एन० कालेज, पटना में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष थे। आजकल वे सहसराम डिग्री कालेज, सहसराम (आरा) में प्रिन्सिपल के पद को सुशोभित कर रहे हैं। इस विद्वान् नाटककार तथा सफल अभिनेता से यही आशा है कि वे भोजपुरी भाषा के भाण्डार को सदा भरते रहेंगे।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

७—डा० राम विचार पाण्डेय

डा० पाण्डेय१ भोजपुरी के कवि होने के साथ ही साथ नाटककार भी आपके कवि-रूप का वर्णन पहले किया जा चुका है। आपने "शहीद पांडे"२ नाम से भोजपुरी में एकांकी नाटक लिखा है। इस नाटक का मंगल पांडे सन् १८५७ ई० के प्रथम स्वाधीनता संग्राम का सेनानी अपनी देश-भक्ति के कारण उसे अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। वीराग्रणी की गाथा इस नाटक का आधार है।

डा० राम विचार पाण्डेय ने इस नाटक को लिख कर जनता में स्वतन्त्रता भावना को जागृत करने का प्रयास किया है। इसमें संवाद बहुत छोटे भावपूर्ण हैं। मंगल पांडे अपने साथी सैनिकों का आह्वान करता हुआ ता है कि :—

"सामने अंगार बा, बड़ा तेज धार बा। जीत बा कि हार बा, देस के र बा। देस के गोहार बा, के कहऽ तेआर बा।" यह सुनते ही सभी सैनिक उठाकर चिल्ला उठते हैं कि "सभ केहू तेआर बा"। अपने साथियों को ों की बाजी लगाने के लिए उद्यत देखकर मंगल पांडे उन्हें जूझ मरने के प्रोत्साहित करता हुआ ललकारता है :—

"ए सपूत बढ़ि चलऽ, तू जम के दूत बढ़ि चलऽ। माँ के पूत बढ़ि चलऽ, देवदूत बढ़ि चलऽ। देस के गोहार बा, के कहऽ तेआर बा"? इस प्रकार से डे जी ने इस एकांकी में राष्ट्रीयता की भावना को भरने का सफल प्रयास या है।

१ जन्म—मार्च सन् १९०० ई०
२ भोजपुरी साहित्य—सदन, बलिया से सन् १९६० ई० में प्रकाशित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

८—कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र'

डा० कमला प्रसाद मिश्र ने 'वीर मंगल पाण्डे' नामक नाटक की रचना की है।१ इस नाटक में सन् १८५७ ई० के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के प्र... सेनानी मंगल पाण्डे की वीर गाथा का वर्णन किया गया है। नाटक की भा... अत्यन्त सरल है। कथोपकन छोटे-छोटे और सरस हैं। यह नाटक अभिनेयता की दृष्टि से सफल हुआ है। डा० राम विचार पाण्डे ने भी "शहीद मंगल पाण्डे" नाम से एक नाटक प्रस्तुत किया है जिसका उल्लेख पहिले किया जा चुका है। मिश्र जी की अपेक्षा पाण्डेय जी की भाषा में अधिक ओज और ... है। परन्तु वीराग्रणी मंगल पांडे को नायक बनाकर सर्वप्रथम नाटक लिखने के लिए मिश्र जी धन्यवाद के पात्र हैं। इन्होंने इस दिशा में पथ-प्रदर्शन का कार्य किया है। डा० मिश्र का दूसरा नाटक 'मोती का धनद' है जो आपकी नाट्य... प्रतिभा को प्रमाणित करता है।२

९—श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह

वाबू दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह भोजपुरी के प्रसिद्ध कवि, निवन्ध-लेखक और उपन्यासकार हैं। इनके भोजपुरी महाकाव्य 'साहित्य-रामायण' की च... पहिले की जा चुकी है। श्री सिंह ने सन् १८५७ ई० के सुप्रसिद्ध वीराग्रणी 'वावू कुँअर सिंह' नामक नाटक लिखा है जिसमें इस वीर देशभक्त की गाथा का वड़ा ही सजीव वर्णन किया गया है।३ इस नाटक की भाषा बड़ी सजीव और ओजपूर्ण है। इसके संवाद छोटे, अर्थपूर्ण तथा प्रभावशाली हैं। इन्होंने "न्याय के न्याय" नाम से एक एकांकी की भी रचना की है। इस प्रकार श्री सिंह ने काव्य की रचना करने के अतिरिक्त नाटक लिखने का भी सफ... प्रयास किया है।

---

१. भोजपुरी-साहित्य-मंडल, बक्सर, आरा सन् १९५६ ई०। पृ० २६

२. सन् १९५७ ई० में प्रकाशित। पृ० ४३

३. विद्या-भवन, पटना से सन् १९६२ ई० में प्रकाशित।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

१०—श्री मोती बी. ए.

श्री मोती बी. ए. भोजपुरी के सुप्रसिद्ध गीतकार हैं। परन्तु इसके अतिरिक्त ये एक सफल नाटककार भी हैं। आपने "बन बन बोलेले कोइलिया"१ पुस्तक की रचना की हैं जिसमें आपकी आठ लोक—संगीतिकाओं का उपलब्ध है। इनके विषय में आप लिखते हैं कि "ये लोक संगीतिकायें और शैली की दृष्टि से एक प्रयोग हैं। प्रबन्ध-वस्तु के प्रस्तुतीकरण के इनमें जितने वर्णन-स्थल आये हैं उनमें भाषा संबंधी स्वतन्त्रता जान-कर अपनायी गयी है। यह इसलिये कि लोक संगीतिकायें कहीं एकरसता के में डूब न जायें"। इन संगीतिकाओं में 'सील' और "रासलीला" समधिक हुई हैं। अनेक स्थानों पर इनका अभिनय बड़ी सफलता के साथ किया जा है। रेडियो स्टेशनों से भी इनका प्रसारण किया गया है। "रासलीला" बड़ी सरस तथा सुन्दर है। गोपियाँ श्रीकृष्ण के दर्शन के लिए पास आई हैं। परन्तु वे उन्हें घर लौट जाने का आग्रह करते हुए हैं कि :—

"घर के लोगवा जोहत होइहें,
बचवा डँहकत, बिलपत होइहें।
जाके उनके जीव जुड़ावऽ;
तोहार बाट अगोरत होइहें॥
"लौटऽ देर कर जनि सखिया,
चढ़लि आवे आधी रतिया।
मति कुलबोरनी नाँव धरावऽ
मद में बूड़लि जाले अँखिया॥
भोली ! जनि तू धरम गवाँव।
कइसन कारन परि गइल ना"॥

१ भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी। संवत् २०२८ वि०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

"हरा भरा है गाँव हमारा" नामक लोक संगीतिका में ग्रामीण प्रकृ और जीवन का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया गया है।

"युग युग जीये पीपर पाकड़,
यह बरगद की छाँव,
हमारा हरा भरा है गाँव ॥"

इन पंक्तियों में नाटककार ने गँवइ के सुन्दर रूप को हमारे सामने प्रस्तु किया है। "चलो खेत की ओर में" कृषक जीवन का सजीव वर्णन पा जाता है।

श्री मोती बी. ए. की ये सभी लोक संगीतिकायें बड़ी सुन्दर बन पड़ी जिनमें ग्रामीण जीवन, ग्रामीण प्रकृति और ग्रामीण विश्वास का सुन्द प्रतिबिम्ब दृष्टिगोचर होता है। इस नाटककार ने इन संगीतिकाओं भाषा के संबंध में बड़ी स्वच्छन्दता का परिचय दिया है। इनकी भाषा भोजपुरी है तो कहीं खड़ीबोली, कहीं व्रजभाषा का प्रयोग किया गया है कहीं संस्कृत का। इस प्रकार मोती जी ने खिचड़ी भाषा का व्यवहार किया परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि यह खिचड़ी बड़ी ही स्वादिष्ट है।

श्री मोती बी. ए. का दूसरा नाटक 'अब्राहम लिंकन' है[1]। इस नाटक मूल लेखक जॉन ड्रिंकवाटर हैं जिन्होंने अमेरिका के सुप्रसिद्ध राष्ट्र (प्रेसिडेण्ट) अब्राहम लिंकन के जीवन चरित को लेकर अंग्रेजी में नाटक रचना की थी। श्री मोती बी. ए. ने इसी अंग्रेजी नाटक का भोजपुरी अनुवाद किया है। इस नाटक में पात्रों के नाम उनके मूल रूप में दिये गये हैं यह सन्तोष का विषय है कि यह अनुवाद मूल अंग्रेजी से सीधे भोजपुरी किया गया है।

इस नाटक को पढ़ने से मूल का स्वाद प्राप्त होता है। कहीं-कहीं अनुवाद मूल से भी भावों की उत्कृष्टता में बढ़ गया है। अन्तिम पंक्तियों पद्यानुवाद बड़ा ही सुन्दर बन पड़ा है। इस प्रकार भोजपुरी का भाण्डा भरने के कारण लेखक धन्यवाद का पात्र है।

१. भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी से प्रकाशित। संवत् २०२६ वि०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

११—श्री रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

ओझा जी भोजपुरी साहित्य परिषद्, जमशेदपुर के प्राण हैं। उस लौहनगरी में भोजपुरी के संबंध में जो कुछ साहित्यिक चर्चा और सेवा हो रही है वह सब ओझाजी के प्रयास का फल है। आप का जन्म बिहार राज्य के शाहाबाद जिले के मेज नामक प्रसिद्ध गाँव में २१ मई सन् १९३२ ई० को हुआ था। आपके पिता का नाम पं० ब्रह्मेश्वर नाथ ओझा है जो स्वयं भोजपुरी और हिन्दी के कवि थे। ओझाजी की शिक्षा बी० ए० तक हुई है परन्तु अध्ययन-क्रम अभी जारी है।

साहित्य के क्षेत्र में आपकी प्रतिभा अनेक रूपों में प्रकाशित हुई है। आपने चित्र, नाटक, स्वगत छाया नाट्य, एकांकी, ध्वनिरूपक आदि अनेक विधाओं की रचना की है। इनका वर्णन यथा स्थान किया जायेगा। आप 'लुकार' नामक पत्रिका के सम्पादक हैं। आजकल आप जमशेदपुर में सेक्युरिटी इन्सपेक्टर हैं।

आपने 'परिछाही' नामक भोजपुरी स्वगत छाया नाट्य की रचना की है जिसमें आठ छाया नाट्यों का समावेश किया गया है।[१] निःसन्देह भोजपुरी में यह एक नया प्रयोग है। छाया नाट्यों के संबंध में लेखक लिखता है "छाया रूपक में दर्शक पात्र के भिन्न-भिन्न अवस्था आ मुद्रा में भाव भंगिमा करत परिछाहीं के रूप मे देखिके पूरा कथन समझ जाला। उद्घोसक के द्वारा ओह अवस्था के वरनन भा पात्रन के बात भी सुनेला। छाया नाट्य ओ बोलेला।"

अंग्रेजी के मोनोलाग (Monologue) का भोजपुरी स्वगत छाया नाट्य के रूप में यह अभिनव प्रयोग कहा जा सकता है। इसमें ओझाजी को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है, इसमें सन्देह नहीं। इस संग्रह की पाँच रचनायें तुलसीदास के रामचरित मानस से संबंध रखती हैं। ताशकन्द समझौता पर एक छाया

१. भोजपुरी साहित्य परिषद्, १ गोलपुरी बाजार, जमशेदपुर से प्रकाशित। १९६६ ई०।

Jangamwadi Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

नाट्य लिखा गया है। वास्तव में इस नयी दिशा में प्रयास करने के श्री 'निर्भीक'जी समस्त भोजपुरी-साहित्य-सेवियों के बधाई के पात्र हैं।

१२—विमल कुमार सिंह 'विमलेश'

आपका जन्म २ जनवरी सन् १९३५ ई० में ग्राम आमडाढ़ी, जिला सा[रन] बिहार में हुआ था। आपने बी० ए० तक शिक्षा प्राप्त कर आशुलिपि और टं[कण] कला में प्रशिक्षण प्राप्त किया है। आजकल आप सीवान, जिला सारन (बिहार) में बिहार वाणिज्य प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना कर इन्हीं उपर्युक्त विषयों [की] ट्रेनिंग देते हैं।

आप भोजपुरी के कवि और गायक होने के साथ ही एक अच्छे नाटकक[ार] भी हैं। आपने "मनवाँ के साध" नामक एक सामाजिक नाटक की रचना [की] है।१ आपका दूसरा नाटक 'आल्हा ऊदल' है जिसमें इन सुप्रसिद्ध वीरों [की] गाथा वर्णित है।२ आपने हिन्दी में 'वीर अमर सिंह राठौर' नामक ना[टक] की भी रचना की है जो प्रकाशित हो चुका है।

'विमलेश' जी के भोजपुरी नाटक अभिनेयता की दृष्टि से बहुत सफल हैं। इन नाटकों को अनेकों बार बड़ी सफलता के साथ खेला जा चुका है। "मनवाँ के साध" में समाज का अच्छा चित्रण किया गया है। आशा [है] 'विमलेश' जी इसी प्रकार से भोजपुरी भारती का भाण्डार भरते रहने [का] प्रयास करते रहेंगे।

१३—चौधरी देवदत्त शर्मा

आपका जन्म बिहार राज्य के सारन जिले के ग्राम पोझिया में हुआ था। सारन कालेज में शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् सन् १९३७ ई० से अध्यापन का[र्य]

---

१. बिहार वाणिज्य प्रशिक्षण केन्द्र, सीवान (सारन) से सन् १९७० प्रकाशित।

२. भोजपुरी-साहित्य-मन्दिर, जगतगंज, वाराणसी। सन् १९७२ ई०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

...रत हैं। आजकल आप जलालपुर बाजार उच्च माध्यमिक विद्यालय, सारन ...नक का कार्य कर रहे हैं। सन् १९५७ ई० में इनके द्वारा रचित "कृष्ण ...र संग्राम"१ नामक भोजपुरी नाटक प्रकाशित हुआ था। इस नाटक की ...का प्रो० रामेश्वर सिंह 'काश्यप' ने लिखी है जिसमें इन्होंने इस नाटक की प्रशंसा की है। "कृष्ण शंकर संग्राम" एक पौराणिक नाटक है जिसमें ...ने अनेक आधुनिक समस्याओं को भी सुलझाने का प्रयास किया है। ...नाटक के अतिरिक्त शर्माजी ने 'भारत के सपूत' (सन् १९५० ई०), 'प्रतीक्षा' ...री एकांकी), 'सरस्वती के सपूत' तथा 'संस्कृति के सपूत' आदि ग्रन्थों की भी ...ना की है जो प्रकाशित हो चुके हैं। आपका उपर्युक्त पौराणिक नाटक अभि-...ता की दृष्टि से भी बहुत सफल सिद्ध हुआ है।

१४—श्री यादव चन्द्र पाण्डेय

आप बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर जिले के निवासी हैं। आरंभ से ही ...की रुचि साहित्य-सेवा की ओर रही है। आजकल आप मुजफ्फरपुर के ...गंज नामक स्थान में एक उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्यापक हैं। ...ककार के अतिरिक्त आप एक सफल निदेशक तथा गायक भी हैं। आपने ...लेर बिआ नगिनिया"२ नामक नाटक लिखा है जो भोजपुरी प्रदेश की ...जाति के लोक-जीवन के आधार पर लिखा गया है। इसे कई बार ...लता के साथ मंच पर अभिनीत किया जा चुका है। पाण्डेयजी का दूसरा ...क "गरम खून" शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है।

१५—वैदेहीशरण 'बनियापुरी'

वैदेही शरण जी का जन्म सन् १९२२ ई० में सारन जिले के बनियापुर ...क गाँव में हुआ था। आप भोजपुरी के एक अच्छे कवि और कलाकार ...ने के अतिरिक्त नाटककार भी हैं। आजकल आप अपने गाँव में ही रहकर

१. भोजपुरी साहित्य मंदिर, जगतगंज, वाराणसी से प्रकाशित।
२. भोजपुरी साहित्य मंदिर, जगतगंज, वाराणसी से प्रकाशित।

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

होमियोपैथी चिकित्सा कर जनता की सेवा कर रहे हैं। परन्तु आपका अधिकांश समय साहित्यसेवा में ही व्यतीत होता है।

आपने 'सिपहिया' नामक नाटक की रचना की है[१]। यह नाटक एक ऐसे सिपाही की जीवन-गाथा के आधार पर लिखा गया है जो अपने प्राणों की बाजी लगा देता है। इसका जीवन सदा संघर्षमय है। इसी कठोरमय जीवन की झाँकी इस नाटक में प्रस्तुत की गई है। इसमें कुल बारह (१२) दृष्य हैं जो बड़ी सफलता के साथ लिखे गये हैं। रंगमंच की दृष्टि से यह एक सफल नाटक कहा जा सकता है।

१६—श्री कैलाश नाथ ओझा

आप बिहार राज्य के सारन जिले के असहनी गाँव के निवासी हैं। आपने एम० ए० तक कालेज की शिक्षा प्राप्त की है। आजकल आप सिलीगुड़ी राष्ट्र भारती नामक विद्यालय के प्राचार्य हैं। आपने "बंगला देश के पलना पर" नामक एक गीति-रूपक लिखा है जो बहुत ही भावपूर्ण रचना है। यह रूपक बांगला देश की राजनैतिक घटनाओं पर आधारित है। अनेक दृष्टियों से यह गीति रूपक बहुत सुन्दर बन पड़ा है।

१७—प्रोफेसर उमाकान्त वर्मा

आपका जन्मस्थान बिहार राज्य का छपरा नगर है। इन दिनों आप राजनारायण सिंह कालेज, हाजीपुर, जिला मुजफ्फरपुर में हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष हैं। आप भोजपुरी तथा हिन्दी के प्रसिद्ध गायक तथा कवि हैं। इसके अतिरिक्त आप कहानीकार, उपन्यासकार और नाटककार भी हैं। भोजपुरी लोकमंच के निर्माण करने तथा सजाने और सँवारने में आपका प्रयत्न श्लाघनीय है। प्रोफेसर उमाकान्त वर्मा ने श्री सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश' के साथ "भोजपुरी सभ्यता का विकास" नामक संगीत-नृत्य-रूपक की रचना की है।

१. भोजपुरी साहित्य मंदिर, जगतगंज, वाराणसी से प्रकाशित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

नृत्य-रूपक भारतीय जन नाट्य संघ, पटना के द्वारा सन् १९५२ ई० में ...ता पूर्वक अभिनीत किया गया था।

१८—श्री बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव

आप बिहार राज्य के मोतीहारी नगर के निवासी हैं। आप भोजपुरी के ... और नाटककार हैं। कवि सम्मेलनों में आपकी कविता का बड़ा स्वागत ... है। आजकल आप मोतिहारी में भारतेन्दु प्रेस के संचालक हैं और ...नों द्वारा साहित्य की ठोस सेवा कर रहे हैं। आपके द्वारा लिखा हुआ ...रक्षासम्मेलन" नामक भोजपुरी नाटक प्रकाशित हो चुका है।१ अनेक ...नों में इस नाटक का सफल अभिनय भी हुआ है।

१९—सतीश्वर सहाय वर्मा "सतीश"

श्री सतीश्वर सहाय वर्मा भोजपुरी के चिरपरिचित लेखक हैं। "माटी के ...आ घीव के बाती" आपका एक सामाजिक भोजपुरी नाटक है जिसमें आपने ...पुरी जनजीवन को चित्रित करने का सफल प्रयास किया है।२ श्री राधा ...ल राधेश इस नाटक के संबंध में लिखते हैं कि :—"माटी के दीआ, घीव के ...ती" भोजपुरी में सम्पूरन नाटक के दिशा में एगो नया मोड़ देबे वाला बा। ...कुाल के नाटक लिखे के शैली में एकदमे नया धरती पर पच्छिमी आ ...ी नाटक लिखे के शैली के भरपूर मेल एह नाटक के एगो आपन खासियत ...।"३ इस पुस्तक की प्रस्तावना में डा० रसिक बिहारी वर्मा का कथन है ...:—"माटी के दीआ, घीव के बाती" गाँव के अतिमा के पवित्रता के ...क बा। भारत के सगरो गाँव एकरे कोमल आउर थीर जोति में जगमगा ...त बा। बाकी उहे गाँव आजु काहे उजाड़ आउर उदास लाग रहल बा?

१. भारतेन्दु प्रकाशन, मोतिहारी (बिहार) सन् १९६४ ई०।

२. भोजपुरी साहित्य, मंदिर, जगतगंज, वाराणसी। सन् १९७१ ई०, पृ० सं० ६७

३. माटी के दीआ, घीव के बाती पृ० (च)

ai Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

एह सवाल के जबाब ई नाटक में अपना ढंग से दिहल गइल वा।"१ इस प्रकार यह सामाजिक नाटक बहुत सुन्दर बन पड़ा है।

२०---श्री शिवमूरत सिंह

आपका जन्म उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के वसन्तपट्टी गाँव में १९३६ ई० में हुआ था। आपकी रुचि प्रारम्भ से ही अभिनय, नाटक और कहानी-लेखन की ओर रही है। आजकल आप पूर्वोत्तर रेलवे, मडुआडीह (वाराणसी) में काम करते हैं।

श्री शिवमूरत सिंह ने 'नयकी पीढ़ी' नामक एक सामाजिक नाटक लिखा है२। लेखक ने इस नाटक में भोजपुरी जनजीवन का सुन्दर चित्रण किया है। समाज की जीर्ण-शीर्ण रूढ़ियों, अन्धविश्वासों तथा दूषित परम्पराओं से ग्रसित जन-जीवन में नयकी पीढ़ी के द्वारा विद्रोह किया जाता है। यही इस नाटक का वर्ण्य विषय है। लेखक के शब्दों में "हमके एहू क पूरा विसवास बा कि नाटक के सही आ असली उद्देस पूरा करे में हमार 'नयकी पीढ़ी' आगे रही आ आज भटकत नयकी-पीढ़ी के सही आ ठीक डहर बतावे में समरथ रही।"

'नयकी पीढ़ी' रंगमंच की दृष्टि से भी एक सफल नाटक है। इसका अभिनय अनेक स्थानों पर बड़ी सफलता के साथ किया जा चुका है।

गत पृष्ठों में जिन प्रधान-प्रधान नाटकों का वर्णन किया गया है उनके अतिरिक्त भोजपुरी में अनेक छोटे-मोटे नाटक, संगीत रूपक, नृत्य रूपक और एकांकी आदि लिखे गये हैं। 'रेल-यात्रा' और 'जागरण' दो एकांकी जन-सम्पर्क-विभाग पटना, बिहार से प्रकाशित किये गये हैं जिनका शुद्ध उद्देश्य केवल प्रचारात्मक है। ललिता कान्त शरण ने 'लोहा सिंह' की नकल पर सोटन सिंह नामक एकांकी प्रहसन लिखा है जो हास्य रस की दृष्टि से सुन्दर है। डा० राम

---

१. 'माटी के दीआ, घीव के बाती' प्रस्तावना पृ० (ज)
२. भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी। संवत् २०२४ वि०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'प्रणयी' ने 'रितुरंग' के नाम से एक संगीत रूपक की रचना की है।१ इसके अतिरिक्त डा० प्रणयी का दूसरा नाटक 'वरदान' है जो हिन्दी और भोजपुरी भाषाओं में लिखा गया है।२

यह सन्तोष का विषय है कि भोजपुरी में नाटक, एकांकी, संगीत रूपक, नृत्य रूपक, स्वगत नाट्य, गीति रूपक, नाट्य रूपक, प्रहसन आदि रूपक की अनेक विधाओं पर रचनायें होने लगी हैं। इच्छा रहते हुए इन सभी पुस्तकों का विवेचन स्थानाभाव के कारण यहाँ संभव नहीं है। अतः जिन पुस्तकों का उल्लेख इस अध्याय में नहीं किया जा सका है उन पुस्तकों की एक सूची यहाँ प्रस्तुत की जाती है जिससे पाठकों को इनकी जानकारी हो सके।

भोजपुरी में लिखे गये शेष नाटक, एकांकी तथा गीति-नाट्यों की सूची—

लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	रूपक की विधा
) मनोरंजन प्रसाद सिनहा	किताबन में एगो दुनिया बसल बा	गीति नाटक
) शिव चन्द्र ओझा	नया जमाना	नाटिका
	योजना नाटिका	,,
) गणेश तिवारी 'प्रशान्त'	तोहरे पर हमरो गुमान बा।	रूपक
) दुर्गा प्रसाद सिंह	न्याय के न्याय	एकाङ्की
) व्रज किशोर प्रसाद	'सती दहन'	संगीत रूपक
) कुबेर नाथ राय 'विचित्र'	'डिवलर'	एकांकी

१. भोजपुरी परिवार, पटना ३। 'अंजोर' के जनवरी सन् १९६१ के पृ० ८ पर प्रकाशित।

२. देववाणी मंदिर, धनछुआँ, आरा। सन् १९६३ ई० पृ० ३८।

ai Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

(७) सीताराम शरण राम	बानर के करेजा	नाटक
(८) डा० वसन्त कुमार	कुयातर लहका	एकांकी
(९) अविनाश चन्द्र विद्यार्थी	वेजाँई	एकांकी
(१०) प्रो० व्रजकिशोर मिश्र	पंच परमेश्वर	नाटक
(११) सत्यनारायण केसरी 'सौरभ'	तसलवा तोर कि मोर	संगीत रूपक
(१२) विद्याधर शुक्ल विद्यार्थी	गँवार चन्द	नाटक
(१३) विन्ध्यवासिनी देवी	मानव	संगीत रूपक
(१४) भागवत शरण सिंह	सोना	नाटक
(१५) महात्म्यसिंह चौहान	निर्मोहिया	" "
(१६) अर्जुन सिंह 'अशान्त'	सुहाग के विंदिया	नृत्य रूपक

—:०:—

२----उपन्यास

(१) रामनाथ पाण्डेय

श्री पाण्डेय का जन्म विहार राज्य के सारन जिला (थाना-माँझी) के नवतन गाँव में हुआ था। भोजपुरी में लिखने की आपकी रुचि प्रारंभ से ही पायी जाती है। आजकल आप. वाराणसी में रेलवे मण्डलीय कार्यालय में लिपिक के पद पर कार्य कर रहे हैं। आपने भोजपुरी में अनेक कहानियाँ लिखी हैं जो आरा से प्रकाशित होने वाली 'भोजपुरी' पत्रिका, वाराणसी से प्रकाशित "भोजपुरी कहानियाँ" और "भोजपुरी जनपद" नामक मासिक पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी हैं।

"बिंदिया" आपका सबसे पहला भोजपुरी उपन्यास है जिसकी प्रशंसा राहुल सांकृत्यायन ने की है। यह एक सामाजिक उपन्यास है जिसमें लेखक ने वर्तमान समाज का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया है।१

१. इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण 'भोजपुरी-संसद' जगतगंज, वाराणसी से प्रकाशित हुआ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

(२) जगदीश ओझा 'सुन्दर'

श्री जगदीश ओझा 'सुन्दर' भोजपुरी के कवि होने के अतिरिक्त एक सफल न्यासकार भी हैं। इनका उपन्यास 'रहनिदार बेटी' एक सफल रचना है।१ जी का यह उपन्यास सामाजिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। मुनिया रजभर की बिटिया है जो अपने अलौकिक रूप-सौन्दर्य से सभी को मोहित लेती है। वह अपनी सेवा और सुश्रूषा से माता-पिता को सदा प्रसन्न ती है। इसीलिए वह 'रहनिदार' (सुशील) बेटी के नाम से प्रसिद्ध है। 'सुन्दर' जी ने इस उपन्यास में भोजपुरी समाज तथा लोक-जीवन का बड़ा ही र चित्र प्रस्तुत किया है। आशा है वे इसी प्रकार से भोजपुरी साहित्य के डार को अपनी अनुपम कृतियों से भरते रहेंगे।

(३) राधा मोहन 'राधेश'

श्री राधा मोहन 'राधेश' भोजपुरी के कवि होने के अतिरिक्त एक सफल न्यासकार हैं। आपके द्वारा प्रणीत "सेनुर के लाज" एक सामाजिक न्यास है जिसमें भोजपुरी समाज का सजीव चित्रण किया गया है२। कोई भोजपुरी पति परदेस जा रहा है। उस समय उसकी स्त्री उससे प्रार्थना ती है कि तुम परदेस में जाकर मुझे भूल मत जाना। इस पर पति उसे श्वासन देते हुए कहता है कि मैं तुम्हें कभी भूल नहीं सकता और तुम्हारे सेन्दुर' की लाज अवश्य रखूँगा। मनोहर (पति) कहता है कि "ना राधिका ! सपनों में विसवास मत करिहऽ। एतना बेयाकुल ना होखे के। हम नहीं नु जातबानी। तूँ बिसवास कर—मनोहर अपना रधिका के ना नू हन। हमार तोहार जिनिगी परेम के बाड़ा मजगूत डोरी से बान्हल बा

१. भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी से प्रकाशित (प्रथम संस्करण)। इस उपन्यास का द्वितीय संस्करण भोजपुरी साहित्य-मंदिर, जगतगंज, वाराणसी से सन् १९७१ ई० में प्रकाशित।

२. भोजपुरी-साहित्य-मंदिर, जगतगंज, वाराणसी से प्रकाशित।

ai Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

राधिका। 'सेनुरा के लाज' तोहार मनोहर रखिहन।" इस प्रकार यह उपन्यास प्रेम की वह भोजपुरी गाथा है जो अटूट है। राधेश जीने इस उपन्यास को लिखकर भोजपुरी साहित्य की बड़ी सेवा की है।

(४) श्री राम नगीना सिंह 'विकल'

'विकल' जी बिहार राज्य के सारन जिले के गोपालगंज स्थान के निवासी हैं। आप भोजपुरी के कवि और उपन्यासकार हैं। इनकी अनेक भोजपुरी रचनाएं "भोजपुरी जनपद" मासिक में प्रकाशित हो चुकी हैं। आपने "जीयन साह" नामक उपन्यास लिखा है।१ इसके नाम से पता चलता है कि यह उपन्यास एक साधारण व्यक्ति के जीवन को लक्ष्य कर लिखा गया है। स्वर्ग की कामना करने वाला, मृत्युलोक का साधारण प्राणी, स्वर्ग पहुँचने पर वहाँ क्या पाता है, यह "जीयन साह" के चरित्र में चित्रित किया गया है। इस उपन्यास की कथावस्तु काल्पनिक है परन्तु लेखक ने अपने रचना-शिल्प के द्वारा इसमें वास्तविकता का आभास दिया है।

(५) श्री रमेशचन्द्र झा

झा जी बिहार राज्य के चम्पारन जिले के फुलवरिया गाँव के निवासी हैं। आप भोजपुरी तथा हिन्दी के कवि और उपन्यासकार हैं। आपने भोजपुरी में अनेक ग्रन्थों की रचना की है। आपका "सूरमा सगुन विचारें ना" एक प्रसिद्ध उपन्यास है जो एक आंचलिक कथा को लेकर लिखा गया है२। बिहार के बेतिया राज्य के राजा दिलीप सिंह थे। उन दिनों में इनका बड़ा रोबदाब तथा बोलबाला था। इनके समकालीन 'रक्खन मियाँ' ने बाबू चैना सिंह नामक स्थानीय वीर के जीवन-चरित्र को लेकर एक लोक-गाथा (पवाँड़ा) की रचना की थी। इसी गाथा के आधार पर इस उपन्यास का निर्माण किया गया है। वास्तव में वीर-पुरुष सगुन या शुभ दिन

१. विकल प्रकाशन, गोपाल गंज, सारन। सन् १९६४ ई०, पृ० ८०
२. भोजपुरी साहित्य मंदिर, जगतगंज, वाराणसी, सन् १९७२ ई०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

प्रतीक्षा नहीं करता। वह लड़ाई के मैदान में जूझ मरता है। यह स बहुत सुन्दर बन पड़ा है"।

श्री रमेश चन्द्र झा ने चम्पारन जिले का एक सांस्कृतिक इतिहास भी है जिसमें इस जनपद के कवियों और लेखकों का परिचय दिया है।

(६) डा० बच्चन पाठक 'सलिल'

डा० पाठक भोजपुरी के सिद्धहस्त उपन्यासकार हैं। हिन्दी तथा भोजपुरी आपकी अनेक रचनायें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'स्नेह के आँसू' और ला' आपके हिन्दी में रचित उपन्यास हैं और "मधु और कुनैन" ताओं का संग्रह है। आपने भोजपुरी में "सेमर के फूल" नामक उपन्यास रचना की है।१ प्रस्तुत रचना को आंचलिक उपन्यास की संज्ञा दी जा ती है जो बिहार राज्य के आरा जिले में स्थित ब्रह्मपुर (बरहपुर) नामक तीर्थ में लगने वाले मेले को पृष्ठभूमि में रखकर लिखा गया है। लेखक की चुस्त और चलती हुई है। भाषा मुहावरेदार है। कुछ पंक्तियाँ अंकित हैं :—

"बिना हरे फिटोकिरी के इ आराम कँहवा मिली। धनि हउँ बाबा ब्रह्मेश्वर । राउर बड़ लमहर बाँहि ह। लड़िकाईं में नानी के मुँह से हम रहीं कि—

पागल, पंडा, गंजेडी, हलुआई। बरँहपुर के चट्टीपर परिहें देखाई" ॥

१ भोजपुरी साहित्य परिषद् १ गोलपुरी बाजार, जमशेदपुर (बिहार) सन् १९६५ ई०, पृ० सं० ५०।

ai Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

३----कहानी

भोजपुरी का कथा साहित्य गद्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा अधिक समृद्ध है। यदि समृद्धता की दृष्टि से विचार किया जाय तो भोजपुरी नाटक के पश्चात् इसी का स्थान है। आरा से प्रकाशित होने वाली दिवंगत 'भोजपुरी' नामक पत्रिका में अनेकों कहानियाँ छप चुकी हैं। वाराणसी के भोजपुरी संसद से निकलने वाली "भोजपुरी कहानियाँ" शीर्षक मासिक पत्रिका में सैकड़ों कहानियाँ आजतक प्रकाशित हो चुकी हैं और उनका भाण्डार दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा है। 'भोजपुरी जनपद' आदि पत्रिकाओं में भी सुन्दर कहानियाँ पढ़ने को मिलती हैं।

भोजपुरी प्रदेश में लोक-कथाएँ लाखों की संख्या में उपलब्ध होती हैं। गाँवों की प्रत्येक बुढ़िया लोककथाओं का चलता-फिरता विश्वकोश है। यद्यपि भोजपुरी लोक-कथाओं का कोई सुन्दर और प्रामाणिक संकलन अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है परन्तु इनकी विपुलता की संभावनाओं को कभी अस्वीकार नहीं किया जा सकता। भोजपुरी की लोक कथाओं के संग्रह की दिशा में अनन्त क्षेत्र विद्वानों के लिए पड़ा हुआ है।

(१) अवध विहारी सुमन

(अब स्वामी विमलानन्द सरस्वती)

श्री अवध विहारी 'सुमन' ने 'जेहल क सनदि' नामक कहानियों की एक सुन्दर पुस्तक लिखी है। जहाँ तक हमें ज्ञात है भोजपुरी में मौलिक कहानियों की यह सर्व प्रथम पुस्तक है। इसमें दस कहानियाँ हैं जिनमें समाज के विभिन्न पहलुओं का दिग्दर्शन बड़ी सुन्दर रीति से किया गया है। डा० उदय नारायण तिवारी इस पुस्तक के विषय में लिखते हैं कि "इन कहानियों में अपने जनपद की आत्मा भली भाँति अभिव्यक्त हुई है"। सुमन जी के भोजपुरी गल्पों का यह संकलन निःसन्देह रुचिकर है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

पुरी जनता की ठसक, रोब-दाब, राग-द्वेष आदि को यह पहली बार
की वाणी का उचित परिधान मिला है१। सुमन जी ने मलिकार, आतम-
मवनी बाबा, कतवरू दादा, किसान भगवान्, चउर क पूजा, सनकी,
३०२, जेहल क सनदि और कवि कयलास इन शीर्षकों से कुल दस
नियाँ लिखी हैं। इन कहानियों में भोजपुरी समाज के विभिन्न अंगों का
किया गया है। 'मलिकार' नामक कहानी में तिलक की दूषित प्रथा
उल्लेख किया है। लड़की का पिता अपनी पुत्री के लिये प्रचुर धन तिलक में
असमर्थ है। वह इसी चिन्ता में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

'आतमघात' नामक कहानी में दुनियाँ के झंझटों से परेशान होकर बलराम
युवक अपनी आत्महत्या कर लेता है। आजकल के तथाकथित साधू,
कितने चरित्र भ्रष्ट हो गये हैं इसका चित्र 'मवनी बाबा' नामक कहानी
या जाता है। 'कतवारू दादा' में वृद्ध विवाह का नंगा चित्रण किया गया
इसी प्रकार 'किसान भगवान्' में किसान की महत्ता का प्रतिपादन किया
है। सुमन जी भोजपुरी समाज के विभिन्न दृश्यों को चित्रित करने में
सफल हुए हैं, यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है।

'सुमन' की भाषा बड़ी सरल और सीधी-सादी है। आपने अपनी कहानी
भाषा इतनी सरल रखी है कि अर्थ के समझने में तनिक भी कठिनाई नहीं
। 'आतमघात' का यह अवतरण देखिये :—

"जमुना घाट पर फूस का पलानी में बइठल बलराम आपन दुरदसा आ
के हाल देखि के झंखत रहलन। रहि रहि के उनका मन में उठे कि
भइला ले बढ़ि के दूसर कवनो भारी पाप नइखे। बलिराम समाज का
पाप क फल खुद भोगत रहलन। "आगा नाथ ना पाछा पगहा" वाली
भइलि चाहति रहे। चचेरा भाई गरीब जानि के उनके फरका कइ दिहले
न। घर में उनकर महतारी, मेहरारु, त आऊ तीन बेकति के पूंजी रहे।

---

१ 'जेहल क सनद'। प्रकाशक अजित कुमार मित्र नया बिहार प्रेस लिमिटेड,
कदम कुआँ, पटना। सन् १९४८ ई०।

२३

ai Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

डेढ़ बिगहा खेत हीसा मिलल। ऊहो दुई बरिस का खाइल पीयल आ पढ़े खेवा खरचा में रेहन धराई गइल।१"

उपर्युक्त उद्धरण में सीधी, सरल भाषा का प्रयोग पाया जाता है। कहानी का वर्ण्य विषय जितना सरल है, भाषा भी उतनी ही सीधी है। कठि शब्दों को कहीं भी स्थान नहीं दिया गया है।

सुमन जी की कहानियों में भोजपुरी कहावतों का प्रयोग प्रचुर परिमाण हुआ है। आपके प्रत्येक वाक्य में कोई न कोई कहावत पाई जाती है जि कथानक अत्यन्त रोचक और भावपूर्ण हो गया है। कुछ उदाहरण लीजिये:—

"अब्बर पर उनचास बयारि। विपति के झोंका एक ओर से ना आवे बेल पर क मारल बबूर तर। एकही बेर माता के पूजा आ बहुरिया के नेवत अनकर आटा अनकर घीव, साबस साबस बावाजी। जवन रोगिया चाहे ता बयदा बतावे२।"

इन उपर्युक्त मुहावरों का प्रयोग स्थान स्थान पर बड़ी सुन्दर रीति हुआ है।

इनकी भाषा बड़ी मुहावरेदार है। भोजपुरी मुहावरों का आपने बड़ी सफ से प्रयोग किया है जिससे शैली में जान आ गई है। आप की भाषा में पद पर मुहावरों की भरमार है। यहाँ कुछ उदाहरण दिये जाते हैं३ :—

"जिनगी से हाथ धोये के परेला। जिनिगी के नाई चकोह में परलि बा केहू आंखि उठाइ के तिकवे वाला ना रहे। भोकास पारि के रोवे लागल एह घरी एक दम हाथ खाली बा और बुधि माटी होगइल।"

---

१. जेहलि क सनदि पृ० १२।
२. वही. पृ० १२, २७।
३. जेहल क सनदि पृ० १, ४०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

(२) प्रोफेसर चन्द्र भूषण सिनहा

फेसर सिनहा ने "भोजपुरी कहानी संग्रह" नामक पुस्तक सम्पादित की में १५ कहानियों का संकलन किया गया है१ । इन कहानी में भोजपुरी के सुप्रसिद्ध तथा गण्यमान्य विद्वान् हैं—जैसे प्रो, बच्चन 'सलिल', श्री रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक', श्री विवेकी राय, श्री राय 'विधुर' और डा० सत्यदेव ओझा आदि । इन कहानियों का भोजपुरी समाज है । गँवई में प्रचलित प्रथाओं और विश्वासों को इन कथाओं की सृष्टि की गई है । श्री अवधेश कुमार चौवे की "रमरतिया" कहानी का यह उद्धरण कितना सरल और सरस है :—

बामन घर के आँखि के अँजोर रामरूप जिनका पर सउँसे घर के जो बोझल रहे तनी लइकाइये से सिमसिमाह रहन । बाकी देखे में आ घर कें अच्छा रहन । एही से रामरती के बाबू जी पूरा उझोलि दह क देले । गवन भइल, दोंग भइल, रामरती एक बार नइहर आ ससुरा गइली बाकी केहू के साथ नाहिये पुरवली ।"२

(३) ओङ्कार नाथ मिश्र तथा नरोत्तम पाण्डेय

सम्पादक द्वय ने "भोजपुरी संकलन" नामक एक पुस्तिका प्रकाशित जिसमें गद्य-पद्य दोनों पाया जाता है ।३ गद्य खण्ड में रेखाचित्र, लघु लेख, व्यंग-वार्ता के साथ ही चार कहानियों का संकलन पाया जाता नरोत्तम पाण्डेय की "टूटल गाँव नगर से नाता" और जगदीश प्रसाद, की कहानी 'चारि स बीस' सुन्दर बन पड़ी हैं । किस प्रकार से आज-सफेदपोश जैंण्टलमैन कहलानेवाले व्यक्ति गरीब तथा अनपढ़ जनता को

जपुरी साहित्य परिषद, जमशेदपुर १९६२ ।
जपुरी कहानी संग्रह—४९
जपुरी-साहित्य-संसद, १ सुखलाल जौहरी लेन, कलकत्ता, ७ । सन् १९६४ ई०, २. पृ० ५६

aiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

धोखा देकर अपना उल्लू सीधा करते हैं। इसका वर्णन इन पंक्ति पाया जा सकता है।१

"पटना टिसिन पर गाड़ी पहुँचलि तसही एगो मुसाफिर संगे झगड़ गइल। पाण्डेजी त बरियार रहबे कइनी ओकरा के बहुत मरनी, उनका भी चोट आइल बा। अतने में पुलिस दूनो आदमी के पकड़ हाजत में दे देले बा। हमरा पास ओतना पइसा ना रहे, ना त छोड़ा ले

इस पुस्तक में प्रो० बच्चन पाठक 'सलिल' की 'नवका वैताल प शीर्षक एक लघुकथा भी है। श्री नारायण पाण्डेय ने 'आजादी के नामक व्यंग वार्ता में स्वतंत्रता के प्राप्त होने के बाद देश की दुर्दशा पर ही कटु व्यङ्ग्य किया है।

(४) श्री रामवृक्ष राय 'विधुर'

श्री विधुर जी भोजपुरी के माने-जाने कहानीकार हैं। आपने " पीपर कबहूँ ना डोले" नाम से अपनी कहानियों का संकलन किया है इस संग्रह में रामवृक्ष राय की '२५ कहानियाँ पायी जाती हैं। 'पीपर कबहू ना डोले' यह एक भोजपुरी कहानी है। इसी के आधार पर पुस्तक का नामकरण किया गया है। ग्रामीण जीवन से संबंधित आ विचार, प्रथाओं, विश्वासों तथा अन्ध परम्पराओं को लेकर इन कथाओं रचना की गई है। इन कहानियों के कुछ शीर्षक इस प्रकार हैं जम के दूत, गँवार-गादह, बेटी के बिआह, भूत-भाँवर, करम-कमाई, की दूकान पर, लेखपाल आदि।

'विधुर' जी की भाषा-शैली प्रवाहपूर्ण, सरस और सरल है "......का करीं, शिवचरन भइया! एक त घर के अकसरुआ आ आ दूसरे गाँव के सभापति हो गइल बानीं। एको छन के फुरसत न

---

१. भोजपुरी संकलन पृ० ४०

२. भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी सन् १९६४ ई०, पृ० सं० ११

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सुनले कि अकसरुआ आदिमी मैदानों होखे चलिजा त लोग बुझेला छोड़ि के भागल"।१ "भइल बिआह मोर करबे का" कहानी में स्वार्थ की सिद्धि हो जाने पर मनुष्य कितना उद्दंड हो जाता है, दिखलाया गया है।

(५) चन्द्र भूषण सिनहा

सिनहा ने "छोटी मोटी गाजी मियाँ" शीर्षक कहानी-पुस्तिका का बड़ी योग्यता से किया है२। इस संकलन में १५ लघुकथायें संग्रहीत के लेखक श्री रसिक विहारी ओझा, रामवृच्छ राय विधुर, विद्याधर विद्यार्थी, डा० बच्चन पाठक 'सलिल' जैसे मजे हुए कहानीकार हैं। पुस्तक का नामकरण एक भोजपुरी पहेली के आधार पर हुआ है जो अंकित है।

"छोटी मुटी गाजोमियाँ, लमहर पोंछि।
कहाँ जाले गाजी मियाँ, धरिहे पोंछि॥"

इस पुस्तक की विशेषता में डा० सत्यदेव ओझा लिखते हैं कि :—"भोज-भाषा में एह लघु-कथा-संग्रह के प्रकासन भी अपना ढंग के पहिला प्रकासन ×××भोजपुरी में कवनो अइसन लघु-कथा-संग्रह अबहीं ले नइखे ल, जवना में लघुकथा के मरम आ बारीकी के खेआल राखल गइल ।"३

इस पुस्तिका में लघुकथाओं का संग्रह बड़ा सुन्दर हुआ है। विद्या भूषण के लिखित "पुरन का इनार" से यह अंश उद्धृत है। "एह साल के छुट्टी में घर अइलीं त एगो नया बात सुने में आइल। रमरुपिया के नगोनवा के बिआह भइला के बाद दिमागे बदलि गइल बाटे। मेहरारू या मतारी के कुछ बुझते नइखे॥"४

बरा पीपर कबहूं ना डोले' पृ० ६३
भोजपुरी-साहित्य-परिषद, जमशेदपुर सन् १९६४ ई०। पृ० ४५
छोटी मुटी गाजोमियाँ—आपन बात। ४. वही० पृ० ४३

ai Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

(६) श्री रामबली पाण्डेय

'भैरवी क साज' एक प्रतिनिधि भोजपुरी कहानी-संग्रह है जिसका स... श्री रामबली पाण्डेय ने किया है।१ इस संकलन में श्री वेढव बना... चतुरी चाचा, श्री विवेकी राय, श्री रामनाथ पाण्डेय, श्री उमाकान्त... आदि लेखकों की कृतियाँ पायी जाती हैं। इस पुस्तक के संबंध में डा० ह... प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं कि "इन कहानियों में भोजपुरी भाषी-प्रदेश के हृदय... स्पन्दन सुनाई देता है। कुछ कहानियों में भोजपुरी भाषी परिवार के ... चित्र उतर आये हैं। इन कहानियों में भोजपुरी की प्रकाशन शक्ति प्र... है।"२ इस संग्रह की विशेषताओं के संबंध में इसके सम्पादक श्री राम... पाण्डेय का कथन है कि "इस संकलन की उल्लेखनीय विशेषता यह ... पूरे भोजपुरी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाली कहानियाँ इसमें संग्रहीत ... (इस) एक ही संग्रह में विशाल भोजपुरी क्षेत्र की बोली के विविध... संस्कृति तथा जीवन की पूर्ण अभिव्यक्ति हुई है। इसकी दूसरी विशेषता... कहानी के जितने प्रकार हैं, उन सबका इसमें समावेश है। इसकी ती... विशेषता यह है कि आधुनिक कहानियों का जो शैली गत भेद है जैसे वर्णना... शैली, आत्मकथात्मक शैली आदि—उसके आधार पर भी कहानियाँ... गई हैं।"३

चतुरी चाचा ने अपनी चटपटी शैली में 'भँइसि के दूध' शीर्षक क... लिखी है जो बड़ी ही रोचक बन पड़ी है। कुछ पंक्तियाँ यहाँ उद्धृत... जाती हैं।

"भइसि का अइला पर सब बेकती का सुतार हो गइल। खूँटा पर अ... का आठवें दिन भँइसि पाड़ा बिआइल। जब दूबर के छोटका नातो भँइसि...

१. भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी सन् १९६७ ई०। पृ० १२२
२. भैरवी क साज—संमति
३. वही० प्रस्तावना पृ० ६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

विअइला के हाल सुनवलसि त दूबर मोंछि पर ताव देत उठलन आ कहलन—

"भँइसि विआइलि पाड़ा।
त साहु भइल खाड़ा॥"

श्री रामनाथ पाण्डेय की 'दुरपतिया' कहानी में ग्रामीण जीवन का चित्रण हुआ है। ईश्वरचन्द्र सिनहा की लिखी 'भैरवी क साज' उस युग का स्मरण दिलाती हैं जब वार वनितायें नृत्य तथा संगीत की कला में अत्यन्त विख्यात होती थीं और उनकी पहुँच राजदरबारों तक थी। श्री गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश' की "वाजलि बैरनि रे बाँसुरिया" सरस कथानक को लेकर लिखी गई है। इसमें सन्देह नहीं कि "भैरवी क साज" अपने ढंग का अद्वितीय संकलन है जिसमें भोजपुरी प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व इन कहानियों में पाया जाता है।

७—राय सच्चिदानन्द

श्री राय सच्चिदानन्द ने 'बटोही' नाम से स्वरचित कहानियों का एक संकलन प्रकाशित किया है।१ इसमें पाँच कहानियों का संग्रह हुआ है जिनमें ...न के अरथी, सपना जे मेटि गइल, और भिखारी के बेटी प्रसिद्ध हैं। भोजपुरी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री विवेकी राय इस पुस्तिका के विषय में लिखते हैं कि—"लेखक की मुद्रा वास्तव में जीवन को रोहलेकी है और ग्रामांचल के जीवित जीवन के बीच, जहाँ दारिद्र्य है। लेखक उत्फुल्लता के साथ अपनी भावुक संवेदना विखेरता है।"२ श्री ऋषीश्वर का कहना है कि "एह कहानियन में लेखक मन के यथार्थ भोजपुरी संस्कृति से जुड़ल बा, ओकर सहज आ स्वाभाविक चित्रण बड़ा मार्मिक ढंग से पुरनकी मान्यता के साथे साथे नवका के विद्रोह आ स्वीकृति संग कहल गइल बा॥"

१. श्री हृदयानन्द कुमार के द्वारा साहित्यकार संघ, दुमका (बिहार) से प्रकाशित। सन् १९६८ ई०। पृ० ४०
२. वटोही पृ० क। ३

ai Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

इन कहानियों में भिखारी के बेटा" ग्रामीण निर्धनता और दारिद्रय का सजीव स्वरूप पाठकों के सामने प्रस्तुत करती है।

८----श्री रामबली पाण्डेय

पाण्डेय जी ने भोजपुरी प्रदेश में किये जाने वाले व्रतों के अवसर पर स्त्रियों द्वारा जो कथायें कहीं जाती हैं उनका संकलन "व्रत कथा" में किया है। यह लोक-कथाओं का संग्रह है जो अपने ढंग का अनूठा तथा अद्वितीय है। भोजपुरी प्रदेश में प्राय: प्रत्येक मास में व्रत किये जाते हैं। इन व्रतों में बहुरा छठी, गणेश चौथ, अनन्त, जिउतिया, करवा चौथ, भइया दूज, गोधन पिड़िया आदि प्रसिद्ध हैं। उदाहरण के लिए पिड़िया के व्रत में कुँवारी लड़कियाँ बिना पिड़िया की कथा सुने भोजन नहीं करती हैं। जिउतिया का नाम जीवित्पुत्रिका व्रत है जिसे मातायें अपने पुत्र की जीवन-कामना के लिए करती हैं।

पाण्डेय जी ने इन सभी व्रतों के अवसर पर कही जाने वाली लोक कथाओं का संकलन बड़ी लगन के साथ किया है। लोक-कथाओं का यह संकलन अनेक दृष्टियों से अद्वितीय है। पाण्डेयजी ने इनको एकत्रित कर भोजपुरी साहित्य का बहुत बड़ा उपकार किया है।

९----राधा मोहन राधेश

श्री राधा मोहन राधेश ने 'भोजपुरी जनपद' नामक मासिक पत्रिका का विशेषांक 'प्रेम कथा' के नाम से प्रकाशित किया है।[२] इस संकलन में बारह कहानियों को स्थान दिया गया है जो विभिन्न लेखकों द्वारा लिखी गई हैं। इन लेखकों में श्री रामनाथ पाण्डेय, वनियापुरी, कुमारी सरला 'शैल' और श्री राधेशजी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। भोजपुरी प्रदेश के विभिन्न अंचलों की कहानियों का इस संग्रह में प्रतिनिधित्व पाया जाता है। इनका वर्ण्य

---

१. भोजपुरी-संसद, जगतगंज, वाराणसी से १९७० ई० में प्रकाशित। पृ० १२६।

२. भोजपुरी-साहित्य-मंदिर, जगतगंज, वाराणसी। भोजपुरी जनपद वर्ष २ अंक १, २, ३ जनवरी-मार्च १९६९। विशेषांक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

...य भोजपुरी जनता के जीवन से लिया गया है। ईसीलिए ये कहानियाँ इतनी ...ांव बन पड़ी हैं। इन में कुछ के शीर्षक इस प्रकार हैं। मीजले नयनवा के ...र, परेम के भूत, प्रेम के हकदार, चूड़ी, प्रेम दिवानो आदि। चूँकि अधिकांश ...ानियों का संबंध प्रेम से है अतः इस संकलन का नाम 'प्रेम्-कथा' उचित ही है। ...राधेश जी ने इस विशेषांक को प्रकाशित कर भोजपुरी के विद्वानों के लिए ...र पठनीय सामग्री प्रस्तुत की है।

(१०) श्रीमती राधिका देवी

श्रीमती राधिका देवी ने 'धरती के फूल' नाम से भोजपुरी कहानियों में ...संग्रह निकाला है१। राधिका देवी भोजपुरी में कहानियाँ लिखने में सिद्ध-...हैं। इनके द्वारा लिखित अनेक कहानियाँ 'आरा' की अस्तंगत पत्रिका ...भोजपुरी" में प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रस्तुत संग्रह में धरती के फूलों का ...रव बिखरा पड़ा है।

(११) गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश'

'गिरिजेश' के द्वारा रचित 'बैरिन बँसुरिया' भोजपुरी कहानियों का ...र संकलन है।२

इस प्रकार हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि भोजपुरी का कहानी ...हित्य अपेक्षाकृत समृद्ध है। आजकल भोजपुरी पत्र-पत्रिकाओं में कहानियाँ ...र संख्या में प्रकाशित हो रही हैं। अतः आशा है कि निकट भविष्य में ...पुरी गद्य की यह विधा समधिक समृद्धिशाली बन जायेगी।

—:०:—

१. 'गाँवघर' प्रकाशन, महादेवा, आरा।

२. प्राच्य प्रकाशन सन्। १९६८ ई० पृ. १३४।

ai Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

४----निबन्ध

(१) प्रोफेसर विवेकी राय

भोजपुरी में निबन्धों का अपेक्षाकृत अभाव है। ऐसे विचारात्मक तथा समीक्षात्मक निबन्ध जिनमें विभिन्न विचारों को समुचित रूप से संजोकर प्रकाशित किया गया हो, बहुत कम पाये जाते हैं। इस संबंध में प्रोफेसर विवेकी राय का नाम आदर के साथ लिया जा सकता है जिन्होंने अपने ललित निबन्धों के द्वारा इस अभाव की पूर्ति करने का सफल प्रयास किया है। श्री विवेकी राय जी का निबन्ध संग्रह "के कहल चुनरी रँगाल" इस संबंध में उल्लेखनीय पुस्तक है।१

इसमें बीस निबन्धों का संग्रह उपलब्ध होता है जो विभिन्न विषयों पर लिखे गये हैं। इसमें भोजपुरी-साहित्य और भोजपुरी लोरी आलोचनापरक लेख हैं तो 'आइल सरद बहारि' 'व्रज में हरि होरी मचाई' लेखों का संबंध ग्रामीण जीवन से है। 'राजा कुँअर सिंह' में इस वीराग्रणी के शौर्य और पराक्रम का वर्णन ऐतिहासिक शैली में प्रस्तुत किया गया है। "सवदन के भोजपुरिया लजामत" में भोजपुरी की कतिपय शब्दावली की विशेषताओं को प्रगट किया गया है। जैसे भडराहल, ततवंल, ओठँ घावल आदि शब्द। ये शब्द जिन विशिष्ट अर्थ में भोजपुरी में प्रयुक्त होते हैं उनके भावों को द्योतित करने वाले शब्दों का खड़ी बोली हिन्दी में नितान्त अभाव है। इस विषय की विशद विवेचना श्री विवेकी राय ने इस लेख में की है। इस प्रकार इन निबन्धों में विषय की विविधता पायी जाती है।

इस निबन्ध संग्रह के प्राक्कथन में श्री ईश्वर चन्द्र सिनहा लिखते हैं कि "प्रस्तुत निबन्ध संग्रह भोजपुरी में लिखे गये निबन्धों का पहिला प्रकाशन है। निबन्धकार श्री विवेकी राय ने भोजपुरी भाषा को आधुनिकता की दृष्टि से

---

१. भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी सन् १९६८ ई० पृ० ११०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

समृद्ध करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। ××× हम आशा कर सकते हैं कि इस निबन्ध संग्रह के प्रकाशन के साथ ही भोजपुरी गद्य साहित्य के युग का प्रवर्तन होगा।"१

इस संग्रह में विचार-प्रधान, भाव प्रधान, समीक्षा प्रधान अर्थात् सभी शैलियों में लिखे गये लेख पाये जाते हैं। श्री विवेकी राय की शैली विषय के अनुसार बदलती जाती है। 'भोजपुरी लोरी' शीर्षक निबन्ध इनकी सरल तथा सरस शैली का दर्शन होता है। उदाहरण के लिए कुछ पंक्तियाँ उद्धृत की जाती हैं :--

"लोरिन में मामा-मामी के खूब बखान होला। महतारी लोग अपना नइहर के हमेसा ऊँच पीढ़ा देला। मामा लोग हमेसा अपना भैने के दुलार करेलन, मिठाई खिआवेलन आ गहना पहिरावेलन।

घुघुना मन्ना, उपजे धन्ना !
एही पड़े आवेले, बबुआ के मामा।
उठा लेले कोरा, थम्हा देले लड्डु,
छेदा देले नाक, कान, पहिरा देले बाला॥"

परन्तु जहाँ किसी गंभीर विषय की विवेचना की गयी है वहाँ की भाषा अधिक संयत, गंभीर और संस्कृत के तत्सम तथा तद्भव शब्दों से युक्त है। 'अयोनिसंभव' निबन्ध की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :—

"पद्म पुराण में मधुकैटभ नाँव के दइतन के कहनी आइल बा। ई लोग ब्रह्मा के पसेना से पैदा भइले। देवी भागवत में एह लोगन के जनम ब्रह्मा के कान का मइल से बतावल गइल बा। महाभारत में एगो कहनी आइल बा कि एक बेरि विष्णु के नाभि-कमल पर भगवान् के इच्छा से पानी के दूगो बूनी परि गइल रहली स। ऊ दूनो बूनी रजोगुण-तमोगुण के रूप रहली स।"२

१. के कहल चुनरी रँगा ल पृ० ६६
२. वही० पृ० ५६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

इन उद्धरणों से स्पष्ट ही प्रतीत होता है कि श्री विवेकी राय की शैली में प्रवाह है, सरलता और सरसता है तथा इसके साथ ही भावुकता है। हिन्दी के निबन्ध के क्षेत्र में जो स्थान पं० बालकृष्ण भट्ट का है भोजपुरी में विवेकीराय का भी वही स्थान समझना चाहिए।

(२) डा० बच्चन पाठक 'सलिल'

डा० बच्चन पाठक 'सलिल' के द्वारा सम्पादित 'लहालोट' भोजपुरी के निबन्ध-संग्रहों में अपना विशेष स्थान रखता है।[१] इस पुस्तक में विभिन्न विषयों के ऊपर लिखे गये १८ (अठारह) निबन्धों का संकलन किया गया है। इन निबन्धों के लेखकों में पं० गणेश चौबे, श्री रामवृक्ष राय 'विधुर', डा० स्वर्ण किरण, श्री दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ', डा० सत्यदेव ओझा आदि भोजपुरी के प्रसिद्ध विद्वान् हैं। इस निबन्ध संग्रह के विषय की विविधता का पता निम्नांकित शीर्षकों से चलता है०। जैसे गरवा नृत्य के भोजपुरी रूप, भोजपुरी लोक गीत, गाँधी जी आ नैतिकता, भोजपुरी भाषा के स्वरूप के सवाल आदि इन सभी निबन्धों की भाषा सरल, सरस तथा मधुर है। वंशीधर प्रसाद वर्मा 'सुधाकर' के "भोजपुरी गीतन में विरह वर्णन" की कुछ पंक्तियाँ लीजिए—

"सोहावन, मनभावन, सावन के रिमझिम फुहेरा बिच्छी के जहर लेखा ओकरा नसनस में फैल जाला। खुसहाल जुगल जोड़ी के हास परिहास ओकरा सून हिया के चीर के रख देला।

बिच्छी नसनस बेधे, झोसी झरी बदरा।
आस-जियरा प चले, देखि मउगी भतरा॥"

१. भोजपुरी साहित्य परिषद, जमशेदपुर सन् १९६९ पृ० १०६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

(३) श्री राधा मोहन 'राधेश'

श्री राधा मोहन 'राधेश' और वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय ने 'गाँधी गाथा' का सम्पादन किया है।[१] यह रचना गद्य पद्य दोनों में पायी जाती है। गद्य भाग में डा० मदन मोहन वर्मा, श्री पुण्यदेव नारायण सिंह के गाँधी के आँधी में भारत के सिरिजना'' पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय के 'इ याद के खिड़की से झाँकत गाँधीजी' पं० गणेश चौबे के ''लोक गीतन में गाँधीजी का महिमा के बखान'' सिपाही सिंह ''श्रीमन्त के ''शिक्षा के वारे में गाँधीजी के विचार'' आदि लेख संग्रहीत हैं। चूँकि इस ग्रन्थ का नाम ''गाँधी गाथा'' है अतः इसके समस्त लेख गाँधी जी से संबंधित हैं। लेखों की भाषा सरस तथा सरल है। पं० गणेश चौबे के लेख का यह उद्धरण लीजिए[२] —

''असहयोग आन्दोलन के जमाना में गाँधीजी अपना देस का जनता के ई समझवलें कि हमनी का जीवन में कुछ विदेसी बा ओकरा के छोड़ देबे के चाहीं। इ आन्दोलन केतना सफल भइल एकर वरनन एगो गीत में सुनल जा सकेला।

''गान्हीं बाबा रउरा आन्ही उठवनी, कचहरिया में फेकरे सियार ॥

''जीरादेई से सदाकत आश्रम तक'' इस पुस्तक का सम्पादन भी श्री राधा मोहन 'राधेश' ने किया है।[३] जिस प्रकार से 'गाँधी गाथा' में महात्मा गाँधी से संबंधित लेखों का संग्रह है, उसी प्रकार से प्रस्तुत पुस्तक में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद के संबंधित संस्मरणों का संकलन किया गया है। इसमें श्री साँवलिया विहारी लाल वर्मा, रघुवंश नारायण सिंह, फूलन देव सहाय वर्मा, सरयूं प्रसाद शास्त्री और श्री राधेश जी के संस्मरण विशेष उलेखनीय हैं। श्री राधा मोहन राधेश के लेख 'सदाकत आश्रम के सन्त' शीर्षक से यहाँ कुछ अंश उद्धत किया जाता है।[४] ''अपना स्वामी के अइसन हावभाव देख के तुलसी में बेचइनी के सीमा

१. भोजपुरी साहित्य मंदिर, जगतगंज, वाराणसी। सन् १९६९
२. गाँधी गाथा पृ० ५२-५३
३. भोजपुरी-साहित्य-मंदिर, नचाय (सारन) से प्रकाशित। सन् १९६६ ई०
४. 'जीरादेई से सदाकत आश्रम' पृ० ८९।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ना रहल। बाकिर बाबूओ तबले ओहिजे तुलसी के सामने हाथ जोड़ले खाड़ा बानी आ तुलसी बाबू का सामने काठ अइसन हाथ जोड़ले खड़ा बाड़न।" इस पुस्तक को निबन्ध संग्रह न कह कर संस्मरण–संकलन कहा जाय तो अधिक अच्छा हो। इस पुस्तक में प्रारंभ के २४ पृष्ठों में राजेन्द्र बाबू की प्रशंसा में कविताएँ भी पायी जाती हैं।

(४) श्री चन्द्रभूषण सिनहा

श्री चन्द्र भूषण सिनहा ने 'भोजपुरी संगम' नामक एक पुस्तक का सम्पादन किया है।१ इसमें कहानी, लेख, रेखाचित्र, एकांकी आदि गद्य की विभिन्न विधाओं का संकलन किया गया है। इसमें डा० सत्यदेव ओझा, श्री अवधेश कुमार चौबे और श्री रमाशंकर पाण्डेय के तीन लेख संग्रहीत हैं। इन लेखों की भाषा प्रवाहपूर्ण तथा शैली सरल है। डा० सत्यदेव ओझा के लेख 'कहाउति के महत्व' की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं।२

"कहाउति के शक्ति ओकरा खुलापन, उन्मुक्तता, निर्भीकता आ निष्पक्षता पर भी निर्भर करेला। एकर निर्माण करे वाला आदमी सबके दुर्बलता पर व्यङ्गवाण छोड़ेला, कवनों भय आ प्रलोभन से तनिको भर प्रभावित ना होला।"

डा० ओझा की शैली में संस्कृत शब्दावली की प्रचुरता पायी जाती है। 'भोजपुरी संगम' के अन्तिम दस पृष्ठों में अनेक कवियों की कविताओं का संकलन उपलब्ध है।

५—एकांकी

संस्कृत साहित्य में रूपक के १० (दस) प्रकार तथा उपरूपक के १८ (अठारह) प्रकार बतलाये गये हैं। इनमें से कुछ प्रकार ऐसे भी थे जो केवल एक अंक में ही समाप्त होते थे। रूपक के इन्हीं भेदों को आधुनिक एकांकी का

---

१. भोजपुरी साहित्य परिषद, जमशेदपुर सन् १९६८ ई०
२. भोजपुरी संगम पृ० ३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

रूप समझना चाहिए। अतः यह धारणा नितान्त निर्मूल है कि आजकल एकांकी नाटक की अभिनव विधा है।

भोजपुरी में अनेक नाटकों की रचना हुई है। इसके साथ ही एकांकियों की संख्या भी कुछ कम नहीं है। यहाँ पर कुछ प्रधान एकांकियों का विवरण प्रस्तुत किया जाता है।

(१) रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

श्री रसिक बिहारी ओझा ने 'परिछाहीं' नामक छाया नाट्य के अतिरिक्त 'तमाचा' नाम से बाल एकांकी संग्रह की रचना की है।१ इस एकांकी को लिखकर ओझाजी ने एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति की है। इस संबंध में ओझा जी लिखते हैं कि "भोजपुरी भाषा में शायद बाल साहित्य पर अभीतक किछुओ काम नहीं भइल। एकर कमी ढेर दिन से खटकत रहल हा।" इसी अभाव को दूर करने के लिए 'तमाचा' की रचना की गई है।

इस एकांकी में आठ वीर बालकों के चरित की झाँकी प्रस्तुत की गई है। इनमें वीर बालक शिवाजी और बालक राणा प्रताप भी हैं। इस एकांकी में शिवाजी तथा राणा प्रताप के चरित्र का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया गया है। इन चरित्रों से हमारे बालक तथा नवयुवक समान रूप से शिक्षा ग्रहण करके अपने चरित्र का निर्माण कर सकते हैं। इस दिशा में यह एकांकी एक सफल प्रयास है।

श्री रसिक बिहारी ओझा का दूसरा एकांकी 'बुरबक बनली' है२। इस पुस्तक में सात एकांकियों का संग्रह उपलब्ध होता है। 'लोहासिंह' नाटक के प्रसिद्ध रचयिता प्रोफेसर रामेश्वर सिंह काश्यप ने इसकी भूमिका में लिखा है कि "एह संग्रह में तीन एकांकी हास्य रस प्रधान बा। बुरबक बनली सार जी के, बुरबक बनली नौकर राखि के आ खूब सिंह तीनों के प्रहसन के

१. भोजपुरी साहित्य-परिषद, जमशेदपुर। सन् १९७१ ई०
२. भोजपुरी साहित्य परिषद, १ गोलमुरी बाजार, जमशेदपुर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

कोरि में राखल जा सकेला। तीनों के हास्य के आधार आकर्षक चरित्र-चित्रण आ पात्र के अनुकूल स्वाभाविक संवाद बा। बाकी चार एकांकी (१) बुरबक बनली लेखक बन के (२) लइकन बिकरी (३) देसी मुरगी विलायती बोल आ (४) जीवन के कला समस्या मूलक या व्यंग प्रधान बाड़े स।"

इनमें से कुछ एकांकी सामाजिक जीवन की पृष्ठभूमि में लिखे गये हैं। 'लइकन के बिकरी' में तिलक-दहेज की प्रथा पर कठोर व्यङ्ग्य किया गया है। जीवन के कला में अपनी पदोन्नति के लिए पैरवी करने वाले लोगों की खिल्ली उड़ायी गयी है। लोकमंच की दृष्टि से भी ये एकांकी बड़े सफल हुए हैं। ये सभी अनेक बार सफलता के साथ खेले जा चुके हैं। इस प्रकार अभिनेयता की दृष्टि से ये एकांकी उत्तम बन पड़े हैं।

६—यात्रा

डॉ० सत्यदेव ओझा

भोजपुरी में यात्रा साहित्य का अत्यन्त अभाव है। अभी किसी देश, जनपद अथवा नगर का साङ्गोपाङ्ग यात्रा विवरण भोजपुरी में उपलब्ध नहीं है। हाँ कुछ व्यक्तियों ने नगरों की यात्रा के संबंध में प्रकीर्ण लेख अवश्य लिखे हैं। ऐसी ही यात्राओं का विवरण "फोकट में सैर" नामक पुस्तक में पाया जाता है जिसका सम्पादन डा० सत्यदेव ओझा ने किया है[1]। इस छोटी सी पुस्तिका में १४ चौदह छोटे-बड़े नगरों का वर्णन अनेक विद्वानों ने किया है। इन नगरों में आगरा, चित्रकूट, बलिया, आरा, सासाराम, रामेश्वरधाम, मिर्जापुर, चुनार, राँची और जयपुर आदि प्रसिद्ध हैं। इस पुस्तिका में जो निबन्ध हैं उनमें भावुकता अधिक है। यात्रा संबंधी स्थान या वस्तु-निरूपण की शैली का अभाव है। फिर भी हम इस पुस्तक का स्वागत करते हैं क्योंकि यह एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति करती है। साँवलिया विहारी लाल वर्मा ने 'रामेसर धाम यात्रा' नामक पुस्तक लिखी है जो सुन्दर बन पड़ी है[2]।

१. भोजपुरी साहित्य परिषद, जमशेदपुर सन् १९६७ ई०

२. समाज-शिक्षा बोर्ड, बिहार, पटना १९६१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

७—रेखा-चित्र

(१) रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

भोजपुरी गद्य की अन्य विधाओं की ही भाँति रेखा-चित्रों की भी बहुत कमी है। इस में रसिक विहारी ओझा 'निर्भीक' का प्रयास अत्यन्त प्रशंसनीय है जिन्होंने ...रतिया ना बिसरे" नामक पुस्तक को लिखकर एक अभाव की पूर्ति की है१। ...पुस्तिका में लगभग २० बीस रेखा चित्रों का संकलन है जो ओझाजी की ...नी से प्रसूत हैं। इनमें मोटका बाबा जी, बाबू राम सकल सिंह, पगली, जानकी लाल, रमेस भइया, पगला तिवारी और उदेसा फुआ प्रसिद्ध हैं। ओझा जी की शैली चलती और चुस्त है जो रेखा चित्र प्रस्तुत करने में ...न्त उपयोगी है। रमेश भइया की हुलिया का निम्नांकित वर्णन कितना ...दर बन पड़ा है।२

"बाहर अइलीं त देखलीं एगो साँवर रंग के जवान, छव इंच के लाम ...या मोंछि अँइठले; धोती, चूड़ीदार कुर्ता, करिया अंग्रेजी जूता पहिरले, गरम ...ाला के कान्ह प धइले, हमरा दुआर प खाढ़ भइल बा, आ चउकठ के पासे ...ो बिस्तर आ झोरा रखले बा।"

(२) प्रो. चन्द्रभूषण सिनहा

प्रोफेसर सिनहा ने 'भोजपुरी संगम' नामक पुस्तिका का संकलन किया ...जिसमें लेख, कहानी आदि के साथ एक रेखाचित्र का भी संग्रह पाया जाता ...। इस रेखाचित्र का शीर्षक 'राजा काका' है जिसके लेखक श्री जय बहादुर ...हैं। इसमें श्री सिंह ने एक किसान का रेखांकन प्रस्तुत किया है।

---

१. भोजपुरी साहित्य परिषद्, जमशेदपुर सन् १९६४ ई०

२. सुरतिया ना बिसरे पृ० ६४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

भोजपुरी साहित्य मन्दिर, वाराणसी से "जीरादेई से सदाकत आश्रम तक" नामक पुस्तक प्रकाशित हुई है जिसमें राजेन्द्र बाबू के कुछ रेखाचित्र भी हैं। प्रो० बच्चू पाण्डेय का 'राजिन्नर बाबू' लेख इस दिशा में सुन्दर प्रयास है।[1]

८—जीवनी

गद्य की विधाओं में जीवनी भी है जिसका पश्चिमी देशों में बड़ा विकास हुआ है। हिन्दी में अनेक जीवनियाँ लिखी गई हैं। भोजपुरी में जीवनी के संबंध में छिट-फुट लेख तो अवश्य लिखे गये हैं परन्तु किसी व्यक्ति-विशेष की साङ्गोपाङ्ग जीवनी अभी देखने में नहीं आई है। कुछ वर्ष पूर्व श्री योगेन्द्रनाथ शर्मा ने भोजपुरी कवि 'देहाती'जी की जीवनी एक लेख में लिखी थी जिसमें इस लोककवि का जीवन-वृत्तान्त सीधी-सादी भाषा में प्रस्तुत किया गया है। परन्तु लेखक ने देहाती जी का इतिवृत्त प्रस्तुत करने की अपेक्षा उनकी कविता का वर्णन विस्तार के साथ किया है।

'जीरादेई से सदाकत आश्रम' नामक पुस्तक में राजेन्द्र प्रसादजी की जीवन-घटनाओं की सूची प्रस्तुत की गई है।[२] इसी पुस्तिका में अनेक लेखकों ने भारत के प्रथम राष्ट्रपति के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है। इसके अतिरिक्त आरा की भोजपुरी पत्रिका में अनेक साधु-महात्माओं तथा विद्वानों की संक्षिप्त जीवनियाँ लेख रूप में प्रकाशित हुई हैं। आशा है इस विधा की ओर भी लेखकों का ध्यान आकृष्ट होगा।

९—संस्मरण

भोजपुरी में स्वतंत्र रूप से संस्मरण संबंधी कोई पुस्तक देखने में नहीं आई। परन्तु इस विषय में अनेक प्रकीर्ण निबन्ध अवश्य उपलब्ध होते हैं। "जीरादेई से सदाकत आश्रम तक" शीर्षक पुस्तक का उल्लेख पहिले किया जा चुका है। इसमें डा० राजेन्द्र प्रसाद के संबंध में अनेक लेख हैं जो संस्मर-

---

१. पुरवैया (त्रैमासिक पत्रिका) वर्ष १, अंक २–४ पृ० ५७-६१ सन् १९६६ ई०
२. परिशिष्ट—२ पृ० ९२-९८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

हैं। ऐसे लेखों में श्री रघुवंश नारायण सिंह का "भोजपुरी के नेही बाबू", श्री महेन्द्रनाथ सिंह का "राजेन्द्र बाबू का संघत में", श्री बिहारी लाल वर्मा का "राजेन्द्र बाबू के दुर्गा संस्मरण" श्री सरयू शास्त्री का चम्पारन में राजेन्द्र बावू आदि संस्मरण उल्लेखनीय हैं। के संस्मरण की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं।१

"जब हम दिल्ली जाके राष्ट्रपति भवन में ठहरत रहलीं तब हमरा वास्ते रोक ना रहे। जब हम चाहीं उनकर (राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद) खास में जा सकत रहीं। कभी-कभी त उ अपने बोलालेत रहलन अवरु बहुत बात होत रहे।"

'गाँधी गाथा' पुस्तक में भी गाँधी जी के संबंध में कुछ लोगों ने अपने लिखे हैं। इस संबंध में श्री पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय का 'इयाद का खिड़की से झाँकत गाँधी जी' सुन्दर बन पड़ा है। जी का दर्शन पाण्डेय जी को कैसे प्राप्त हुआ इसका सजीव वर्णन गया है। इसी पुस्तिका में श्री राम जीत सिंह का 'महात्मा गाँधी के दर्शन' संस्मरण छपा है। श्री रामनाथ पाण्डेय का "गाँधी जी इयादे भर रह गइल" लेख भी इस संबंध में रोचक है।२

—:o:—

१. 'जीरादेई से सदाकत आश्रम तक' पृ० ३५
२. गाँधी गाथा पृ० ५८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

१०—रिपोर्ताज

परमेश्वर दूबे 'शाहाबादी'

रिपोर्ताज हिन्दी गद्य की अभिनव विधा है जिसका प्रादुर्भाव अभी हाल में हुआ है। इसे अंग्रेजी के रिपोर्ट शब्द का हिन्दीकरण समझना चाहिए। गद्य की नयी विधा होने के कारण हिन्दी में भी इस साहित्य का अभाव पा जाता है। अतः भोजपुरी में इसकी कमी का होना स्वाभाविक ही है। सन्तोष का विषय है कि श्री परमेश्वर दूबे 'शाहाबादी' ने 'ऐनक' शीर्षक भोजपुरी में एक रिपोर्ताज का संग्रह प्रकाशित किया है।१ इस संकलन एगारह रिपोर्ताज हैं जिनमें 'बाबा बरमेसर नाथ की जै' 'गंगा माई के भर अररिया,' 'सोनवा चम-चम चमके ना' 'जय दुर्गा महारानी की' आदि सु और सजीव हैं। इस पुस्तक की भूमिका में श्री निर्भीक जी इसके नामकर के विषय में लिखते हैं—"एकर नाँव 'ऐनक' एह से रखाइल बा कि जव घटना, अवसर, आ जगह के वर्णन एहमें बा ओकर सही, सहज चित्र एहमें स लउकत, झलकत बा।"२

'ऐनक' भोजपुरी में पहिला रिपोर्ताज है। अतः इस विधा की सर्वप्र पुस्तक होने के कारण इसका ऐतिहासिक महत्त्व है, परमेश्वर दूबे शाहाबा की भाषा बड़ी सरल है जिसे सभी आसानी से समझ सकते हैं। "जयदु महारानी की" की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :—

"विजया दशमी के दिन नगर के सभ मूर्तिन के जुटान साकची बारी मैदा में होला। बारी मैदान टिस्कोके साकची गेट के सामने वाला लम्बा-चौ मैदान ह। ई बारी साहब के नाँव से प्रसिद्ध बा ××× एहिजा आखिरी भी

१. भोजपुरी साहित्य परिषद्, जमशेदपुर सन् १९७१
२. ऐनक—पृ. १२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ाला। नगर के कोना-कोना से लोग बिटोरा जाला।१ इस पुस्तिका में क लेख संस्मरणात्मक शैली में लिखे गये हैं। अतः इनके विषय में यह ा कठिन हो जाता है कि ये संस्मरण हैं या रिपोर्ताज़।

डा० बच्चन पाठक 'सलिल' ने "रहना नहिं देश विराना है" शीर्षक क रिपोर्ताज कुछ वर्ष पहिले लिखा था। इसके अतिरिक्त श्री रसिक री ओझा 'निर्भीक' ने भी भोजपुरी साहित्य परिषद् का विवरण भी शैली में लिखा है।३ भोजपुरी के नवीन लेखकों को इस दिशा में भी देना चाहिए।

११—पत्र

चतुरी चाचा

पत्र भी गद्य की एक अभिनव विधा है। अंग्रेजी साहित्य में यह विधा हो विकसित है। भारत में भी अंग्रेजी में लिखे अनेक पत्रों का प्रकाशन है जिसमें माननीय श्रीनिवास शास्त्री तथा पण्डित जवाहर लाल नेहरू त्र पुस्तक रूप में प्रकाशित हैं। हिन्दी में प्रकाशित पं० पद्मसिंह शर्मा के में बड़ा व्यङ्ग्य, जीवट तथा संजीदगी पायी जाती है।

भोजपुरी में श्री मुक्तेश्वर तिवारी ने "चतुरी चाचा की चटपटी चिट्ठियाँ" कर एक बहुत अभाव की पूर्ति की है।४ तिवारी जी कविता में अपना उपनाम ' और गद्य में अपना नाम 'चतुरी' चाचा रखते हैं। इसीलिए ये चिट्ठियाँ नाम से प्रसिद्ध हैं। चूँकि इनकी भाषा बड़ी चटपटी, मसालेदार, रोचक आकर्षक है अतएव इनका नाम "चतुरी चाचा की चटपटी चिट्ठियाँ" पड़

ऐनक पृ० ७३

लुकार (लीथो पत्रिका) 'होली' अंक—६, सन् १९६७

'लुकार' बरखा, अंक-७ सन् १९६७ ई०

शर्मा ब्रदर्स, १३२ लूकरगंज, इलाहाबाद। भाग १, सन् १९५७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

गया है। कुछ वर्षों पहिले ये चिट्ठियाँ वाराणसी में सुप्रसिद्ध दैनिक "आज" नियमित रूप से प्रति सप्ताह प्रकाशित हुई हैं। इन्हीं का संग्रह बाद में भागों में प्रस्तुत किया गया।१

चतुरी चाचा के ये पत्र पं० जवाहर लाल नेहरू के पत्रों की भाँति विशेष व्यक्ति को नहीं लिखे गये हैं बल्कि ये सामान्य जनता को सम्बोधित कये गये हैं। ये चिट्ठियाँ इतनी सुन्दर, सजीव, रोचक तथा आकर्षक हैं उपन्यास की भाँति उन्हें एक बार पढ़ना प्रारम्भ कर लेने पर बिना पूरा छोड़ने को जी नहीं चाहता। इसी तथ्य से इनकी रोचकता का कुछ अनुमान लगाया जा सकता है। खड़ी बोली हिन्दी में जो स्थान 'शंभु शर्मा के चिट्ठों' है भोजपुरी में वही स्थान "चतुरी चाचा जी की चटपटी चिट्ठियों" ने प्राप्त कि है। अतः निःसन्देह हम मुक्तेश्वर तिवारी को भोजपुरी का बालमुकुन्द कह सकते हैं। यदि चाचा की चिट्ठियों की संख्या पर विचार किया जाय शंभु शर्मा के चिट्ठों की अपेक्षा इन चिट्ठियों का पलड़ा भारी ही दिखाई पड़ेगा

भोजपुरी के सुप्रसिद्ध विद्वान डा० उदयनारायण तिवारी इस पुस्तक भूमिका में लिखते हैं कि "ए कितावि में चातुरी चाचा के चिट्ठी बाड़ी सनि। ए एक गो चिठी अइसन बाटे जेवना चतुरी चाचा के पहुँच, सूझबूझ आ गि झलकता। ऊ गाँव के खाली दूरी से नइखन देखले बलुक ओमे पइठल बाड़नि गाँव के घूरहू, मँगरू से लेके वृंझावन सिंह आ देऊ पंडित के बारे में उनका र रत्ती के गियान बा। हाकिम लोग गाँव में कइसे आवेला जाला आ गँवइ सौखीन लोग सहर में जाके कइसे खलीता में गाजर राखे लागेला ए कुलि खूब डूबि-डूबि चाचा देखले बाड़े।"

<u>वर्ण्य विषय</u>—चतुरी चाचा की चिट्ठियों का वर्ण्य विषय कृषक जीवन और ग्रामीण प्रकृति है। गँवई के लोगों का जीवन कितना अभावग्रस्त है, प्राचीन रूढ़ियों, विश्वासों और अन्ध परम्पराओं से कितने पीड़ित हैं, उनक

१. शर्मा ब्रदर्स, १३२, लूकरगंज, इलाहाबाद। भाग २, सन् १९५९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

...क जीवन कितना कष्टमय और दु:खपूर्ण है इन सभी वस्तुओं का बड़ा ही सजीव ...र्णन चाचा ने किया है। गाँवों में प्रचलित बाल विवाह, वृद्ध विवाह, विधवाओं ...ी दुर्दशा आदि सामाजिक कुरीतियों की ओर भी चतुरी चाचा ने दृष्टिपात किया ...। गाँव की राजनीति, चुनाव चर्चा, आधुनिक नेता, दलबंदी का चक्कर आदि ...षय भी इनकी चलती लेखनी से अछूते नहीं बचे हैं। इसके अतिरिक्त गँवइ की ...कृति को भी इन्होंने खुली आँखों से देखा है। शस्य श्यामला भोजपुरी प्रदेश ...ी भूमि, अमराई, निकुंज, वन-उपवन, आम और महुआ पर भी इनकी दृष्टि ...ई है। इस प्रकार ग्राम्य जीवन और ग्रामीण प्रकृति का वर्णन इन चिट्ठियों का ...मुख विषय है। भोजपुरी जन-जीवन से परिचय प्राप्त करने के लिए इन ...ट्ठियों का अध्ययन अत्यन्त उपादेय ही नहीं बल्कि आवश्यक भी है।

भाषा-शैली—चतुरी चाचा की चटपटी चिट्ठियों की भाषा-शैली बड़ी ...जीव, चलती, प्रवाहपूर्ण, व्यङ्ग्यात्मक और मुहावरेदार है। किसी विषय का ...रस तथा सरल भाषा में वर्णन करना चाचा की विशेषता है। भोजपुरी ...ाषा का जो चलता रूप इन चिट्ठियों में पाया जाता है वैसा पहिले कभी ...हीं देखा गया। भोजपुरी लोकोक्तियों का प्रयोग जितनी प्रचुरता से यहाँ ...ुआ है उतना अन्यत्र दुर्लभ है। कुछ पंक्तियाँ उदाहरणस्वरूप उद्धृत की ...ाती हैं। "नाऊ के बरियाती—सब ठाकुरे-ठाकुर। × × × हमके जनाइल ...ि उनुकर खीसि हमरा भगला के बाद डोकिये पर उतरल सोती के खीसि ...ाई पर। × × पहिले त कानर-कूनर, कहलीं बाकी मन में त 'जेवन ...िया का भावे तेवन वैदा बतावे तेवन हालि रहे। × × × सोंचली पूछला से ...नो फायदा नइखे। खाली झगरा भर बढ़ी। मइल लूगा, दूबर देहि, कूकुर ...ले केवन सनेह"।१

इस प्रकार से इन चिट्ठियों, लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रचुर प्रयोग ...ने के कारण इनकी भाषा बड़ी मुहावरेदार है। स्थानाभाव से यहाँ अधिक ...दाहरण देना संभव नहीं है। परन्तु इतना नि:संकोच कहा जा सकता है कि ...ोजपुरी का ऐसा निखरा तथा चलता रूप अन्यत्र मिलना कठिन है। अत: ...तुरी चाचा इस क्षेत्र में वेजोड़ तथा अद्वितीय हैं।

१. चतुरी चाचा की चटपटी चिट्ठियाँ, भाग १ पृ० ६४–६५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

१२—कोश

भोजपुरी में दो-तीन कोश भी उपलब्ध हैं जिनमें कृषि संबंधी शब्दों का संकलन किया गया है।

(१) भोजपुरी भाषा का शब्द कोश—यह लघु शब्द कोश चम्पारन जिले के मिशनरी लोगों के प्रयास का फल है। यह भोजपुरी हिन्दी कोश है यद्यपि यह पुस्तिका केवल २८ पृष्ठों की है फिर भी यह विदेशी मिशनरियों के द्वारा संकलित प्रथम कोश होने के कारण प्रशंसनीय है।

(२) कृषि कोश—डा० विश्वनाथ प्रसाद ने भोजपुरी प्रदेश में उपलब्ध कृषक जीवन से संबंधित शब्दावली का इस कोश में संग्रह किया है।२ कृषि के विभिन्न औजारों को समझाने के लिए कहीं-कहीं उनका डायग्राम भी दिया गया है।

(३) कहावत कोश—इसका सम्पादन डा० विश्वनाथ प्रसाद तथा विक्रमादित्य मिश्र ने किया है जिसमें क्षेत्रीय भाषाओं की कहावतों का संकलन उपलब्ध है३।

(४) भोजपुरी लोकोक्तियाँ और मुहावरे—इसके लेखक हैं डा० मुक्तेश्वर तिवारी 'वेसुध'। इसमें भोजपुरी कहावतों तथा मुहावरों की समीक्षा के साथ ही साथ इनका संग्रह भी उपलब्ध होता है। इस पुस्तक की चर्चा पहिले की जा चुकी है।४

—:o:—

१. एल० सेण्ट जोजेफ मिशन हाउस, मोतीहारी। सन् १९४० ई० पृ० २८
२. विहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना सन् १९५९ ई० पृ० १४५
३. राष्ट्रभाषा परिषद्, विहार, पटना सन् १९६५ ई०
४. हिन्दी परिषद्, आशापुर, चितवड़ा गाँव, बलिया सन् १९७० पृ० २४८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अध्याय ७

उपसंहार

भोजपुरी भाषा और साहित्य की महत्ता तथा उसका भविष्य—

पिछले अध्यायों में भोजपुरी भाषा और साहित्य का संक्षिप्त परिचय पाठकों के सामने प्रस्तुत किया गया है। इन अध्यायों के सम्यक् अध्ययन से भोजपुरी की विशेषताओं का पता चलता है। यहाँ भोजपुरी भाषा और साहित्य की महत्ता की ओर संक्षिप्त रूप में पाठकों का ध्यान आकृष्ट करना आवश्यक है।

(१) सरल भाषा—भोजपुरी एक सरल तथा सीधी-सादी भाषा है। जो सादगी और सरलता भोजपुरी प्रदेश के निवासियों में पायी जाती है वही बात उनकी भाषा के संबंध में भी समझनी चाहिए। भोजपुरी भाषा का व्याकरण बड़ा ही सरल है। इसकी क्रियाओं के निर्माण में वह पेचीदगी नहीं पायी जाती जो अन्य भाषाओं में उपलब्ध होती है। कोई भी व्यक्ति इस भाषा को एक या डेढ़ मास के भीतर अच्छी तरह से सीख सकता है। इसमें लिंगों का अभाव होने के कारण वाक्यों के निर्माण में वह कठिनाई और गड़बड़ी नहीं पायी जाती जो हिन्दी में मिलती है। इसके संज्ञा शब्दों के तीन रूप मिलते हैं जो इसकी समृद्धि के द्योतक हैं जैसे बेटा, बेटवा, बेटवना।

(२) सशक्त भाषा—भोजपुरी एक सशक्त तथा शक्तिशाली भाषा है। इसमें विभिन्न प्रकार के भावों और रसों को प्रकाशित करने की क्षमता पायी जाती है। कुछ लोगों का ऐसा विचार है कि भोजपुरी में केवल शृङ्गार रस की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

हीं रचना कुशलता तथा सफलता से की जा सकती है। परन्तु इन लोगों की इस धारणा को भ्रान्त ही समझना चाहिए।

कबीरदास से लेकर सुबचना दासी तक अनेक सन्त कवियों ने भोजपुरी में शान्त रस के अत्यन्त सुन्दर गीत गाये हैं जिन्हें सुनकर मन अत्यन्त आनन्द का अनुभव करता है। शृङ्गार के क्षेत्र में श्री मोती बी. ए., मोलाना गहमरी तथा श्री रामनाथ पाठक 'प्रणयी' ने मधुर तथा सरस प्रणय गीत गाये हैं। इनके गीत किसी भी भाषा के गीति काव्य को सरसता तथा मनोरमता में चुनौती देने के लिए के लिए पर्याप्त हैं। परन्तु ऐसा नहीं समझना चाहिए कि भोजपुरी भाषा की प्रतिभा (जीनियस) केवल उसके गीति काव्यों में ही निहित है। भोजपुरी में मधुर, कोमलकान्त पदावली को प्रकट करने की जितनी क्षमता है उतनी ही वीररसमयी, ओजस्विनी वाणी को प्रकाशित करने की भी शक्तिमत्ता इसमें उपलब्ध होती है। डा० रामविचार पाण्डेय, श्री चन्द्रशेखर मिश्र तथा श्री प्रसिद्ध नारायण सिंह ने अपनी ओजपूर्ण कविताओं के द्वारा इस तथ्य को प्रमाणित कर दिया है। अतः भोजपुरी एक सशक्त भाषा है जिसमें विभिन्न भावों का प्रकाशन हो सकता है।

(३) क्षेत्र विस्तार की विपुलता—"भोजपुरी भाषा" वाले अध्याय में यह विस्तार पूर्वक दिखलाया गया है कि भोजपुरी का क्षेत्र कितना विस्तृत तथा व्यापक है। भोजपुरी भाषा उत्तर प्रदेश के नौ जिलों तथा बिहार प्रान्त के पाँच जिलों में बोली जाती है। इस प्रकार उत्तर प्रदेश तथा बिहार के चौदह जिलों में निवास करने वाले व्यक्ति इसे अपनी मातृभाषा के रूप में बोलते हैं। इसके अतिरिक्त मध्यप्रदेश की भूतपूर्व सरगुजा स्टेट के निवासी भी भोजपुरी का व्यवहार करते हैं।

महाराष्ट्र के बम्बई और पूना के प्रसिद्ध नगरों में लाखों की संख्या में भोजपुरी भाई पाये जाते हैं जो वहाँ "भइया लोग" के प्रिय नाम से अभिहित किये जाते हैं। पश्चिमी बंगाल के कलकत्ता की महानगरी में "पूरबी बनिजिया" के लिए गये हुए भोजपुरियों की संख्या छः अंकों तक पहुँच जाती है। किम्ब-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

…, आसाम के सुदूर चाय बगानों (टी गार्डेन्स) में भी भोजपुरी लोग काम करते हुए पाये जाते हैं। इस प्रकार से उत्तर प्रदेश, बिहार के अतिरिक्त महाराष्ट्र, पश्चिमी बंगाल तथा आसाम के राज्यों में भी भोजपुरी लोग उपलब्ध होते हैं। भारत की शायद ही किसी भाषा का क्षेत्र-विस्तार इतना अधिक हो तथा उसके बोलने वालों की संख्या इतनी विपुल तथा विशाल हो।

(४) भाषा भाषियों की संख्या—भोजपुरी भाषा-भाषियों की संख्या लगभग साढ़े पाँच करोड़ है। हिन्दी की किसी भी बोली—जैसे व्रज, अवधी, बुन्देलखण्डी, बघेलखण्डी, कन्नौजी, कौरवी—के बोलने वालों की संख्या … कोटि के ऊपर नहीं पहुँच सकती है। किम्बहुना, हिन्दी की बोलियों की … तो दूर रहे, भारत की किसी भी समृद्ध भाषा—जैसे बंगला, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगु—के भाषियों की संख्या संभवतः तीन या चार करोड़ से अधिक नहीं है। अतः भाषा भाषियों की दृष्टि से भारत की कोई भी भाषा भोजपुरी की तुलना नहीं कर सकती। इस क्षेत्र में यह अद्वितीय तथा सर्वश्रेष्ठ है।

सन् १९७१ ई० की जनसंख्या गणना के अनुसार समस्त भारत की जनसंख्या पचपन करोड़ (५,५००,००,०००) के लगभग है जिसमें अकेले भोजपुरी भाषा के बोलने वालों की संख्या साढ़े पाँच करोड़ के आसपास है। इस प्रकार इस देश का प्रत्येक एगारहवाँ व्यक्ति भोजपुरी भाषा-भाषी है। इसी तथ्य से इस भाषा की महत्ता का कुछ अनुमान किया जा सकता है।

(५) अन्तर राष्ट्रीय भाषा होने की क्षमता—भोजपुरी प्रदेश के निवासी बड़े ही कर्मठ तथा साहसी होते हैं। आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व इस प्रदेश के रहने वालों ने अनेक उपनिवेशों में जाकर उन्हें बसाया और वहाँ की बंजर तथा ऊसर जमीन को अपने कठोर परिश्रम के द्वारा सस्यश्यामला भूमि के रूप में परिणत कर दिया। आजकल ये भोजपुरी लोग मारिशस, फीजी, कीनिया, युगाण्डा, दक्षिण अफ्रिका, ब्रिटिश गायना, बर्मा, सिंगापुर और नेपाल आदि देशों में लाखों की संख्या में बसे हुए हैं। मारिशस द्वीप जिसने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अभी-अभी स्वतंत्रता प्राप्त की है—की साठ प्रतिशत से भी अधिक जनता भोजपुरी भाषा-भाषी है। मारिशस के वर्तमान प्रधान-मंत्री डा० सर रामगुलाम स्वयं भोजपुरी भाषी हैं जिनके पूर्वज आज से लगभग एक सौ वर्ष पूर्व बिहार से वहाँ गये थे। दक्षिण अमेरिका के ब्रिटिश गायना—जो स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् 'गुआना' के नाम से प्रसिद्ध है—नामक देश में भी भोजपुरी भाषा-भाषी प्रचुर संख्या में पाये जाते हैं। आज से कुछ वर्ष पूर्व वहाँ के प्रधान मंत्री के पद को डा० छेदी जगन ने अनेक वर्षों तक सुशोभित किया था जो स्वयं भोजपुरी भाषा-भाषी हैं।

निश्चित ही भोजपुरी के लिए यह अत्यन्त गौरव का विषय है कि इस भाषा को मातृभाषा के रूप में व्यवहार करने वाले दो महान् व्यक्तियों ने अपने देश के बाहर विदेश में जाकर प्रधान मंत्री के पद को सुशोभित किया। संभवत: भारत की किसी अन्य भाषा के भाषी को यह गौरव अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है। मारिशस को भोजपुरी भाषियों का उपनिवेश कहा जाय तो कुछ अत्युक्ति नहीं होगी। वहाँ भोजपुरी में पत्र-पत्रिकाएँ भी प्रकाशित होती हैं तथा प्राइमरी स्कूलों में बच्चों को भोजपुरी में शिक्षा देने का भी प्रबन्ध किया गया है। संभवत: वह दिन दूर नहीं है जब मारीशस, फीजी और ब्रिटिश गायना में भोजपुरी भाषा की शिक्षा देने के लिए विद्यालय और महाविद्यालय खोले जायँ।

वर्मा में लाखों की संख्या में भोजपुरी लोग पाये जाते हैं। इस देश के टाँगू जिले में भोजपुरियों ने अनेक गाँवों को बसाया है जहाँ वे सैकड़ों वर्षों से रह रहे हैं। भारत की भाषाओं में संभवत: भोजपुरी ही ऐसी भाषा हैं जिसके बोलने वालों की संख्या विदेशों में भी इतने प्रचुर परिमाण में पायी जाती है। तमिल-भाषी लंका में अवश्य हैं परन्तु उनकी संख्या इतनी अधिक नहीं है। इस प्रकार भोजपुरी को एक अन्तरराष्ट्रीय भाषा होने का गौरव प्राप्त है।

(६) सन्त साहित्य तथा लोक साहित्य की विपुलता—भोजपुरी का साहित्य विपुल है। कबीरदास के निर्गुण सम्प्रदाय के सन्त कवियों ने तथा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सगुण सम्प्रदाय के भक्तों ने भी भोजपुरी को अपनाया है और इसे अपनी काव्य-प्रतिभा के प्रकाशन का माध्यम बनाया है। डा० विश्वनाथ प्रसाद का मत अत्यन्त समीचीन प्रतीत होता है कि "मैं तो समझता हूँ कि कृष्णभक्ति शाखा की मुख्य भाषा जैसे ब्रज भाषा थी, राम भक्तिशाखा तथा प्रेम-मार्गी शाखा की मुख्य भाषा जैसे अवधी थी, वैसे ही कबीर आदि सन्तों की मार्गी भक्तिशाखा की मुख्य भाषा भोजपुरी थी। कबीर के अतिरिक्त दास, धरनीदास, दरिया साहब तथा सरभंग सम्प्रदाय के अनेक ग्रन्थ भोजपुरी में ही हैं।"१

डा० विश्वनाथ प्रसाद के उपर्युक्त कथन से स्पष्ट ही प्रतीत होता है कि कबीर के निर्गुण सम्प्रदाय के सन्त कवियों ने भोजपुरी को ही अपनाया था। इतना ही नहीं बल्कि राम भक्तिशाखा के मधुरोपासक अनेक भक्त कवियों ने इस भाषा को अपने काव्य का प्रसाद देकर इसे गौरवान्वित किया था। रामाजी आदि अनेक मधुरोपासक कवियों ने इसी में अपनी हार्दिक भक्ति का उद्गार प्रकट किया है।२

किम्बहुना भोजपुरी प्रदेश से दूर स्थानों में निवास करने वाले अनेक कवियों ने भी इसमें अपनी काव्यरचना की है। सन्त साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान् आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने अपने अनेक लेखों में भोजपुरी के सन्त-साहित्य की विशालता तथा विपुलता का वर्णन किया है।३

भोजपुरी का लोक साहित्य भी उसके सन्त साहित्य की ही तरह विशाल है। इन पंक्तियों के लेखक की यह दृढ़ धारणा है कि भोजपुरी में जितना लोक साहित्य उपलब्ध होता है उतना हिन्दी की किसी अन्य बोली में संभवतः नहीं पाया जाता। भोजपुरी उत्तर प्रदेश तथा बिहार के चौदह जिलों में बोली

---

१. 'भोजपुरी के कवि और काव्य' सम्पादकीय मन्तव्य पृ० ७
२. डा० भगवती प्रसाद सिंह-राम भक्ति शाखा में मधुर उपासना।
३. परशुराम चतुर्वेदी 'भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक रेखाएँ' पृ० ७४—६५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

जाती है। इन चौदह जिलों में हजारों गाँव हैं और इन गांवों में लाखों घर हैं जिनमें करोड़ों की संख्या में लोग निवास करते हैं। प्रत्येक परिवार में बूढ़े और बूढ़ियों को अनेक लोकगीत और कथायें याद हैं। ऐसी भी वृद्धायें आज गाँवों में मौजूद हैं जिन्हें अकेले ही पाँच सौ गीत तथा एक हजार तक गीत तथा कथायें कंठस्थ हैं। इस प्रकार यदि प्रति व्यक्ति एक गीत का भी औसत हिसाब रखा जाय तो भोजपुरी लोक-गीतों की संख्या करोड़ों तक जा पहुँचती है। भोजपुरी लोक-गीतों के जो संग्रह अबतक प्रकाशित हुए हैं उन्हें समुद्र में एक बूंद के समान ही समझना चाहिए। अभी तक लोक साहित्य का विशाल सागर अनालोड़ित पड़ा हुआ है।

(७) साहित्य रचना का प्रवाह—भोजपुरी में साहित्य रचना का प्रवाह प्रवल वेग से प्रवाहित हो रहा है। भोजपुरी के कवि और लेखक गण इसके भाण्डार को भरने के लिए प्रयत्नशील ही नहीं बल्कि बद्ध-परिकर भी दिखाई पड़ते हैं। सन्त कवियों की प्रतिभा के प्रसाद से तथा लोक साहित्य की विपुलता के कारण भोजपुरी का पद्य-साहित्य अत्यन्त समृद्ध है परन्तु इसके गद्य-साहित्य की इतनी श्रीवृद्धि अभी नहीं हुई है जितनी होनी चाहिए। फिर भी अनेक लेखक इस अभाव की पूर्ति के लिए कृतसंकल्प हैं।

जैसा कि भोजपुरी गद्य के प्रकरण में दिखलाया गया है गद्य की प्रायः जितनी भी विधायें होती हैं उन सभी में भोजपुरी में थोड़ी बहुत रचनायें उपलब्ध होती हैं। यह दूसरी बात है कि इन रचनाओं की संख्या अभी अधिक नहीं है। पिछले दशकों में भोजपुरी साहित्य में जिस प्रगति के साथ ग्रन्थों की रचना हुई है उससे यह आशा की जाती है कि निकट भविष्य में भोजपुरी का गद्य साहित्य पद्य की ही भाँति समृद्धि-शाली बन जायेगा। वाराणसी का भोजपुरी-साहित्य मंदिर, भोजपुरी संसद तथा जमशेदपुर (बिहार) की भोजपुरी-साहित्य-परिषद् नामक संस्थायें इस दिशा में प्रशंसनीय प्रयास कर रही हैं। इनके द्वारा अनेक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

प्रकाशित हुई हैं जिनसे भोजपुरी साहित्य की श्रीवृद्धि हो है।

(८) फिल्मों द्वारा भोजपुरी का प्रचार—संभवत: भोजपुरी ही ऐसी भाषा है जिसमें सर्वप्रथम फिल्मों का निर्माण हुआ। इसके पहिले की किसी भी अन्य बोली में फिल्मों की रचना नहीं हुई थी। वर्षों पहिले, भोजपुरी की सबसे पहिली फिल्म "गंगा मइया तोहके पी चढ़इबों" बनायी गयी थी। यह फिल्म इतनी लोकप्रिय हुई कि पुरी प्रदेश से दूर कलकत्ता तथा बम्बई जैसे नगरों में भी इसकी धूम गई और लाखों की संख्या में इसे देखने के लिए लोग आने लगे। लोग भोजपुरी से परिचित नहीं थे वे भी इसके मोहक आकर्षण से भावित नहीं रह सके। "गंगा मइया" के अभूतपूर्व स्वागत को देखकर ली नाहीं छूटे राम" और "बिदेसिया" नामक फिल्मों का निर्माण । 'विदेसिया' फिल्म भी काफी सफल तथा लोकप्रिय हुई जिसमें स्वयं सिया नाटक के लेखक भिखारी ठाकुर ने पार्ट किया था। फिर तो पुरी फिल्मों के निर्माण का ताँता ही लग गया। 'भउजी' और नहीं सिंगार करे दुलहिनिया" फिल्मों की शूटिंग हुई तथा अन्य फिल्में बनायी गयीं।

सर्वप्रथम श्री मोती बी. ए. ने 'नंदिया के पार' नामक फिल्म में पुरी गीतों की रचना की थी। अत: सिनेमा जगत् में भोजपुरी को कराने का श्रेय उन्हीं को प्राप्त है। अब तो भोजपुरी लोरियों के भी तैयार हो गये हैं। इसमें सन्देह नहीं कि इन फिल्मों के द्वारा के विभिन्न राज्यों में भोजपुरी का प्रचुर प्रचार हो रहा है।

(९) राष्ट्रीय चेतना का जागरण—भोजपुरी लोगों में अब राष्ट्रीय ना का जागरण भी धीरे-धीरे होने लगा है। वे अपनी भाषा और हित्य के महत्त्व को अब समझने लगे हैं और इसे विद्यालयों, महा-लयों तथा विश्वविद्यालयों तक में उचित स्थान दिलाने में प्रयत्नशील

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

दिखाई पड़ते हैं। अभी-अभी गत वर्ष बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर ने भोजपुरी को इण्टर तथा बी. ए. की कक्षाओं में एक स्वतन्त्र विषय के रूप में पढ़ाने के लिए अपनी स्वीकृति प्रदान की है। यह भोजपुरी के इतिहास में एक युगान्तरकारी तथा ऐतिहासिक घटना है। इस गंभीर कार्य को सम्पादित करने तथा विश्वविद्यालय में भोजपुरी को उचित स्थान दिलाने का समस्त श्रेय बिहार विश्वविद्यालय के राजनीति विभाग के अध्यक्ष तथा प्रोफेसर डा० लल्लन प्रसाद सिंह और उनके सहयोगियों को प्राप्त है। डा० सिंह ने भोजपुरी को विश्वविद्यालय में स्वतंत्र विषय के रूप में स्थान दिला कर एक महत्त्वपूर्ण तथा ऐतिहासिक कार्य का श्रीगणेश किया है। निश्चय ही भोजपुरी भाषा-भाषी जनता इस कार्य के लिए डा० सिंह की अत्यन्त ऋणी रहेगी।

भोजपुरी लोगों में अब राजनैतिक चेतना भी जागृत हो रही है और वे 'भोजपुरी प्रदेश' के नाम से एक स्वतंत्र राज्य के निर्माण की आवाज उठाने लगे हैं। परन्तु इस विषय की चर्चा इस पुस्तक की सीमा से परे है।

(१०) भोजपुरी का भविष्य—भोजपुरी भाषा और साहित्य का भविष्य बड़ा ही उज्ज्वल और प्रकाशवान् है। भाषा-भाषियों की दृष्टि से भोजपुरी भारत की एक महान् भाषा है। क्षेत्र विस्तार की दृष्टि से यह अद्वितीय है और बंगला को छोड़कर अपना सानी नहीं रखती। भारतीय सागर के किनारों को पारकर यह विश्व के अनेक देशों में भी फैली हुई है। अतः इसे 'अन्तरराष्ट्रीय भाषा' की भी संज्ञा दी जा सकती है। जिस गति से इसमें आजकल साहित्य की रचना हो रही है उससे यह निश्चित रूप से आशा की जा सकती है कि निकट भविष्य में ही यह अत्यधिक समृद्ध तथा शक्तिशाली भाषा बन जायेगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

भोजपुरी भाषा की मिठास और मधुरता लोकोत्तर है जो जन-साधारण के चित्त को अनायास अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है। जो मधुर शब्द-विन्यास, ललित पद-शैय्या और कोमल कान्त-पदावली उपलब्ध होती है उसका अन्यत्र मिलना असंभव नहीं तो दुर्लभ अवश्य है। इसकी मधुरिमा स्वर्गीय और हृदय द्रावकता अद्वितीय है। भोजपुरी की सबसे बड़ी विशेषता इसकी मोहकता और रागात्मक 'अपील' है जो श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर लेती है। "मोरी रे अटरिया हो रामा सुगना बोले हो" की इस कड़ी को सुनकर तथा "हरि मोरे गइले रामा पुरुबी बनिजिया, दई के गइले हो, एक सुगना खेलवना" इस पूर्वी गीत की इन मनमोहक पंक्तियों की मधुरिमा की माध्वी का पान कर किस सहृदय का हृदय मदमस्त होकर झूमने नहीं लगता ?

श्री सत्यनारायण कविरत्न ने व्रजभाषा की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि—

"बरनै को कवि सकै भला वह भाषा कोटी।
मचलि मचलि माँगी जामें हरि माखन रोटी॥"

यह कथन भोजपुरी के विषय में भी सत्य है।

निश्चय ही जिस भाषा में महात्मा कबीर ने अपना निर्गुन पद गाया है, धरमदास और धरनीदास ने जिसे अपनी काव्य-साधना का माध्यम बनाया है; सरभंग सम्प्रदाय के कवियों ने जिसमें अपनी वामपन्थी कविता की रचना की है, वह भाषा महान् है। जिस भाषा में लोककवि बिसराम ने बिरह के गीत गाये हैं, जिसमें श्री रघुवीर नारायण तथा श्री मनोरंजन प्रसाद ने भारतीय राष्ट्रीयता की गौरव गाथा का गान किया है, जिसे साढ़े पाँच करोड़ भोजपुरी भाइयों की "मतारी भासा" होने का गौरव प्राप्त है वह भाषा निश्चित ही समृद्धशालिनी है। जिस भाषा को भारतवर्ष के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद तथा डा० सच्चिदानन्द सिनहा बड़े प्रेम से बोलते थे उस भाषा और साहित्य का भविष्य उज्ज्वल ही नहीं, सम्यक् समुज्ज्वल, समृद्ध तथा देदीप्यमान है।

—:o:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अध्याय ८

भोजपुरी के उन्नायक

जिन कवियों, लेखकों, नाटककारों तथा उपन्यासकारों ने अपनी कृतियों द्वारा भोजपुरी साहित्य के भाण्डार को भरा है वे तो इस साहित्य सेवी तथा संवर्धक हैं ही परन्तु इनके अतिरिक्त उन लोगों का भी महत्व कुछ कम नहीं है जिन लोगों ने अपने उपदेशों, भाषणों, वार्तालापों तथा वक्तव्यों के द्वारा भोजपुरी का प्रचार तथा प्रसार किया है। इस प्रकार के महानुभावों में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद, डा० सच्चिदानन्द सिनहा, भारत के प्रतिरक्षा मंत्री बाबू जगजीवनराम तथा बाबा राघवदास मुख्य हैं। इन महापुरुषों के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अनेक लोगों ने प्रेरणा तथा प्रोत्साहन प्राप्त किया और भोजपुरी की सेवा में अपने जीवन को समर्पण कर दिया।

उन्नायकों की इस सूची की दूसरी श्रेणी में वे लोग आते हैं जिन्होंने भोजपुरी में अपेक्षाकृत लिखा तो कम है परन्तु अनेकों शोधी छात्रों को भोजपुरी में अनुसन्धान-कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की है, जैसे महापण्डित राहुल सांकृत्यायन तथा डा० उदय नारायण तिवारी। तीसरी श्रेणी में उन महानुभावों की गणना की जा सकती है जिन्होंने अपने भगीरथ प्रयास से महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालय में भोजपुरी को प्रतिष्ठापित कर इसके अध्ययन तथा अध्यापन का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत बना दिया है। इनमें प्रोफेसर डॉ० लल्लन प्रसाद सिंह अग्रगण्य हैं। कुछ ऐसे भी तपस्वी साधक हैं जिन्होंने भोजपुरी की सेवा में अपना जीवन ही खपा दिया है, जैसे पं० महेन्द्र शास्त्री। इन सज्जनों के अतिरिक्त कुछ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ं ने भोजपुरी की अनेक संस्थाओं की स्थापना की है जिसका उल्लेख (परिशिष्ट में) किया गया है। इन्होंने भोजपुरी के प्रचार के लिए पत्र-पत्रिकाओं तथा इसके साहित्य के भाण्डार की श्रीवृद्धि के लिए ी पुस्तकों का प्रकाशन किया है। ऐसे महानुभावों में श्री दुर्गा-प्रसाद सिंह, श्री रघुवंश नारायण सिंह, श्री राधामोहन 'राधेश', स्वामीनाथ सिंह, पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय आदि का नाम आदर के लिया जा सकता है। पं० गणेश चौबे तो भोजपुरी शोध छात्रों के दायक हैं ही। पं० दूधनाथ उपाध्याय, श्री रघुवीर शरण तथा ल मनोरंजन प्रसाद सिनहा ने कई दशक पहिले भोजपुरी की ठोस की है।

प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा० सर जार्ज ग्रियर्सन का नाम इस सूची में स्थान पर इसलिए रखा गया है कि आज से ६० वर्ष पूर्व इस ी ने भोजपुरी भाषा तथा इसके लोक साहित्य की सबसे पहिले सेवा की थी। इस महान् विद्वान् के नाम का यहाँ उल्लेख न उनके प्रति महती कृतघ्नता होती। अतएव उनको उनकी कृतियों के ही सर्वप्रथम स्थान प्रदान किया गया है।

१—डा० सर जार्ज एब्राहिम ग्रियर्सन

भाषा विज्ञान शास्त्र के विद्वानों, तथा छात्रों से डा० ग्रियर्सन का अपरिचित नहीं है। इन्होंने "लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया" के समस्त भारतीय भाषाओं का सर्वाङ्गीण तथा वैज्ञानिक सर्वेक्षण किया है। यह ग्रन्थ एक महान् कृति है। एक उच्चकोटि के भाषा-शास्त्री होने के अतिरिक्त डा० ग्रियर्सन एक श्रेष्ठ लोक साहित्य शास्त्री भी आज से लगभग ६० वर्ष पहिले, सन् १८८४ ई० के आसपास ऐसे भोजपुरी लोक-गीतों के महत्त्व को समझा था और बड़े परिश्रम से संकलन कर इन्हें अपनी विद्वत्तापूर्ण टिप्पणियों तथा अंग्रेजी अनुवाद के भारत तथा इङ्गलैण्ड की अनेक शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित किया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

था । इतना ही नहीं, आपने लंदन की रायल एशियाटिक सोसाइटी मीटिंग में भगवती देवी तथा कुसुमा देवी की कारुणिक लोक गाथा सुना कर अपने श्रोताओं को बहुत ही अधिक प्रभावित किया था । भोज लोक-गीतों के संग्रह के क्षेत्र में डा० ग्रियर्सन ने जितना भी कार्य किया उसका उल्लेख गत पृष्ठों में किया जा चुका है । यहाँ इतना ही क पर्याप्त समझा जाता है कि अतीत काल में ईसा की विगत शताब्दी उत्तरार्ध में—जब भोजपुरी के नाम को कोई जानता भी नहीं था जब इसके लोक गीतों के संकलन की बात को कोई सोच भी नहीं स था तब लोक-साहित्य के इस महान् मनीषी ने भोजपुरी लोक गीतों महत्त्व को अपनी दूर दृष्टि से देखा और इन गीतों का संग्रह प्रका कर भारतीय विद्वानों का पथ-प्रदर्शन किया । डा० ग्रियर्सन प्रथम देशी, विदेशी विद्वान् हैं जिन्होंने भोजपुरी लोक गीतों के संबंध में इतनी प्र सामग्री प्रस्तुत की है ।

डा० सर जार्ज ग्रियर्सन को भोजपुरी प्रदेश के लोगों से बड़ा था । वे इनकी मुक्तकंठ से प्रशंसा किया करते थे । भोजपुरी लोगों जीवन, उनके स्वभाव और रहन-सहन को जितना नजदीक से इन्हे देखा था उतना अन्य किसी ने नहीं । इसलिए वे भोजपुरी संस्कृति परम प्रशंसक थे । भोजपुरी तथा भोजपुरियों की भूरि-भूरि प्रशंसा क हुए उन्होंने अपने एक स्थान पर लिखा है कि "भोजपुरी उस कर्मठ त उत्साही जाति की व्यावहारिक भाषा है जो परिस्थितियों के अनुस अपने को बनाने के लिए सदा उद्यत रहती है और जिसका प्रभाव भार के प्रत्येक भाग पर अनुभव किया गया है । हिन्दुस्तान में सभ्यता प्रचार करने वाली दो महान् जातियाँ हैं—प्रथम बंगाली और दूस भोजपुरिया । प्रथम ने अपनी लेखनी से यह कार्य किया और दू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

(भोजपुरिया लोगों) ने अपनी लाठी से इस, कार्य में सफलता प्राप्त की।[१]"

इस प्रकार डा० ग्रियर्सन ने अपने लेखों, भाषणों तथा ग्रन्थों के द्वारा भोजपुरी साहित्य के संकलन का सर्व प्रथम सूत्रपात किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने भावी विद्वानों का मार्ग-दर्शन तथा दिशा-निर्देशन के साथ ही राजपथ का निर्माण किया जिसका उपयोग आधुनिक शोधी विद्वान् संकोच करते चले आ रहे हैं।

डा० ग्रियर्सन ने अपने "भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण" नामक ग्रन्थ में भोजपुरी भाषा का बड़ा ही वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। भोजपुरी की विभिन्न वोलियों का वर्गीकरण करके इन्होंने प्रत्येक बोली का उदाहरण भी दिया है। इस प्रकार भोजपुरी भाषा और साहित्य-दोनों ही क्षेत्रों में डा० ग्रियर्सन का योगदान अलौकिक है। अतः डा० ग्रियर्सन भोजपुरी के उन्नायकों में शीर्ष स्थान के अधिकारी हैं।

२—डा० सच्चिदानन्द सिनहा

डा० सच्चिदानन्द सिनहा बिहार के आरा जिले के निवासी थे। आपने इंग्लैण्ड से वार-एट-ला की उपाधि प्राप्त की थी। आप बिहार प्रान्त के गवर्नर की कार्यकारिणी समिति (Executive Council) के प्रथम

---

[१] Bhojpuri is the practical language of an energetic race which is ever ready to accomodate itself to circumstances, and which has made its influence felt all over India. The Bengali and the Bhojpuri are two of the great Civilisers of Hindustan, the former with his pen and the latter with Cudgel.

लि० स० इ० भाग ५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

भारतीय सदस्य थे । इसके साथ ही आप प्रथम भारतीय थे जिसे समिति में अर्थ विभाग का प्रशासन (Portfolio of Finance) सौंपा गया हो । इस प्रकार डा० सिनहा ऐसे महान् व्यक्ति थे जिन्होंने ब्रिटिश शासन में बड़े से बड़े पद को सुशोभित किया था ।

आप पटना से 'हिन्दुस्तान रिव्यू' नामक मासिक पत्रिका का अंग्रेजी में सम्पादन किया करते थे जो तीस वर्षों तक अविरल गति से प्रकाशित होती रही । अंग्रेजी भाषा के इतने बड़े प्रकाण्ड विद्वान् होते हुए भी डा० सच्चिदानन्द सिनहा का अपनी मातृभाषा भोजपुरी से प्रगाढ़ प्रेम तथा अटूट अनुराग था । अंग्रेजी भाषा में घण्टों भाषण करने की क्षमता रखते हुए भी, आपके पास जब कोई भोजपुरी भाषा-भाषी जाता था तब उससे आप सदा अपनी मातृभाषा में ही बातचीत करते थे । इतना ही नहीं यदि आगन्तुक व्यक्ति डा० सिनहा को अंग्रेजी का विद्वान् समझ कर उनसे आँग्ल भाषा में बातें करने लगता था तब प्रारम्भ में ही ये उसे टोक देते थे और भोजपुरी में बोलने का आग्रह करते थे । आपका भोजपुरी प्रेम इतना उग्र तथा उत्कट था कि आप किसी भोजपुरी प्रदेश के व्यक्ति का अंग्रेजी या खड़ी बोली हिन्दी में बोलना गवारा नहीं कर सकते थे । आपके इस उत्कृष्ट अनुराग के संबंध में अनेक सच्ची कथाएँ आज भी प्रचलित हैं जिनमें एक इस प्रकार है :

जब डा० सच्चिदानन्द सिनहा बिहार सरकार के अर्थमंत्री थे उस समय उन्हीं के जिले का कोई नौजवान—जो सूटेड बूटेड पूरा जेंटिलमैन था—नौकरी की तलाश में उनसे मिलने के लिए आया । उस नवयुवक ने डा० सिनहा से मिलते ही धुंआधार अंग्रेजी में बोलना शुरू कर दिया । डा० सिनहा ने यह जानकर कि यह आरा का निवासी है उससे भोजपुरी में उसके आने का उद्देश्य पूछा । फिर भी यह छोकरा अंग्रेजी ही बूकता रहा । डा० सिनहा ने उस व्यक्ति से भोजपुरी में बोलने को कहा, परन्तु फिर भी अपनी मस्ती तथा शान में वह अंग्रेजी ही झाड़ता रहा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

और उनके स्पष्ट संकेत को जानते हुए भी उस पर ध्यान नहीं दिया। उस छोकरे की इस हठधर्मिता अथवा मूर्खता पर डा० सिनहा झुँझला उठे और अपने चपरासी का उसे बाहर निकाल देने का आदेश दिया।

यह था डा० सिनहा का मातृ-भाषा-प्रेम और भोजपुरी निष्ठा। इस प्रेम के लिए इनका नाम बिहार में आज भी विख्यात है।

३—भारतरत्न राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद का भोजपुरी प्रेम सर्वविदित है। काँग्रेस के एक महान् नेता के रूप में आपने इस तथ्य को अच्छी तरह समझ लिया था कि सर्व साधारण जनता तक पहुँचने के लिए ग्रामीण जनता की ही भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए। इसीलिए आप कांग्रेस-नेता के रूप में बिहार तथा उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों में जहाँ भी भाषण करते थे वहाँ सर्वत्र जनता की भाषा—भोजपुरी को ही व्यवहार में लाते थे। राजेन्द्र बाबू अपनी वक्तृताओं में सरल, तथा सरस भाषा को ही बोलते थे। यही कारण है कि ग्रामीण जनता की अपनी बोली में बोलने के कारण सर्वसाधारण लोगों पर इनके भाषणों का बड़ा प्रभाव पड़ता था। जहाँ अन्य लीडर अंग्रेजी या खड़ी बोली का व्यवहार करते थे वहाँ राजेन्द्र बाबू भोजपुरी को ही अपनाते थे। इसीलिए ये इतने महान् जन-नायक तथा लोकनेता बन सके।

श्री रघुवंश नारायण सिंह ने राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद की भोजपुरी भाषा-प्रियता के संबंध में अनेक रोचक संस्मरण लिखे हैं जिनमें से एक दो यहाँ उद्धृत किये जाते हैं।[१]

रूसी राष्ट्रपति मिकोयान जब दिल्ली में राष्ट्रपति-भवन में ठहरे थे तब राजेन्द्र बाबू उनसे बराबर भोजपुरी में ही बातें करते थे। जब डा० राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति थे उस समय जो भी भोजपुरी प्रदेश के व्यक्ति राष्ट्रपति निवास में

१. जीरादेई से सदाकत आश्रम तक पृ० ६७—७४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ठहरते थे उनसे राजेन्द्र बाबू सदा भोजपुरी में ही बोलते थे। एक बार वे मध्यप्रदेश गये। वहाँ के मुख्य मंत्री उस समय पं० रविशंकर शुक्ल थे। राजेन्द्र बाबू को जो मान-पत्र दिया गया उसकी भाषा भोजपुरी से कुछ-कुछ मिलती जुलती थी। तब राजेन्द्र बाबू ने शुक्ल जी से कहा कि मैं यहाँ भोजपुरी में ही भाषण करूँगा। इन्होंने अपने निर्णय के अनुसार भोजपुरी में ही भाषण किया और समस्त जनता ने उसे ध्यानपूर्वक सुना और समझा।

डा० राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति पद पर आसीन होते हुए भी जब विहार या पूर्वी उत्तर प्रदेश के जिलों का दौरा करते थे उस समय वे सार्वजनिक समाओं में भोजपुरी में ही अपना व्याख्यान देते थे। ऐसे अनेक व्याख्यानों में इस लेखक को उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आपकी भाषा सरल, और भाषण शैली रोचक होती थी। आज कौन ऐसा राष्ट्रपति, राज्यपाल, प्रधान मंत्री अथवा मुख्य मंत्री है जो अपने महान् पद पर आसीन होते हुए भी भोजपुरी को इतना महत्त्व तथा आदर एवं सम्मान प्रदान करेगा ?

डा० सच्चिदानन्द सिनहा और डा० राजेन्द्र प्रसाद दोनों ही भोजपुरी के प्रकृष्ट प्रेमी थे। परन्तु दोनों में थोड़ा अन्तर था। डा० सिनहा इस बात के लिए बहुत प्रसिद्ध थे कि वे भोजपुरी भाषी आगन्तुक को आग्रह करके और कभी डाँट-डपट कर भी भोजपुरी में बातचीत करने के लिए बाधित करते थे। परन्तु राजेन्द्र बाबू के विषय में ऐसी बात नहीं कही जा सकती। वे भोजपुरी भाषी व्यक्ति से स्वयं, तो, भोजपुरी में ही बातें करते थे चाहे वह किसी भी भाषा में बोले।

भारत के इन दोनों सपूतों ने दैनिक व्यवहार में भोजपुरी का प्रयोग कर इस प्रदेश की जनता के सामने बहुत बड़ा आदर्श उपस्थित किया है। यही कारण है कि आज बिहार सरकार के बड़े-बड़े कर्मचारी, शिक्षा शास्त्री तथा नेता भोजपुरी में बोलने में अपना गौरव समझते हैं। यह अप्रत्यक्ष प्रभाव उपर्युक्त दोनों महान् नेताओं के अपनी मातृभाषा के प्रति प्रगाढ़ प्रेम के ही कारण है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४—बाबा राघवदास

बाबा राघवदास भोजपुरी के उन उन्नायकों में से थे जिन्होंने स्वयं मराठी भाषा-भाषी होने पर भी भोजपुरी की बड़ी ठोस सेवा की। देवरिया जिले में सरयू के किनारे बरहज नामक स्थान में इनका आश्रम है जहाँ ये एक सुप्रसिद्ध स्थानीय महात्मा से दीक्षित होकर तपस्या करते थे। सन् १९२० ई० में महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन के प्रवर्तित होने पर बाबा राघव दास ने त्याग और तपस्या के निवृत्ति मार्ग का परित्याग कर सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया। अपनी देशभक्ति के कारण इन्हें अनेक बार जेल की यातना भी भुगतनी पड़ी थी।

भोजपुरी जनता में राष्ट्रीय जागरण पैदा करने के लिए राघवदास जी ने हिन्दी का परित्याग कर जनता की ग्रामीण भाषा-भोजपुरी को ही अपनाया। ये शुद्ध तथा ठेठ भोजपुरी में बड़ा ही सुन्दर भाषण देते थे जिसका प्रभाव सामान्य जनता पर प्रचुर परिमाण में होता था। यद्यपि बाबा जीने भोजपुरी में किसी ग्रन्थ की रचना नहीं की है परन्तु अपने ओजस्वी भाषणों के द्वारा इन्होंने गोरखपुर तथा देवरिया जनपद में भोजपुरी का जितना अधिक प्रचार तथा प्रसार किया उतना शायद ही किसी व्यक्ति ने किया हो। भोजपुरी जनता बाबू राघवदास को अपने सेवक तथा उन्नायक के रूप में सदा स्मरण करती रहेगी।

५—पं० दूधनाथ उपाध्याय

पं० दूधनाथ उपाध्याय ने आज से लगभग ६० साठ वर्ष पूर्व भोजपुरी में उस समय काव्य की रचना प्रारम्भ की थी जिस समय 'भोजपुरी भाषा' का कोई नाम भी नहीं जानता था। उपाध्यायजी ने सन् १९१४ ई० में 'भरती के गीत', गोविलयछन्दावली नामक ग्रन्थों की रचना की थी जिसे इन्होंने 'बलिया की बोली' में रचित लिखा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

यद्यपि उपाध्यायजी के पहिले तेग अली 'तेग' और श्री रामकृष्ण वर्मा ने भोजपुरी में काव्य की रचना की थी परन्तु ये लोग इसकी परम्परा को प्रवर्तित नहीं कर सके। परन्तु पं० दूधनाथ ने सन् १९१४ ई० में भोजपुरी में जो काव्य की रचना प्रारम्भ की उसकी परम्परा को प्रवर्तित करने का श्रेय इन्हें प्राप्त है। सन् १९२० ई० में महात्मा गाँधी का जो असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हुआ उसमें वकीलवा, मुवकिला आदि अनेक कवितायें भोजपुरी में लिखी गईं। 'फिरंगिया' और बटोहिया भी इसी काल की रचनायें हैं।

यद्यपि उपाध्याय जी ने भोजपुरी की सेवा की भावना से इन ग्रन्थों की रचना नहीं की थी, फिर भी अनजान में ही सही, उन्होंने भोजपुरी की जो ज्योति प्रज्वलित की उसका प्रकाश युगों तक अनेक विद्वानों का पथ-प्रदर्शन करता रहेगा। भोजपुरी को उपाध्याय जी की यही देन है।

६—राहुल सांकृत्यायन

राहुल जी पालि भाषा के प्रकाण्ड पण्डित थे। इसीलिए इन्हें त्रिपिटकाचार्य की उपाधि से सम्मानित किया गया है। इन्होंने हिन्दी में विभिन्न विषयों पर सैकड़ों ग्रन्थों की रचना की है।

राहुल जी को भोजपुरी से बड़ा घनिष्ठ प्रेम था। इन्होंने भोजपुरी में आठ नाटकों की रचना की है जिनका उल्लेख पहिले किया जा चुका है। राहुल जी अपने लेखों, भाषणों तथा रेडियो वार्ता से सदा भोजपुरी के प्रचार तथा प्रसार को प्रोत्साहन दिया करते थे। आपका मत था कि बच्चों की शिक्षा-दीक्षा उनकी मातृभाषा (मतारी भाखा) में ही होनी चाहिए। अतः वे चाहते थे कि भोजपुरी प्रदेश के बच्चों को प्रारम्भिक शिक्षा भोजपुरी में ही दी जाय। छपरा जिला में होनेवाले भोजपुरी-साहित्य-सम्मेलन के आप सभापति भी थे। इस पद से आपने भोजपुरी के समधिक प्रचार की कामना व्यक्त की थी।

राहुल जी भोजपुरी भाषा-भाषी व्यक्तियों से सदा भोजपुरी में ही बातें किया करते थे। यद्यपि ये अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे फिर भी अपनी मातृभाषा, भोजपुरी से इनको बड़ा प्रेम था। राहुल जी की भोजपुरी प्रियता को देखकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसरे लोग बहुत प्रभावित होते थे। इसमें सन्देह नहीं कि राहुल जी के निर्वाण-प्राप्ति के साथ ही भोजपुरी का एक स्तम्भ सदा के लिए नष्ट हो गया।

७—बाबू रघुवीर नारायण

बाबू रघुवीर नारायण का जीवन परिचय कवियों के प्रसंग में पहिले दिया जा चुका है। आपने बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में 'बटोहिया' नामक एक कविता लिखी थी जो भोजपुरी प्रदेश में बहुत ही लोकप्रिय तथा प्रसिद्ध हुई। इस राष्ट्रीय गीत का इतना अधिक प्रचार हुआ कि यह दक्षिण अफ्रीका, मारीशस, फीजी और ट्रिनीडाड आदि देशों में जा पहुँचा जहाँ प्रवासी भारतवासी इसे बड़े प्रेम से गाते थे। आपके इस बटोहिया नामक गीत में अखण्ड भारत का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया गया है। इस कवि ने भारत के ऋषियों, मुनियों, राष्ट्रीय वीरों, इस देश की नदियों, पर्वतों आदि का वर्णन कर अतीत भारत की गौरवमयी गाथा का चित्र पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में इस गीत ने जो भोजपुरियों का राष्ट्रीय गीत कहा जा सकता है—जन जागरण में बहुत बड़ा योगदान दिया है। प्रिन्सिपल मनोरंजन प्रसाद सिनहा ने इसी 'बटोहिया' गीत से प्रेरणा प्राप्त कर अपना सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय गीत 'फिरंगिया' लिखा था। इस ऋण को मनोरंजन बाबू ने स्वयं स्वीकार किया है। इस प्रकार बाबू रघुवीर नारायण जी ने आज से लगभग ६० वर्ष पूर्व भोजपुरी का अलख जगाया था और इसकी सेवा में अपना जीवन ही अर्पित कर दिया था। आज भी इनके पुत्र श्री हरेन्द्र देव नारायण ने भोजपुरी में "कुँवर सिंह" नामक महाकाव्य की रचना कर अपने पिता की परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखा है। इस प्रकार पिता-पुत्र दोनों ने भोजपुरी साहित्य की प्रचुर सेवा की है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

८----प्रिन्सिपल मनोरंजन प्रसाद सिनहा

श्री मनोरंजन प्रसाद सिनहा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अनेक वर्षों तक अंग्रेजी के प्राध्यापक थे। इसके पश्चात् ये प्राय: २५ वर्षों तक राजेन्द्र कालेज, छपरा में प्रिन्सिपल के पद को सुशोभित करते रहे। इसीलिए ये प्रिन्सिपल मनोरंजन के नाम से ही अधिक प्रसिद्ध हैं।

मनोरंजन प्रसाद सिनहा को प्रारम्भ से ही भोजपुरी से प्रेम था। सन् १९२० ई० में गाँधी की आँधी के दिनों में आपने 'फिरंगिआ' नामक सुप्रसिद्ध कविता की रचना भोजपुरी में की थी। राष्ट्रीय आन्दोलन के दिनों में इस कविता ने साधारण जनता में राष्ट्रीय जागर्ति उत्पन्न करने में बड़ा योगदान दिया था। इसके साथ ही भोजपुरी के प्रचार में भी इससे बड़ी सहायता मिली। सन् १९२९ ई० में 'हंस' पत्रिका के काशी अंक में आपने 'काशी का वर्णन' भोजपुरी भाषा में बड़ा ही सुन्दर किया है। आपने अनेक पुस्तकों की रचना के साथ कई लेखकों के ग्रन्थों की भूमिका लिखकर उन्हें प्रोत्साहन प्रदान किया है।

आप भोजपुरी के बड़े भक्त थे। अंग्रेजी के इतने बड़े विद्वान् होते हुए भी आप भोजपुरी में ही बातें करते थे। अंग्रेजी के एक लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् को भोजपुरी में कविता करते और वार्तालाप करते देखकर लोगों को आश्चर्य हुए विना नहीं रहता था। इस प्रकार अपनी रचनाओं तथा भाषणों के द्वारा इन्होंने भोजपुरी की वहुत बड़ी सेवा की।

९----बाबू दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह

बाबू दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह ने भोजपुरी की जीवनपर्यन्त सेवा की। भोजपुरी के लोक गीतों को भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से एकत्रित कर इन्होंने 'भोजपुरी लोक-गीतों में करुण रस' नामक पुस्तक प्रकाशित की। अनेक विस्मृत, अनजान तथा उपेक्षित कवियों को खोज-खोज कर आपने "भोजपुरी के कवि और काव्य" में स्थान देकर उनका उद्धार किया। भोजपुरी में लिखित अनेक प्राचीन दस्तावेजों, सरखतों और कागज-पत्रों में ढूंढ़ कर इन्होंने भोजपुरी गद्य के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राचीन स्वरूप का पता लगाया। इसके अतिरिक्त 'साहित्य रामायण' के रूप में इन्होंने भोजपुरी के प्रथम महाकाव्य का निर्माण किया। बाबू कुँअर सिंह नाटक लिखकर इन्होंने इस दिशा में भी सफल प्रयास किया था। "भोज, भोजपुर और भोजपुरी" में आपकी ऐतिहासिक शोध की प्रतिभा परिलक्षित होती है।

दुर्गा शंकर प्रसाद जी—जो बाबू कुँवर सिंह के वंश में उत्पन्न होने के कारण अपने को 'महाराजकुमार' लिखा करते थे—बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। इन्होंने काव्य लिखा, नाटक का प्रणयन किया, लोक-गीतों का संकलन किया, शोधी छात्रों के लिए प्रचुर सामग्री एकत्रित की तथा भोजपुरी के विद्वानों को प्रेरणा एवं प्रोत्साहन प्रदान किया। इन पंक्तियों के लेखक से उनका बड़ा प्रेम था। अपने 'साहित्य रामायण' की भूमिका लिखने का आदेश उन्होंने दिया था जिसका पालन शीघ्र ही करना पड़ा।

दुर्गा शंकर जी को भोजपुरी तथा लोक संस्कृति से इतना प्रगाढ़ प्रेम था कि जहाँ भी सम्मेलन होता वहाँ वे अवश्य पधारते थे। प्रस्तुत लेखक ने प्रयाग तथा उज्जैन में अखिल भारतीय लोक-संस्कृति-सम्मेलन का आयोजन क्रम से सन् १९५८ तथा १९६१ ई० में किया था। इन दोनों सम्मेलनों में आकर इन्होंने लेख पढ़ा था। इसी प्रकार सन् १९६४ ई० में वाराणसी के भोजपुरी सांस्कृतिक सम्मेलन में भी ये सम्मिलित हुए थे।

अपने जीवन की गोधूलि में ये अपने गाँव दिलीपपुर (आरा) के पास ही 'रैनबसेरा' नामक कुटिया बनाकर भोजपुरी का अलख जगाया करते थे। वहीं इनकी जीवन-लीला समाप्त हुई। दुर्गा शंकर प्रसाद जी के समान भोजपुरी का लेखक, कवि, नाटककार, शोधकर्ता, कर्मठ सेवक और अनुरागी भक्त मिलना कठिन ही नहीं, दुर्लभ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१०----डा० उदय नारायण तिवारी

डा० उदय नारायण तिवारी ने भोजपुरी भाषा में शोध-कार्य करना उस समय प्रारम्भ किया था जब इसमें शोध की चर्चा भी असंभव थी। डा० तिवारी ने भोजपुरी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में सर्वप्रथम शोध कार्य का श्रीगणेश किया था। डा० विश्वनाथ प्रसाद तथा डा० कृष्णदेव उपाध्याय ने इनके बहुत पीछे अपना शोध शुरू किया था। इस प्रकार डा० उदय नारायण तिवारी भोजपुरी में अनुसन्धित्सु विद्वानों के अग्रणी हैं। इनके व्यक्तित्व से प्रेरणा तथा प्रोत्साहन प्राप्त कर अनेक विद्वान् तथा छात्र शोध कार्य में प्रवृत्त हुए हैं। स्वयं इन पंक्तियों के लेखक को अपने शोध में डा० तिवारी से केवल प्रेरणा ही नहीं बल्कि बल और सम्बल भी प्राप्त हुआ है।

डा० उदय नारायण तिवारी जब प्रयाग विश्वविद्यालय में प्राध्यापक थे उन दिनों अनेक छात्रों का इन्होंने पथ प्रदर्शन किया था। डा० सत्यव्रत सिनहा ने आपही के निर्देशन में 'भोजपुरी लोक-गाथा' पर शोध किया था। जबलपुर विश्वविद्यालय में जब आप हिन्दी विभाग के अध्यक्ष थे उस समय भी आपने अनेक छात्रों को भोजपुरी लोक साहित्य में शोध के लिए प्रेरित किया था। तिवारी जी का व्यक्तित्व बड़ा सरल है। आप शोधी छात्रों तथा विद्वानों के लिए प्रकाशस्तम्भ हैं।

११----श्री जगजीवन राम जी

श्री जगजीवन राम जी भोजपुरी प्रदेश के जाज्वल्यमान रत्न हैं। केन्द्रीय सरकार में आप स्वराज्य की प्राप्ति के समय से ही मन्त्री रह चुके हैं और अनेक विभागों के कार्यों को बड़ी योग्यता पूर्वक संचालित करने के पश्चात् आजकल आप प्रतिरक्षा मंत्री के पद को सुशोभित कर रहे हैं। आप बड़े ही कर्मठ व्यक्ति हैं। सन् १६७१ ई० के भारत-पाकिस्तान युद्ध में पाकिस्तान को परास्त करने का श्रेय आपको प्राप्त है।

बाबू जगजीवन राम जी अपनी मातृभाषा भोजपुरी के प्रगाढ़ प्रेमी तथा महान् उन्नायक हैं। कुछ वर्षों पूर्व श्री त्रिवेणी सहाय जी के उत्साह तथा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रयास से नयी दिल्ली में एक भोजपुरी संस्था की स्थापना की गई थी। श्री जगजीवनराम जी इस संस्था के अनेक वर्षों तक सभापति थे। सन् १९६४ ई० में भोजपुरी संसद के तत्वावधान में वाराणसी में आयोजित भोजपुरी सांस्कृतिक सम्मेलन का उद्घाटन करने के लिए आप वाराणसी पधारे थे। उस समय आपने भोजपुरी में जो भाषण दिया था वह बड़ा ही सुन्दर तथा सारगर्भित था। इस अवसर आपने अपने अनुभव के बल पर यह बतलाया था कि अपनी मातृभाषा में बातचीत करने से क्या लाभ होता है और जनता से इस भाषा को समधिक रूप में प्रयोग करने की अपील की थी।

श्री जगजीवन राम जी की यह प्रधान विशेषता है कि जब भी कोई भोजपुरी भाई आप से मिलने के लिए जाता उससे आप भोजपुरी में ही बातचीत करते हैं। इन पंक्तियों के लेखक को भोजपुरी के इस महान् उन्नायक से मिलने का अनेक बार सौभाग्य प्राप्त हुआ है परन्तु उसने आपको सदा भोजपुरी में ही वार्तालाप करते हुए पाया है। किम्बहुना श्री जगजीवन राम जी के अनेक पत्र भी लेखक के पास सुरक्षित हैं जो भोजपुरी में ही लिखे गये हैं।

इस प्रकार अपने पत्रों, भाषणों तथा वार्तालाप से आपने सदा ही भोजपुरी के प्रसार तथा प्रचार में योगदान दिया है।

१२----डा० लल्लन प्रसाद सिंह

डा० लल्लन प्रसाद सिंह बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर में राजनीति विभाग के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष हैं। डा० सिंह को भोजपुरी से अटूट अनुराग तथा प्रगाढ़ प्रेम है। आप भोजपुरी भाषा के प्रबल पक्षपाती हैं। अंग्रेजी तथा राजनीति के प्रकाण्ड विद्वान् होते हुए भी जब कोई भोजपुरी भाषा-भाषी आपसे मिलने के लिए जाता है तब आप भोजपुरी में ही उससे बातें करते हैं। इस प्रकार राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद जी के समान ही आपमें भी भोजपुरी प्रियता पायी जाती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी के क्षेत्र में प्रोफेसर (डा०) लल्लन प्रसाद सिंह का सबसे बड़ा योगदान भोजपुरी भाषा को विहार विश्वविद्यालय में सम्मान का स्थान प्रदान करना है। भारतवर्ष के किसी भी विश्वविद्यालय ने आजतक भोजपुरी को पृथक् विषय के रूप में अध्यापन के लिए स्वीकार नहीं किया था। परन्तु डॉ० लल्लन प्रसाद सिंह ने अथक उद्योग तथा भगीरथ प्रयास करके भोजपुरी को विहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर में इण्टर तथा बी. ए. की कक्षाओं में अध्ययन के लिए एक स्वतन्त्र विषय के रूप में मान्यता दिला दी है। डा० सिंह का यह कार्य एक ऐतिहासिक घटना है जिसका उचित मूल्यांकन आगे आने वाली पीढ़ियाँ करेंगी। विश्वविद्यालयों के पाठचक्रम में भोजपुरी को स्थान दिलाने वाले विद्वानों में डॉ० सिंह सदा अग्रणी रहेंगे और इनका नाम भोजपुरी साहित्य के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। वास्तव में आपने भोजपुरी की जो सेवा की है वह अमूल्य और अद्वितीय है।

१३—पं० महेन्द्र शास्त्री

पं० महेन्द्र शास्त्री भोजपुरी के उन उन्नायकों में से हैं जिन्होंने अपनी एकान्त साधना से भोजपुरी साहित्य का भाण्डार ही नहीं भरा है बल्कि उसके प्रचार और प्रसार में भी प्रचुर योगदान दिया है। इस कथन में तनिक भी सन्देह नहीं है कि शास्त्री जी ने अपना समस्त जीवन भोजपुरी की सेवा में खपा दिया है। संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् होते हुए भी आपने उस अतीत काल में भोजपुरी का नारा बुलन्द किया था, भोजपुरी का झण्डा फहराया था जब देववाणी के पण्डितमानी पण्डित इसे उपेक्षा की दृष्टि से देखा करते थे।

भोजपुरी भाषा की सर्वप्रथम पत्रिका प्रकाशित करने का श्रेय शास्त्री जी को प्राप्त है। इन्होंने सन् १९४८ ई० में "भोजपुरी" की प्रथम पत्रिका को प्रकाश प्रदान किया था। यद्यपि यह पत्रिका अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह सकी फिर भी शास्त्री जी ने इस कार्य के लिए अन्य लोगों को प्रेरणा और प्रोत्साहन प्रदान किया जिसके फलस्वरूप केवल चार वर्षों के पश्चात् ही रघुवंश नारायण सिंह ने एक दूसरी पत्रिका निकालनी शुरू की। शास्त्री जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने 'चोखा' आदि अनेक काव्य-संबंधी पुस्तकों की भी रचना की है जिनका ...न यथास्थान किया जा चुका है।

पं० महेन्द्र शास्त्री ने सारन जिले में भोजपुरी-साहित्य-सम्मेलन की ...पना की। ... जिसके अनेक अधिवेशन छपरा, सीवान, आदि स्थानों में ...लता पूर्वक सम्पन्न हुए। शास्त्री जी इन सम्मेलनों के प्राण थे। इतना ही ..., आपने जिस त्याग, तपस्या, लगन और निःस्वार्थ भाव से भोजपुरी की ...की है इसके लिए आपकी जितनी भी प्रशंसा की जाय सब थोड़ी है। ...त्री जी की इन्हीं सेवाओं के फलस्वरूप उनके शिष्यों, भक्तों, और मित्रों ने ... एक अभिनन्दन-ग्रन्थ समर्पित किया है जो 'पं० महेन्द्र शास्त्री—व्यक्तित्व ...र कृतित्व' के नाम से प्रकाशित हो चुका है।

शास्त्री जी का व्यक्तित्व सरल, स्वभाव मृदुल और व्यवहार मधुर है। ... "सादा जीवन और उच्चविचार" की जीवन्त प्रतिमा हैं। भोजपुरी का ...तपःपूत मनीषी चिरायु हो।

१४—आचार्य पं० बल़देव उपाध्याय

आचार्य पं० बलदेव उपाध्याय भोजपुरी के उन उन्नायकों में से हैं ...होंने भोजपुरी की उस समय सेवा प्रारम्भ की थी जिस समय इस ...षा के अध्ययन की चर्चा भी नहीं थी। उपाध्याय जी सर्व प्रथम ...तीय विद्वान् हैं जिन्होंने इस भाषा तथा इसके लोकगीतों के विषय में ... प्रथम लेखनी चलाई थी। सन् १९२६ ई० में बलिया नगर में ...री-प्रचारिणी सभा का प्रथम अधिवेशन हुआ था। इस अधिवेशन के ...गताध्यक्ष उपाध्याय जी थे। उस समय स्वागताध्यक्ष की हैसियत से ...ने जो स्वागत-भाषण दिया था वह अनेक दृष्टियों से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ...र ऐतिहासिक है। इस भाषण में आपने भोजपुरी भाषा का संक्षिप्त ...रिचय देते हुए उसका स्थूल व्याकरण भी प्रस्तुत किया है। इसके ...थ ही भोजपुरी लोक-गीतों के कुछ उदाहरण भी प्रस्तुत किये गये हैं। ...हाँ तक इन पंक्तियों के लेखक को विदित है उपाध्याय जी से पहिले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किसी भी भारतीय विद्वान् ने भोजपुरी भाषा और साहित्य का इतना सुन्दर वैज्ञानिक विवेचन प्रस्तुत नहीं किया था। इस प्रकार आज से लगभग ५० वर्ष पूर्व भोजपुरी का शोध-पूर्ण विवेचन प्रस्तुत करने का श्रेय उपाध्याय जी को प्राप्त है।

आचार्यपाद भारतीय दर्शन तथा संस्कृत साहित्य के प्रकाण्ड एवं तलस्पर्शी विद्वान् हैं। इन विषयों पर आपकी बीसियों पुस्तकें प्रकाशित तथा पुरस्कृत हो चुकी हैं। परन्तु इनके अतिरिक्त लोक साहित्य—विशेषतः भोजपुरी लोक—साहित्य-के संबंध में उपाध्याय जी का ज्ञान अत्यन्त गंभीर और परिनिष्ठित है। आपने अपने कनिष्ठभ्राता कृष्णदेव उपाध्याय की भोजपुरी लोक गीतों के प्रथम भाग की भूमिका आज से ३० वर्षों पूर्व लिखने की कृपा की थी। लगभग एक सौ पृष्ठों में लिखी गई यह भूमिका अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण तथा शोध से युक्त है जिसमें भोजपुरी लोक-गीतों का विभाजन बड़ी ही वैज्ञानिक पद्धति से किया गया है। सच तो यह है कि प्रस्तुत लेखक की थीसिस "भोजपुरी लोक—साहित्य का अध्ययन" जी की इस भूमिका का ही पल्लवन मात्र है। आपने अनेक शोध छात्रों को—जिसमें यह लेखक भी सम्मिलित है—अनुसन्धान के क्षेत्र में दिशा-निर्देशन किया है, उन्हें प्रेरणा प्रदान की है।

आचार्य उपाध्याय जी ने सीवान (जिला छपरा) में होने वाले प्रान्तीय भोजपुरी—साहित्य—सम्मेलन के सभापति के आसन को भी सुशोभित किया था। इस अवसर पर दिये गये आपके अध्यक्षीय भाषण में भोजपुरी साहित्य का संक्षिप्त सर्वेक्षण उपलब्ध होता है। इसके अतिरिक्त आपने मुखराम सिंह द्वारा सम्पादित 'बिसराम के बिरहे' तथा पं० रासबिहारी राय शर्मा द्वारा लिखित "भोजपुरी व्याकरण" की भूमिका भी लिखी है। इस प्रकार आज से ५० वर्ष पूर्व से आचार्यपाद भोजपुरी की सेवा में मौनरूप से निरन्तर निरत हैं। भगवान् से यही प्रार्थना है कि आप शतायु हों।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१५—सम्पादकाचार्य पं० बनारसीदास चतुर्वेदी

पं० बनारसीदास चतुर्वेदी को अनेक साहित्यिक आन्दोलनों को जन्म देने का श्रेय प्राप्त है जिनमें जनपदीय आन्दोलन भी एक है। चतुर्वेदी जी की अटूट लगन तथा भगीरथ प्रयास से 'अखिलभारतीय जनपदीय परिषद्' की स्थापना हुई थी। इस संस्था की ओर से "जनपद" नामक त्रैमासिक पत्रिका, वाराणसी से प्रकाशित होती थी। इस परिषद् ने अपने अल्प कालीन जीवन में ही लोक साहित्य की बड़ी ठोस सेवा की थी। इसी जनपदीय आन्दोलन के दिनों में चतुर्वेदी जी ने 'भोजपुरी साहित्य परिषद्' की स्थापना के लिए भोजपुरी के अनेक विद्वानों को प्रेरित तथा प्रोत्साहित किया था जिसके फलस्वरूप सारन में प्रान्तीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन की स्थापना हुई। इस प्रकार भोजपुरी की सेवा के लिए संगठनात्मक प्रयास के लिए प्रेरणा तथा प्रोत्साहन प्रदान करने का श्रेय चतुर्वेदी जी को प्राप्त है।

पं० बनारसी दास चतुर्वेदी को भोजपुरी से अत्यन्त प्रेम है और वे भोजपुरी को उचित स्थान दिलाने के पक्षपाती हैं। यह विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि आजकल चतुर्वेदी जी साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली के द्वारा भोजपुरी को मान्यता दिलाने के लिए सक्रिय प्रयास कर रहे हैं। पूर्ण आशा है कि पं० चतुर्वेदी जी के महान् व्यक्तित्व तथा व्यापक प्रभाव के कारण अकादमी द्वारा भोजपुरी को अवश्य मान्यता प्राप्त होगी।

१६—पं० गणेश चौबे

पं० गणेश चौबे भोजपुरी के उन गंभीर विद्वानों में से हैं जिन्होंने स्वयं तो अपेक्षाकृत कम लिखा है परन्तु दूसरों को भोजपुरी में लिखने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन प्रदान किया है। चौबे जीने भोजपुरी के हजारों लोक-गीतों और लोक-कथाओं का संकलन किया है परन्तु दुःख है कि यह विशाल संग्रह अभी प्रकाश में नहीं आ सका है। भोजपुरी लोक साहित्य तथा लोक संस्कृति से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संबंधित आप के पचासों लेख भारत की विभिन्न शोध-पत्रिकाओं में—अंग्रेजी तथा हिन्दी दोनों में—प्रकाशित हो चुके हैं।

जहाँ कहीं भी भोजपुरी-गोष्ठी हो, सम्मेलन हो वहाँ चौबे जी उपस्थित रहते हैं। चौबे जी का नाम भोजपुरी-सेवा का पर्यायवाची शब्द बन गया है। स्वभाव से सरल, वाणी से मधुर और व्यवहार से निश्छल चौबे जी का व्यक्तित्व स्पृहणीय है। आप सादा जीवन और उच्च विचार की ज्वलन्त मूर्ति हैं। भोजपुरी के क्षेत्र में काम करने वाले विद्वानों तथा छात्रों की सहायता करना चौबे जी के जीवन का व्रत है। आपने भोजपुरी-साहित्य-संबंधी एक पठनीय ग्रन्थ-सूची को प्रकाशित कर भोजपुरी के अनुसन्दिधित्सुओं का बड़ा उपकार किया है। भोजपुरी साहित्य के लिए यह बहुत बड़ा मंगल-कार्य होता यदि चौबे जी अपने समस्त संकलन को प्रकाशित करवा देते।

१७—रघुवंश नारायण सिंह

श्री रघुवंश नारायण सिंह का जन्म बिहार के आरा जिले में हुआ था। जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में आप अपने जनपद के कांग्रेसी लीडर थे और अपनी देश-भक्ति के लिए आपको अनेक बार कारावास की यातना भी भुगतनी पड़ी है।

भोजपुरी के क्षेत्र में आपका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य आरा से भोजपुरी नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन है। इस पत्रिका का प्रकाशन सन् १९५२ ई० में प्रारम्भ हुआ और लगातार दस-बारह वर्षों तक रघुवंश नारायण जी इस मासिक के माध्यम से भोजपुरी की अनवरत सेवा करते रहे हैं। इन्होंने एकाकी, बिना किसी की सहायता से, एकान्त भाव से भोजपुरी का प्रचार किया। यह दुःख है कि आर्थिक कठिनाइयों के कारण इस पत्रिका का प्रकाशन अब बन्द हो गया है। परन्तु रघुवंश नारायण जी की सेवाओं का महत्त्व कभी कम नहीं हो सकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी के प्रश्न पर ये किसी से कम्प्रोमाइज-समझौता करना जानते ही नहीं और अपने अक्खड़ स्वभाव के कारण अपनी बात पर सदा डटे रहते हैं। वे सभी व्यक्तियों से सदा भोजपुरी में ही भाषण करते हैं। आजकल संभवतः पारिवारिक झंझटों के कारण ये भोजपुरी की सेवा से कुछ विरत हो गये हैं परन्तु इन्होंने पहिले अपनी मातृभाषा की सेवा के लिए जो त्याग, तप और साधना की है उसका मूल्यांकन आनेवाली पीढ़ियाँ ही कर सकेंगी।

१८—डा० स्वामी नाथ सिंह

डा० स्वामीनाथ सिंह मूलतः देवरिया जिले के निवासी हैं परन्तु आजकल काशीवासी हो गये हैं। डा० सिंह का अधिकांश जीवन चिकित्सा के पेशे में ही व्यतीत हुआ।

डा० स्वामीनाथ जीका भोजपुरी-प्रेम अत्यन्त प्रशंसनीय है। सन् १९६४ ई० में इन्होंने 'भोजपुरी संसद' नामक एक संस्था की स्थापना की थी। इस संसद के तत्वावधान में भोजपुरी सांस्कृतिक सम्मेलन का आयोजन अनेक बार किया गया था। इस सम्मेलन के प्रथम दो अधिवेशन काशी में बड़े शान से हुए थे जिसके उद्घाटन के लिए आजकल के प्रतिरक्षा मंत्री श्री जगजीवनराम जी स्वयं पधारे थे। इस सम्मेलन का तीसरा अधिवेशन प्रयाग और चौथा गाजीपुर जिले के गहमर नामक गाँव में हुआ था जिसकी सफलता का समस्त श्रेय श्री भोलानाथ गहमरी को प्राप्त है।

डा० स्वामीनाथ सिंह ने "भोजपुरी कहानियाँ" शीर्षक मासिक पत्रिका का भी प्रकाशन प्रारम्भ किया था जिसका बड़ा प्रचार था। इन्होंने भोजपुरी संसद के द्वारा भोजपुरी के अनेक ऐसे कवियों की कृतियों का प्रकाशन किया है जिन्हें लोग भूलते जा रहे थे—जैसे तेग अली और बिसराम। भोजपुरी साहित्य के अभाव की पूर्ति के लिए डा० सिंह ने गद्य की विभिन्न विधाओं से संबंधित अनेक पुस्तकों का भी प्रकाशन किया है। इतने अल्पकाल में इन्होंने भोजपुरी की जो ठोस तथा गंभीर सेवा की है उतना कोई भी नहीं कर सका है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ वर्ष पूर्व भोजपुरी संसद से "पुरवइया" नाम से भोजपुरी की शोध संबंधी त्रैमासिक पत्रिका भी प्रकाशित होती थी जो अपने ढंग की एक पत्रिका थी परन्तु वह एक वर्ष के पश्चात् ही अकाल काल-कवलित हो गई।

डा० सिंह ने 'भोजपुरी प्रेस' की स्थापना कर 'भोजपुरी पाकेट बुक्स' निकालना प्रारम्भ किया है।

यद्यपि डा० स्वामीनाथ सिंह ने स्वयं भोजपुरी में किसी ग्रन्थ की रचना नहीं की है परन्तु इन्होंने अपने व्यक्तित्व तथा व्यापक प्रभाव के द्वारा अनेक व्यक्तियों को भोजपुरी की सेवा में प्रवृत्त किया है। यही इनकी सबसे बड़ी उपलब्धि है। आज काशी का 'भोजपुरी-संसद' भोजपुरी-सेवी-संस्थाओं में अपना प्रधान स्थान रखता है। आशा है डा० सिंह शतायु होकर जीवन भर भोजपुरी की सेवा करते रहेंगे।

१९----श्री राधा मोहन 'राधेश'

श्री राधा मोहन 'राधेश' का जन्म विहार के सारन जिले में हुआ था। अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में नौकरी-संभवतः अध्यापन कार्य-करने के पश्चात् आपने उससे त्यागपत्र दे दिया। इसके वाद आपने अपना समस्त जीवन भोजपुरी की सेवा में खपा दिया है। कुछ वर्ष पहिले आपने वाराणसी में भोजपुरी-साहित्य-मन्दिर की स्थापना की थी। इस मन्दिर के तत्वावधान में "भोजपुरी जनपद" नामक मासिक पत्रिका अनेक वर्षों से प्रकाशित हो रही है जिसके प्रधान सम्पादक 'राधेश' जी हैं। इस पत्रिका में गद्य-पद्य, तथा गद्य की विभिन्न विधायें—जैसे एकांकी, प्रहसन, कहानी, लघुकथा-आदि छपती हैं। राधेश जी ने भोजपुरी-साहित्य-मंदिर के द्वारा भोजपुरी में अनेक पुस्तकें भी प्रकाशित की हैं जिनमें नाटक, उपन्यास तथा कहानियों की प्रधानता है। इस प्रकार पत्रिका तथा ग्रन्थों के प्रकाशन के द्वारा राधेश जी भोजपुरी-भारती के भाण्डार को भर रहे हैं।

भोजपुरी के प्रचुर प्रचार के लिए आप 'पहरुआ' नामक साप्ताहिक पत्र भी प्रकाशित करते हैं। आपने अनेक भोजपुरी-साहित्य-सम्मेलनों का आयोजन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है जिससे भोजपुरी के प्रसार में बड़ी सहायता मिली है। आजकल 'राधेश' जी 'साहित्य अकादेमी' नयी दिल्ली के द्वारा भोजपुरी को मान्यता दिलाने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं और इसके लिए आपने हजारों भोजपुरी भाषा-भाषियों का हस्ताक्षर कराया है। भोजपुरी के विस्मृत तथा उपेक्षित कवियों को प्रकाश में लाने के लिए आप 'भोजपुरी-सेवी-संसार' नामक पुस्तक का प्रकाशन कर रहे हैं। आशा है राधेश जी इसी प्रकार अनवरत गति से भोजपुरी साहित्य की सेवा करते रहेंगे।

२०--पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय उन कर्मठ व्यक्तियों में से हैं जो आज अनेक वर्षों से अनवरत गति से भोजपुरी की सेवा करते चले आ रहे हैं। आपका पेशा वकालत का है जो बड़ा ही झंझट का काम समझा जाता है। परन्तु आप वकालत का कार्य करते हुए भी भोजपुरी की सेवा के लिए इतना समय निकाल लेते हैं। यह आपकी कुशलता का सूचक है।

पाण्डेय जी भोजपुरी के एक अच्छे कवि हैं। आपकी अनेक सुन्दर कवितायें विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। दुःख है कि समय से प्राप्त न होने के कारण आपकी कविताओं का उदाहरण इस ग्रन्थ में नहीं दिया जा सका है। परन्तु पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय का सबसे प्रसिद्ध कार्य भोजपुरी की एक मात्र त्रैमासिक पत्रिका "अँजोर" का प्रकाशन है। पाण्डेय जी ने सन् १९६० ई० में पटना में "भोजपुरी-परिवार" नामक संस्था की स्थापना की थी। इसी संस्था के तत्वावधान में यह त्रैमासिक पत्रिका आज बारह वर्षों —एक युग—से बिना किसी व्यवधान के लगातार प्रकाशित हो रही है। यों तो भोजपुरी में बीसियों पत्र-पत्रिकायें समय समय पर प्रकाशित हुई परन्तु उनमें से सतत गति से भोजपुरी की सेवा केवल यही पत्रिका कर रही है। इसका समस्त श्रेय श्री नर्मदेश्वर सहाय जी को प्राप्त है। आर्थिक दृष्टि से अलाभकर सिद्ध होने पर भी सहाय जी इस पत्रिका के द्वारा भोजपुरी की सेवा में बद्ध-परिकर हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी परिवार, पटना से इन्होंने अनेक पुस्तकों का भी प्रकाशन किया है जिसमें "जन कवि भिखारी ठाकुर" तथा भोजपुरी में प्रकाशित ग्रन्थों की सूची प्रधान है। यह सूची भोजपुरी के विद्वानों के लिए बहुत उपयोगी है। आशा है सहाय जी इसी प्रकार अपनी पत्रिका तथा प्रकाशनों के द्वारा भोजपुरी के भाण्डार को सदा समृद्ध बनाते रहेंगे।

२१----रामेश्वर सिंह "काश्यप"

प्रिन्सिपल रामेश्वर सिंह "काश्यप" कवि और नाटककार होने के साथ ही एक सफल अभिनेता भी हैं। हिन्दी साहित्य के विद्वान् होते हुए भी आप भोजपुरी में सुन्दर कविता करते हैं। आपके द्वारा रचित 'लोहासिंह' नाटक ने प्रचुर प्रसिद्धि प्राप्त की है। इस नाटक का रेकार्ड भी तैयार हो गया है जो रेडियो स्टेशनों से यदा-कदा प्रसारित होता रहता है। भिखारी ठाकुर के 'विदेसिया' नाटक को छोड़कर 'लोहासिंह' ने जितनी लोकप्रियता प्राप्त की है उतनी किसी ने भी नहीं। 'काश्यप' जी अपनी कविता, नाटक और अभिनय के द्वारा भोजपुरी का प्रचुर प्रचार कर रहे हैं। भोजपुरी साहित्य को इनसे बड़ी-बड़ी आशायें हैं।

२२—भिखारी ठाकुर

भिखारी ठाकुर भोजपुरी के कवि और नाटककार होने के अतिरिक्त एक सफल अभिनेता भी थे। 'गंगा नहयनी' मेला घूमनी और 'बेटी बेचवा' आदि आपकी कविताओं के छोटे-मोटे संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इन कविताओं के प्रणयन के साथ ही आपने "बिदेसिया" नामक सुप्रसिद्ध नाटक की रचना भी की है। भोजपुरी प्रदेश में इस नाटक का अत्यधिक प्रचार है। इसकी लोकप्रियता का अनुमान केवल इसी बात से किया जा सकता है कि आजकल 'बिदेसिया' नाटक की कथावस्तु के आधार पर इसी नाम की एक फिल्म भी तैयार हो गयी है जिसमें स्वयं भिखारी ठाकुर ने पार्ट किया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भिखारी ठाकुर स्वयं एक कुशल अभिनेता थे। वे अपने नाटक का अभिनय विवाह आदि के अवसर पर गाँव-गाँव में किया करते थे जिसे देखने के लिए हजारों की भीड़ एकत्रित होती थी। जनता की वस्तु को जनता के सामने, जनता के मनोरंजन के लिए प्रस्तुत करके भिखारी ने बड़ी लोकप्रियता प्राप्त की। सच तो यह है कि केवल इस एक व्यक्ति ने भोजपुरी का जितना अधिक प्रचार किया उतना अधिक शायद ही किसी ने किया हो। भोजपुरी प्रदेश में भोजपुरी कविता और भोजपुरी नाटक की धूम मचा देने वाले इस नाटककार तथा अभिनेता का भोजपुरी भाषा के प्रचार तथा प्रसार में अत्यधिक योगदान है।

भिखारी ठाकुर ने अपनी प्रसिद्धि तथा लोकप्रियता का वर्णन स्वयं इस प्रकार से किया है :—

"नाम भिखारी, काम भिखारी; रूप भिखारी मोर।
ठाट पलानि, मकान भिखारी; चहुँदिसि भइल सोर॥"

जय भोजपुरी

—:०:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिशिष्ट १

भोजपुरी में प्रकाशित पत्र और पत्रिकायें

आजकल भोजपुरी में अनेक पत्र और पत्रिकायें प्रकाशित हो रही हैं जिनमें त्रैमासिक शोध पत्रिका से लेकर साप्ताहिक समाचार-पत्र तक सम्मिलित हैं। पाठकों की जानकारी के लिए इन पत्र-पत्रिकाओं की सूची यहाँ प्रस्तुत की जाती है।

(१) भोजपुरी (त्रैमासिक), सम्पादक—पं० महेन्द्र शास्त्री। संचालक—पं० गिरीश तिवारी। प्रकाशक—भोजपुरी कार्यालय, कदमकुआँ, पटना। सन् १९४८ ई०, पृ० ६४। इस पत्रिका का केवल एक ही अंक प्रकाशित हो सका। इसके बाद यह सदा के लिए बन्द हो गई। यह भोजपुरी की सर्वप्रथम पत्रिका थी।

(२) भोजपुरी (मासिक), सं०—रघुवंश नारायण सिंह। प्र०—बाल हिन्दी पुस्तकालय, भोजपुरी कार्यालय। प्रथम अंक अगस्त सन् १९५२ ई० में प्रकाशित। पृ० सं० ४०। १९५२ से ५५ ई० तक लगातार प्रकाशित। सन् १९५५ ई० में स्थगित होकर सन् १९६३ में पुनः प्रकाशित। बाद में कुछ वर्षों के पश्चात् प्रकाशन बन्द।

(३) भोजपुरी (साप्ताहिक), सं०—अखौरी महेन्द्र कुमार वर्मा। प्र०—१२६ चित्तरंजन एवेन्यू, कलकत्ता। यह पत्र हिन्दी का था परन्तु इसमें भोजपुरी भाषा में भी कुछ लेख छपते थे।

(४) भोजपुरी समाचार (साप्ताहिक) सं०—जयदारी। प्र०—प्रोग्रेसिव फेडरेशन आफ इण्डिया, एक्जिबिशन रोड, पटना। प्रथम अंक मार्च सन् १९६५ में प्रकाशित। बाद में मोतिहारी से दैनिक रूप में प्रकाशित। अब प्रकाशन बन्द।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(५) भोजपुरी कहानियाँ (मासिक) सं०—रामबली पाण्डेय, प्र०—डा० स्वामीनाथ सिंह, भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी। प्रथम अंक—अक्टूबर सन् १९६४ ई० में प्रकाशित सन् १९७१ ई० से अनियमित रूप से छपती है।

(६) भोजपुरी समाज (मासिक) सं०—भोलानाथ सिंह। प्र०—भोजपुरी समाज, परासियाँ, जिला-छिन्दवाड़ा, मध्यप्रदेश। केवल दो-तीन अंक निकल कर बन्द।

(७) भोजपुरी जनपद (मासिक) सम्पादक तथा संचालक—श्री राधामोहन 'राधेश'। प्र०—भोजपुरी साहित्य मंदिर, २७।९८ जगतगंज, वाराणसी। सन् १९६८ ई० से लेकर आजतक लगातार प्रकाशित।

(८) भोजपुरी साहित्य (मासिक) सं०—डा० जितराम पाठक। प्र०—भोजपुरी कार्यालय प्रोफेसर कालोनी, आरा (बिहार)। प्रथम बार सन् १९६५ में प्रकाशित। अधुना प्रकाशन बन्द।

(९) भोजपुरी वार्ता (पाक्षिक) सं०—आचार्य प्रतापादित्य। सह सम्पादक—कपिलदेव—आवास—बेतिया हाता, गोरखपुर अब बन्द।

(१०) भोजपुरी वार्ता (अर्ध साप्ताहिक) सं०—आचार्य विद्यार्थी। सह सम्पादक—श्री देवव्रत जी। अब प्रकाशन बन्द।

(११) अँजोर (त्रैमासिक) सं०—पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय। प्र०—भोजपुरी परिवार, खालिसपुर अहरा, पटना—३। प्रथम अंक १९६० ई० में प्रकाशित। तब से यह त्रैमासिक पत्रिका आजतक (सन् १९७२ ई०) लगातार नियमित रूप से प्रकाशित हो रही है।

(१२) माटी की बोली (मासिक) सं०—सतीश्वर सहाय वर्मा तथा विश्वनाथ प्रसाद। नवीगंज, छपरा से प्रकाशित। प्रथम अंक १९६४ ई०। में छपा। संभवतः अब प्रकाशन बन्द।

(१३) हिलोर (मासिक) सं०—डा० रामनाथ पाठक 'प्रणयी'। प्र०—देववाणी शोध मन्दिर, आरा (बिहार)। प्रकाशन काल १९६६ ई० केवल दो-तीन अंक निकल कर प्रकाशन बन्द।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१४) कृषक (साप्ताहिक) सं०—अवधविहारी 'सुमन' (अब दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती)। बक्सर, शाहाबाद से प्रथम बार सन् १९४९ ई० में प्रकाशित। प्रकाशन के दो वर्षों के पश्चात् बन्द।

(१५) पुरवैया (त्रैमासिक) सं०—रामबली पाण्डेय प्र०—भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी। प्रथम बार सं० २०२५ में प्रकाशित। एक वर्ष के पश्चात् प्रकाशन बन्द।

(१६) लुकार (साइक्लो स्टाइल पत्रिका) सं०—कुमुद कुमार 'कमल'। प्र०—भोजपुरी साहित्य परिषद, जमशेदपुर। यह पत्रिका किसी नियमित समय से प्रकाशित नहीं होती। यह पत्रिका आज अनेक वर्षों से अनियत-रूप में ही सही-आज भी प्रकाशित हो रही है।

(१७) हमार बोल—सं०—व्रजेन्द्र भारती। प्र०—भोजपुरी सेवा मंडल, १४ एलगिन रोड, इलाहाबाद। प्र० का० १९६४ ई०। अब प्रकाशन बन्द।

(१८) वार्षिकी—सं०—तारकेश्वर प्रसाद प्र०—साहित्य एवं संस्कृति विभाग नवयुग पुस्तकालय, मोतीहारी (विहार)। यह पत्रिका—जिसमें हिन्दी और भोजपुरी दोनों में लेख हैं—वर्ष भर में केवल एक वार प्रकाशित होती है।

(१९) गाँव घर (पाक्षिक). सं०—भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु'। प्र०—गाँव घर कार्यालय, महादेवा, आरा (बिहार)। प्रथम अंक—अक्टूबर सन् १९६० ई० में छपा। इस पत्रिका का प्रकाशन कुछ मासों के बाद ही बन्द।

(२०) काशिका (पाक्षिक) सं०—विनोदचन्द्र सिनहा। प्र०—काशिका कार्यालय, ८६ काशिका पथ, ईश्वरगंगी, वाराणसी। यह पत्र आज चार वर्षों से पश्चिमी भोजपुरी (काशिका) में प्रकाशित हो रहा है।

(२१) पहरुआ (साप्ताहिक) सं०—राधा मोहन राधेश प्र०—भोजपुरी साहित्य मन्दिर, वाराणसी की ओर से छपरा में प्रकाशित।

—:०:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिशिष्ट २

भोजपुरी-सेवी-संस्थायें

(१) बाल-हिन्दी-पुस्तकालय, भोजपुरी कार्यालय, आरा (बिहार) सं०—रघुवंश नारायण सिंह स्थापित १९५२ ई०। कार्य-'भोजपुरी' पत्रिका का प्रकाशन। अब यह संस्था बन्द है।

(२) "भोजपुरी परिवार" सालिमपुर अहरा, पटना-३। सं० श्री पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय। स्था० सन् १९६०। का०—'अँजोर' पत्रिका तथा पुस्तकों का प्रकाशन। आज १२ वर्षों से भोजपुरी की सेवा में सतत संलग्न।

(३) "भोजपुरी साहित्य परिषद्", १, गोलमुरी बाजार, जमशेदपुर (बिहार), सं० रसिक विहारी ओझा 'निर्भीक'। स्था० १९६० ई० कार्य-'लुकार' पत्रिका तथा एक दर्जन से भी अधिक सुन्दर भोजपुरी गद्य-पद्य की विविध विधाओं से संबंधित पुस्तकों का प्रकाशन।

(४) भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी सं०—डा० स्वामीनाथ सिंह। स्था० १९६४ ई० का०—'भोजपुरी कहानियाँ' तथा 'पुरवैया' पत्रिकाओं का प्रकाशन। भोजपुरी पाकेट बुक्स तथा विभिन्न विधाओं की पन्द्रह से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन।

(५) भोजपुरी-साहित्य-मंदिर, २७।९८ जगतगंज, वाराणसी। सं० राधा मोहन 'राधेश'। स्था० १९६६ ई०। का०—'भोजपुरी जनपद' तथा 'पहरुआ' पत्रिका का प्रकाशन। इस मंदिर से भोजपुरी के अनेक नाटक, उपन्यास, एकाङ्की तथा कविता-संग्रहों का प्रकाशन हो चुका है।

(६) देववाणी शोधमन्दिर, आरा (बिहार), सं०—डा० रामनाथ पाठक 'प्रणयी'। स्था० १९६९ ई०। का०—'हिलोर' पत्रिका का प्रकाशन। इसके साथ ही 'प्रणयी' जी की अनेक पुस्तकें यहाँ से छपती हैं।

(७) भोजपुरी समाज, जिला-छिन्दवाड़ा मध्य प्रदेश। सं० भोलानाथ सिंह। का०—पत्रिका का प्रकाशन। अब बन्द।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(८) भोजपुरी परिषद्, नयी दिल्ली। सं० श्री त्रिवेणी सहाय जी। स्था० १९६० ई०। का०—दिल्ली में भोजपुरी साहित्य का प्रचार तथा प्रसार।

(९) भोजपुरी-सेवा-मण्डल, १४ एलगिन रोड, इलाहाबाद। सं०—ब्रजेन्द्र भारती। स्था० १९६४ ई०। का०—'हमार बोल' पत्रिका का प्रकाशन। अब बन्द।

(१०) भोजपुरी-साहित्य संसद, १ सुखलाल जौहरी लेन, कलकत्ता-७ पुस्तकों का प्रकाशन। अब बन्द।

(११) भोजपुरी-साहित्य-मंडल, बक्सर (शाहाबाद)। सं० खाकी बाबा। स्था० १९५० ई०। कार्य—पुस्तकों का प्रकाशन, तथा भोजपुरी सम्मेलनों का आयोजन करना।

(१२) भोजपुरी-पुस्तक-भवन, बलिया। सं० डा० रामविचार पाण्डेय। स्था० १९५४ ई० कार्य--पुस्तकों का प्रकाशन।

(१३) भोजपुरी समाज, मिडिया एजेन्सी, लेंटीन चैम्बर्स, बम्बई १। इस संस्था ने बम्बई के भोजपुरी भाषी लोगों का संगठन किया है तथा नवागत भाइयों को सहायता प्रदान करती है। 'कुँवरसिंह स्मृति अंक' नामक पत्रिका का प्रकाशन सन् १९६५ ई० में इस संस्था द्वारा किया गया था।

(१४) भोजपुरी लोक-मंच, लूकरगंज, इलाहाबाद। सं० डा० हरिशंकर उपाध्याय तथा बाबू मुद्रिका सिंह। स्था०--सन् १९५५ ई०। कार्य--इस संस्था का प्रधान उद्देश्य भोजपुरी के नाटकों का अभिनय करना था। कुछ ही वर्षों में इसने बड़ी उन्नति कर ली थी। 'धरती' नामक पत्रिका का प्रकाशन।

(१५) भोजपुरी परिषद्, कानपुर। यह संस्था विशेषरूप से साहित्यिक न होकर सामाजिक है। इसने भोजपुरी भाषी लोगों को संगठित करने में अपूर्व सफलता प्राप्त की है।

(१६) ऊर्जायन, ज्ञानपुर (वाराणसी)। संस्थापक----पं० बनारसीदास चतुर्वेदी। प्रमुख ऊर्जस्वी डा० मधुकर भट्ट। स्था० १९६८ ई०। कार्य--यह संस्था भोजपुरी की उन्नति के लिए कार्य कर रही है।

—:o:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिशिष्ट ३

भोजपुरी भाषा और साहित्य संबंधी पठनीय ग्रन्थ

(क) भोजपुरी भाषा संबंधी ग्रन्थ :

(१) डा० सर जार्ज ग्रियर्सन----लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया खण्ड-५ भाग २।

(२) सेवेन ग्रामर्स आफ दि डाइलेक्ट्स एण्ड सब डाइलेक्ट्स आफ बिहारी लैंग्वेज भाग २।

भोजपुरी डाइलेक्ट्स आफ शाहाबाद, सारन, चम्पारन, नार्थ मुजफ्फरपुर एण्ड ईस्टर्न पोरशन आफ एन-डब्लू० पी०। दि बेंगाल सेक्रेटेरियट प्रेस, कलकत्ता, सन् १८८४ ई०।

(३) डा० उदय नारायण तिवारी भोजपुरी भाषा और साहित्य-(बिहार-राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना)।

(४) डा० विश्वनाथ प्रसाद—भोजपुरी का ध्वनि शास्त्र (अंग्रेजी में)

(५) डा० शुकदेव सिंह—भोजपुरी और हिन्दी भाषा का तुलनात्मक अध्ययन।

(६) श्री रासबिहारी राय शर्मा—भोजपुरी व्याकरण (राजगुरु मठ, शिवाला, वाराणसी)

(७) श्री पीटर शान्ति नवरंगी—ए सिम्पुल सदानी ग्रामर (अंग्रेजी,। रांची से प्रकाशित।

(८) एक जर्मन महिला—ए ग्रामर आफ सदानी लैंग्वेज़ (जर्मन)। पश्चिम जर्मनी से प्रकाशित।

(ख) भोजपुरी साहित्य संबंधी सन्दर्भ ग्रन्थ :

(१) डा० सर जार्ज ग्रियर्सन—बिहार पीज़ेण्ट लाइफ (अधीक्षक, सचिवालय प्रेस, बिहार एण्ड उड़ीसा, पटना)। सन् १९२५ ई० में इसका द्वितीय संस्करण प्रकाशित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२) डा० उदय नारायण तिवारी—भोजपुरी भाषा और साहित्य (केवल साहित्य वाला अंश)

(३) डा० कृष्णदेव उपाध्याय—

,, (क) भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन

,, (ख) भोजपुरी और उसका साहित्य

,, (ग) भोजपुरी साहित्य का इतिहास

(४) डा० श्रीधर मिश्र—(क) भोजपुरी लोक साहित्य : सांस्कृतिक अध्ययन।

,, (ख) भोजपुरी लोक-गीतों के विविध रूप

(५) श्री वैजनाथ सिंह 'विनोद'—भोजपुरी लोक साहित्य—एक अध्ययन। (प्रकाशक—ज्ञानपीठ प्राइवेट लिमिटेड पटना-४)

(६) श्री दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह—

(क) भोजपुरी के कवि और काव्य

,, ,, (ख) भोज, भोजपुर, भोजपुरी

(ग) भोजपुरी एक समीक्षा

(७) पं० गणेश चौबे—भोजपुरी का प्रकाशित साहित्य।

(८) डा० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' भोजपुरी लोकोक्तियाँ तथा मुहावरे।

(९) डा० सत्यव्रत सिनहा-भोजपुरी लोक-गाथा।

(१०) डा० एल० पी० विद्यार्थी तथा पं० गणेश चौबे | बिहार इन फोकलोर स्टडी (अँग्रेजी में)

(११) डा० कृष्णदेव उपाध्याय—

—स्टडीज़ इन इण्डियन कलचर (अँग्रेजी में)

(१२) ,, भारतीय लोक—संस्कृति (काशी विद्यापीठ, वाराणसी)

भोजपुरी लोक साहित्य के संबंध में हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी, जर्मन तथा स्पेनिश भाषाओं में सैकड़ों लेख प्रकाशित हो चुके हैं। परन्तु इन सबका उल्लेख यहाँ संभव नहीं है। हाँ, कुछ लेखों का उल्लेख पुस्तक के बीच में स्थान-स्थान पर किया गया है।

—:०:—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिशिष्ट ४

अनुक्रमणिका

अ

'अनुरागी' जी (भूमिका)
अवध बिहारी 'सुमन' ३५२
अर्जुन कुमार सिंह 'अशान्त' २६७-६८
अम्बिका प्रसाद २१४-१६
आर्चर-ए. जी. १३३-३४
ईश्वर चन्द्र सिनहा
उदय नारायण तिवारी १३६, १३८, ३६८
उमाकान्त वर्मा ३४४
ओङ्कारनाथ मिश्र ३५५

क

कराडपा ४०
कबीरदास ४७-५३
कमलाप्रसाद मिश्र 'विप्र' २६७-६८, ३३८
कामता सखी १०१
किनाराम ६७-७०
कुकुरिपा ४०
कृष्णदेव उपाध्याय १२४-३०, १३६
कुक, विलियम ११६-२०
कैलाशनाथ ओझा ३४४

ख

खड्ग बहादुर सिंह 'मल्ल' २४६-४७

ग

गणेश चौबे १३२-३३; ४०३-४
गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश' ३६५
गुलाल साहब १०६-११
गोरखनाथ ४१
गोरखनाथ चौबे ३३२-३३
ग्रियर्सन, जी. ए. ११४-१८, ३८७-८६

च

'चतुरी चाचा' ३७३-७५
चन्द्रभूषण सिनहा ३५५, ५६, ३६६
चन्द्र शेखर मिश्र २८८-६०
चौधरी दत्त शर्मा ३४२
'चंचरीक' २६५-६६
छांगुर त्रिपाठी-(भूमिका)

ज

जगजीवन राम ३६८-६६
जगदीश ओझा 'सुन्दर' २६०-६१, ३४६
जायसी ४३-४४
टेकमन राम ७६-७८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त

तारकेश्वर उपाध्याय २६६
तुलसी दास ४४-४६
तेग अली 'तेग' २१२-१४

द

दरिया दास ६२-६३
दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह १३१-३२, २४७-५१, ३३८, ३६६
दूधनाथ उपाध्याय २२०-२४, ३६३
देवेन्द्र सत्यार्थी १३४-३५

ध

धरम दास ५४-५६
धरनी दास ५७-६१
धरीचरण मिश्र (भूमिका)

न

नरोत्तम पाण्डेय ३५५
नवल [नन्द] किशोर राय १४२

प

परशुराम चतुर्वेदी
पलटू दास ६४-६५
पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय ४०७-८
पाण्डेय कपिल २६५
'पुण्डरीक' २६६-३००
प्रभुनाथ मिश्र २६६
प्रभुनाथ सिंह [भूमिका]
प्रसिद्ध नारायण सिंह २५२-५५

ब

बच्चन पाठक सलिल ३०४,३५१,३६५
बनारसी दास चतुर्वेदी ४०३
बलदेव उपाध्याय ४०१-२
बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव ३४५
बाबा राघव दास ३६३
बावरी साहिबा १०५-१०६
बिसराम २१७-२२०
बीम्स, जे० १२०
बीरू साहब १०६-१०७
बुलाकी दास २०५-२०६
बूला साहब १०७-१०६

भ

भरत सिंह १४२
भिखारी ठाकुर २३१-२३६,३१८-२४ ४०८-६
भिनक राम ७१-७३
भीखम राम ७४-७५
भीखा साहब १११-१२
भुवनेश्वरप्रसादश्रीवास्तव 'भानु' २६६
भूसुकु ४०
भोलानाथ 'गहमरी' २८६-८८
भर्तृहरि ४१-४२

म

मनोरंजन प्रसाद सिनहा २३७-४५,३६६
महादेवप्रसाद सिंह 'घनश्याम' २६८-७०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महेन्द्र मिश्र २३०-३१
महेन्द्र शास्त्री २६०-६१, ४००-४०१
मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' १३६, २८१-८३, ३७६
मोती बी. ए. २७८-८१, ३३६

य

यादव चन्द्र पाण्डेय ४३
योगेश्वराचार्य ७६-८०

र

रघुवीर नारायण २२५-२२६, ३६५
रघुवंश नारायण सिंह ४०४-५
रमाशंकर राय ४४३
रमेश चन्द्र झा ३५०
रसिक बिहारी ओझा ३४१, ३६७
रविदत्त शुक्ल ३१२-१७
रविशंकर उपाध्याय ३०२-३०३
राजेन्द्र प्रसाद ३९१-९२
रामकृष्ण वर्मा २०६-१२
राम गरीब चौबे ३१७
राम नरेश त्रिपाठी १२१-२३
राम नगीना सिंह ३५०
रामनाथ पाठक 'प्रणयी' २७३-७८
रामनाथ पाण्डेय ३४८
रामवली पाण्डेय ३५८, ६०
राम विचार पाण्डेय २५६-५६, ३६७
रामवृच्छ राय 'विधुर' २६४-६५, ३५६
राम शरण ८५-८६
रामा जी ९३-९५
राधा मोहन 'राधेश' २९१-९२, ३४६, ३६०, ३६५, ४०६-७
राधिका देवी ३६१
रामेश्वर सिंह 'काश्यप' २७०-७१, ३३४-३६ ४०८
राय सच्चिदानन्द ३५६
'राहगीर' २८३-२८६
राहुल सांकृत्यायन ३२४-३२, ३६४
रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव [भूमिका]
'रूपकला' जी ८७-८६

ल

लक्ष्मी नारायण दास 'पौहारी' ९०-९२
लक्ष्मी सखी ९६-१००
लल्लन प्रसाद सिंह ३९९-४००

व

विमल कुमार सिंह 'विमलेश' ३४२
विवेकी राय २६३-६४, ३६२
वैदेही शरण 'बनिदापुरी'
विद्यापति ४२-४३
विश्वनाथ प्रसाद १३२, ३७६
विश्वनाथ प्रसाद 'शैदा' २७२

श

शबरपा ३६
शिव नारायण १०१-२०४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिव मूरत सिंह ३४६
शिरेफ, ए. जी. १२०
शुकदेव सिंह १३९
शंकर दास ८३-८४
श्यांम बिहारी तिवारी २६२-६४
श्याम सुन्दर ओझा 'मंजुल' २९१
श्रीधर मिश्र १३५, १४१
"श्याम" जी [भूमिका]

स

संतोश्वरसहाय वर्मा 'सतीश' २९२-
[illegible] ९३, ३४५
सरहपा ३९
सच्चिदानन्द सिनहा ३८९-९१
सत्यदेव ओझा १४०, ३६८
सत्यदेव तिवारी १४३
सत्यव्रत सिंह १४०
सुनीति कुमार चटर्जी
संकटा प्रसाद १३३-३४
स्वर्ण किरण ३०४
स्वामीनाथ सिंह ४०५-६

ह

हजारी प्रसाद द्विवेदी
हरगोविन्द तिवारी १४३
हरिराम द्विवेदी २९५
हरिशंकर उपाध्याय १४१
हरेन्द्र देव नारायण ३००-३०१

—: ० :—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon